

मुहूर्त चिन्तामणि







❀ श्री: ❀

दैवज्ञानन्तसुत-दैवज्ञराम-विरचितः—

मुहूर्त्तचिन्तामणिः

भाषाटीकासहितः

स च

पं० कालिन्दीकान्त शुक्ल अन्वयेनालंकृत्य
आद्यन्तभागः संशोधितः ।

प्रकाशकः—

हनुमानदास गयाप्रसाद,
कसौधन पुस्तकालय, गोरखपुर ।

१९३३

—❀—

मुद्रकः—बाबू शिवचरणलाल गुप्त,
'गोरखपुर प्रिन्टिङ्ग प्रेस' नखास चौक, गोरखपुर ।

प्रथमवार

२२५०

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

विषयानुक्रमणिका ।

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
मंगलाचरण	१	कुलिकादि दोष	१५
ग्रन्थ का नामनिरूपण	१	रवि आदि वारों में दुर्मुहूर्त	१५
तिथियों के स्वामी	२	होलाष्टकवर्णन	१६
तिथिसंज्ञा फल इत्यादि	२	दुष्ट योगों का परिहार	१६
तिथि एवं दग्धयोग	३	भद्रा के प्रवेश का काल	१७
ऋकचादिनिन्द्य योग	४	भद्रा के मुख और पुच्छ का विचार	१८
निषिद्ध तिथियाँ	४	भद्रा का देश विभाग	१८
दग्धादि योग	४	गुरु और शुक्रके अस्तमें वर्जित कर्म	१९
शून्य तिथि	५	सिंह और मकरगत गुरुका निषेध	१९
तिथि नक्षत्र युक्त दोष	६	सिंह राशिस्थित गुरु का परिहार	२०
शून्य नक्षत्र	६	वारप्रवृत्तिका हेतु और कालहोरा	२२
शून्य राशि	७	कालहोरा का हेतु	२२
विषम तिथियों में दग्ध लग्न	७	मन्वादि युगादि तिथियाँ	२३
आवश्यक्रीय कार्यों में दुष्टयोगों का परिहार	८	अथ नक्षत्रप्रकरणम् ॥२॥	
गृहप्रवेशादि कार्य में निन्द्य कथन	९	नक्षत्रों के स्वामी	२३
अष्टादश योग	९	ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र	२४
उक्तयोगों को जानने की विधि	११	चरसंज्ञक नक्षत्र	२४
सब वारों में सिद्धयोग	१२	उग्रसंज्ञक नक्षत्र	२५
उत्पात मृत्यु काण सिद्धयोग	१२	मिश्रसंज्ञक नक्षत्र	२५
देश अनुसार दुष्ट योग परिहार	१३	लघुसंज्ञक नक्षत्र	२५
शुभकार्यों में वर्जित दोष	१३	मृदुसंज्ञक नक्षत्र	२६
सामान्यतः वर्ज्य पंचांग दूषण	१४	तीक्ष्णसंज्ञक नक्षत्र	२६
पक्षरंध्र और उन ही वर्ज्यघटिका	१४	अधोमुखऊर्ध्वमुखतिर्यङ्मुख नक्षत्र	२६
		प्रवाल आदि धारण करनेका मुहूर्त	२७

विषय	पृष्ठ
नवप्रकार से वस्त्र के जलने का दोष	२७
दुष्ट दिनों में वस्त्रधारण करना	२८
लता वृक्ष लगाना, राजा का दर्शन और मद्य विक्रय का मुहूर्त्त	२८
स्थिति और सवारी का मुहूर्त्त	२९
औषधिसेवन और सूचीकर्म मुहूर्त्त	२९
खरीदने और बेचने का मुहूर्त्त	३०
दुकान धरने और बेचने का मुहूर्त्त	३०
हाथी, घोड़े के कय विक्रयका मुहूर्त्त	३१
अलंकार बनवाने और धारण करने का मुहूर्त्त	३१
मुद्रापातन और वस्त्रक्षालन मुहूर्त्त	३२
शस्त्रादिधारण शय्यादिकों के उपवेशक मुहूर्त्त	३२
लेन देन में वर्जित नक्षत्र	३३
जलाशय खुदवाने का मुहूर्त्त	३४
नौकरी करने का मुहूर्त्त	३४
हल चलाने का मुहूर्त्त	३५
फणिचक्र और बीज बाने का मुहूर्त्त	३६
जुलाब तथा वमन करने का मुहूर्त्त	३६
धान्यच्छेदन मुहूर्त्त	३७
धान्यमर्दन सस्यरोपण मुहूर्त्त	३७
धान्यस्थिति और वृद्धिका मुहूर्त्त	३८
शान्ति पौष्टिक मुहूर्त्त	३८
आहुति विचार	३८
अग्निवास ज्ञान	३९
नया अन्न खाने का मुहूर्त्त	३९
नौका बनाने का मुहूर्त्त	४०
वीरसाधन और अभिचार मुहूर्त्त	४०
रोग से छूटने पर स्थान का मुहूर्त्त	४०
शिल्प (कारीगरी) सीखनेका मुहूर्त्त	४१
संधान (मेल) करने का मुहूर्त्त	४१

विषय	पृष्ठ
परीक्षा (इम्तिहान) का मुहूर्त्त	४१
शुभ कार्य में लग्नशुद्धि	४२
ज्वरनिवृत्ति की दिन संख्या	४२
रोगी को शीघ्र मरने का योग	४३
प्रेतदाह का मुहूर्त्त	४३
काण्डसंग्रह का मुहूर्त्त	४३
त्रिपुष्करयोग	४४
पुतलादाह का मुहूर्त्त	४४
मूलनक्षत्रमें बालक जन्मका विचार	४६
मूल श्लेषा नक्षत्र में उत्पन्न बालक	४६
मूल नक्षत्र के वास का विचार	४७
गण्डान्त आदि में उत्पन्न बालक का परिहार	४७
नक्षत्रों की तारा संख्या	४७
नक्षत्रों की आकृति	४८
बावली, कुआँ, तालाब और देवप्रतिष्ठा का मुहूर्त्त	४८

अथ संक्रातिप्रकरणम् ॥३॥

संक्रातिसंज्ञा	४९
संक्रातियों का फल	५०
संक्राति के पुण्यकाल का निर्णय	५१
अर्धरात्रि में संक्राति का विचार	५१
उदयास्त का अपवाद	५२
विष्णुपदादि विशेष से त्याज्या-त्याज्य घटी	५२
सायनांश संक्राति विचार	५२
संक्राति उपयोगी समाधि	५३
उक्त संज्ञाओं का हेतु वर्णन	५३
विश्वाज्ञानम्	५३
रवि को जिस अवस्था में संक्राति हुई हो उसका फल	५४

विषय	पृष्ठ
संक्रांतिके वाहन, वस्त्र, हथियार, भक्ष्य, लेपन, जाति, पुष्प आदिका विचार	५५
संक्रांति के वाहन वस्त्र इत्यादि दर्शक चक्र तथा अन्य ग्रन्थ का विचार	५६
संक्रांति वश मनुष्यों का फल	५६
ग्रहों का फलाफल	५७
न्यून और अधिकमासके लक्षण	५७

अथ गोचरप्रकरणम् ॥४॥

ग्रहों के गतिवाससे रवि और चन्द्रमा का फलाफल	५८
पुनः दो प्रकार का और वेध	५९
ग्रहण नक्षत्र का फल	५९
चन्द्रबल में विशेष विचार	६०
शुक्लादि पक्ष विशेष से चन्द्रफल	६०
दुष्टग्रहों के शान्त्यर्थ नवरत्नधारण	६१
ताराओं की संज्ञा	६२
दुष्ट ताराओं का परिहार	६२
चन्द्रमा की अवस्था और फल	६३
अवस्थाओं के नाम	६४
ग्रहों की विकृति के परिहारार्थ	
औषधि युक्त जलसे स्नान दक्षिणा	६४
नवग्रह का दान और जप	६४
ग्रहों का शुभाशुभ फल	६४
ग्रहों का पूर्वापर फल	६५
दुष्ट तिथियों का दान	६५

अथ संस्कारप्रकरणम् ॥५॥

प्रथमरजोदर्शन में शुभाशुभ नक्षत्र	६६
रज के काल में निषिद्ध समय	६७

विषय	पृष्ठ
प्रथम रजस्वलाके स्नान का मुहूर्त्त	६७
गर्भाधान में त्याज्य मुहूर्त्त	६७
गर्भाधान में लग्नशुद्धि	६८
सीमन्त (अठमासा) का मुहूर्त्त	६९
महीनों के स्वामी और चन्द्रबल	६९
पुंसधन (विष्णुपूजा) का मुहूर्त्त	६९
जातकर्म और नामकर्म मुहूर्त्त	७०
प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त्त	७०
बालक के दांत निकलने का फल	७१
बालक को दोला (झूला) में चढ़ाने का मुहूर्त्त	७१
बालक को गृह से बाहर निकालने का मुहूर्त्त	७१
प्रसूता स्त्री के जलपूजा का मुहूर्त्त	७२
अन्नप्राशन का मुहूर्त्त	७२
स्थान विशेष से ग्रहों के फल	७३
बालकको भूमिमें उतारनेका मुहूर्त्त	७४
बालक की जीविका का विचार	७४
बालकोंकोताम्बूलखिलानेका मुहूर्त्त	७४
कर्णवेध मुहूर्त्त	७५
कर्णवेध में लग्नशुद्धि विचार	७५
दक्षिणायन में चूड़ादिकर्म	७६
शुक्रकी बाल्य और वृद्धि अवस्था	७६
मतभेद से बृहस्पति का बाल्य और वृद्धका नियम	७७
चूड़ा (मुंडन) का मुहूर्त्त	७७
चूड़ाकर्मका समय निर्णय	७८
ताराबल वर्णन	७८
मुंडन में कालनिषेध	७९
क्षौर मुहूर्त्त और निषिद्धकाल	७९

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
राजाओं के क्षौर में वर्ज्य नक्षत्र	८०	बाल वैधव्य योग का परिहार	६२
अक्षरारम्भ का मुहूर्त्त	८०	प्रश्न के शुभाशुभलक्षण	६३
विद्यारम्भ का मुहूर्त्त	८१	वाग्दान मुहूर्त्त	६४
व्रतबन्ध में समय और मुहूर्त्त	८१	कन्या के विवाह का समय	६४
यज्ञोपवीत में नक्षत्रशुद्धि	८२	विवाह में मास विचार	६५
यज्ञोपवीत में लग्न भंग योग	८२	जन्ममासादियुक्त निषेध	६५
सामान्यतः व्रतबंधमें लग्नशुद्धि	८२	त्रिज्येष्टनिर्णय	६५
वर्णेश और शाखेश का विचार	८३	विवाहादि शुभकर्म से द्वितीय	
वर्णेश और शाखेश के अधिपतिका		विवाह का नियम	६६
जन्ममासादि का अपवाद	८३	विवाह निश्चय के बाद त्रिपुरुष	
शुरुवलवर्णन	८४	में मृत्यु का निर्धार	६६
बृहस्पति का परिहार	८४	मुण्डनादिकर्मनिर्णय	६७
यज्ञोपवीत में वर्जित समय	८५	नक्षत्रवश से शुभाशुभ फल	६७
सूर्यादि नवमांशा का फल	८५	उक्तदोष का अपवाद	६७
निजनवमांशा में चन्द्रनवमांशा		वर्णकूटविचार	६८
का फल	८५	वश्यगुणविचार	६८
केन्द्रस्थित ग्रहों का फल	८६	ताराकूट विचार	६६
योगविशेष वर्णन	८६	योनि कूट विचार	६६
अनध्यायविवरण	८७	ग्रहमैत्री विचार	१००
प्रदोषलक्षण	८७	गणकूटविचार	१०१
ग्रहौदनसंस्कार	८७	राशिकूटविचार	१०२
वेदानुसार नक्षत्रकथन	८८	दुष्टभकूट का परिहार	१०३
नान्दीमुखश्राद्ध के उपरान्त माता के		गणकूटादि दोषों का परिहार	१०३
रजस्वला का निर्णय	८६	नाडीकूटविचार	१०४
छुरिका बन्धन मुहूर्त्त	८६	पूर्व मध्य अन्तभागभोगी नक्षत्र	१०४
केशान्त और समावर्त्तन मुहूर्त्त	८९	प्राचीन विद्वानों के मत से वर्गकूट	
		विचार	१०५
		नक्षत्र और राशि की एकता का	
		विचार	१०५
		नक्षत्र वशसे सेव्यसेवकफल	१०६
		राशिस्वामियोंकेनवमांशाकी विधि	१०६
		होरा का विचार	१०६
		त्रिंशंश और द्वेष्टकाण का कथन	१०७
अथ विवाहप्रकरणम् ॥६॥			
विवाह में लग्नशुद्धि का विचार			
प्रश्न लग्न से विवाह का विचार	६०		
वैधव्ययोग	६१		
कुलटामृतवत्सायोग	६२		
विवाह भंगयोग	६२		

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
ब्राह्मशांश और षड्वर्गविचार	१०७	ग्रहों की दृष्टि	१२२
गंडांत दोषविचार	१०७	उदयास्तादिशुद्धि	१२२
कर्त्तरीदोष विचार	१०८	अर्कसंक्रांतिदोष	१२४
संग्रहदोष विचार	१०८	संक्रांति के घड़ियों का विवरण	१२४
अष्टम लग्न दोष का अपवाद	१०९	पंगुअन्धवधिराख्य लग्न	१२४
लग्नस्थित अष्टमस्थान स्वामी का विचार	१०९	विवाहविहितनवमांशाकथन	१२५
विषघटीदोष विचार	११०	विहितनवमांशा में क्वचित् निषेध	१२६
दिनमुहूर्त्तस्वामिसंज्ञा	१११	लग्नभंगयोग	१२६
रात्रिमुहूर्त्तस्वामिसंज्ञा	१११	रेखाप्रदरव्यादि ग्रहाः	१२७
सूर्यादि चारों में मुहूर्त्त	११२	कर्त्तरीआदि महादोषोंका अपवाद	१२७
विवाह में विहित नक्षत्र और अभिजित् का विचार	११२	नवदोषों का परिहार	१२८
नक्षत्रवेध विचार	११३	तथा अन्य दोष परिहार	१२८
सप्तशलाकाचक्रकथन	११३	लग्न विशोपका कथन	१२९
क्रूरग्रह से दूषितदोषपरिहार	११४	श्वशुर आदि ग्रहों का विचार	१२९
लक्षादोष का प्रमाण	११४	संकीर्ण जाति के विवाह का वर्णन	१३०
पातदोष का विचार	११५	गन्धर्वविवाह वर्णन	१३०
महापात दोष का विचार	११५	विवाह में प्रथम कर्तव्यों का विचार	१३०
खाजूरदोषविचार	११६	विवाहमें वेदी लक्षण व दिन नियम	१३१
उपग्रहदोषविचार	११६	तेल चढ़ाने की दिनसंख्या	१३१
पात उपग्रह लक्षा इन योगों का अपवाद और अर्धयाम	११७	विवाह में मंडपस्थापन	१३२
कुलिकदोषविचार	११७	गोधूलि प्रशंसा	१३२
दग्धतिथ्याख्यविचार	११८	गोधूलि को जानने का क्रम	१३२
जामित्रदोष	११८	गोधूलि समय वर्ज्य दोष	१३३
एकाग्रल दोष	११८	सूर्य का स्पष्ट गति विचार	१३३
देश विशेष में दोषों का अपवाद	११९	तत्काल सूर्यस्पष्टकथन	१३३
दशदोषों के बनाने का क्रम	११९	इष्ट समय बनाने का क्रम	१३४
दशयोगफल और परिहार	११९	इष्ट घड़ी बनाने की विधि	१३४
वाणदोष कथन	१२०	विवाह में विशेष वर्ज्य	१३५
वाणदोष का अपवाद	१२०		
समयभेद चारभेद और कर्मभेद से वाणदोष का परिहार	१२१		

अथ वधूपवेशप्रकरणम् ॥७॥

वधूपवेश मुहूर्त्त	१३६
वधूपवेश नक्षत्र शुद्धि	१३७
वधूपवेश से फलाफल	१३७

अथ द्विरागमन प्रकरणम् ॥८॥

विषय	पृष्ठ
द्विरागमनमुहूर्त्त	१३८
सन्मुख शुक्रदोष का विचार	१३८
शुक्रदोषका परिहार	१३९

अथ अग्न्याधानप्रकरणम् ॥९॥

अग्निहोत्र मुहूर्त्त	१३९
अग्न्याधान में लग्नशुद्धि	१४०
यज्ञ में लग्नशुद्धि	१४०

अथ राज्याभिषेकप्रकरणम् ॥१०॥

राज्याभिषेक कालशुद्धि	१४१
नक्षत्र और लग्नशुद्धि	१४१
स्थानविशेष से ग्रहों का फल	१४२
स्थिरसंपत्तियोग	१४२

अथ यात्राप्रकरणम् ॥११॥

यात्रामुहूर्त्त बनाने का क्रम	१४३
प्रश्नलग्नविचार	१४३
अशुभफलप्रद लग्नविचार	१४४
प्रश्नलग्न से दिशाज्ञान	१४५
यात्रासमयवर्णन	१४५
यात्रा में तिथिशुद्धिविचार	१४६
वारशूल और नक्षत्रशूल	१४६
कालविचार	१४७
नक्षत्रों की वर्ज्य घड़ी	१४७
वर्ज्य घड़ी	१४८
नक्षत्रों का जीवपक्ष	१४८
कुलाकुलादि योग	१४९
मार्ग में राहु विचार	१५०
राहुचक्रफलम्	१५०
तिथिचक्र	१५२
महाडल और भ्रमणदोष	१५३

विषय	पृष्ठ
हैवरयोग	१५३
घातचन्द्र	१५४
घातनक्षत्र	१५४
तिथिघात और योगिनीदोष	१५६
कालपाशवर्णन	१५६
परिघदण्डयोग	१५७
सन्मुखशुक्रदोष	१५८
सन्मुखशुक्र का परिहार	१५९
यात्रा में निषिद्धलग्न	१६०
यात्रा में मंगलकारकलग्न	१६१
दिक्स्वामी कथन	१६२
लालाटिक योग	१६२
पर्युषित लग्न	१६३
समय बल	१६४
लग्नादि बारह भावों की संज्ञा	१६४
केन्द्रादि शुभग्रहविचार	१६४
यात्रा से राजा और ब्राह्मणों का योग	
नक्षत्रादि का बल	१६५
राजा विजय और जयशाली योग	१६६
शत्रुसेनाबश योग	१६७
द्रव्यलाभ का दूसरा योग	१६६
राज्य विजय योग	१६६
राज्यप्राप्तियोग	१६९
योग अधियोग और योगाधियोग	१७१
विजया दशमी सिद्धियोग मुहूर्त्त	१७१
अंगस्फुरणमुहूर्त्त	१७२
शकुनाशकुनविचार	१७२
एकही दिन में गमनागमनविचार	१७३
नक्षत्रदोहदकथन	१७४
दिग् दोहदवर्णन	१७५
रव्यादि वारदोहद	१७५
तिथिदोहद	१७५
गमन समय कर्तव्यविधि	१७६
दिक्विशेष से सवारी कथन	१७६

विषय	पृष्ठ
यात्रासमय स्थान का विचार	१७६
प्रस्थानविधि	१७७
प्रस्थान का प्रमाण	१७७
प्रस्थान का दिनप्रमाण	१७८
यात्रासमय में अकालवृष्टिविचार	१७९
यात्रा में आवश्यक दुष्ट शकुनों का परिहार	१७९
शुभ शकुन वर्णन	१८०
अपशकुन वर्णन	१८१
यात्रा से निवृत्त होकर गृहप्रवेश का मुहूर्त	१८३
लग्नदोषविचार	१८४

अथ वास्तुप्रकरणम् ॥१२॥

गृह विषे निज शुभाशुभ वर्णन	१८५
रात्रिवशात् ग्रामनिवास	१८६
आयविस्तार का प्रमाण	१८६
ध्वजादिक आय और द्वारका नियम	१८६
गृहारम्भ समय निर्णय	१८७
व्यय कथन पूर्वक अंशको ज्ञान	१८८
शाला ध्रुवादि बनाने की विधि	१८८
शाला ध्रुवादिकी नामाक्षर संज्ञा	१८९
सोलह ग्रहों के नाम	१८९
आयादि वर्णन	१८९
गृहारम्भमें वृषवास्तु चक्र	१९०
पूर्वादि दिशाओं में द्वारनिर्माण	१९०

विषय	पृष्ठ
सौर चान्द्रमासों की एकता	१९१
द्वारनिषेध	१९२
गृहारम्भमें पंचांग और लग्नशुद्धि	१९२
राहुमुख चक्र	१९२
बावली खोदनेमें दिशासे फलाफल	१९३
गृहप्रवेश लग्नविचार व फल	१९४
बहुकाल गृहस्थिति योग	१९४
लक्ष्मीयुक्त गृहयोग वर्णन	१९४
अन्य योगवर्णन	१९५
द्वारचक्र	१९६

अथ गृहप्रवेशप्रकरणम् ॥१३॥

गृहप्रवेश में लग्नशुद्धि	१९७
जीर्णगृहप्रवेश में विशेष विचार	१९७
वास्तुनक्षत्रविचार आदि	१९८
तिथिवारभूतशुद्धिकथन	१९८
पूर्वादि मुख गृहप्रवेश मु०	१९८
कलश वास्तु चक्र	१९९
गृहप्रवेशके पीछे कर्तव्य का कथन	१९९

अथ ग्रन्थकारप्रशस्ति ॥१४॥

ग्रन्थकार के स्थान का वर्णन	२००
पिता का वर्णन	२००
ग्रन्थकार प्रशंसा	२०१



श्रीगणेशाय नमः ।

अथ मुहूर्त्तचिन्तामणिः ।

अन्वयभाषानुवादसहितः ।

गौरीश्रवःकेतकपत्रभगमाकृष्य हस्तेन ददन्मुखाग्रे ।
विघ्नं मुहूर्त्ताकलितद्वितीयदन्तप्ररोहो हरतु द्विपास्यः ॥१॥

श्रीकृष्णचरणौ वन्दे भक्तानामभयंकरो ।
यत्कृपालेशमात्रेण दुर्भतिः सुमतिर्भवेत् ॥ १ ॥
स्मरामि मनसा राधां साधवध्यानव्याकुलाम् ।
यत्कारुण्यं समालोक्य पूषापि चन्द्रमायते ॥ २ ॥

अन्वयः—गौरीश्रवः केतकपत्रभङ्गं हस्तेन आकृष्य मुखाग्रे ददत् मुहूर्त्ताकलितद्वितीयदन्त-
प्ररोहः द्विपास्यः विघ्नं हरतु ॥१॥

यन्नाम विघ्नदलनं कृत्वा तत्पादपङ्कजस्मरणम् ।

भाषावृत्तिं संरत्नां मुहूर्त्तचिन्तामणोः करोमि ॥ १ ॥

भाषार्थ—माता पार्वती के कान में लगे केतकी पुष्प को सूँड से खीचकर
अपने मुँह में लगाने के कारण जो (गणेश) द्विदन्त से ज्ञात हुये वे (गणेश) मेरे
विघ्नों को दूर करें ॥१॥

क्रियाकलापप्रतिपत्तिहेतुं संक्षिप्तसारार्थविलासगर्भम् ।
अनन्तदैवज्ञसुतः स रामो मुहूर्त्तचिन्तामणिमातनोति ॥२॥

अन्वयः—अनन्तदैवज्ञसुतः सः रामः क्रियाकलापप्रतिपत्तिहेतुं संक्षिप्तसारार्थविलासगर्भं
मुहूर्त्तचिन्तामणिं आतनोति ॥२॥

भाषार्थ—जोतिर्विद अनन्तपुत्र मैं (रामाश्रम) समस्त गर्भाधानादि संस्कार को ज्ञान का कारण तथा स्वल्प में तत्त्ववस्तु का प्रदर्शन कराने वाले इस मुहूर्त चिन्तामणि को बनाता हूँ ॥२॥

तिथियों के स्वामी ये हैं ।

तिथीशा वह्निको गौरी गणेशोऽहिर्गुहो रविः
शिवो दुर्गान्तको विश्वे हरिः कामः शिवः शशी ॥ ३ ॥

अन्वयः—वह्निः कः, गौरी, गणेशः, अहिः, गुहः, रविः, शिवः, दुर्गा, अन्तकः, विश्वे, हरिः, कामः, शिवः, शशी, तिथीशाः ॥३॥

भाषार्थ—कृष्ण, शुक्ल पत्नों के प्रतिपदादि समस्त तिथियों के क्रमशः ये स्वामी हैं । प्रतिपद के अग्नि, द्वितीया के ब्रह्मा, तृतीया की पार्वती, चतुर्थी के गणपति, पञ्चमी के नाग, षष्ठी के कार्तिकेय, सप्तमी के सूर्य, अष्टमी के शिव, नवमी की दुर्गा, दशमी के धर्मराज, एकादशी के विश्वदेव, द्वादशी के विष्णु, त्रयोदशी के काम, चतुर्दशी के शिव, पूर्णिमा के चन्द्र अमावस्या के पितर ॥३॥

तिथियों के फल, स्वामी, संज्ञा, शुभाशुभ और पालनज्ञानचक्र ।

तिथि	फल	स्वामी	संज्ञा	शुक्ल	कृष्ण	पालन
१	सिद्धि	अग्नि	नन्दा	अशुभ	शुभ	कोहड़ा
२	कास	ब्रह्मा	भद्रा	अशुभ	शुभ	पन मं०
३	आरोग्य	गौरी	जया	अशुभ	शुभ	नोन
४	हानि	गणेश	रिक्ता	अशुभ	शुभ	तिल
५	शुभफल	सर्प	पूर्णा	अशुभ	शुभ	खड़ा
६	अशुभफल	स्वा० का०	नन्दा	मध्यम	मध्यम	तेल
७	व्याधि	सूर्य	भद्रा	मध्यम	मध्यम	आँचल
८	मृत्युदा	शिव	जया	मध्यम	मध्यम	नारियल
९	धनदा	दुर्गा	रिक्ता	मध्यम	मध्यम	लड्डुआ
१०	शुभफल	यम	पूर्णा	मध्यम	मध्यम	बिन्ने
११	सर्वसिद्धि	विश्वदेव	नन्दा	शुभ	अशुभ	समदा
१२	सर्वसिद्धि	हरि विष्णु	भद्रा	शुभ	अशुभ	मसूर
१३	उमा	कामदेव	जया	शुभ	अशुभ	भंटा
१४	पुष्टिदायक	शिव	रिक्ता	शुभ	अशुभ	शहद (मधु)
१५	अशुभफल	चन्द्रमा	पूर्णा	शुभ	अशुभ	जुवा
३०	अशुभफल	पितर	पूर्णा	शुभ		मैथुन

नन्दा च भद्रा च जया च रिक्ता पूर्णैति तिथ्योऽशुभमध्यशस्ताः ।
सितेऽसिते शस्तसमाधमाः स्युः सितज्ञभौमार्किगुरौ च सिद्धाः ॥४॥

अन्वय—सिते नन्दा च भद्रा च जया च रिक्ता च पूर्णांचेति तिथयः अशुभमध्यशस्ताः ।
असिते शस्तसमाधमाः स्युः । सितज्ञभौमार्किगुरौ च सिद्धाः ॥४॥

भाषार्थ—नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता तथा पूर्णा ये तिथियां होतो हैं । १, ६, ११, को नन्दा । २, ७, १२ को भद्रा । ३, ८, १३ को जया । ४, ९, १४ को रिक्ता । ५, १०, १५ को पूर्णा ये तिथियों की संज्ञा (नाम हैं) । ये शुक्ल पक्ष में अशुभ, मध्य, श्रेष्ठ हैं । १, २, ३, ४, ५ ये तिथियां अशुभ हैं । ६, ७, ८, ९, ये तिथियां तथा १० मध्यम हैं । ११, १२, १३, १४, तथा १५ उत्तम हैं । इसी प्रकार कृष्ण पक्ष में १, २, ३, ४, ५ ये तिथियां श्रेष्ठ हैं । ६, ७, ८, ९, १० ये तिथियां मध्यम होती हैं । ११, १२, १३, १४, १५ ये तिथियां अशुभ हैं । विशेषता यह है कि १, ६, ११ को शुक्रवार २, ७, १२ बुधवार को ८, ९, १३ मंगलवार को ४, ९, १४ तिथि शनिवार को ५, १०, १५ तिथि वृहस्पतिवार को हो तो सिद्धयोग होता है ॥४॥

तिथि एवं दग्धयोग ।

नन्दा भद्रा नन्दिकाख्या जया च रिक्ता भद्रा पूर्णसंज्ञाधमार्कात् ।
याम्यं त्वाष्ट्रं वैश्वदेवं धनिष्ठार्यम् ज्येष्ठान्त्यं खेर्दग्धमं स्यात् ॥५॥

अन्वय—अर्कात् नन्दा भद्रा नन्दिकाख्या जया रिक्ता भद्रा पूर्णसंज्ञा च अधमाः
(अर्कादेव च) याम्यं, त्वाष्ट्रं, वैश्वदेवं, धनिष्ठा, अर्यम्, ज्येष्ठा, अन्त्यं दग्धमं स्यात् ॥५॥

भाषार्थ—क्रमशः रवि इत्यादि को नन्दा आदि तिथियां अधम होती हैं । इन वारों में भरणी आदि नक्षत्र दग्ध होते हैं । स्पष्ट यह है कि—रवि को नन्दा (१, ६, ११) आदि जो पीछे बता चुके हैं । सोम को भद्रा, मंगल को नन्दा, बुध को जया, शुक्रवार को रिक्ता, शुक्रवार को भद्रा, शनिवार को पूर्णा ये तिथियां अधम हैं । यह तिथियां शुभदा नहीं हैं । रवि, सोम, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनि को क्रमशः भरणी, चित्रा, उत्तराषाढ, धनिष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, ज्येष्ठा, रेवती ये नक्षत्र दग्ध कहे जाते हैं ॥५॥

क्रकच आदि निन्व योग ।

षष्ठ्यादितिथयो मन्दाद्विलोमं प्रतिपद्बुधे ।

सप्तमर्केऽधमाः षष्ठ्याद्यामाश्च रदधावने ॥ ६ ॥

अन्वयः—मन्दात् विलोमं षष्ठ्यादि तिथयोऽधमाः । बुधे प्रतिपद्, सूर्ये सप्तमी चाधमा । षष्ठी आद्या अमा, च रदधावने (रदानां दन्तानां धावनं तस्मिन्) अधमा मताः ॥ ६ ॥

भाषार्थ—शनि, शुक, वृद्धस्पति, बुध, मंगल, सोम, रवि को क्रमशः षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी—एकादशी तिथि हों और सोम रवि को द्वादशी अशुभ है । बुध को प्रतिपद, रविको सप्तमी, हो तो अधम है । षष्ठी, प्रतिपद, अमावस्या इन तिथियों में दातुन नहीं करना चाहिये ॥ ६ ॥

निषिद्ध तिथियां ।

षष्ठ्यष्टमी भूतविधुक्षयेषु नो सेवेत ना तैलपले क्षुरं रतिम् ।
नाभ्यंजनं विश्वदशद्विके तिथौ धात्रीफलैः स्नानमभाद्रिगोष्वसत् ॥ ७ ॥

अन्वयः—ना षष्ठ्यष्टमीभूत विधुक्षयेषु तैलपले क्षुरं रतं नो सेवेत, (किन्तु क्रमशः) विश्वदशद्विके तिथौ अभ्यंजनं नो सेवेत, अभाद्रिगोषु धात्री फलैः स्नानम् नो सेवेत ॥ ७ ॥

भाषार्थ—षष्ठी, अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या, को क्रमशः तैलमर्दन, मांस भक्षण, स्त्री सेवन निषिद्ध है । त्रयोदशी, दशमी, द्वितीया इन तिथियों में उवटन नहीं लगाना चाहिए । अमावस्या, सप्तमी, नवमी, को आंवला लगाकर स्नान करना निषिद्ध है ॥ ७ ॥

दग्ध आदि योग ।

सूर्येशपंचाग्निरसाष्टनन्दा वेदाङ्गसप्ताश्विगजांकशौलाः ।
सूर्याङ्गसप्तोरगगो दिगीशो दग्धाविषाख्याश्च हुताशनाश्च ॥ ८ ॥
सूर्यादिवारे तिथयो भवन्ति मघाविशाखाश्विमूलवह्निः ।
ब्राह्मं करोर्काद्यमघटकाश्च शुभे विवर्ज्या गमने त्ववश्यम् ॥ ९ ॥

अन्वयः—सूर्येशपंचाग्निरसाष्टनन्दाः सूर्यादिवारे तिथयश्चैता दग्धाः, वेदाङ्ग सप्ता-

विषगजांकशैळाः विषाख्याः । सूर्योङ्गस्तोरगगोदिर्गीशाः हुताशना भवन्ति । अर्कात् मवा विशाखा
शिवमूळ वह्नि ब्राह्मं करः यमघण्टका भवन्ति शुभे विषर्ग्याः गमने तु अवश्यम् ॥८॥१॥

भाषार्थः—द्वादशी, एकादशी, पञ्चमी, तृतीया, नवमी, अष्टमी, ये तिथियां क्रमशः
सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनिको हो तो ये तिथियां दग्धातिथिमानो
जाती है । इसी प्रकार चतुर्थी, पष्ठी, सप्तमी, द्वितीया, अष्टमी, नवमी, सप्तमी को
रवि, सोम, मंगल, बुध बृहस्पति, शुक्र, शनि, (क्रमशः) हो तो विषाख्ययोग होता है ।
द्वादशी, पष्ठी, सप्तमी, द्वितीया, नवमी, दशमी, एकादशी को रवि, सोम, मंगल
बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि हो तो हुताशनयोग होता है । रवि, सोम, मंगल, बुध,
बृहस्पति, शुक्र, शनिको क्रमशः मघा, विशाखा, आर्द्रा, मूल, कुत्तिका, रोहिणी,
हस्त, नक्षत्र हो तो यमघण्ट योग होता है प्रत्येक शुभकार्यो में इनका त्याग करना
चाहिये यात्रा में तो अवश्य ही इनका त्याग करे ॥८॥१॥

दग्धादितिथिचक्र ।

रवि	सोम	मंगल	बुध	शुक्र	शनि	वाराः
१२	११	५	३	६	८	६
४	६	७	२	८	९	७
१२	६	७	८	९	१०	११
मघा	विशाखा	पुनर्वसु	मूल	कुत्तिका	रोहिणी	हस्त
						यमघण्ट नक्षत्र

शून्य तिथियां ।

भाद्रे चन्द्रदृशौ नभस्यनलनेत्रे माधवे द्वादशी ।
पौषे वेदशरा इषे दशशिवा मार्गेद्रिनागा मघौ ॥
गोष्ठौ चोभयपक्षगाश्च तिथयः शून्या बुधैः कीर्तिता ।
उर्जाषाढतपस्यशुक्रतपसां कृष्णे शरङ्गाब्धयः ॥१०॥
शक्राः पञ्च सिते शक्राद्रयग्निविश्वरसाः क्रमात् ।

अन्वयः—भाद्रे चन्द्रदृशौ, नभसि अनलनेत्रे, माधवे द्वादशी, पौषे वेदशरी इषे
दशशिवौ मार्गे अद्रिनागौ, मघौ गोष्ठौ, उभय पक्षगाः तिथयः बुधैः शून्याः कीर्तिताः । उर्जा-

षाढतपस्यशुक्लपसां कृष्णे शरद्धाध्यः शून्याः शक्राः पंच च तिथयः शून्याः स्तिरे (शुक्लपक्षे)
क्रमात् शक्राद्रयग्निरिवरसाः शून्याः ॥१०॥

भाषार्थः—भाद्रकी प्रतिपद द्वितीया, आषाढकी तृतीया द्वितीया, वैशाख की द्वादशी, पौषकी चतुर्थी, पञ्चमी, आश्विन की दशमी, एकादशी, अग्रहन की सप्तमी, अष्टमी, चैत्रकी नवमी अष्टमी शून्य तिथि हैं। इन महीनों की शुक्ल कृष्ण दोनों पक्षकी तिथियां शून्य होती हैं। कार्तिक की पञ्चमी, (कृष्ण) आपाढ़ की षष्ठी (कृष्ण) फाल्गुन की चतुर्थी (कृष्ण) ज्येष्ठ की चतुर्दशी (कृष्ण) माघकी पञ्चमी (कृष्ण) ये तिथियां शून्य हैं। इसमें शुभ कार्य नहीं करना चाहिये ॥१०॥

तिथिनक्षत्रयुक्त दोष ।

तथा निधं शुभे सार्पं द्वादश्यां वैश्वमादिमे ॥ ११ ॥

अनुराधाद्वितीयायां पञ्चम्यां पित्र्यभं तथा ।

ज्युत्तराश्च तृतीयायामेकादश्यां च रोहिणी ॥ १२ ॥

स्वातीचित्रे त्रयोदश्यां सप्तम्यां हस्तराक्षसे ।

नवम्यां कृत्तिकाष्टम्यां पूषाषष्ठ्यां च रोहिणी ॥ १३ ॥

अन्वयः—तथा द्वादश्यां सार्पं निधं, आदिमे वैश्वदेवं, द्वितीयायां अनुराधा, पञ्चम्यां पित्र्यभं (मघा) तृतीयायां ज्युत्तरा, एकादश्यां रोहिणी, त्रयोदश्यां स्वाती चित्रे, सप्तम्यां हस्त राक्षसे, नवम्यां कृत्तिका, अष्टम्यां पूषा, षष्ठ्यां रोहिणी ।

भाषार्थः—द्वादशी को श्लेषा, प्रतिपद को पूर्वाषाढ़, द्वितीया को अनुराधा, पंचमी को मघा, तृतीयाको उत्तरा भाद्रपद, एकादशी को रोहिणी, त्रयोदशी को स्वाती और चित्रा, सप्तमी को हस्त, मूल, नवमी को कृत्तिका, अष्टमी को पूर्वाभाद्रपद षष्ठी को रोहिणी, इन तिथियों के साथ ये नक्षत्र आते हैं तो ये नक्षत्र तिथि निध है इनमें किसी भी शुभ कार्य को नहीं करना चाहिये ॥११॥१२॥१३॥

शून्य नक्षत्र ।

कदास्रभे त्वाष्ट्रवायू विश्वेज्यौ भगवासवौ ।

वैश्वश्रुती पाशिपौणे अजपादग्निपित्र्यभे ॥१४॥

चित्राद्वीशौ शिवाश्वयुक्ताः श्रुतिमूले यमेन्द्रमे ।
चैत्रादिमासे शून्याख्यास्तारा वित्तविनाशदाः ॥१५॥

अन्वयः—चैत्रादि मासेषु, क्रमशः कदास्तमे, त्वाष्ट्रवायु, विदेव्यौ, भगवासवौ, ईशदेव्यौ, वाशिपौष्णे, अजपात्, अग्निपित्र्यमे, चित्राद्वीशौ, शिवाश्वयुक्ताः, श्रुतिमूले, यमेन्द्रमे एताः शून्याख्याः वित्तविनाशदाः ताराः सन्ति ॥१४॥१५॥

भाषार्थः—चैत्र में रोहिणी, आश्विन, वैशाख में चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठ में उत्तरा-
षाढ़, पुष्य आषाढ़ में पूर्वाफाल्गुनी धनिष्ठा, आश्विन में उत्तराषाढ़, श्रवण भाद्रपद
में शतभिष रेवती, आश्विन में पूर्वा भाद्रपद, कार्तिक में कृत्तिका, मघा, अग्रहन
में चित्रा विशाखा, पौषमें आर्द्रा आश्विनो हस्त, माघ में श्रवण मूल, फाल्गुन में
भरणी ज्येष्ठा, पूर्वोक्त मासों में पूर्वोक्त नक्षत्र शून्य माने जाते हैं अतः इन मासों के
इन नक्षत्रों में किसी शुभ कार्य को न करे वर्यो कि इन मासों के इन नक्षत्रों में काम
प्रारंभ करने से धन हानि होती है ॥१४॥१५॥

शून्य राशि ।

घटो भूषो गौर्मिथुनं मेषकन्यालितौलिनः ।
धनुः कर्को मृगः सिंहश्चैत्रादौ शून्यराशयः ॥ १६ ॥

अन्वयः—चैत्रादौ घटः, भूषः, गौः, मिथुनं, मेषकन्यालितौलिनः, धनुः, कर्कः, मृगः,
सिंहः, शून्यराशयः मताः इति शेषः ॥१६॥

भाषार्थः—चैत्र में कुम्भ, वैशाख में मीन, जेष्ठ में वृष, आषाढ़ में मिथुन, आश्विन
में मेष, भाद्रों में कन्या, आश्विन में वृश्चिक, कार्तिक में तुला अग्रहन में धन, पौष में
कर्क, माघ में मकर, फाल्गुन में सिंह, इस प्रकार इन मासों में ये राशियां शून्य
होती हैं अतः इनमें किसी शुभ कार्य को नहीं करना चाहिए ॥ १६ ॥

विषम तिथियों में दग्ध लग्न ।

पक्षादितस्त्वोजतिथौ घटैणौ मृगेन्द्रनक्रौ मिथुनांगने च ।
चापेन्दुमे कर्कहरीहयान्त्यौ गोन्त्यौ च नेष्टे तिथिशून्यलग्ने ॥१७॥

अन्वयः—पक्षादितः ओजतिथौ, वटैणौ, मृगेधनक्रौ, मिथुनाङ्गने, चापेन्दुमे, कर्कहरी, हयान्त्यौ, गोन्त्यौ, तिथिशून्यलग्ने, अतो नेष्टे ॥ १७ ॥

भाषार्थ—प्रतिपद को तुला मकर, तृतीया को सिंह मकर, पञ्चमी को मिथुन कन्या, सप्तमी को धन कर्क, नवमी को कर्कसिंह, एकादशी को धनमीन, त्रयोदशी को वृषमीन इन तिथियों में ये राशियाँ शून्य होती हैं अतः इन राशियों में किसी शुभ कार्य का करना हानि कारक है ॥ १७ ॥

पूर्वोक्त दोषों का परिहार ।

तिथयो मासशून्याश्च शून्यलग्नानि यान्यपि ।

मध्यदेशे विवर्ज्यानि न दूष्याणीतरेषु च ॥ १८ ॥

पङ्ग्वन्धकाणलग्नानि मासशून्याश्च राशयः ।

गौड़मालवयोस्त्याज्या अन्यदेशे न गर्हिताः ॥ १९ ॥

अन्वयः—मासशून्याः तिथयश्च यानि अपि शून्यलग्नानि (तानि) मध्यदेशे विवर्ज्यानि इतरेषु च नैव दूष्याणि, पङ्ग्वन्धकाण लग्नानि मास शून्याश्चराशयः गौड़मालवयोस्त्याज्याः अन्यदेशे न गर्हिताः ॥ १८ ॥ १९ ॥

भाषार्थ—मासशून्य और शून्य लग्न जो पीछे बताए गए हैं वे केवल मध्यदेश में ही निन्दनीय और दुष्ट हैं मध्य देश से इतर देशों के वास्ते ये निन्दनीय नहीं हैं । पङ्गु, अंध इत्यादि लग्न जो आगे बतलावेंगे तथा मास शून्य ये केवल गौड़ और मालव देश में त्याज्य हैं । अन्य देशों में निन्दनीय नहीं हैं ॥ १८ । १९ ॥

वर्जयेत्सर्वकार्येषु हस्तार्क पञ्चमीतिथौ ॥

भौमाश्विनी च सप्तम्यां षष्ठ्यां चैन्द्रेन्दवं तथा ॥ २० ॥

बुधानुराधामष्टम्यां दशम्यां भृगुरेवतीम् ॥

नवम्यां गुरुपुष्यं चैकादश्यां शनिरोहिणीम् ॥ २१ ॥

अन्वयः—सर्वकार्येषु पञ्चमी तिथौ हस्तार्क, सप्तम्यां भौमाश्विनी, षष्ठ्यां चैन्द्रेन्दवं, अष्टम्यां बुधानुराधा, दशम्यां भृगुरेवतीम्, नवम्यां गुरुपुष्यं, एकादश्यां, शनिरोहिणीम्, वर्जयेत् ॥ २० ॥ २१ ॥

भाषार्थ—प्रत्येक कार्यों में एक तिथि मिलित ये नक्षत्र और दिन त्याज्य हैं ।
चञ्चमी को हस्तनक्षत्र रवि, सप्तमी को अश्विनी मङ्गल, अष्टमी को अनुराधा बुध,
दशमी को रेवती शुक्र, नवमी को पुष्य गुरुवार, एकादशी को रोहिणी शनि, ये वर्ज
नीय है इनमें त्रिपुंकर योग होता है ॥२०॥ २१॥

गृह प्रवेश में वर्जनीय ।

गृहप्रवेशे यात्रायां विवाहे च यथाक्रमम् ।

भौमाश्विनी शनौ ब्राह्मं गुरौ पुष्यं विवर्जयेत् ॥२२॥

अन्वयः—यथाक्रमम् गृहप्रवेशे यात्रायां विवाहे च भौमाश्विनी, शनौ ब्राह्मं गुरौ पुष्यं
विवर्जयेत् ॥२२॥

भाषार्थ—गृहप्रवेश (नूतन गृह में जाना) में मङ्गल अश्विनी ये दिन नक्षत्र एकत्र
पड़े तो वह वर्जित है अर्थात् इस प्रकार एकत्र होने पर नूतन गृह में प्रवेश न करे ।
तथा शनि रोहिणी एकत्र होने पर यात्रा न करे । और गुरुवार पुष्य दोनों मिलने
पर विवाह निषिद्ध है ॥ २२ ॥

२८ योग ।

आनन्दाख्यः कालदण्डश्च धूम्रो धाता सौम्यो ध्वांक्षकेतुक्रमेण ।
श्रीवत्साख्यो वज्रकं मुद्गरश्च छत्रं मित्रं मानसं पद्मलुम्बौ ॥२३॥
उत्पातमृत्यू किल काणसिद्धी शुभोऽमृताख्यो मुसलं गदश्च ।
मातंगरक्षश्चरसुस्थिराख्याः प्रवर्धमानाः फलदाः स्वनाम्ना ॥२४॥

अन्वयः—क्रमेण आनन्दाख्यः, कालदण्डः, धूम्रः धाता, सौम्यः ध्वांक्षकेतू, श्रीवत्साख्योः
वज्रकं मुद्गरः, छत्रं, मित्रं, मानसं, पद्मलुम्बौ, उत्पातमृत्यू किल (निश्चयेन) काण सिद्धी,
शुभः, अमृताख्यः, मुसलः, गदः, मातङ्गरक्षः चर सुस्थिराख्यप्रवर्धमानाः, स्वनाम्ना फलदाः
मता इति शेषः ॥२३॥ २४॥

भाषार्थ—क्रमशः ये २८ योग होते हैं जिस योग का जैसा नाम है वैसा ही फल
भी वह देता है । वे योग ये हैं आनन्द, कालदण्ड, धूम्र, धाता, सौम्य, ध्वांक्ष,
केतु, श्रीवत्स, वज्र, मुद्गर, छत्र, मित्र, मानस, पद्म, लुम्ब, उत्पात, मृत्यु, काण,
सिद्धि, शुभ, अमृत, मुसल, गदा, मातंग, रक्ष, चर, सुस्थिर, प्रवर्धमान ॥२३॥ २४॥

क्र.सं.	योग	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	फलम्
१	आनन्द	अ.	मृग	श्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ. पा.	शत	सिद्धि
२	कालदंड	भर.	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अ०	पू० भा.	मृत्यु
३	धूम्र	कृत्ति	पुनर्वसु	पू. फा.	स्वाती	मूल	श्रव०	उ० भा.	असुख
४	धाता	रोहि.	पुष्य	उ. फा.	विशाखा	पू० पा०	ध०	रेवती	सौभाग्य
५	सौम्य	मृगशि.	श्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ० पा०	श०	अश्वि	बहुसुख
६	ध्वांक्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	पू० भा	भरणी	धनक्षय
७	ध्वज	पुनर्व.	पूर्वाफा	स्वाती	मूल	श्रवण	उ० भा	क०	सौभाग्य
८	श्रीवत्स	पुष्य	उ. फा.	विशा.	पू. पा.	धनिष्ठा	रे०	रो०	सौम्य
९	वज्र	श्लेषा	हस्त	अनु.	उ. पा.	शत	अ०	मृग०	क्षय
१०	मुद्गर	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजि	पू० भा	भ०	आर्द्रा	ल०क्ष०
११	छत्र	पू. फा.	स्वाती	मूल	श्रवण	उ. पा०	क०	पुनर्वसु	राजस
१२	मित्र	उ. फा.	विशाखा	पू. पा.	धनिष्ठा	रेवती	रो०	पुष्य	पुष्टि
१३	मानस	हस्त	अनुराधा	उ. पा.	शत	अश्विनी	मृग	श्लेषा	सौभाग्य
१४	पञ्चाख्य	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि	पू. भा.	भरणी	आ०	मघा	धनागम
१५	लुंबक	स्वाती	मूल	श्रवण	उ. भा.	कृत्तिका	पु०	पू० फा	धनक्षय
१६	उत्पात	विशा	पूर्वाषाढ़	धनि०	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ० फा	प्राणनाश
१७	मृत्यु	अनु.	उ. पा.	शत०	अश्विनी	मृग	श्ले०	हस्त	मृत्यु
१८	काण	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू. भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	कलेश
१९	सिद्धि	मूल	श्रवण	उ. भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू० फा	स्वा०	का-सि
२०	शुभ	पूर्वा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ. फा.	विशा	कल्याण
२१	अमृत	उ. पा.	शतभिषा	अश्वि	मृग	श्लेषा	हस्त	अनु	राजसं०
२२	मुसल	अभि	पूर्वाभाद्र	भरणी	आर्द्रा	मघा	चि०	ज्येष्ठा	धनक्षय
२३	गद	श्रवण	उत्तराभा	कृत्ति	पुनर्वसु	पू० फा	स्वा.	मूल	अ० वि-
२४	मातंग	धनि	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ० फा	वि०	पू० पा	कु० वृ०
२५	राक्षस	शत०	अश्विन	मृगशि,	श्लेषा	हस्त	अ०	उ. पा.	महाकष्ट
२६	चर	पू. भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्ये०	अभि	का० सि
२७	स्थिर	उ. भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू० फा०	स्वाती	मूल	श्रवण	गृहारंभ
२८	प्रवर्द्धमान	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ० फा०	विशा	पू० पा	धनि०	विवाह

उक्त योगों को जाननेकी विधि ।

दासादके मृगादिदौ सापाद्वौमे कराद् बुधे ।

मैत्राद् गुरौ मृगौ वैश्वाद्गण्या मन्दे च वारुणात् ॥ २५ ॥

अन्वयः—अर्के दासात्, इन्दौमृगात् भीमे सापात्, बुधे करात्, गुरौ मैत्रात्, मृगौ वैश्वात्, मन्दे च वारुणात् गण्याः ॥ २५ ॥

भाषार्थ—कब कौन योग होगा इसके जानने की विधि यह है कि रविवार को अश्विनी से सोमवार को मृगशिरा से, मङ्गलवार को श्लेषा से, बुधवार को हस्त से, बृहस्पतिवार को अनुराधा से, शुक्रवार को उत्तराषाढ़ से, शनिवार को शतभिषा से, अभिजित सहित नक्षत्रों को गिन डाले वह जिस संख्या का नक्षत्र होगा वही योग उस दिन समझना चाहिए । जैसे—रविदिन में श्रवण नक्षत्र है तो उनको मिलाकर गिन ने, से २३ नक्षत्र हुआ तो उस दिन २३ वां योग होगा अतः उस दिन गद् योग होगा ॥ २५॥

ध्वाक्षे वज्रे मुद्गरे चेप् नाड्यो वज्या वेदाः पञ्चलुम्बे गदेश्वाः ।
धूम्रे काणे मौशल्ले भूद्वयं रक्षो मृत्यूत्पातकालाश्च सर्वे ॥ २६ ॥

अन्वयः—ध्वाक्षे वज्रे मुद्गरे च इषुनाड्यः, पञ्चलुम्बे वेदाः गदे अश्वाः, धूम्रे, काणे, मौशल्ले (क्रमशः) भूः, द्वयं, द्वे, रक्षो मृत्यूत्पातकालाः च सर्वे वज्या ॥ २६ ॥

व्याख्या—ध्वाक्ष, वज्र मुद्गर योग में पांच घड़ी निषिद्ध है । पञ्च तथा लुम्ब योग में चार घड़ी वर्जनीय है । गद् योग में सात नाड़ी अश्रेष्ठ हैं । धूम्र, काण, मुशल्ल योग में क्रमशः एक, दो, दो घड़ी निषिद्ध है । रक्ष, मृत्यु, उप्तात, काल योग में समस्त अर्थात् पूरी ६० घड़ी वर्जनीय है ॥ २६ ॥

सूर्यभाद्रे दगोतर्कदिग्विश्वनखसम्मिते ।

चन्द्रर्क्षे रवियोगाः स्युर्दोषसंघविनाशकाः ॥ २७ ॥

अन्वयः—सूर्यभात् वेद गो तर्क दिग् विश्व नख सम्मिते चन्द्रर्क्षे दोष संघविनाशकाः रवियोगाः स्युः ॥ २७ ॥

भाषार्थ—जिस नक्षत्र के सूर्य हों उससे दिन नक्षत्र यदि ४, ९, ६, १०, १३, अथवा बीसवें पड़े तो उस दिन रवियोग होता है जो योग समस्त दोष समूह को नाश करता है ॥ २७ ॥

सब वारों में सिद्धयोग ।

सूर्येऽर्कमूलोत्तरपुष्यदासं चन्द्रे श्रुतिब्राह्मशशीज्यमैत्रम् ।
भौमेश्वहिर्बुध्न्यकृशानुसार्पं ज्ञे ब्राह्ममैत्रार्ककृशानुचांद्रम् ॥ २८ ॥
जीवंत्यमैत्राश्वदितीज्यधिष्ण्यं शुक्रेऽन्त्यमैत्राश्व्यदिति श्रवोभम् ।
शनौ श्रुतिब्रह्मसमीरभानि सर्वार्थसिद्ध्यै कथितानि पूर्वेः ॥ २९ ॥

अन्वयः—पूर्वैः, सूर्ये अर्क मूलोत्तरपुष्यदासं 'चन्द्रे' श्रुति ब्राह्म शशीज्यमैत्रम्, भौमे, अश्वहिर्बुध्न्य कृशानु सार्पं, ज्ञे ब्राह्ममैत्रार्ककृशानुचांद्रम्, जीवे अन्य मैत्राश्वदितीज्यधिष्ण्यं, शुके अन्यमैत्राश्वदिति श्रवोभम्, शनौ श्रुतिब्रह्मसमीरभानि सर्वार्थसिद्ध्यै कथितानि ॥ २८ ॥ २९ ॥

भाषार्थ—पूर्व आचार्यों ने रवि को हस्त, मूल, तीन उत्तरा, पुष्य, अश्विनी के होने से सिद्धयोग कहा है । इसी प्रकार सोमवार को श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा पुष्य, अनुराधा, मङ्गल को अश्विनी, श्लेषा, उत्तरा भाद्रपद, कृत्तिका, बुध को रोहिणी अनुराधा, हस्त, कृत्तिका, मृगशिरा, बृहस्पति को रेवती, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य शुक्र को रेवती अश्विनी, अनुराधा, पुनर्वसु, श्रवण, शनिको श्रवण, रोहिणी, स्वाती के होने पर (दिन, और नक्षत्र) दोनों एक साथ मिलने पर सिद्धि योग कहा है ॥ २८ । २९ ॥

उत्पात मृत्यु काण और सिद्धियोग ।

द्वीशात्तोयाद्वासवात्पौष्णभाच्च ब्राह्मात्पुष्यादर्यमर्क्षाच्चतुर्भैः ।
स्यादुत्पातो मृत्युकाणौ च सिद्धिर्वा रैर्काद्येतत्फलं नामतुल्यम् ॥ ३० ॥

अन्वयः—द्वीशात् तोयात् वासवात् च पौष्णभात् ब्राह्मात् पुष्यात् अर्यमर्क्षात् अर्कादि-
चारे क्रमशः उत्पातः मृत्युकाणौ सिद्धिश्च स्यात् तत्फलं नामतुल्यं भवतीति शेष ॥ ३० ॥

भाषार्थ—यदि रविवार को विशाखा, अनुराधा, पुष्य नक्षत्र होता है तो क्रमशः उत्पात, मृत्यु, काण सिद्धि नाम योग होते हैं । इसी प्रकार सोमवार को पूर्वाषाढा-
दि चार नक्षत्रों के होने से उत्पातादि चार योग होते हैं । और मङ्गल को अश्लेषादि

४ नक्षत्रों के, बुध को रेवती आदि के बृहस्पति को रोहिणी आदि ४ के, शुक्रवार को पुष्यादि ४ के, शनिको उत्तरा फाल्गुनी आदि ४ के होने से पुर्वोक्ति उतातादि ४ योग होता है ॥ ३० ॥

देशभेदानुसार दुष्टयोगपरिहार ।

कुयोगास्तिथिवारोत्थास्तिथिभोत्था भवारजाः ।

हूणवंगखशेष्वेव वज्यास्त्रितयजास्तथा ॥ ३१ ॥

अन्वयः—तिथिवारोत्थाः, तिथिभोत्थाः, भवारजाः त्रितयजाः (तिथिजावारजानक्षत्रजाश्च) कुयोगाः हूणवंग खशेष्वेव, वज्याः ॥ ३१ ॥

भाषार्थ—पूर्व में तिथि वारोत्पन्न, तिथि नक्षत्रोत्पन्न, नक्षत्र वारोत्पन्न जो तीन प्रकार के कुयोग बताए गए हैं वे हूण, वङ्ग, खश इन देशों में ही वर्जनीय है और में नहीं ॥ ३१ ॥

सर्व शुभ कार्यों में वर्जित दोष ।

सर्वस्मिन्विधुपापयुक्तनुलवावर्धे निशाहोर्ध्वी ।

त्र्यंशवै कुनवांशकं ग्रहणतः पूर्व दिनानां त्रयम् ॥

उत्पातग्रहतोद्ग्रहंश्च शुभहोत्पातैश्च दुष्टं दिनम् ।

षण्मासं ग्रहभिन्नं त्यज शुभे यौद्धं तथोत्पातभम् ॥ ३२ ॥

अन्वयः—सर्वस्मिन् विधुपापयुक् तनुल्वौ, निशाहोर्ध्वे (रात्र्यर्ध्वे दिनार्ध्वे च) घटी त्र्यंशं कुनवांशकं, ग्रहणतः पूर्व दिनानां त्रयं, उत्पातग्रहतोः द्रव्यहंश्च, शुभहोत्पातैश्च दुष्टं दिनं, ग्रहभिन्नं यौद्धं तथा उत्पातभं षण्मासं त्यज ॥ ३२ ॥

भाषार्थ—प्रत्येक शुभ कार्यों में चन्द्र तथा पापीग्रह से युक्त लग्न तथा लग्न नवांश को त्याज्य समझना चाहिए । अर्धरात्रि और मध्याह्न के प्रथम १०, १० पल तथा पापग्रह नवांशक, ग्रहण के पूर्व तीन दिन वर्जनीय (शुभ कार्यों में) समझना चाहिए एवं उतात (भूकम्प, तथा आकाशीय उतात) उपद्रव में तीन दिन आगे एक उपद्रव दिन इस प्रकार ७ दिन वर्जनीय समझे । ग्रहोपद्रव से भिन्न ग्रहों में (भौम दिव्य) उतातों में ६ मास त्याज्य समझे ये उतातज दिन सर्व शुभ कार्य प्रारम्भ में निन्दनीय है ॥ ३२ ॥

नेष्टं ग्रहर्क्षं सकलार्धपादग्रासे क्रमात्तर्कगुणेन्दुमासान् ।
पूर्वं परस्तादुभयोस्त्रिघसा ग्रस्तेस्तगे वाभ्युदितेऽर्धखण्डे ॥३३॥

अन्वयः—ग्रहर्क्षं सकलार्धपादग्रासे क्रमात् तर्कगुणेन्दुमासान् नेष्टं ग्रस्तेऽस्तगे पूर्वं पर-
स्तात् त्रिघसा (नेष्टम्) अभ्युदिते अर्धखण्डे वा ग्रस्ते त्रिघसा नेष्टा इति पूर्वं सम्बन्धः ॥३३॥

भाषार्थ—सूर्य अथवा चन्द्र के ग्रहण में नक्षत्र से छः मास किन्तु समस्त ग्रास में
और अर्धग्रास में नक्षत्र (ग्रहण) से ३ मास और चतुर्थीश ग्रास में एकमास सब
शुभ कार्यों में त्याज्य है। ग्रस्तास्त होने पर अथवा ग्रस्तोदय होने पर क्रमशः पूर्व पर
३ दिन त्याज्य है। अर्ध ग्रास में पहिले तथा आगे के तीन दिन उत्तम कार्यों के वा-
स्ते निन्दनीय है ॥३३॥

सामान्यतः वर्ज्यं पंचांगदूषणम् ।

जन्मर्क्षमासतिथयो व्यतिपातभद्रावैधृत्यमापितृदिनानि तिथिक्षयर्क्षी ।
न्यूनाधिमासकुलिकप्रहरार्द्धपातविष्कुम्भवज्रघटिकात्रयमेववर्ज्यम् ॥३४॥

परिधार्धं पंच शूले षट् च गंडाति गंडयोः ।

व्याघाते नव नाड्यश्च वर्ज्याः सर्वेषु कर्मसु ॥ ३५ ॥

अन्वयः—सर्वेषु कर्मसु जन्यर्क्षमास तिथयः, व्यतिपातभद्रावैधृत्यमा पितृ दिनानि, तिथि-
क्षयर्क्षी, त्याज्याः। न्यूनाधिमासकुलिक प्रहरार्द्धपात विष्कुम्भवज्रघटिकात्रयमेव (वर्ज्यम्)
परिधार्धं (वर्ज्यम्) शूले पंच (वर्ज्या) गंडातिगंडयोः षट्, व्याघाते नव नाड्यः वर्ज्याः ३४।३५

भाषार्थ—प्रत्येक शुभ कार्यों में जन्म नक्षत्र, जन्म मास, जन्म तिथि, व्यतिपात,
भद्रा वैधृति, अमावस्या, पितृ श्राद्धका दिन, तिथिक्षय, तिथिवृद्धि, न्यून मास अधि
मास, कुलिक, अर्धयाम, वार वेला, महापात वर्जित हैं। विष्कुम्भवज्र के आदितीन
घड़ी, शूलकी ५ घड़ी गंड, अतिगंड की छः घड़ी, व्याघात योग को आदि नव घड़ी
वर्जनीय हैं ॥३४। ३५॥

पक्ष रंश्च तिथि और वर्ज्य घटिका ।

वेदांगाष्टनवार्केद्रपक्षरन्ध्रतिथौ त्यजेत् ।

वस्वंकमनुतत्वाशाः शरा नाडीः पराः शुभाः ॥३६॥

अन्वयः—वेदाङ्गाष्टनवार्केन्द्रपक्षरन्ध्रतिथौ वस्वङ्कमनुतत्वाशाः शराः नाडीः त्यजेत् । पराः नाडीः शुभाः ॥३६॥

भाषार्थ—चबुथी, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, द्वादशी, चतुर्दशी तिथियों की क्रमशः ८, ६, १४, १५, ५, घड़ी त्याज्य है और अवशिष्ट घड़ियां शुभ फल प्रद हैं ॥३६॥

कुलिकादि दोष ।

कुलिकः कालवेला च यमघण्टश्च कंटकः ।

वाशद्विध्ने क्रमान्मन्दे बुधे जीवे कुजे क्षणः ॥३७॥

अन्वयः—वारात् (उपस्थितवारात्) मन्दे, बुधे, जीवे, कुजे, द्विध्ने, (जातेतिशेषः) कुलिकः, कालवेला, यमघण्टः च कण्टकः जायत इतिशेषः ॥३७॥

भाषार्थ—उपस्थित वारों से शनिवार तक गिन कर उस अंक को द्विगुण करो जो अंक होगा उस अंक के मुहूर्त को कुलिक और बुधवार तक गिन कर द्विगुण करने से कालवेला और गुरुवार तक द्विगुण करके कंटक योग होता है ॥३७॥

कुलिकादि मुहूर्त ।

	रवि	सोम	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
कुलिक	१४	१२	१०	८	६	४	२
कालवेला	८	६	४	२	१४	१२	१०
यमघण्ट	१०	८	६	४	२	१४	१२
कंटक	६	४	२	२	१२	१०	८

रवि आदि में वारों दुर्मुहूर्त ।

सूर्य षट्स्वरनागदिङ् मनुमिताश्चन्द्रेब्धि षट्कुंजराः ।

कार्कादिश्वपुरन्दराः क्षितिसुते द्व्यब्ध्यग्नितर्का दिशः ॥

सौम्ये द्व्यब्धिगजांकदिङ् मनुमिता जीवे द्विषट् भास्कराः ।

शाक्राख्यास्तितथयः कलाश्च भृगुजे वेदेषुतर्कग्रहाः ॥३८॥
 दिग्भास्करा मनुमिताश्च शनौशशिद्विनागादिशोभवदिवाकरसं-
 मिताश्च ॥ दुष्टक्षणाः कुलिककण्टककालवेलाः स्युश्चार्धयाम
 यमघटगताः कलाशाः ॥ ३९ ॥

अन्वयः—सूर्ये षट् स्वर नागदिङ् मनुमिताः, चन्द्रे-अधिषट् कुञ्जराकां विश्वपुरन्दराः क्षिति-
 सुतेद्वयव्यग्नितर्का दिशः, जीवे-द्विषड् भास्कराः शक्राख्यास्तितथयः कलाश्च, भृगुजे वेदेषुतर्कग्रहाः
 दिग्भास्करा मनुमिताश्च, शनौ शशिद्विनागादिशोभवदिवाकरसंमिताश्च, (निघाः इति) दुष्ट-
 क्षणाः कुलिक कण्टक कालवेलाः अर्धयाम यमघटगताः कलाशाः ।

भाषार्थ—नीचे लिखे वारों में इतना मुहूर्त शुभ कार्य में निन्दित है । रवि को
 ६, ७, ८, १०, १४ वां मुहूर्त इस प्रकार सोमवार को ४, ६, ८, ९, १२, १३, १४,
 मङ्गलवार को २, ३, ४, ६, १० बुधवार को २, ४, ८, ९, १०, १४ शुक्रवार को २, ६,
 १२, १४, १५, १६ शुक्रवार को ४, ५, ६, ९, १०, १२, १४ शनिवार को १, २, १०,
 ११, १२, विशेषतः यह है कि इन मुहूर्त में से कोई मुहूर्त तो—दुष्टक्षणा और कोई
 कुलिक, कण्टक, कालवेला होते हैं कोई अर्धयाम, यमघट होते हैं दिन के षोडश
 को यहां पर मुहूर्त की संज्ञा बनाई गई वैसे तो मुहूर्त २ घड़ी का होता है ॥३८॥३९॥

होलाष्टकवर्णन ।

विपाशौरावतीतीरे शतुद्रयाश्च त्रिपुष्करे ।
 विवाहादिशुभे नेष्टं होलिकाप्राग्दिनाष्टकम् ॥४०॥

अन्वयः—विपाशौरावतीतीरे शतुद्रयाश्च, त्रिपुष्करे च, विवाहादि शुभे (कर्मणि) होलिका
 प्राग्दिनाष्टकम् नेष्टम् ॥४०॥

भाषार्थ—विपाशा, इरावती तथा शतद्र नदी के उभय भागों में तथा त्रिपुष्कर
 देश में होलिका दहन के आठ दिन पूर्व शुभ कार्यों का करना अशुभ है इससे अन्य
 नदियां तथा अन्यदेशों में शुभकार्यों का करना न करना स्वेच्छा पर ही निर्भर है ॥४०॥

दुष्ट योगों का परिहार ।

मृत्युककचदग्धादीनिन्दौ शस्ते शुभान् जगुः ।
 कैचिद्यामोत्तरं चान्ये यात्रायामेव निन्दितान् ॥४१॥

अन्वयः—इन्दौ शस्ते मृत्युककचदग्धादीन् शुभान् जगुः । केचित् यामोत्तरं केचित् यात्रा-
यामेव निन्दितम् इत्याहुः ॥४१॥

भाषार्थ—चन्द्र के शुभ होने पर मृत्यु, ककच, दग्ध, आदि योगों को आचार्यों
ने शुभ बताया है । किसी आचार्य ने १ प्रहर दिन चढ़े तक ही अयोग कहा है बाद
प्रहर के बुरे योग भी शुभ हो जाते हैं । किसी २ आचार्य ने केवल यात्रा में अयोगों को
बुरा बताया है शेष कार्यों में अयोग भी शुभ योग ही हैं ॥ ४१ ॥

**अयोगे सुयोगोपि चेत्स्यात्तदानीमयोगं निहत्येव सिद्धिं तनोति ।
परे लग्नशुद्ध्या कुयोगादिनाशं दिनाद्धोत्तरं विष्टिपूर्वं च शस्तम् ४२**

अन्वयः—अयोगे सुयोगोऽपि चेत् स्यात् तदानीं एषः अयोगं निहत्य सिद्धिं तनोति ।
परे लग्नशुद्ध्या कुयोगादिनाशं (कथयन्तीति शेषः) विष्टिपूर्वं (भद्रादि) दिनाद्धोत्तरं शस्तं
(शुभमित्याहुः) ॥४२॥

भाषार्थ—मृत्यु इत्यादि अयोगों के दिन सिद्धि आदि सुयोग आपड़े तो सिद्धि-
योग कुयोग को हटाकर सुयोग उत्पन्न करता है । किसी आचार्य का यह कहना है
कि लग्न शुद्धि से कुयोगों का नाश होता है । भद्रा आदि दोपहर के बाद शुभ प्रह-
र होते हैं ॥ ४२ ॥

स्वना—भद्रा—आदि शब्द से और बुरे योग विशेषकर व्यतीपात प्रत्यरि तारा
जन्म नक्षत्र आदि की गणना है ।

भद्रा के प्रवेश का काल ।

**शुक्ले पूर्वार्धेऽष्टमी पञ्चदशयोर्भद्रैकादश्यां स्याच्चतुर्थ्यां परार्धे ।
कृष्णेत्यार्धे स्यात्तृतीया दशम्योः पूर्वे भागे सप्तमीशंभुतिथ्योः ॥४३॥**

अन्वयः—शुक्ले—अष्टमीपञ्चदशयोः पूर्वार्धे, एकादश्यां चतुर्थ्यां परार्धे, कृष्णे-तृतीया-
दशम्योः अन्त्यार्धे, सप्तमी चतुर्दशयोः पूर्वार्धे भद्रा स्यात् ॥४३॥

भाषार्थ—प्रत्येक मास के शुक्ल पक्ष के अष्टमी पूर्णिमा को प्रथम दो भागों में
और एकादशी चतुर्थी को अन्तिम २ भागों में भद्रा होती है इसी प्रकार प्रत्येक मास
के कृष्ण पक्ष के तृतीया दशमी के अन्तिम दो भागों में और सप्तमी तथा चतुर्दशी
को प्रथम २ भागों में भद्रा होती है ॥ ४३ ॥

भद्रा के मुख और पुच्छ का विचार ।

पञ्चद्वयद्रि कृताष्टरामरसभूयामादिघटय शराः ।

विष्टेरास्यमसद्गजेन्द्रसरामाद्रयशिववाणाब्धिषु ॥

यामेष्वन्त्यघटीत्रयं शुभकरं पुच्छं तथा वासरे ।

विष्टिस्तिथ्यपरार्धजा शुभकरी रात्रौ तु पूर्वार्धजा ॥४४॥

अन्वयः—पञ्चद्वयद्रि कृताष्ट राम रसभू यामादि शराः घटयः विष्टेरास्यम्, असत् गजेन्द्रसरामाद्रयशिव वाणाब्धिषु यामेषु अन्त्य घटीत्रयं पुच्छं शुभकरं, तथा वासरे तिथ्यपरार्धजा विष्टिः शुभकरी तु रात्रौ पूर्वार्धजा विष्टिः शुभकरी भवतीति शेषः ॥४४॥

भाषार्थ—भद्रा का मुख पुच्छादि विभाग इस प्रकार है—चतुर्थी आदि तिथियों की आदि पांच नाड़ियाँ भद्रा का मुख हैं, स्पष्ट यह है कि चतुर्थी को पाचवें प्रहर की आदि पाँच नाड़ियाँ भद्रा मुख हैं इसी प्रकार अष्टमी के द्वितीय प्रहर की ५ नाड़ियाँ, एकादशी के सातवें प्रहर की ५ नाड़ियाँ पूर्णिमा के चौथे प्रहर की ५ नाड़ियाँ भद्रा मुख हैं । यह शुभ कार्यों में अशुभप्रद है । इसी प्रकार चतुर्थी तिथि के आठवें प्रहर की अन्तिम ३ नाड़ियाँ, पुच्छ है, अष्टमी १ प्रहर की ३ नाड़ियाँ एकादशी के छठे प्रहर की अन्त्य ३ नाड़ियाँ, पूर्णिमा के तृतीय प्रहर की ३ नाड़ियाँ अशुभ हैं वह भद्रा पुच्छ हैं । तृतीया के सातवें प्रहर की, सप्तमी के द्वितीय प्रहर की, दशमी के पांचवें प्रहर की, १४ के चौथे प्रहर की अन्त्य ३ नाड़ियाँ पुच्छ हैं । भद्रा यदि तिथि के उत्तरार्ध में दिन समय में हो तो भद्रा शुभ है । इसी प्रकार तिथि के उत्तरार्ध में होने वाली भद्रा यदि रात्रि में हो तो शुभ है ॥ ४४ ॥

भद्रा का देश विभाग ।

कुम्भकर्कद्वये मर्त्ये स्वर्गेऽञ्जेऽजात्रयेऽलिगे ।

स्त्रीधनुर्जूकनकेऽधो भद्रा यत्रैव तत्फलम् ॥ ४५ ॥

अन्वयः—अञ्जे कुम्भकर्कद्वये भद्रा मर्त्ये (निवसति) (कुम्भमीने, कर्कसिंहे वा) चन्द्रे भद्रा मर्त्ये, अजात्रयेऽलिगे (चन्द्रे) स्वर्गे, स्त्रीधनुर्जूकनके अधः, यत्रैव सा (भद्रा) तत्रैव तत्फलम् ॥४५॥

भाषार्थ—चन्द्र कुम्भमीन, अथवा कर्कसिंह राशि का हो तो भद्रा मनुष्य लोक में निवास करती है, मेघ, वृष, मिथुन, वृश्चिक का चन्द्रमा हो तो भद्रा स्वर्ग लोक

में रहती है, कन्या, तुला, धनु, मकर राशिका चन्द्रमा हो तो भद्रा पाताल लोक में रहती है जहाँ रहती है वहाँ पर ही फला फल भी देती है ॥ ४५ ॥

गुरु और शुक के अन्त में वर्जितकर्म ।

वाप्यारामतडागकूपभवनारम्भप्रतिष्ठाव्रतारम्भोत्सर्गवधूप्रवेशन-
महादानानि सोमाष्टके ॥ गोदानाग्रहणंप्रपाप्रथमकोपाकर्मवेदव्रतं
नीलोद्वाहमथातिपन्नशिशुसंस्कारान् सुरस्थापनम् ॥ ४६ ॥
दीक्षा मौजिविवाहमुण्डनमपूर्वं देवतीर्थेक्षणं संन्यासाग्निपरिग्रहौ
नृपतिसंदर्शाभिषेकौ गमम् ॥ चातुर्मास्यसमाव्रती श्रवणयोर्वेधं
परीक्षां त्यजेद् वृद्धत्वास्तशिशुत्वइज्यसितयोन्यूनधिमासे तथा ६७

अन्वयः—वाप्यारामतडागकूपभवनारम्भप्रतिष्ठाव्रतारम्भोत्सर्गवधूप्रवेशनमहादानानि सोमा-
ष्टके, गोदानाग्रहणं, प्रपा प्रथमकोपाकर्म वेदव्रतं, नीलोद्वाहम्, अथ अतिपन्नशिशुसं-
स्कारान्, सुरस्थापनम्, दीक्षा, मौजिविवाहमुण्डनम्, अपूर्वं देवतीर्थेक्षणम्, संन्यासाग्नि-
परिग्रहौ, नृपतिसंदर्शाभिषेकौ, गमम् चातुर्मास्यसमाव्रती, श्रवणयोर्वेधः, परीक्षा, इज्यसितयोः
वृद्धत्वास्तशिशुत्वे तथा न्यूनाधिमासे त्यजेत् ॥ ४६।४७॥

भाषार्थ—वावड़ी, चागीक्षा, तालाव, कुआँ, भवननिर्माण (मकान बनाना)
इनका प्रारम्भ, दान तथा प्रतिष्ठा, व्रतारम्भ, वधूप्रवेश, महादान, तुलादान, स्वर्णदान,
वर्षाकार धान्यदान आदि, सोमपान, अष्टकश्राद्ध, चौलकर्म, नवान्न, प्याऊ बैठाना,
प्रथम उपाकर्म (श्रावणी कर्म करना) वेदव्रत, वृषोत्सर्ग, जातकर्म, देवप्रतिष्ठा,
गुरुद्वारा मंत्रग्रहण, मौजी, विवाह, मुण्डन कर्म करना, देवतीर्थ दर्शन, संन्यास
लेना अग्निहोत्र प्रारम्भ करना, राजा का दर्शन, अभिषेक, गमन, चातुरमास्य व्रत,
मौजीत्याग, कर्णवेध (कानछेदवाना) यह सभी काम बृहस्पति तथा शुक के वृद्धकाल
अस्तकाल, चाल्यकाल में करना उचित नहीं हैं ॥ ४६।४७॥

सिंह और मकरगत गुरु का निषेध ।

अस्ते वर्ज्यं सिंहनक्रस्थजीवे वर्ज्यं कैचिद्वक्रगे चातिचारे ।
गुर्वात्येदि विश्वधसोऽपि पक्षे प्रोचुस्तद्वहन्तरत्नादिभूषाम् ॥ ४८ ॥

अन्वयः—यत् अस्ते वर्ज्यं (तत्) सिंह नक्षत्रजीवे वर्ज्यम् । केचित् आचार्याः वक्रगे, अतिचारे च गुर्वादिये विश्वघस्तेऽपि पक्षे (वर्ज्यम् आहुः) तद्वत् दन्तरत्नादिभूषाम् (वर्ज्या कथयामासुः) ॥४८॥

भाषार्थः—जो कार्य बृहस्पति के अस्त में निषिद्ध बताया है वह कार्य सिंह, मकर, के बृहस्पति में भी त्याज्य है । कोई आचार्य बृहस्पति के चक्रीदशा में और अति-चार में शुभ कर्मों का निषेध बताते हैं किन्तु सूर्य और बृहस्पति एकही राशिपर हों अथवा १३ दिन का पक्ष हो तो शुभ कर्मों के करने में दोष नहीं है ॥४८॥

सिंहे गुरौ सिंहलवे विवाहो नेष्टोऽथ गोदोत्तरश्च यावत् ।

भागीरथीयाम्यतटे हि दोषो नान्यत्र देशे तपनेऽपि मेघे ॥४९॥

अन्वयः—सिंहे गुरौ सिंहलवेऽपि विवाहः नेष्टः गोदोत्तरतः भागीरथी याम्यतटं यावत् अन्यत्रदोषो न तपने मेघे (मेघराशिस्थिते) न दोषः ॥४९॥

भाषार्थ—बृहस्पति सिंह राशि के हों अथवा सिंह के नक्षत्रमांशा के हों तो विवाह विधि युक्त नहीं विशेष यह कि निषेध केवल गोदावरी नदी के उत्तर तट से भागीरथी के दक्षिण तक ही दूषित है । और देशों में दूषित नहीं, मेघराशि के सूर्य हों तो सिंह राशि के गुरु (बृहस्पति होते हुये भी) कोई दोष नहीं ॥४९॥

सिंहराशिस्थ गुरु का परिहार ।

मघादिपञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः ।

गंगा गोदांतरं हित्वा शेषांघ्रिषु न दोषकृत् ॥५०॥

मेषेऽर्के सत् व्रतद्वाहौ गंगागोदांतरेऽपि च ।

सर्वः सिंहगुरुर्वर्ज्यः कलिं गौड़गुर्जरे ॥ ५१ ॥

अन्वयः—मघादिपञ्चपादेषु सर्वत्र गुरुः निन्दितः, गङ्गागोदान्तरं हित्वा शेषांघ्रिषु दोषकृत् न, अर्के मेघे गङ्गागोदान्तरेऽपि व्रतोद्वाहौ सत्, कलिं गौड़गुर्जरे सर्वः सिंहगुरुः वर्ज्यः ॥५०॥५१॥

भाषार्थ—मघा के ४ चरणों में और तदुत्तर के नक्षत्र के १ चरण में एवं ५ चरणों में गङ्गा गोदावरी नदी के बीच के प्रत्येक स्थानों के शुभ कार्यों में बृहस्पति

निन्दित है। केवल विशेष यह है कि अवशिष्ट सभी देशों में तथा पूर्वा फाल्गुनी के शेष चरणों में बृहस्पति निन्दित नहीं। मेष राशिका सूर्य हो और गङ्गा, गोदावरी के देशों में भी शुभ कार्य हों। कलिङ्ग, गौड़, गुजरात, देश में सम्पूर्ण बृहस्पति वर्जित है ॥५०॥५१॥

**रेवापूर्वे गंडकीपश्चिमे च शोणस्योदग्दक्षिणे नीच ईज्यः ।
वज्र्यो नायं कौकणै मागधे च गौडे सिन्धौ वर्जनीयः शुभेषु ॥५२॥**

अन्वयः—रेवापूर्वे च गण्डकी पश्चिमे शोणस्योदग्दक्षिणे च नीच ईज्यः । अयं कौकणै, मागधे, गौडे, सिन्धौ शुभेषु वर्जनीयः ॥५२॥

भाषार्थ—पूर्वोक्त मकर बृहस्पति रेवा नदी के पूर्व, गण्डकी के पश्चिम, शोण-नदी के उत्तर दक्षिण श्रेष्ठ है। किन्तु कौकण, मागध, गौड़, सिन्धु, देशों में शुभ कार्यों में (मकर बृहस्पति) में शुभ कार्य नहीं करना चाहिये ॥५२॥

**गोजान्त्यकुम्भेतरभेऽतिचारगो नो पूर्वराशिं गुरुरेति वक्रितः ।
तदा विलुप्ताब्द इहातिनिन्दितः शुभेषु रेवासुरनिम्नगान्तरे ॥५३॥**

अन्वयः—गोजान्त्यकुम्भेतरभे अतिचारगो गुरुः वक्रितः पूर्वराशिं न एति, तदा विलुप्ताब्दः इति (कीर्तितः) इह रेवासुरनिम्नगान्तरे शुभेषु अतिनिन्दितः ॥५३॥

भाषार्थ—मेष, मीन, कुम्भ भिन्न अन्य राशियों पर अतिचारी होकर बृहस्पति पहुँच जाय और जबतक पूर्व राशिपर आते नहीं तब तक वह लुप्तवर्ष कहा जाता है। रेवा, गङ्गा ये मध्य देशों में अति निन्दित है ॥५३॥

**पादोनरेखापरपूर्वयोजनैः पलैर्युतोनास्तिथयो दिनार्धतः ।
ऊनाधिकास्तद्विरोद्धवैः पलैरूर्ध्वतथायो दिनपप्रवेशनम् ॥५४॥**

अन्वयः—पादोनरेखापरपूर्वयोजनैः पलैः तिथयः युतोनाः (कार्याः इति शेषः) (ताः) दिनार्धतः ऊनाधिकाः तद्विरोद्धवैः पलै ऊर्ध्व तथाऽधः दिनपप्रवेशनम् भवतित्यादि कापित् क्रियाध्याहार्याः ॥५४॥

भाषार्थ—प्रत्येक देशों की वारप्रवृत्ति में थोड़ा घना अन्तर होता है अतः जिस देश को वारप्रवृत्ति (कब वार प्रवेश हुआ है) देखनी हो तो वह देखना चाहिये कि

वह देश मध्यरेखा (रावणपुरी, लङ्का, देवकन्या, काञ्ची, कैलास, पर्यली, वत्स-
गुल्म, उज्जयिनी, गगराट, कुरुक्षेत्र, मेरु, स्थान, इन मध्य रेखाओं में से कितने
योजन, पर वह स्थान है। पूर्व या पश्चिम है यह जान कर उसका चतुर्थांश करे
तब पादोन रेखा ज्ञात हुई उसको ही पल मानना मध्यरेखा वह देश यदि पूर्व हो
तो रेखा पलों को १५ घटादे, पश्चिम हो तो जोड़ देना। जोड़ने घटाने से घड़ी, पल
प्राप्त होवे उसको आधे के घटी पल से अन्तर करना चाहिये। इसको विवर कहते हैं।
विवर घड़ी पलके अनुरूप ही सूर्योदय के प्रथम या बाद में दिन स्वामी का प्रवेश
समझना चाहिये। दिनार्ध विवर होनेसे सूर्योदय और दिनप प्रवेश साथ २ है ॥५४॥

वारप्रवृत्ति का हेतु और कालहोरा।

वारादेर्घटिका द्विघ्नाः स्वाक्षहृच्छेषवर्जिताः।

सैका तष्टा नगैः कालहोरेशा दिनपात् क्रमात् ॥ ५५ ॥

अन्वयः—वारादेः घटिकाः द्विघ्नाः स्वाक्षहृत् शेषवर्जिताः सैकाः नगैः तष्टाः कालहोरेशाः
क्रमात् दिनपात् स्युः ॥५५॥

भाषार्थः जिस किसी दिन काल होरा देखना होवे तो जिस घड़ी पर होरा
देखना हो उस वर्तमान घड़ी को द्विगुण करना चाहिये और उस द्विगुण को २
स्थानों में बांट दे। १ जो पृथक् रखा हो उसमें ५ का भाग दे लब्ध को त्याग कर
शेष अंक को १ जो पृथक् रखा अंक था उसमें घटा दे १ जोड़ दे जिसमें १ जोड़ा
उसमें ७ का भाग दे और जो बचे उसमें जिस दिन होरा देखना हो उस दिन के
वार तक गिने होरा स्वामी जाने।

उदाहरणार्थ—रविवार को आठ घड़ी दिन चढ़े पर होरा देखना है तो ८ के दूना
करने पर १६ होते हैं उनको दो स्थानों में विभक्त करने पर एक १६ में ५ का भाग
दिया ३ लब्धि रही १ वंचा लब्धि को पृथक् कर शेष को (१ को) दूसरे १६ में घटाया
१५ रहा १ जोड़ कर ७ से भाग दिया २ शेष रहा रवि से दूसरा दिन सोम तो बुध
का होरा समझना चाहिये ॥५५॥

कालहोरा का हेतु।

वारे प्रोक्तं कालहोरा सुतस्य धिष्ण्ये प्रोक्तं स्वामितिथ्यं शकैः स्य।
कुर्याद्विक्षूलादि चिन्त्यं क्षणेषु नैवोल्लङ्घ्यः पारिघश्चापि दंडः ५६

अन्वयः—वारे प्रोक्तं (कार्यं) तस्य कालहोरासु (कार्यं) धिष्ये (प्रोक्तं) अस्य स्वामि-
तिथ्यंशके [कार्यम्] क्षणेषु दिक्शूलदि चिन्त्यम्, पारिघः, दण्डश्चापि नोल्लंघ्यः ॥५६॥

भाषार्थः—जो कार्य जिस दिन करने के योग्य बताया है वह कार्य उसके काल
होरा में करना चाहिये । तथा जिस नक्षत्र में जो कार्य बताया है वह कार्य नक्षत्र स्वामी
नक्षत्र में करना चाहिये मुहूर्त में दिक्शूल, इत्यादि का अवश्य विचार करना
चाहिये । परिध तथा दण्ड का उल्लंघन तो कथमपि नहीं करना चाहिये ॥५६॥

मन्वादि और युगादि तिथियां ।

मन्वाद्यास्त्रितिथि मधौ तिथिरवी, ऊर्जेशुचौदिक् तिथि ।
ज्येष्ठेऽन्त्ये च तिथिस्त्वषे नवतपस्याश्वाः सहस्ये शिवा ॥
भाद्रेऽग्निश्च सिते त्वमाष्टनभ सः कृष्ण युगाद्याः सिते ।
गोऽग्नी बाहुलराधयोर्मदनदर्शो भाद्रमाघासिते ॥५७॥

अन्वयः—सितेः मधौ त्रितिथी, ऊर्जे तिथि रवी शुचौ दिक् तिथी, ज्येष्ठे अन्त्ये च तिथिः,
इषे नव, तपसि अश्वाः, सहस्ये, शिवा, भाद्रे अग्निः, तु नभसः कृष्णे अमाष्ट । युगाद्याः
बाहुलराधयोः सिते गोऽग्नी, भाद्रमाह सिसे मदन दर्शे [युगाद्याः तिथयो भवन्ति] ॥५७॥

भाषार्थ—ये तिथियां मन्वादि कहलाती हैं । चैत्र कृष्ण तृतीया पूर्णिमा, कार्तिक
शुक्ल द्वादशी पूर्णिमा, आषाढ़ शुक्ल दशमी पूर्णिमा, ज्येष्ठ तथा फाल्गुण की पूर्णि-
मा, आश्विन शुक्ल नवमी, माघ शुक्ल सप्तमी, पौष शुक्ल एकादशी, भाद्रशुक्ल
तृतीया, आषण कृष्ण अमावस्या, अष्टमी । आचार्यों का मत है कि कार्तिक शुक्ल
नवमी को सत्ययुग की, वैशाख शुक्ल तृतीया को त्रेता की, भाद्रकृष्ण त्रयोदशी,
को द्वापर की और माघ कृष्ण अमावस्या को कलियुग की उत्पत्ति हुई ॥५७॥

इति शुभाशुभ प्रकरणं समाप्तम्

* अथ नक्षत्रप्रकरणम् *

नक्षत्रों के स्वामी ।

नासत्यांतकवह्निधातृशशभृद्बुधादितीज्योर्गाः ।

ऋक्षेशा पितरो भगोर्यमरवीत्वष्टासमीरः क्रमात् ॥

शक्राग्नीषलुमित्रइन्द्रनिऋतिक्षीराणि विश्वेविधिः ।
गोविंदोवतोऽयपाज चरणाहिर्बुध्न्यपूषाभिधाः ॥१॥

अन्वयः—नासत्यांतक वहिधातृशशभृद्रुद्रादितीज्योरगाः, पितरः, भगः, अर्यमाः, रविः, त्वष्टा समीरः, शक्राग्नी, मित्रः, इन्द्रनिऋतिक्षीराणि, विश्वे, विधिः, गोविन्दः, वसुतोऽयपाजचरणा-हिर्बुध्न्यपूषाभिधाः क्रमात् ऋक्षेशः ॥१॥

भाषार्थ—अश्विनी आदि नक्षत्रों के क्रमशः ये स्वामी होते हैं । अश्विनी के अश्विनीकुमार, भरणी के यमराज, कृत्तिका के अग्नि, रोहिणी के ब्रह्मा, मृगशिरा के चन्द्रमा, आर्द्रा के रुद्र, पुनर्वसु के अर्धित, पुष्य के वृद्धस्पति, श्लेषाके सर, मघा के पितर, पूर्वाफाल्गुनी के भग, उत्तराफाल्गुनी के अर्यमा, चित्रा के त्वष्टा, स्वाती के वायु, विशाखा के इन्द्रअग्नि । अनुराधा के मित्र, ज्येष्ठा के इन्द्र मूल के राक्षस, पूर्वाषाढा के विश्वेदेव, अभिजित् के ब्रह्मा, श्रवण के गोविन्द, धनिष्ठा के वसु, शतभिषा के वरुण, पूर्वा भाद्रपद के अजपात्, उत्तराभाद्रपद के अहिर्बुध्न्य रेवती के पूषा ॥१॥

ध्रुव संज्ञक नक्षत्र ।

उत्तरात्रयरोहिण्यो भास्करश्च ध्रुवं स्थिरम् ॥
तत्र स्थिरं बीजगेहे शान्त्यारामादिसिद्धये ॥ २ ॥

अन्वयः—उत्तरात्रयरोहिण्यः भास्करश्च ध्रुवंस्थिरं, तत्र स्थिरं बीजगेहे शान्त्यारामादि, सिद्धये भवतीति शेषः ॥२॥

भाषार्थ—तीनों उत्तरा, रोहिणी तथा रवि ये ध्रुव तथा स्थिर नाम के हैं इसमें मकान बनाना, कुआँ का खुदवाना, बीजबोना, गृहप्रवेश, मूलादिशान्ति, बागीचा लगाना आदि शुभ है ॥२॥

घरसंज्ञक नक्षत्र ।

स्वात्यादित्ये श्रुतेस्त्रीणि चन्द्रश्चापि चरं चलम् ।
तस्मिन् गजादिकारोहो वाटिकागमनादिकम् ॥३॥

अन्वयः—स्वात्यादित्ये श्रुतेः स्त्रीणि य सोमः चरं चलं (निगद्यते इतिशेषः) गजादिका रोहः, वाटिकागमनादिकम् [शस्तमिति शेषः] ॥३॥

भाषार्थ—स्वाती, पुनर्वसु, ध्रुवश, धनिष्ठा, शतभिषा, और सोमवार इनकी “चर चल” संज्ञा होती है इनमें हाथी आदि पर चढ़ना वागीचा में जाना इत्यादि का शुभ है ॥३॥

उग्रसंज्ञक नक्षत्र ।

पूर्वात्रयं याम्यमघे उग्रं क्रूरं कुजस्तथा ।
तस्मिन् घाताग्निशाठ्यानि विषशस्त्रादिसिध्यति ॥४॥

अन्वय—पूर्वात्रयं, याम्यमघे, तथा कुजः “उग्रं क्रूरं” निगद्यते इतिशेषः तस्मिन् घाताग्निशाठ्यानि विषशस्त्रादि सिध्यति ॥४॥

भाषार्थ—तीनों पूर्वा, भरणी, मघा, मंगलवार इनकी “ उग्र क्रूर ” ये नाम हैं इनमें शत्रुमारण, अग्निज्वालन, शठता, शस्त्र चलाना, विषपान कराना इत्यादि कार्य करना चाहिये ॥४॥

मिश्रसंज्ञक नक्षत्र ।

विशाखाग्नेभये सौम्ये मिश्रं साधारणं स्मृतम् ।
तत्राग्निकार्यं मिश्रं च वृषोत्सर्गादि सिध्यति ॥ ५ ॥

अन्वयः—विशाखाग्नेयमे, सौम्ये, मिश्रं, साधारणं स्मृतम् । तत्र अग्निकार्यं, मिश्रं [उभयवस्तु-नोर्मेलनम् वृषोत्सर्गादि सिध्यति ॥५॥

भाषार्थः—विशाखा, कृतिका तथा बुधवार दिन का मिश्र अथवा साधारण संज्ञा है । इनमें अग्निहोत्रादि, २ वस्तुओं का मिलाना और वृषोत्सर्ग कार्य शुभ होता है ॥५॥

लघुसंज्ञक नक्षत्र ।

हस्ताश्विपुष्याभिजितः क्षिप्रं लघु गुरुस्तथा ।
तस्मिन् पण्यरतिज्ञानं भूषाशिल्पकलादिकम् ॥ ६ ॥

अन्वयः—हस्ताश्विपुष्याभिजितः तथा गुरुः “क्षिप्रं, लघु” संज्ञकं भवति तस्मिन् पण्य रतिज्ञानम्भूषाशिल्प कलादिकम् शुभदामितिशेषः ॥६॥

भाषार्थः—हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित् तथा गुरुवार इनकी क्षिप्र तथा लघु संज्ञा है इनमें बेचना, स्त्री सहवास (मैथुन) गहना पहिनना कारीगरी सीखना शुभ है ॥६॥

मृदु संज्ञक नक्षत्र ।

मृगांत्यचित्रामित्रर्क्षं मृदु मैत्रं भृगुस्तथा ।

तत्र गीताम्बरक्रीडा मित्रकार्यविभूषणम् ॥ ७ ॥

अन्वयः—मृगान्त्य चित्रामित्रर्क्ष, भृगुः “मृदु मैत्रं” [नाम्ना निगद्यते] तत्र गीताम्बर क्रीडा मित्रकार्य विभूषणम् [शुभदं इतिशेषः] ॥७॥

भाषार्थः—मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा तथा शुक्रवार इनकी मृदु तथा मैत्र संज्ञा है इनमें गीत सीखना, नूतन वस्त्र धारण, खेलना, मित्रता करना, गहना बनाना अथवा धारण करना श्रेष्ठ है ॥७॥

तीक्ष्ण संज्ञक नक्षत्र ।

मूलेन्द्रार्द्राहिभं सौरिस्तीक्ष्णं दारुणसंज्ञकम् ।

तत्राभिचारघातोप्रभेदाः पशुदमादिकम् ॥ ८ ॥

अन्वयः—मूलेन्द्रार्द्राहिभं सौरिः “तीक्ष्णं दारुणं संज्ञकम्” [निगदितम्] तत्र अभिचार-घातोप्रभेदाः पशुदमादिकम् (श्रेष्ठम्) ॥८॥

भाषार्थः—मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा अश्लेषा तथा शनिवार इनको तीक्ष्ण अथवा दारुण कहते हैं इनमें अभिचारद्वारा घात (मंत्रादि से मारण) शस्त्रघात, क्रूरकर्म करना और पशुओं को आधीन करना इत्यादि काम श्रेष्ठ हैं ॥८॥

अधोमुख ऊर्ध्वमुख और तिर्याग मुख नक्षत्र ।

मूलाहिमिश्रोग्रमधोमुखं भवेदुर्ध्वास्यमार्द्रैज्यहरित्रयं ध्रुवम् ।

तिर्यङ्मुखं मैत्र करानिलादितिज्येष्ठाश्विभानीदृशकृत्यमेषु सत् ॥९॥

अन्वयः—मूलाहि मिश्रोग्रम् अधोमुखम्, मार्द्रैज्य हरित्रयं ध्रुवम् ऊर्ध्वास्यम्, मैत्रकरा-निलादितिज्येष्ठाश्विभानि तिर्यङ्मुखम् एषु ईदृशं कृत्यं सत् ॥ ९ ॥

भाषार्थः—मूल, श्लेषा तथा मिश्र उग्र संज्ञा वाले नक्षत्र अधोमुख कहे गये हैं । इसी प्रकार आर्द्रा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, तथा ध्रुव संज्ञक नक्षत्र ऊर्ध्वमुख हैं । मृगशिरा, चित्रा, रेवती, अनुराधा, हस्त, स्वाती, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, अश्विनी इनका मुख टेढ़ा होता है इन सबों में इनके रूपानुरूप ही कार्य करना श्रेष्ठ है । अधो-मुखों में “कूपखनना” ऊर्ध्वमुखों में “मिस्तिनिर्माण” तिर्यङ्मुखों में मकानपर “धरन” आदि चढ़वाना श्रेष्ठ है ॥६॥

प्रवाल आदि धारण करने को सुहृत् ।

पौष्णध्रुवाश्विकरपञ्चकवासवेज्यादित्येप्रवालरदशंखसुवर्णवस्त्रम् ।
धार्य विरिक्तशनिचन्द्रकुजैहिरक्तं भौमे ध्रुवादितियुगे सुभगा न
दध्यात् ॥ १० ॥

अन्वयः—पौष्ण ध्रुवाश्विकरपञ्चकवासवेज्यादित्ये, प्रवाल रद शंख सुवर्ण-
वस्त्रम् धार्य (किन्तु) विरिक्तशनिचन्द्रकुजैहि, रक्तं भौमे (धार्य) सुभगा ध्रुवादिति
युगे न दध्यात् ॥ १० ॥

भाषार्थः—रेवती, ध्रुवसंज्ञा वाले नक्षत्र, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा
अनुराधा, धनिष्ठा, पुनर्वसु, पुष्य, इन नक्षत्रों में मूँगा की माला, दाँत का चूड़ा,
शंख, सुवर्ण, तथा वस्त्र धारण करना चाहिये । किन्तु रिकता तिथि और शनि, सोम,
मंगल से भिन्न वारों में रक्त । (रंगा हुआ) मंगलवार को पहनना शुभ है । ध्रुव संज्ञक
नक्षत्रों में पुनर्वसु तथा पुष्य नक्षत्र में समर्तुका औरत को मूँगा इत्यादि का धारण
सर्वथा अनुचित है ॥१०॥

नव प्रकार से विभक्त वस्त्रके मलने का दोष ।

वस्त्राणां नवभागकेषु च चतुष्कोणेऽमरा राक्षसाः ।
मध्येऽयंशगता नरास्तु सदृशे पार्श्वे च मध्यांशयोः ॥
दग्धे वा स्फुटितेऽम्बरे नवतरेपङ्कादिलिप्ते न सद्रक्षोःशेनृसुरांशयोः
शुभमसत् सर्वांशके प्रांततः ॥ ११ ॥

अन्वयः—वस्त्राणां नवभागकेषु चतुष्कोणे अमराः, मध्ये अयंशगताः राक्षसाः, मध्यांशयोः
सदृशे पार्श्वे च नराः (स्थाव्याः) रक्षोःशे नवतरे अम्बरे दग्धे स्फुटिते पङ्कादि लिप्ते (वा)

न सत् नसुरांशयोः शुभम् सर्वांशके प्रान्ततः दग्धे, स्फुटिते, पंकादिलिते अस्त् ॥ ११ ॥

भाषार्थः—जिस किसी नूतन वस्त्र को पहने उसके नव भाग करे ४ कोनों में देवता का, मध्यके तीन भागों में राक्षस, देव मध्य भाग में मनुष्य का स्थापन करे यदि किये भाग में से राक्षस भाग के कपड़े का कोई भी भाग जले फटे या कीचड़ से लिसजाय तो शुभ नहीं मनुष्य देव भाग में से जलने, फटने, कीचड़ लगने पर शुभ है तीनों ही (देव, राक्षस, मनुष्य) भाग के जलने, फटने कीचड़ लगने पर अशुभ समझना चाहिये ॥ ११ ॥

दुष्टदिनों में वस्त्र धारण करना ।

दे	रा	दे
न	रा	न
दे	रा	दे

विप्राज्ञया तथोद्वाहे राज्ञा प्रीत्यार्पितं च यत् !

निन्द्येऽपि धिष्ये वारादौ वस्त्रं धार्य जगुर्बुधाः ॥ १२ ॥

अन्वयः—निन्द्येऽपि धिष्ये वारादौ विप्राज्ञया, तथा उद्वाहे राज्ञा यत् प्रीत्या अर्पितं तद् वस्त्रं बुधाः धार्य जगुः ॥ १२ ॥

भाषार्थः—निन्दनीय नक्षत्र, निन्दनीय वार में भी ब्राह्मण की आज्ञा से विवाह के कारण अथवा राजाने प्रेम पूर्वक दिया है उस वस्त्र को विद्वान् मण्डली ने (धार्य) धारण करने योग्य बताया है ॥ १२ ॥

छता वृक्ष लगाना राजा का दर्शन और मद्यविक्रय का मुहूर्त ।

राधामूलमृदुध्रुवर्क्षवरुणक्षिप्रैर्लतापादपा-

रोपोऽथो नृपदर्शनं ध्रुवमृदुक्षिप्रश्रवोवासवैः ।

तीक्ष्णोग्रांबुपभेषुमद्यमुदितंक्षिप्रत्यवह्नीद्रभा-

दित्येद्रांबुपवासवेषु हिगवां शस्तः क्रयोविक्रयः ॥ १३ ॥

अन्वयः—राधामूळमृदुध्रुवर्क्षवरुणक्षिप्रैः लतापादपारोपः, अथ नृप दर्शनं ध्रुवमृदुक्षिप्र
श्रवोवासवैः, तीक्ष्णो ग्राम्बुपभेषु मयं, उदितं । क्षिप्रान्त्यवह्नीन्द्रमादित्येन्द्रा म्बुपवासवेषु गवां
क्रयः शस्तः ॥१३॥

भाषार्थः—विशाखा, मूल, ध्रुवमृदु संज्ञा के नक्षत्र शतभिषा, क्षिप्र संज्ञा वाले
नक्षत्र इनमें वृक्षों का लगाना शुभ है । ध्रुव, मृदु, क्षिप्र, श्रवण, धनिष्ठा में राजदर्शन
करना शुभ है । तीक्ष्ण, उग्र संज्ञा वाले तथा शतभिष में मद्य बनाना, क्षिप्र संज्ञक
नक्षत्र, रेवती, कृतिका, मृगशिरा, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, शतभिषा इनमें गावों को खरीदना
बैचना शुभ है ॥१३॥

॥ १३ ॥ पशुओं की रक्षा स्थिति और सवारों का मुहूर्त्त ।

लग्नेशुभे चाष्टमशुद्धिसंयुते रक्षा पशूनां निजयोनिभे चर ।
रिक्ताष्टमीदर्शकुजश्रवोभ्रुवत्वाष्ट्रेषु यानं स्थितिवेशनं न सत् ॥१४॥

अन्वयः—शुभे लग्ने अष्टमशुद्धिसंयुते पशूनां रक्षा (उचिता) निजयोनिभे चरमे किन्तु
रिक्ताष्टमीदर्श कुजश्रवो भ्रुवत्वाष्ट्रेषु पशूनां मानम् स्थितिवेशनं न सत् ॥ १४ ॥

भाषार्थः—शुभ लग्न हो और अष्टम स्थान पापग्रह से रहित हो नक्षत्र अपनी २
योनि में हों ऐसे समय पशुओं की रक्षा, बन्धनादि श्रेष्ठ है । रिक्ता तिथि, अष्टमी,
अमावस्या को तथा मंगलवार को भ्रुव संज्ञक नक्षत्र, रोहिणी इनमें तथा चित्रा
नक्षत्र में पशु बैचना या अपने घर से किसी प्रकार दूसरे के घर देने में शुभ
नहीं ॥१४॥

॥ १४ ॥ औषधि सेवन और सूचीकर्म मुहूर्त्त ।

भैषज्यं सल्लघुमृदुचरे मूलभे द्वयङ्गलग्ने शुक्रेद्वीज्ये विदि
च दिवसे चाऽपि तेषां रवेश्च । शुद्धे रिष्फद्युनमृतिगृहे सत्तिथौ
नो जनेर्भेसूचीकर्माप्यदितिवसुभत्वाष्ट्रमैत्राश्विपुष्ये ॥ १५ ॥

अन्वयः—लघुमृदुचरे, मूलभे, द्वयङ्गलग्ने, शुक्रेद्वीज्ये विदि रवेश्च दिवसे रिष्फ युन
मृतिगृहे शुद्धे, सत्तिथौ भैषज्यं सत् । जनेर्भे नो (सत्) अदिति वसुमे, त्वाष्ट्र मित्राश्विपुष्ये
सूचीकर्म (सत्) ॥ १५ ॥

भाषार्थः—लघु, मृदु, चर संज्ञा वाले नक्षत्रों में तथा मूल नक्षत्र में द्विस्वभाव राशियों में शुक्रवार, चन्द्रवार, बृहस्पतिवार बुधवार, इन दिनों तथा रविवार में रिक्ता अमारहित से अन्य तिथियों में औषध खाना चाहिए किन्तु लग्न से १२, ७, ८, गृहजव शुभ ग्रह से दृष्ट हो। जन्म नक्षत्र में औषध नहीं ग्रहण करना चाहिए सीने का काम प्रारम्भ करना पुनर्वसु, धनिष्ठा, चित्रा, मित्र नक्षत्र, अश्विनी, पुष्य में शुभप्रद होता है ॥ १५ ॥

खरीदने और बेचने का मुहूर्त्त ।

क्रयर्क्षे विक्रयो नेष्टो विक्रयर्क्षे क्रयोऽपि न ।

पौष्णां बुपाश्विनीवातश्रवश्चित्राः क्रये शुभाः ॥ १६ ॥

अन्वयः—क्रयर्क्षे विक्रयः न इष्टः विक्रयर्क्षे क्रयोऽपि न (इष्टः) पौष्णां बुपाश्विनीवातश्रवश्चित्राः क्रये शुभाः ॥ १६ ॥

भाषार्थः—खरीदने वाले नक्षत्र में बेचना और बेचने वाले नक्षत्र में खरीदना शुभ नहीं है। रेवती, शतभिषा, अश्विनी, स्वाती, श्रवण, चित्रा ये नक्षत्र खरीदने में शुभ हैं ॥ १६ ॥

दूकान धरने और बेचने का मुहूर्त्त ।

पूर्वाद्रीशकृशानुसार्पयमभे केन्द्रत्रिकोणे शुभैः ।

षट्त्रयायेष्वशुभैर्विना घटतनुंसन् विक्रयः सत्तिथौ ॥

रिक्ताभौमघटान्विना च विपणिर्मित्रध्रुवक्षिप्रमैः ।

लग्ने चंद्रसिते व्ययाष्टरहितैः पापैः शुभैर्द्रव्यायत्ने ॥ १७ ॥

अन्वयः—पूर्वाद्रीशकृशानुसार्पयमभे केन्द्रत्रिकोणे शुभैः षट्त्रयायेषु अशुभैः घटतनुं विना सत्तिथौ रिक्ताभौमघटान् विना (एतदतिरिक्तेषु तिथिवार नक्षत्रेषु) मैत्र ध्रुवक्षिप्रमैः लग्ने चन्द्रे सिते सति व्ययाष्ट रहितैः पापैः शुभैः द्रव्यायत्ने विपणिः शुभा ॥ १७ ॥

भाषार्थः—पूर्वा (तीनों) विशाखा, कृत्तिका, अश्लेषा, भरणी, नक्षत्र तथा केन्द्र तथा त्रिकोण में (केन्द्र-प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, दशम, त्रिकोण-नवम, पञ्चम) में शुभ-ग्रह और छठे तीसरे ग्यारहवें पापग्रहों के होते हुए कुम्भ को छोड़ कर लग्न और उत्तम तिथि (पूर्णादि) हो, विक्रय (बेचना शुभ होता है) किन्तु रिक्ता, अमावस्या से

रहित तिथि अवश्य होनी चाहिए । एवं रिक्ता, मंगलवार कुम्भ लग्न न हो मैत्र, ध्रुव क्षिप्र संज्ञा वाले नक्षत्र हों, चन्द्र, शुक्र लग्न में हो, वारहवां आठवां नवां स्थान पापग्रह से रहित हो, दूसरे ग्यारहवें दसवें स्थानमें शुभग्रह (बृहस्पति इत्यादि) हों ऐसी स्थिति में दूकान खोलना चाहिए ॥ १७ ॥

हाथी घोड़े का क्रय विक्रय सुहृत् ।

क्षिप्रान्त्यवस्विन्दुमरुज्जलेशादित्येष्वरिक्कारदिने प्रशस्तम् ।
स्याद्वाजिकृत्यं त्वथ हस्तिकार्यं कुर्यान्मृदुक्षिप्रचरेषु विद्वान् ॥ १८ ॥

अन्वयः—क्षिप्रान्त्यवस्विन्दुमरुज्जलेशादित्येषु अरिक्कारदिने—वाजिकृत्यं प्रशस्तम् स्यात् ।
अथ विद्वान् मृदु क्षिप्रचरेषु हस्तिकार्यं कुर्यात् ॥ १८ ॥

भाषार्थ—क्षिप्र संज्ञा वाले नक्षत्र, रेवती, धनिष्ठा, मृगशिरा, स्वाती, शतभिषा, पुनर्वसु नक्षत्र में, रिक्ता वजित तिथि में घोड़ा का प्रथम फेरना इत्यादि शुभ है किन्तु विद्वान् मनुष्य मृदु, क्षिप्र, चर संज्ञा वाले नक्षत्रों में गजकृत्य (हाथी खरीदना बेंचना आदि) करे ॥ १८ ॥

अलंकार (गहना) बनवाने और धारण करने का सुहृत् ।

स्याद्भूषाघटनं त्रिपुष्करचरक्षिप्रध्रुवे रत्नयुक्ततीक्ष्णोप्रवि-
हीनभे रविकुजै मेषालिसिंहे तनौ । तन्मुक्तसहितं चरध्रुवमृदुक्षिप्रेशु
भेसत्तनौ तीक्ष्णोप्राश्विमृगे द्विदैवदहनं शस्त्रं शुभं घटितम् ॥ १९ ॥

अन्वयः—भूषाघटनं त्रिपुष्कर चर क्षिप्र ध्रुवे (शुभं) रत्नयुक् (यदि) तीक्ष्णोप्र-
विहीनभे रविकुजे, मेषालिसिंहे तनौ शुभम् मुक्ता सहितं यदि चर ध्रुवमृदु क्षिप्रे शुभे
सत्तनौ (शुभं) तीक्ष्णोप्राश्विमृगे द्विदैवदहने घटितं शास्त्रं (शुभम्) भवतीति पूर्व
योजनम् ॥ १९ ॥

भाषार्थ—गहना का प्रथम बनाना त्रिपुष्कर योग में, चर, क्षिप्र, ध्रुव इन नक्षत्रों में उत्तम है । किन्तु गहना रत्नमिलित हो तब तीक्ष्ण उग्र संज्ञा से भिन्न किसी नक्षत्र में, रवि तथा मंगलवार में, मेष, वृश्चिक, सिंह लग्न में बनाना प्रारम्भ करे । वह गहना मुक्ता से युक्त हो तो चर, ध्रुव, क्षिप्र इन नक्षत्रों में शुभ ग्रह युक्त लग्न में बनावे शस्त्रों का बनवाना तीक्ष्ण, उग्र संज्ञा वाले नक्षत्रों में तथा अश्विनी, मृगशिरामें, विशाखा, कुत्तिका, नक्षत्रों में उत्तम होता है । १९ ।

मुद्रापातन और वस्त्रक्षालन सुहृत्त ।

मुद्राणां पातनं सद्भुवमृदुचरभक्षिप्रभैर्वीन्दुसौरे घस्त्रे पूर्णाज-
याख्ये न च गुरुभृगु जास्ते विलग्ने शुभैः स्यात् । वस्त्राणां क्षालनं
सदसुहयदिनकृत्पंचकादित्यपुष्ये नो रिक्तापर्वषष्ठीपितृदिनरविज-
ज्ञेषु कार्यं कदापि ॥ २० ॥

अन्वयः—सद्भुव मृदुचर क्षिप्रभैः, वीन्दुसौरेर्धस्त्रे, पूर्णा जयाख्ये, नच गुरु, भृगुजास्ते, विलग्ने शुभैः मुद्राणां पातनं स्यात् । वस्त्राणां क्षालनं सदसु हय दिनकृत् पंचकादित्य पुष्ये, रिक्ता पर्वषष्ठी पितृ दिन रविजज्ञेषु कदापि नो कार्यम् ॥ २० ॥

भाषार्थ—ध्रुव, मृदु, चर, क्षिप्र संज्ञा वाले नक्षत्रों की सोमवार और शनिवार से अन्यवार को रूपये का ढालना इत्यादि उत्तम है । पूर्णा, तथा जया तिथि हों किन्तु बृहस्पति और शुक्र के अस्त समय में टकशाल घर नहीं खोलना चाहिए । बृहस्पति आदि शुभ हैं तो “टकशाल” खोलना उत्तम है वस्त्रों का प्रथम २ धोना अथवा धोबी के घर देना धनिष्ठा, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, पुनर्वसु, पुष्य नक्षत्रों में शुभ है किन्तु रिक्ता तिथियां, पर्वदिन, षष्ठी, अमावस्या न हो ॥ २० ॥

शस्त्रादि धारण और शय्यादिकों के उपवेश का सुहृत्त ।

संधार्यः कुंतवर्मेष्वासनशरकृपाणासिपुत्रयोर्विरिक्ते शुक्रज्याऽ
केंऽहि मैत्रध्रुवलघुसहितादित्यशाक्रद्विदैवे स्युर्लग्ने हि स्थिराख्ये
शशिनि च शुभदृष्टे शुभे केन्द्रगैः स्याद्भोगः शय्यासनादेध्रुवमृदु
लघुहर्यन्तकादित्य इष्टः ॥ २१ ॥

अन्वयः—विरिक्तेः शुक्रज्याकेंऽहि मैत्रध्रुवळघुसहितादित्यशाक्रद्विदैवे कुन्तवर्मेष्वासनशरकृपाणासिपुत्रयः, धार्याः किन्तु स्थिराख्ये लग्ने शशिनि शुभ दृष्टे शुभैः केन्द्रगैः [विद्यमानैः] । ध्रुवमृदुलघुहर्यन्तकादित्ये शय्यासना देर्भोगः इष्टः ॥ २१ ॥

भाषार्थ—रिक्ता (४, १४, ६) से रहित तिथि, शुक्र बृहस्पतिवार, मैत्र ध्रुव, लघु तथा पुनर्वसु, ज्येष्ठा, विशाखा, नक्षत्रों में भाला, कवच, धनुष, तलवार, छुरी इत्यादि धारण करना उत्तम है किन्तु स्थिर लग्न हो और चन्द्रमा शुभग्रह दृष्ट हों,

इसी प्रकार, ध्रुव, मृदु, लघु संज्ञा वाले नक्षत्र तथा श्रवण, भरणी, पुनर्वसु इन नक्षत्रों में शय्यारोहण तथा खड़ाऊँ आदि पहनना उत्तम है ॥ २१ ॥

नक्षत्रों की संज्ञायें ।

अंधाक्षं वसुपुष्यधातृजलभद्रीशार्यमांत्याभिधंमंदाक्षंरविविश्व
मैत्रजलपाश्लेषाश्विचांद्रं भवेत् । मध्याक्षं शिवपित्रजैकचरणत्वा
ष्ट्रेन्द्रविध्यंतकं स्वक्षं स्वात्यदिति श्रवोदहनभाह्विर्बुध्न्यरक्षोभगम् ॥ २२ ॥

अन्वयः—वसुपुष्यधातृजलभद्रीशार्यमान्त्याभिधं अन्धाक्षं, [नक्षत्रम्] रवि विश्व
मित्र जलपाश्लेषाश्विचान्द्रम् मन्दाक्षम् शिवपित्रजैक चरणत्वाष्ट्रेन्द्रविध्यन्तकम् मव्याक्षम्,
स्वात्यदिति श्रवोदहनभाह्विर्बुध्न रक्षो भगम् स्वक्षम् (नक्षत्रम्) भवेदिति शेषः ॥ २२ ॥

भाषार्थ—धनिष्ठा, पुष्य, रोहिणी, पूर्वाषाढ़, विशाखा, उत्तराफाल्गुनी, रेवती
ये नक्षत्र “अन्धाक्ष,” हस्त, उत्तराषाढ़, अनुराधा, शतभिषा, अश्लेषा, अश्विनी,
मृगशिरा, ये “मन्दाक्ष,” आर्द्रा, मघा, पूर्वाभाद्रपद, चित्रा, ज्येष्ठा, अभिजित,
भरणी, ये “मध्याक्ष” स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, कृत्तिका उत्तरा भाद्रपद, मूल, पूर्वा
फाल्गुनी ये “सुलोचन” संज्ञा वाले नक्षत्र हैं ॥ २२ ॥

नक्षत्रों के फल ।

विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं मंदे प्रयत्नतः ।
स्याद्दूरे श्रवणं मध्ये श्रुत्याप्ती न सुलोचने ॥ २३ ॥

अन्वयः—अन्धे विनष्टार्थस्य लाभः शीघ्रं, मंदे प्रयत्नतः, मध्येदूरे श्रवणं, सुलो-
चने श्रुत्याप्ती न भवतीति शेषः ॥ २३ ॥

भाषार्थ—अंध नक्षत्र में खोई अथवा चोरी गई चीजों की प्राप्ति बहुत शीघ्र,
मन्व में देर से, मध्य में खोई वस्तु सुनने में आती है किन्तु मिलती नहीं सुलोचन
में सुनना मिलना कुछ भी नहीं होता ॥ २३ ॥

लेन देन में वर्जित नक्षत्र ।

तीक्ष्णमिश्रवोग्रैर्यद्द्रव्यं दत्तं निवेशितम् ।
प्रयुक्तं च विनष्टं च विष्ट्यां पाते च नाप्यते ॥ २४ ॥

अन्वयः—तीक्ष्ण मिश्र ध्रुवोपैः यत् द्रव्यं दत्तं निवेशितम् प्रयुक्तं च विनष्टं तत् नाप्यते । विष्टयां, पाते, च नाप्यते (दत्तादि वस्तु) ॥२४॥

भाषार्थ—तीक्ष्ण, मिश्र, ध्रुव, उग्र संज्ञा वाले नक्षत्रों में दिया हुआ, धरोहर रखा हुआ, सूद मिलने के लोभ से दिया हुआ नहीं मिलता उसी प्रकार भद्रा अथवा व्यतीपात योग में दिया, रखा, सूद वास्ने दिया धन नहीं मिलता है ॥ २४ ॥

जलाशय खुदवाने और पहिले पहिल नाघने गाने का मुहूर्त ।

मित्रार्कध्रुववासवांनुपमघातोयान्त्यपुष्येन्दुभिः ।
पापैर्हीनबलैस्तनौ सुरगुरौ ज्ञेया भृगौ खे विधौ ॥
आप्ये सर्वजलाशयस्य खननं व्यम्भोमघैःसेन्द्रमै-
स्तैर्नृत्यं हिबुकेशुभैस्तनुगृहेज्ञेऽब्जे जराशौ शुभम् ॥ २५ ॥

अन्वयः—मित्रार्कध्रुववासवानुपमघातोयान्त्यपुष्येन्दुभिः, पापैः हीनबलैः तनौ, सुरगुरौ, ज्ञे, वा खे भृगौ चन्द्रेवा आप्ये सर्वजलाशयस्य खननं शुभम् तैः व्यम्भोमघैः सेन्द्रमैः शुभैः हिबुके ज्ञे अब्जे जराशौ नृत्यं शुभम् ॥२५॥

भाषार्थ—मित्र संज्ञा वाले नक्षत्र तथा धनिष्ठा, शतभिषा, मघा, पूर्वाषाढ, पुष्य, मृगशिरा नक्षत्रों में बलहीन पापग्रह लग्न-में बृहस्पति, बुध दशम में मीन-चन्द्र में जलाशय (तड़ागादि) खुदवाना उत्तम है । पूर्वाषाढ, मघा छोड़ और ज्येष्ठा सम्मिलित करते हुए प्रथम कथित नक्षत्रों में चतुर्थ शुभग्रह में बुध लग्न में हों चन्द्र बुधराशि का हो इसमें प्रथम नृत्य शिक्षा उत्तम है ॥ २५ ॥

नौकरी करने का मुहूर्त ।

क्षिप्रे मैत्रे वित्तितार्केज्यवारे सौम्ये लग्नेऽर्के
कुजे वा खलाभे । योनेर्मैत्र्यां राशिपोश्चापि
मैत्र्यां सेवा कार्या स्वामिनः सेवकेन ॥ २६ ॥

अन्वयः—क्षिप्रे, मैत्रे, वित्तितार्केज्यवारे, सौम्ये लग्ने, अर्के-कुजे वा खलाभे, योनेः मैत्र्यां राशिपोः मैत्र्यां सेवकेन स्वामिनः सेवा कार्या ॥२६॥

भाषार्थ—क्षिप्र संज्ञा वाले नक्षत्र में तथा अनुराधा में, बुध, शुक, सूर्य दिनों में,

शुभ ग्रह लग्न में, सूर्य, मंगल के १० और ११ दशा स्थित में नोकर स्वामी की सेवा में रत हो ॥ २६ ॥

स्वात्यादित्यमृदुद्विदैवगुरुभे कर्णत्रयाश्वे चरे ।
लग्ने धर्मसुताष्टशुद्धिसहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः ॥
नारे ग्राह्यमृणं तु संक्रमदिने वृद्धौ करेऽर्केऽहि यत् ।
तदंशेषु भवेदृणं न च बुधे देयं कदाचिद्धनम् ॥ २७ ॥

स्वात्यादित्य मृदुद्विदैवगुरुभे, कर्णत्रयाश्वे, चरे, धर्मसुताष्टशुद्धिसहिते लग्ने, द्रव्यप्रयोगः शुभः । नारे ऋणं न ग्राह्यम् तु संक्रमदिने, वृद्धौ, करे, अर्केऽहियत् ऋणं तत् वंशेषु भवेत् बुधे कदाचित् धनं न देयम् ॥ २७ ॥

भाषार्थ—स्वाती, पुनर्वसु, रेवती, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा तथा चर संज्ञा वाले नक्षत्रों में मेष, कर्क, तुला मकर इनमें से किसी लग्न में नवम पञ्चम शुद्धि में ऋण लेना उत्तम है, मंगल संक्रान्ति दिन वृद्धियोग, हस्त नक्षत्र रविवार को ऋण नहीं लेना चाहिए क्यों कि वह ऋण वंशों में (अगले) भी बुराता नहीं होता, बुध दिन किसी से ऋण नहीं लेना चाहिए ॥ २७ ॥

हल चशने को मुहूर्त ।

मूलद्वीशमघाचरध्रुवमृदुक्षिप्रैर्विनार्कं शनिं ।
पापैर्हीनवलैर्विधौ जललवे शुक्रे विधौ मांसले ॥
लग्ने देवगुरौ हलप्रवहणं शस्तं न सिंहे घटे ।
कर्काजैणघटे तनौ क्षयकरं रिक्तासु षष्ठ्यां तथा ॥ २८ ॥

अन्वय—मूलद्वीशमघाचरध्रुवमृदुक्षिप्रैः अर्कं शनिं विना पापैः हीनवलैः विधौ जललवे शुक्रे विधौ मांसले देवगुरौ लग्ने हलप्रवहणं शस्तम् सिंहे घटे कर्काजैणघटे तनौ रिक्तासु (हळप्रवहणम्) न शस्तम् ॥ २८ ॥

भाषार्थ—मूल, विशाखा, मघा, चर, ध्रुव, मृदु, क्षिप्र संज्ञा वाले नक्षत्रों में, तथा पापग्रहों के हीन चल होने हुए, चन्द्र जलराशिकी नवमांश में हो शुक्र चन्द्र उदित हों सातवें बृहस्पति लग्नस्थ हों तब हल चलाना चलवाना उत्तम है किन्तु

कुम्भ, कर्क, मकर, तुला लग्न हो रिक्ता तिथि हो तो प्रथम हलप्रवहण उत्तम नहीं
॥ २८ ॥

फणिचक्र और बीज बोने का मुहूर्त ।

एतेषु श्रुतिवारुणादिति विशाखोद्वनि भौमं विना
बीजोप्तिर्गदिता शुभात्त्वगुभतोऽष्टाग्नीन्दुरामेन्दवः ।
रामेन्दग्नियुगान्यसच्छुभकराण्युप्तौहलेऽर्कोऽङ्किता
द्वाद्रामाष्टनवाष्टभानिमुनिभिः प्रोक्तान्यसत्सन्ति च ॥२९॥

अन्वयः—एतेषु (पूर्वोक्तेषु हलप्रवहणमुहूर्तेषु मूलादिषु) श्रुतिवारुणादिति विशाखोद्वनि भौमं विना बीजोप्तिः गदिता । अगुभतः अष्टाग्नीन्दुरामेन्दवः रामेन्दग्नियुगानि भानि असत् शुभकराणि च अर्कोऽङ्कितात् भात् रामाष्ट नवाष्ट भानि मुनिभिः असत् सन्ति च प्रोक्तानि ॥२९॥

भाषार्थ—पूर्वोक्त हलप्रवहण मुहूर्तों में से श्रवण, शतभिषा, पुनर्वसु, विशाखा नक्षत्र तथा मंगलवार को छोड़ शेष नक्षत्र चारों में बीज बोना शुभ है । राहु नक्षत्र से आठ नक्षत्र शुभ हैं तीन पुनः शुभ और १ अशुभ है सूर्य से त्यक्त नक्षत्रों में से क्रमशः ३ अशुभ और आठ शुभ हैं पुनः नव अशुभ और आठ शुभ है ॥२९॥

जुलाब लेने और वमन करने तथा धर्म क्रिया का मुहूर्त ।

त्वाष्टान्मित्रकभाद्द्वयेऽम्बुपलघुश्रोत्रे शिरामोक्षणं
भौमार्केज्यदिने विरेकवमनाद्यं स्याद्बुधाकी विना ।
मित्रं क्षिप्रचरध्रुवे रविशुभाहेलग्नवर्गे विदो
जीवस्याऽपि तनौ गुरौ निगदिता धर्मक्रियातद्वले ॥३०॥

अन्वय—त्वाष्टात् मित्रकभात् द्वये अम्बुपलघुश्रोत्रे भौमार्केज्यदिने शिरामोक्षणं किन्तु बुधाकीं विना विरेक वमनादिकं न स्यात् । मित्र क्षिप्र चरध्रुवेषु रविशुभाहे विदः जीवस्यापि लग्नवर्गे तनौ धर्मक्रिया निगदिता ॥३०॥

भाषार्थ—चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, रोहिणी, मृगशिरा, शतभिषा, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्, श्रवण नक्षत्र, मंगल, रवि, बृहस्पतिवार, इनमें जुलाब, वमन लेना श्रेष्ठ है । मित्र, क्षिप्र, चर, ध्रुव, संज्ञा वाले नक्षत्र रविवार, शुभ चन्द्रमा

वृहस्पति का लग्नस्थ, बुध, वृहस्पति का लग्नवर्ग, वृहस्पति, की धर्म करने वाले पर
सबलता, इत्यादि होने पर धर्म क्रिया प्रारम्भ करनी चाहिए ॥३०॥

धान्य च्छेदनमुहूर्त ।

तीक्ष्णाजपादकरवह्नीवसुश्रुतीं
दुस्वाती मघोत्तरजलांतकतक्षपुष्ये ।
मंदाररिक्तरहिते दिवसेऽतिशस्ता
धान्यच्छिदानिगदिता स्थिरभे विलग्ने ॥ ३१ ॥

अन्वयः—तीक्ष्णाजपादवह्निषु श्रुतीन्दु स्वाती मघोत्तर जळान्तकतक्षपुष्ये मन्दार
रिक्त रहिते दिवसे स्थिरभे विलग्ने धान्यच्छिदा अतिशस्ता निगदिता आचार्यैरेष्वेव नक्ष-
त्रादिषु धान्याश्छेद्याः ॥३१॥

भाषार्थ—तीक्ष्ण संज्ञा वाले नक्षत्र, पूर्वाभाद्रपद, हस्त, कुत्तिका, धनिष्ठा, श्रवण,
मृगशिरा, स्वाती, मघा तीनो उत्तरा, पूर्वाषाढ, भरणी, चित्रा, पुष्य ये नक्षत्र,
मङ्गल, शनि, से भिन्न दिन रिक्ता से भिन्न तिथि धान्यादि च्छेदन में शुभ-
कारक है ॥ ३१ ॥

धान्य मर्दन और सस्यरोपण मुहूर्त ।

भाग्यार्यमश्रुतिमघेन्द्रविधातृमूल-
मैत्रान्त्यभेषु कथितं कणमर्दनं सत् ।
द्वीशाजपान्निर्ऋतिधातृशतार्यमर्क्षे
सस्यस्य रोपणमिहार्किकुजौ विना सत् ॥३२॥

अन्वयः—भाग्यार्यमश्रुतिमघेन्द्रविधातृमूलमैत्रान्त्यभेषु कणमर्दनं सत् । द्वीशा-
जपान्निर्ऋतिधातृशतार्यमर्क्षे अर्किकुजौ विना सस्यस्य रोपणम् सत् (उक्त मिति शेषः) ॥३२॥

भाषार्थ—पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, श्रवण, मघा, ज्येष्ठा, रोहिणी, मूल,
अनुराधा, रेवती इन नक्षत्रों में धान्यमर्दन (बैलों द्वारा दोंय चलवाना) शुभ है ।
विशाखा, पूर्वाभाद्रपद, मूल रोहिणी, शतभिषा, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रों में रविवार
और मङ्गलवार भिन्न वारों में धान्य का एकत्र करना उत्तम माना गया है ॥३२॥

धान्य की स्थिति और वृद्धि का मुहूर्त ।

मिश्रोग्ररौद्रभुजगेन्द्रविभिन्नभेषु
कर्काजितौलिरहिते च तनौ शुभाहे ।
धान्यस्थितिः शुभकरा गदिता ध्रुवेज्य
द्वीशेन्द्रदस्रचरभेषु च धान्यवृद्धिः ॥ ३३ ॥

अन्वयः—मिश्रोग्ररौद्रभुजगेन्द्रविभिन्नभेषु कर्काजितौलिरहिते तनौ शुभाहे धान्यान्तः
स्थितिः शुभकरी गदिता । ध्रुवेन्द्रद्वीशेन्द्रदस्रचरभेषु धान्यवृद्धिः शुभा गदिता ॥ ३३ ॥

भाषार्थ—मिश्र, उग्र, रौद्र ज्येष्ठादि नक्षत्रों को छोड़ शेष नक्षत्रों में मेष, कर्क,
तुला को छोड़ शेष लग्नों में बृहस्पति इत्यादि शुभ वारों में धान्य एकत्र करना
उत्तम है । ध्रुव संज्ञा वाले नक्षत्रों में पुष्य, विशाखा, ज्येष्ठा, अश्विनी, तथा चर
संज्ञावाले नक्षत्रों में सवैया इत्यादि करने के लिए धान्य देना चाहिए ॥ ३३ ॥

शांतिक पौष्टिक मुहूर्त ।

क्षिप्रध्रुवांत्यचरमैत्रमघासु शस्तं
स्याच्छांतिकं च सह पौष्टिकमंगलाभ्याम् ।
खेर्केविधौ शुभगते तनुगे गुरौ नो
मौढ्यादिदुष्टसमयेऽशुभदं निमित्ते ॥ ३४ ॥

अन्वयः—क्षिप्रध्रुवान्त्यचरमैत्रमघासु पौष्टिकमङ्गलाभ्याम् सह, शान्तिकम् शस्तं स्यात्
अर्के खे, विधौ सुखगते, गुरौ तनुगे (शान्त्यादि कार्यम्) मौढ्यादिदुष्टसमये नो [शुभम्]
निमित्ते अशुभदं न भवतीति बोध्यम् ॥ ३४ ॥

भाषार्थः—क्षिप्र, ध्रुव, संज्ञा वाले नक्षत्र तथा रेवती, स्वाती आदिचर संज्ञा के
नक्षत्र, अनुराधा, मघा, नक्षत्रों में, किन्तु सूर्य दसमचन्द्र चौथे, बृहस्पति लग्न में हो तो
मङ्गल (ग्रहशान्ति) पौष्टिक (गणेश पूजन) वर्म शुभ है गुरु शुक्रारत में इन कामों का
करना शुभ नहीं किन्तु गुरुशुक्रारत में केतुदर्शन होतो अशुभ नहीं है ॥ ३४ ॥

हवन में किस ग्रह के मुख में आहुति पड़ती है ।

सूर्यभात्त्रिभिरेवाग्ने सूर्यविच्छुक्रपंगवः ।

चंद्ररेज्यागुशिखिनो नेष्टा होमाहुतिः खले ॥ ३५ ॥

अन्वयः—सूर्यभात् त्रिभिरेचान्द्रे सूर्य बिन्दुकपंगवः चन्द्ररेज्यागुशिखिनः होमाहुतिः खले (होमाहुतिः) नेष्टा इति पुनर्योजनम् ॥ ३५ ॥

भाषार्थः—सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक ३-३ गिने और क्रमशः प्रथम में सूर्य की द्वितीय में बुध, तृतीय में शुक्र, फिर तीन शनि, पुनः चन्द्र, अनन्तर ३ मङ्गल, पुनः तीन वृहस्पति, ३ केतु ३ राहु, इस प्रकार आहुति समझना चाहिए ॥ ३५ ॥

अग्निवास ज्ञानम् ।

सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः । सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशौ दि विभूतले च ॥ ३६ ॥

अन्वयः—तिथिः वारयुता सैका कृताप्ता गुणे, अभ्रे, शेषे भुवि वह्निवासः (एतत्) सौख्याय, शशियुग्मशेषे दिवि, भूतले च (वह्निवासः) एतस्मिन् प्राणार्थ नाशौ ॥ ३६ ॥

भाषार्थः—तिथि को प्रथम तो वार से युक्त करे १ मिलावे ४ से भाग दे अनन्तर यदि ३ बचे तो अग्निवास पृथ्वी में जानना चाहिए यह शुभदा है और १ बचे तो अग्निवास स्वर्ग में समझना चाहिए यह प्राणनाश के लिए होता है २ बचे तो अग्निवास पाताल में समझना चाहिए पाताल में अग्निवास समझना यह धन नाशकारी है जैसे ६ तिथि को शुक्र है तो तिथि दिन मिलकर १२ हुआ १ मिला ४ भाग देकर शेष १ हुआ अग्निवास स्वर्ग में हुआ हानिकारक है ॥ ३६ ॥

नया अन्न खाने कां मुहूर्त ।

नवान्नं स्याच्चरक्षिप्रमृदुभे सत्तनौ शुभम् । विना नन्दा विषघटी मधुपौषार्किभूमिजान् ॥ ३७ ॥

अन्वयः—चरक्षिप्रमृदुभे सत्तनौ नन्दा विषघटीमधु पौषार्किभूमिजान् विना नवान्नं सत् । नवान्नं भक्षणमेतेषु कार्यमित्यर्थः ॥ ३७ ॥

भाषार्थः—चर, क्षिप्र, मृदु, संज्ञा वाले नक्षत्र, उत्तम लग्न, में नन्दा तिथि, विषघटी को छोड़ तथा चैत्र पौष मास, शनि, मङ्गलवार छोड़ कर औरों में नवान्न भक्षण नया अन्न का खाना उत्तम है ॥ ३७ ॥

जलयान (नौका) आदि बनाने का मुहूर्त ।

याम्यत्रयविशाखेन्द्रसार्प पित्र्येशभिन्नमे ।

भृग्विज्यार्कदिने नौकाघटनं सत्तनौ शुभम् ॥ ३८ ॥

अन्वयः—याम्यत्रयं विशाखेन्द्र सार्पपित्र्येशभिन्नमे भृग्विज्यार्कदिने सत्तनौ नौकाघटनम् शुभम् (एतेषुनक्षत्रादि नौका घटनीया) ॥३८॥

भाषार्थः—भरणी, कृतिका, रोहिणी, विशाखा, ज्येष्ठा, अश्लेषा, मघा, आर्द्रा, नक्षत्रों से भिन्न नक्षत्र में शुक्रवार, गुरुवार, रविवार में शुभ लग्न होनेपर तथा शुभ ग्रहों की दृष्टि भी होने पर नौका बनवाना शुभ है ॥३८॥

वीर साधना और अभिचार मुहूर्त ।

मूलार्द्राभरणीपित्र्यमृगे सौम्ये घटे तनौ ।

सुखे शुकेऽष्टमे शुद्धे सिद्धिर्वीराभिचारयोः ॥ ३९ ॥

अन्वयः—मूलार्द्राभरणी पित्र्यमृगे घटे तनौ सौम्ये, शुके सुखे (सति) अष्टमे शुद्धे वीराभिचारयोः सिद्धिः ॥३९॥

भाषार्थः—मूल, आर्द्रा, भरणी, मघा, मृगशिरा नक्षत्रों में कुम्भ लग्न में अष्टम शुद्ध होते हुए वीर कर्म (महत्तयुद्ध) अभिचार (मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन) उत्तम होता है ॥३९॥

रोग से छूटने पर स्नान करने का मुहूर्त ।

व्यंत्यादितिध्रुवमघानिलसार्पधिष्णये ।

रिक्ते तिथौ चरतनौ विकवीन्दुवारे ॥

स्नानं रुजा विरहितस्य जनस्य शस्तं ।

हीने विधौ खलखगैर्भवकैन्द्रकोणे ॥ ४० ॥

अन्वयः—व्यंत्यादितिध्रुवमघानिलसार्पधिष्णये रिक्ते तिथौ चरतनौ विकवीन्दुवारे विधौ हीने खलखगैः भवकैन्द्रकोणे रुजा विरहितस्य जनस्य स्नानं शस्तं ॥४०॥

भाषार्थः—रेवती, पुनर्वसु, ध्रुव संज्ञा वाले नक्षत्र मघा, स्वाती, अश्लेषा, नक्षत्रों की

छोड़ कर शेष नक्षत्रों में रिक्ता तिथि में होते हुए पापग्रहों के ११, ४, ७, १०, नवम, पञ्चम स्थान में होते हुए रोग युक्त मनुष्य का स्नान करना उत्तम है ॥४०॥

शिल्प (कारीगरी) सीखने का सुहृत् ।

मृदुक्षिप्रध्रु चरे ज्ञे गुरौ वास्वलग्नगे ।
विधौ ज्ञजीववर्गस्थे शिल्पविद्या प्रशस्यते ॥ ४१ ॥

अन्वयः—मृदु क्षिप्र ध्रुव चरे ज्ञे गुरौ वा स्वलग्नगे विधौ ज्ञजीववर्गस्थे शिल्पविद्या (आचार्यः) प्रशस्यते ॥४१॥

भाषार्थः—मृदु, क्षिप्र, ध्रुव, चर संज्ञा वाले नक्षत्रों में बुध, बृहस्पति के स्व-क्षेत्री होने पर तथा चन्द्रमा के बुध, बृहस्पति के चर्ग में स्थित होने पर आचार्यों ने शिल्पकला (कारीगरी) सीखना उत्तम कहा है ॥४१॥

संधान (मेरु) करने का सुहृत् ।

सुरेज्यमित्रभागेषु चाष्टम्यां तैतिले हरौ ।
शुक्रदृष्टे तनौ सौम्यं वारे सन्धानमिष्यते ॥ ४२ ॥

अन्वयः—सुरेज्यमित्रभागेषु अष्टम्यां हरौ (तिथौ) तैतिळे (करणे) शुक्रदृष्टे तनौ सौम्यवारे सन्धानम् इष्यते (एतेषु सन्धिः कार्या) ॥४२॥

भाषार्थः—पुष्य, अनुराधा, पूर्वाफाल्गुनी इन नक्षत्रों में ८, १२ तिथि, तैतिल करण, शुक्रग्रह से देखे शुभ लग्न में बृहस्पति आदि शुभ दिन में सन्धि (मिलाप) करना श्रेष्ठ कहा है ॥४२॥

परीक्षा (इम्तिहान) का सुहृत्

त्यक्त्वाऽष्टभूतशनिविष्टिकुजाञ्जनु-
र्भमासौ मृतौ रविविधूअपि भानि नाड्यः ।
द्वयंगे चरे तनुलवे शशिजीवतारा
शुद्धौकरादितिहरीन्द्रकपे परीक्षा ॥ ४३ ॥

अन्वयः—अष्टभूत शनिविष्टिकुजान् अनुभेमासौ मृतौ रविषिधू नाडयः भानि अष्टि-
त्यक्त्वा द्वयङ्गे चरे तनुळ्वे शशिजीवतारा शुद्धौ करादितिहरीन्द्रकपे परीक्षा शस्ता ॥४३॥

भाषार्थः—अष्टमी चुतुर्दशी तिथि, शनिवार, जन्मनक्षत्र, जन्ममास, अष्टम-
रवि, चन्द्र को छोड़ द्विस्वभाव लग्न, चरलग्न, द्विस्वभाव के नवमांश हों चन्द्र
बृहस्पति तारा, शुद्ध हो हस्त, पुनर्वसु, श्रवण, ज्येष्ठा, शतभिषा, नक्षत्र हों तो
परीक्षा देना अथवा लेना शुभ है ॥४३॥

शुभ कार्य में लग्नशुद्धि ।

व्ययाष्टशुद्धोपचये लग्नगे शुभदृश्यते ।

चन्द्रे त्रिषड्दशायस्थे सवारिभः प्रसिद्ध्यति ॥ ४४ ॥

अन्वयः—व्ययाष्टशुद्धोपचये शुभदृश्यते लग्नगे चन्द्रे त्रिषड्दशायस्थे सवारिभः प्रसिद्ध्यति
एतेषु सर्वेषामेव पूर्वोक्तानां कार्याणामारम्भो विधेयः ॥४४॥

भाषार्थः—१२ वीं ८ वां शुद्ध हो इतर ६ ठां ११ वां १० वां शुभ दृष्टि से युक्त
हो चन्द्रमा ३ रा ६ ठां १० वां ११ वां में हो तो प्रत्येक शुभ कार्य करना चाहिये ॥४४॥

ज्वर उत्पन्न होने से निवृत्ति दिन संख्या ।

स्वातीन्द्रपूर्वाशिवसार्पभे मृतिर्ज्वरेऽन्त्यमैत्रे स्थिरता भवेद्भुजः ।

याम्ये श्रवोवारुणतक्षमे शिवाघसा हि पक्षोद्धयधिपार्कवासवे । ४५ ॥

मूलाग्निदासो नव पित्र्यभे नखा बुध्न्यार्यमेज्यादितिधातृभेनगाः

मासोऽब्जवैश्वेथ यमाहिमूलभे मिश्रेशपित्र्ये फणिदंशने मृतिः । ४६ ॥

अन्वयः—स्वातीन्द्रपूर्वाशिवसार्पभे ज्वरे मृतिः, अन्त्यमैत्रे सजः स्थिरता, याम्यश्रवो-
वारुण तक्षमे शिवाघसाः द्वयधिपार्कवासवे पक्षः मूलाग्निदासे नव, पित्र्यभे नखाः, अब्जवैश्वे-
मासः, यमाहिमूलभे मिश्र शपित्र्ये फणिदंशने मृति (मरणं) निगदितम् इति शेषः ॥४५॥४६॥

भाषार्थः—स्वाती, तीनों पूर्वा, अश्लेषा ज्वर चढ़े तो मृत्यु, रेवती, अनुराधा
में दिन बहुत लगना, भरणी, श्रवण, शतभिषा चित्रा का रोगी के रोग में ११ दिन
में आराम होना, विशाखा, हस्त, धनिष्ठा, का ज्वरीका १५ दिन में नीरोग होना,
मूल कृतिका अश्विनी के रोग में ६ दिन में नीरोग होना, मघा नक्षत्र के रोगी का

२० दिन में निरोगिता, उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, पुष्य, पुनर्वसु रोहिणी का सात दिन में नीरोग होना, मृगशिरा, उत्तराषाढ़ के उत्पन्न रोगका १ मास रहना शास्त्रकारों ने बताया है। भरणी, अश्लेषा, मूल, कृतिका, विशाखा, आर्द्रा, मघा नक्षत्र में कुत्ता के काटने पर अवश्य मरण आचार्यों ने बताया है ॥४५॥४६॥

रोगी के शीघ्र मरने का योग ।

रौद्राहिशाक्रांबुपयाम्यपूर्वादिदेववस्वग्निषु पापवारे ।

रिक्ताहरिस्कन्ददिने च रोगे शीघ्रं भवेद्रोगिजनस्य मृत्युः ॥४७॥

अन्वयः—रौद्राहिशाक्रांबुपयाम्यपूर्वादिदेववस्वग्निषु पापवारे हरिस्कन्ददिने रोगे (प्रादुर्भूते) रोगिजनस्य मृत्युः शीघ्रं भवेत् ॥४७॥

भाषार्थः—आर्द्रा, अश्लेषा, ज्येष्ठा, शतभिषा, भरणी, तीनोंपूर्वा, विशाखा, धनिष्ठा, कृतिका ये नक्षत्र हों और रवि, मंगलवार हो रिक्ता तिथि तथा षष्ठी भी हो इस में प्राणी को रोग उत्पन्न हो तो मृत्यु अवश्य होती है ॥४७॥

प्रेतदाह का सुहृत् ।

क्षिप्राहिमूलेन्दुहरीशवायुभे प्रेतक्रियास्याज्भक्षकुंभगे विधौ ।

प्रेतस्य दाहं यमादिगमंत्यजेच्छयावितानं गृहगोपनादि च ॥४८॥

अन्वयः—क्षिप्राहिमूलेन्दुहरीशवायुभे प्रेतक्रिया स्यात् भक्षकुम्भगे विधौ प्रेतस्य दाहं यमादिगमं शयावितानं गृहगोपनादि त्यजेत् ॥४८॥

भाषार्थः—क्षिप्र संज्ञावाले नक्षत्र में अश्लेषा, मूल, ज्येष्ठा, अश्वि, आर्द्रा नक्षत्र में प्रेतक्रिया श्राद्ध आदि करना चाहिये। तथा मीन कुम्भराशि के चन्द्रमा होने पर प्रेत दाह, दक्षिण दिशा में जाना, खाट बूनना घर छाना वर्जित है ॥४८॥

काष्ठसंग्रह का सुहृत् ।

सूर्यर्क्षाद्रिसभैरधः स्थलगतैः पाको रसैः संयुतः ।

शीर्षे युग्ममितैः शवस्य दहनं मध्ये युगैः सार्षभिः ॥

प्रागाशादिषु वेदभैः स्वसुहृदां स्यात्संगमोरोगभीः ।

क्वाथादेः करणं सुखं च गदितं काष्ठादिसंस्थापने ॥४९॥

अन्वयः—सूर्यक्षात् रसभैः अधः स्थळगतैः पाकः रसैः संयुतः स्यात्, युग्ममितैः शीर्षे (स्थापितैः) शवस्य दहनं, मध्ये युगैः सर्पभीः, प्रागादिषु वेदभैः स्वसुहृदा संगमः (स्यात्) रोगभीः, क्वाथादेः करणम् (उत्तरे) काष्ठादि संस्थापने सुखं गदितम् ॥४६॥

भाषार्थः—सूर्य जिस नक्षत्र का हो उस नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने सूर्य नक्षत्र से ६ नक्षत्र अधःस्थल (नीचे) लिखे इन में लकड़ी रखने से वह लकड़ी सुन्दर पाक (रसोई) के काम में आती है। दो नक्षत्र शिर पर स्थापन करने से उस लकड़ी से प्रेतदाह (मुर्दा जलाना) होता है। ४ नक्षत्र मध्य में स्थापन करे और उन नक्षत्रों में लकड़ी रखने से सर्पभय रहता है। चार नक्षत्रों को चार दिशाओं में रखे पूर्व में मित्र संगम, दक्षिण में रोग भय, पश्चिम में क्वाथ के काम आना उत्तर में मंगल बताया है ॥४६॥

त्रिपुष्कर योग ।

भद्रातिथी रविजभूतनयार्कवारे द्वीशार्यमाजचरणादितिवह्निवैश्वे ॥
त्रैपुष्करो भवति मृत्युविनाशवृद्धौ त्रैगुण्यदोद्विगुणकृद्भुतक्षचांद्रे ५०

अन्वयः—रविजभूतनयार्कवारे द्वीशार्यमाजचरणादितिवह्निवैश्वे भद्रातिथिः (चेत्) त्रैपुष्करः भवति मृत्युविनाशवृद्धौ त्रैगुण्यदः वसुतक्षचान्द्रे द्विगुणकृत् (अतः तस्य द्विपुष्कर इति नाम) ॥५०॥

भाषार्थः—रवि, मंगल, शनिवार को विशाखा, उत्तरा फाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपदा, पुनर्वसु, कृत्तिका उत्तराषाढ के नक्षत्रों के तथा भद्रातिथि (द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी) के होने पर त्रिपुष्कर योग होता है। यह त्रिपुष्कर योग मृत्यु, विनाश, वृद्धि होने पर तिगुनी मृत्यु, विनाश, वृद्धि होती है। धनिष्ठा, चित्रा, मृगशिरा नक्षत्र में द्विपुष्कर योग होता है उसमें मृत्यु, विनाशादि द्विगुणता को प्राप्त होता है ॥५०॥

शव प्रतिकृति (पुतला दाह) का मुहूर्त ।

शुक्रारार्किषु दर्शभूतमदने नन्दासुतीक्ष्णोग्रभे ।
पौष्णेवारुणभे त्रिपुष्करदिने न्यूनाधिमासेऽयने ॥
याम्येऽब्दात्परतश्च पातपरिधे देवेज्यशुक्रास्तके ।

भद्रावैधृतयोः शवप्रतिकृते दाहो न पक्षे सिते ॥५१॥

अन्वयः—शुक्रार्कपु, दर्शभूतमदने, नन्दासु, तीक्ष्णोप्रमे, पौष्णे, वारुणमे, त्रिपुष्कर दिने न्यूनाधिमासे, याम्ये अयने, अद्वात् परतः (दाहो विधेयः) पातपरिधे देवेभ्य शुक्रास्तगे सिते पक्षे शवप्रतिकृतेः दाहः न (विधेयः इति शेषः) ॥५१॥

भाषार्थः—शुक्र मङ्गल शनिवार, चतुर्दशी, अमावस्या, त्रयोदशी, प्रतिपद, पष्ठी, एकादशी तिथि, तीक्ष्ण, उग्र नक्षत्र, रेवती शतभिषा नक्षत्र, त्रिपुष्कर दिन, न्यूनाधिमास, दक्षिणायन में १ वर्ष बाद कुशपुत्रदाह करना चाहिए। व्यतीपात, परिघ-योग, बृहस्पति शुक्र अस्त, भद्रा वैधृति योग तथा शुक्लपक्ष में कुशपुत्रदाह नहीं करना चाहिए ॥५१॥

साधारण वर्ज्य योग ।

जन्मप्रत्यरितारयोर्मृतिसुखान्त्येऽब्जे च कर्तुं न सन् ।
मध्योमैत्रभगादिति ध्रुवविशाखाद्वयं ध्रिभेजेऽपि च ॥
श्रेष्ठोऽर्केज्यविधोर्दिने श्रुतिकरस्वात्यश्विपुष्ये तथा ।
त्वाशौचात् परतोविचार्यमखिलं मध्ये यथा संभवम् ॥५२॥

अन्वयः—कर्तुः जन्मप्रत्यरितारयोः अब्जे मृतिसुखान्त्ये दाहो न सत् मैत्रभगादिति ध्रुव विशाखाद्वयं ध्रिभेजेऽपि (दाहः) मध्यः । अर्केज्यविधोर्दिने श्रुतिकरस्वात्यश्विपुष्ये तथा (श्रेष्ठ इत्यर्थः) अशौचात् परतः अखिलं विचार्य मध्ये यथासंभवम् कर्तव्यम् इति शेषः ॥५२॥

भाषार्थः—पुतला दाह करने वाले के जन्म, प्रत्यरितारा में अष्टम, चतुर्थ, द्वादश चन्द्रमा में शवदाह करना श्रेष्ठ नहीं। अनुराधा, पूर्वाफाल्गुनी, पुनर्वसु, तोनों उत्तरा, रोहिणी विशाखा के पूर्व दो चरण तथा बुधको शव प्रतिकृति (पुतला) दाह मध्यम है रविवार, गुरुवार, सोमवार दिन, श्रवण, हस्त, स्वाती, अश्विनी, पुष्य नक्षत्र में उत्तम है। त्रयोदशाह के उपरान्त दिनों की यह नियम हैं १३ दिन के भीतर तो स्वेच्छानुसार करे ॥५२॥

अभुक्तमूलं घटिकाचतुष्टयं ज्येष्ठांत्यमूलादिभवं हि नारदः ।
वशिष्ठ एकद्विघटीमितं जगौ बृहस्पतिस्त्वेकघटीप्रमाणकम् ॥५३॥

अन्वयः—नारदः ज्येष्ठान्त्यमूलादिभवं घटिकाचतुष्टयं अभुक्तमूलं जगौ । वशिष्ठः एकद्विघटीमितं (जगौ) बृहस्पतिस्तु एकघटी प्रमाणकं (जगाविति पूर्वेण सम्बन्धः) ॥५३॥

भाषार्थ—नारदजी ने ज्येष्ठा का अन्तिम चरण तथा मूल के आदि ४ घड़ियों को “अभुक्त मूल” कहा है । वशिष्ठ जी ने १-२ घड़ी को, बृहस्पति जी ने केवल १ घड़ी को अभुक्त मूल कहा है ॥५३॥

मूल नक्षत्र में बालक के जन्म का विचार

अथोचुरन्ये प्रथमाष्टवट्यो मूलस्य संक्रान्तिमपंचनाड्यः ।
जातंशिशु तत्र परित्यजेद्वा मुखं पितास्याष्टसमा न पश्येत् ॥५४॥

अन्वयः—अथ अन्ये (शास्त्रपार गामिनो मुनयः) मूलस्य प्रथमाष्टवट्यः संक्रान्तिमपंचनाड्यः ऊचुः । तत्र जातं शिशुं परित्यजेत् अथवा अष्टसमाः पिता मुखं न पश्येत् (तस्य जातस्य शिशोरित्यर्थः) ॥५४॥

भाषार्थ—और आचार्यों ने मूल की प्रथम आठ घड़ियों को संक्रान्तिमपञ्चनाड़ी (अभुक्त मूल) कहा है । उत्पन्न बच्चे को छोड़ देना चाहिए अथवा ८ वर्ष तक पिता उस बच्चे का मुख न देखे ॥५४॥

मूल और अश्लेषा नक्षत्र में उत्पन्न बालक का विचार ।

आद्ये पिता नाशमुपैति मूलेपादे द्वितीये जननी तृतीये ॥
धनं चतुर्थोऽस्य शुभोऽथ शान्त्या सर्वत्र सत्स्यादहिमे विलोमम् ॥५५॥

अन्वयः—मूले आद्ये पादे पिता नाशमुपैति द्वितीये पादे जननी तृतीये धनम् चतुर्थः शुभो (भवति) अथ शान्त्या सर्वत्र सत् (शान्तिं करणेन सर्वत्रैव मूलस्य निर्दोषितैव भवतीति ध्येयम्) अहिमे विलोमम् ॥५५॥

भाषार्थ—मूल के प्रथम चरण में पिता का, द्वितीय में माता का, तृतीय में धन का नाश होता है चतुर्थ चरण शान्ति से शुभद है अथवा शान्ति से सभी शुभदायी हैं अश्लेषा नक्षत्र के जन्म वाले बालक के जन्मफल मूल से उलटे हैं चतुर्थ में जन्म से पिता, तृतीय में माता दूसरे में धन नाश होता है प्रथम चरण में शान्ति से शुभद है ॥५५॥

मूल नक्षत्र के वास का विचार

स्वर्गे शुचि प्रोष्ठपदेषुमाघे भूमौ नभः कार्तिकचैत्रपौषे ।

मूलं ह्यधस्तात् तपस्यमार्गे वैशाखशुक्रेष्वशुभं च तत्र ॥५६॥

अन्वयः—मूलं शुचिप्रोष्ठपदेषुमाघे स्वर्गे, (तिष्ठति) नभः कार्तिक चैत्र पौषे भूमौ, तपस्यमार्गे वैशाख शुक्रेषु अधः तत्र च अशुभं (यत्र मूल निवासस्तत्रैव मूल दोषः) ॥५६॥

भाषार्थः—आषाढ, भाद्रपद, आश्विन, माघ में मूलनिवास स्वर्ग में, धावण, कार्तिक चैत्र पौष में मूलनिवास भूमि में, फाल्गुण, मार्गशीर्ष वैशाख, ज्येष्ठ मासों में मूलनिवास पाताल में रहता है जब जहाँ निवास रहता है मूल वहीं फल भी देता है ॥५६॥

गंडान्त आदि में उत्पन्न बालक का परिहार ।

गंडांतेंद्रभशूलपातपरिघ्न्याघातगंडावमे संक्रान्ति व्यतिपातवैधृति-
सिनीवालीकुहूदर्शके ॥ वज्रेकृष्णचतुर्दशीषु यमघण्टे दग्धयोगे
मृतौ विष्टौ सोदरभे जनिर्न पितृभे शस्ता शुभा शान्तिः ॥५७॥

अन्वयः—गण्डान्तेन्द्रभशूलपातपरिघ्न्याघात-गण्डावमे, संक्रान्ति व्यतिपात वैधृति सिनी वाली कुहूदर्शके, वज्रे, कृष्णचतुर्दशीषु, यमघण्टे, दग्धयोगे, मृतौ, विष्टौ, भद्रायां सोदरभे, पितृभे जनिः (पुत्र्याः पुत्रस्यवोत्पत्तिः) न शस्ता शान्तिः शुभा शुभावहा भवति ॥५७॥

भाषार्थः—नक्षत्र, तिथि, लग्नों का जोड़ (सन्धि) ज्येष्ठा, शून, पात, परिघ, व्याघात, तथा गंड योग में पुत्र पुत्री का जन्म शुभ नहीं इसी प्रकार सूर्य संक्रान्ति, व्यतिपात, वैधृति, दृष्टचन्द्र अमा, नष्टचन्द्र अमा, वज्रयोग, कृष्णचतुर्दशी यमघण्ट, दग्ध, मृत्युयोग, भद्रा सहोदर भाई माता पिता के नक्षत्र में सन्तान का जन्म होना अच्छा नहीं ॥५७॥

नक्षत्रों की तारा संख्या ।

त्रिऋगपंचामिकुवेदवह्नयः शरेषुनेत्राशिवशरेंदुभूकृताः ।

वेदामिरुद्राशिवमामिवह्नयोब्धयः शतं द्विद्विरदाभतारकाः ॥५८॥

अन्वयः—त्रिच्यंगपंचाग्निकुवेदवह्नयः शरेषु नेत्रास्त्रि शरेन्दु भूकृताः वेदाग्निरुद्रास्त्रिः
यमाग्निरवह्नयः अन्वयः शतं द्विद्विरदाः भतारकाः (उक्ता इति शेषः) ॥५८॥

भाषार्थ—अश्विनी भरणी का स्वरूप ३, ३ ताराओं का, कृत्तिका, रोहिणी का
क्रमशः ५, ६ ताराओं का, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, काक्रमशः ३, १, ४ ताराओं
पुष्य, अश्लेषा, मघा, काक्रमशः ३, ५, ५ ताराओं का, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी
हस्त, चित्रा का क्रमशः २, २, ४, १ तारा का, स्वाती, विशाखा, अनुराधा ज्येष्ठा,
मूल का १, ४, ४, ३, ११ तारा का पूर्वाषाढ उत्तराषाढ अभिजित, श्रवण, धनिष्ठा,
का २, ६, ३, ३, ४ तारा का, शतभिषा पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद रेवती इनका
१००, २, २, ३२ ताराओं का होता है ॥५८॥

नक्षत्रों से आकृति ।

अश्वादिरूपं तुरंगास्ययोनि क्षुरोन एणास्यमणिगृहं च ॥
पृषत्कचक्रे भवनं च मंचः शय्याकरोमौक्तिकविद्रुमं च ॥५९॥
तोरणं बलिनिभं च कुण्डलसिंहपुच्छगजदंतमञ्चकाः ॥ त्रिचित्रच
त्रिचरणाभमर्दलोवृत्तभंचयमलाभमर्दलाः ॥६०॥

अन्वयः—तुरंगास्ययोनि क्षुरो न एणास्य मणिः च गृहं पृषत्कचक्रे च भवनं च मंचः
शय्याकरोमौक्तिक विद्रुमं तोरणं च बलिनिभं कुण्डलं सिंह पुच्छ गजदन्त मञ्चकाः त्रिचि
त्रिचरणाभमर्दलो वृत्तभं च यमलाभ मर्दलाः अश्वादि रूपम् ॥५९॥६०॥

भाषार्थ—अश्विनी से रेवती पर्यन्त सभी नक्षत्रों का क्रमशः घोड़ा, योनि क्षुरा,
गाड़ी, हिरण, मश्वि, घर, वाण, चक्र, घर, मंच, खाट, हाथी, मोती, मूंगा, तोरण,
भात, कुण्डल, सिंह की पूंछ, हाथी दाँत, मंच, त्रिकोण, तीन चरण, मृदङ्ग बाजा,
गोल, मंच, युगल जोड़ा, मृदङ्ग के समान रूप होता है ॥५९॥६०॥

बावली कूप तालाव और देव प्रतिष्ठा का मुहूर्त

जलाशयारामसुर प्रतिष्ठा सौम्याथने जीवशशांकशुक्रे ॥
दृश्ये मृदुक्षिप्रचरध्रुवे स्यात् पक्षे सितेस्वर्क्ष तिथिक्षणेवा ॥६१॥
रिक्तारवर्जेदिवसेऽतिशस्ता शशांकपापैस्त्रिभवांगसंस्थैः ॥
व्यंत्याष्टगैः सत्त्वचरैर्मृगैरे सूर्योद्यतेकौयुवतौ च विष्णुः ॥६२॥

शिवोनृयुग्मे द्वितनौ च देव्यः क्षुद्राश्चरेसर्वइमेस्थिरर्क्षे ॥
पुण्ये ग्रहाविघ्नपयक्षसर्पभूतादयोऽन्त्ये श्रवणे जिनश्च ॥६३॥

अन्वयः—जळाशयारामसुर प्रतिष्ठा सौम्यायने जीवशशाङ्क शुके दृश्ये मृदुक्षिप्रचर-
ध्रुवे सिते रिक्ताखर्व्ये स्वर्क्षे तिथिक्षणे वा स्यात् त्रिभवाङ्गसंस्थैः शशाङ्कपापैः व्यन्त्याष्टगैः
सत्खचरैः अतिशस्ता स्यात् । सूर्यः मृगेन्द्रे कः षटे विष्णुः युवतौ, शिवः नृयुग्मे च देव्यः
द्वितनौ, क्षुद्राः चरे, सर्वे इमे स्थिरर्क्षे ग्रहाः पुण्ये विघ्नप यक्षसर्पभूतादयः अन्त्ये, जिनः
श्रवणे स्थाप्यः ॥६१॥६२॥६३॥

भाषार्थ—वाचली तथा वागीचा औद देवस्थापन उत्तरायण सूर्य, बृहस्पति, शुक्र
चन्द्र उदय, मृग, क्षिप्र, चर, ध्रुव संज्ञा वाले नक्षत्र, शुक्लपक्ष, स्थापनीय वस्तु के
नक्षत्र, रिक्ता रहित तिथि में उत्तम है । चन्द्र, तथा दुष्ट ग्रह १२, ८ स्थान को छोड़
अन्य में हों तो ऊपर लिखे कार्यों का करना उत्तम है । सिंह में सूर्य, कुम्भ में
ब्रह्मदेव, कन्या में विष्णु, मिथुन में महादेव, द्विस्वभाव नक्षत्रों में गणपति, श्रवण में
बुद्धदेव (जिन) की उपासना उत्तम है ॥६१॥६२॥६३॥

❀ इति द्वितीयनक्षत्र प्रकरणं समाप्तम् ❀

संक्रान्ति प्रकरणम् ।

संक्रान्ति संज्ञा ।

घोराः संक्रमणमुग्रवौ हि शूद्रान् ध्वांक्षी विशोलघुविधौ च
चरर्क्षभौमे ॥ चौरान्महोदरयुतान् नृपतीन् ज्ञमैत्रेमन्दाकिनीस्थिरगुरौ
सुखयेच्चमन्दान् ॥ १ ॥ विप्रांश्च मिश्रभभृगौ तु पशूँश्च मिश्रा
तीक्ष्णार्कजेत्यजसुखा खलु राक्षसी च ॥ त्र्यंशे दिनस्य नृपतीन् प्रथमे
निहन्ति मध्ये द्विजानपि विशोऽपरके च शूद्रान् ॥ २ ॥

अन्वयः—उग्रवौ अर्कसंक्रमणं घोरा (नाम्नी) शूद्रान्, लघुविधौ ध्वांक्षी (नाम्नी)
विशः, चरर्क्षभौमे महोदरयुता (नाम्नी) चौरान्, ज्ञमैत्रे मन्दाकिनी (नाम्नी) नृपतीन्,

स्थिरगुरौ मन्दा (नाम्नी) विप्रान्, मिश्रभृगौ मिश्रा (नाम्नी) पशून्, सुखरति तीक्ष्णार्कजे अन्त्यज सुखा राक्षसी (नाम्नी), भवति दिनस्थ (भागत्रये कृते) त्र्यंशे प्रथमे नृप-
तीन्, मध्ये द्विजान्, अपरके विशः निहन्ति ॥१२॥

भावार्थ—उग्र संज्ञावाले नक्षत्र तथा रविशर को सूर्य संक्रान्ति 'धोरा' नाम की होती है वह शूद्रों को प्रसन्न रखती है इसी प्रकार लग्नसंज्ञानक्षत्र सोमवार ध्वांशी नाम की रविसंक्रान्ति वैश्यों को, चर नक्षत्र मंगलवार को महोदरयुता नाम की चोरो को, मैत्र संज्ञावाले नक्षत्र बुध दिन को रविसंक्रान्ति मन्दाकिनी नाम की राजाओं, को स्थिर नक्षत्र गुरुवार को मन्दानाम की रविसंक्रान्ति ब्राह्मणों को, मिश्र नक्षत्र शुक्रवार को मिश्रा नाम की संक्रान्ति पशुओं को, तीक्ष्ण नक्षत्र शनिवार राक्षसी नाम की संक्रान्ति चण्डालों को सुख देती है। दिन मान का तीन भाग करने पर प्रथमांश की संक्रान्ति राजा को दूसरे भाग की संक्रान्ति ब्राह्मणों को और तृतीय भाग की संक्रान्ति वैश्यों को नष्ट करती है ॥१२॥

अस्ते निशाप्रहरकेषु पिशाचकादीन्नक्तं—

चरानपिनटान्पशुपालकांश्च ।

सूर्योदये सकललिङ्गिजनं च सौम्यंयाम्या—

यनमकरकर्कटयोर्निरुक्तम् ॥ ३ ॥

अन्वयः—अस्ते (दिवाकरास्ते) निशाप्रहरकेषु पिशाचकादीन्, द्वितीये नक्तंचरान्, तृतीये, नटान् चतुर्थे पशुपालकान् सूर्योदये सकललिङ्गिजनान् (हन्ति) मकर कर्कटयोः सौम्य याम्यायनं निरुक्तम् ॥३॥

भावार्थ—सूर्य के अस्त होने पर रात्रि के प्रहरों में से प्रथमप्रहर में संक्रान्ति हो तो पिशाचों का द्वितीय में राक्षसों का, तीसरे प्रहर में नाचने वालों का चतुर्थ प्रहर में पशु (गाय मँस इत्यादि) के पालने वालों का संक्रान्ति अनिष्ट करती है। एवं सूर्योदय में संक्रान्ति हो तो पाण्डित्यों का नाश होता है। मकर, कर्क संक्रान्ति से क्रमशः उत्तरायण दक्षिणायन का व्यवहार होता है ॥३॥

द्वितीय संक्रान्तिओं का फल ।

षडशीत्याननं चापनृयुक्कन्याभूषे भवेत् ।

तुलाजौ विषुवं विष्णुपदं सिंहालिगोघटे ॥ ४ ॥

अन्वयः—चाप नृयुग्म कन्यकाश्रये (संक्रान्तिः) षडशीत्याननं, (इतिनाम्ना गदितम्) तुलाजो विषुवः, सिंहाळिगोवटे विष्णुपदं गदितम् ॥४॥

भाषार्थः—धनु, मिथुन, कन्या, मीन संक्रान्ति का “षडशीत्यानन” और तुला मेष संक्रान्ति का नाम विषुव और सिंह, वृश्चिक, कुम्भ संक्रान्ति का विष्णु पद है।४।

संक्रान्ति का पुण्य काल निर्णय ।

संक्रांतिकालादुभयत्रनाडिकाः पुण्यमताः षोडशषोडशोष्णगोः ।
निशीथतोऽर्धरात्रि संक्रमे पूर्वापराहान्तिमपूर्वभागयोः ॥ ५ ॥

अन्वयः—उष्णगोः संक्रान्ति कालात् उभयत्र षोडश षोडश नाडिकाः पुण्यः मताः । निशीथतः अर्धांश्च अत्र संक्रमे पूर्वापराहान्तिमपूर्व भागयोः (षोडश षोडश पुण्या इति पूर्व सम्बन्धः) ॥५॥

भाषार्थः—सूर्य की संक्रान्ति से पहले और बाद १६-१६ घड़ी पुण्य काल होता है। अर्ध रात्रि के पूर्व अथवा उत्तर में संक्रान्ति हो तो पूर्व पर दिन की १६-१६ घड़ियों में पुण्यकाल होता है किन्तु पूर्व दिन के पिछले भाग में और आगे आने वाले दिन के पूर्व भाग में पुण्यकाल समझना चाहिये ॥५॥

अर्धरात्रि में संक्रान्ति का विचार ।

पूर्णे निशीथे यदि संक्रमः स्याद्दिनद्वयं पुण्यमथोदयास्तात् ।
पूर्वं परस्ताद्यदि याम्यसौम्यायने दिने पूर्वपरे तु पुण्ये ॥ ६ ॥

अन्वयः—पूर्णे निशीथे यदि संक्रमः स्यात् दिनद्वयं पुण्यं अथ उदयास्तात् पूर्व पर-स्तात् यदि याम्य सौम्यायने [संक्रान्ती] भवतः पूर्वपरे दिने पुण्ये ॥६॥

भाषार्थः—अर्धरात्रि के समय यदि सूर्य संक्रमण हो तो पूर्वपर दोनों दिन पुण्यकाल होता है एवं सूर्य के उदय और अस्त काल में सूर्य संक्रमण हो तो (उत्तरायण, दक्षिणायन संक्रान्ति) कर्क, मकर संक्रान्ति हो तो पूर्व और पर दिन पुण्यकाल माना गया है ॥६॥

उदयास्त को अपवाद ।

संध्या त्रिनाडी प्रमितार्क विंवादधोदितास्तादधऊर्ध्वमत्र ।
चेद्याम्यसौम्ये अयने क्रमात्स्तःपुण्यौतदानीं परपूर्वघसौ ॥७॥

अन्वयः—अर्धोदितात् अर्कविष्वात् अर्धः ऊर्ध्वं त्रिनाडी प्रमिता सन्ध्या [कालः] अत्र चेत् याम्य सौम्ये अयने [स्तः] तदानीं परपूर्व घसौ पुण्यौ स्तः ॥७॥

भाषार्थः—अस्त, उदय पूर्व उत्तर ३ घड़ी को सन्ध्या कहते हैं प्रातःकाल की सन्ध्या में दक्षिणायन संक्रान्ति हुई है तो उस दिन दिनभर पुण्यकाल और सायंकाल सन्ध्या में उत्तरायण संक्रान्ति हुई है जो पूर्व दिन भर पुण्यकाल समझना चाहिये ॥ ७ ॥

विष्णुपदादि विशेष से त्याज्यात्याज्य घटी ।

याम्यायने विष्णुपदे चाद्यामध्यास्तुलाजयोः ।
षड् शीत्यानने सौम्ये परानाज्योऽतिपुण्यदाः ॥ ८ ॥

अन्वयः—याम्यायने विष्णुपदे आद्याः (नाड्यः) तुलाजयोः मध्याः षड् शीत्यानने पराः नाड्यः अतिपुण्यदाः भवन्ति ॥८॥

भाषार्थः—कर्क की संक्रान्ति, तथा विष्णुपद में (वृष, सिंह, वृश्चिक कुम्भ को विष्णुपद कहते हैं) पूर्व सोलह घड़ी, तुला, मेष की मध्य सोलह घड़ी षडशीत्यान नाम की संक्रान्ति में आगे १६ घड़ियां अतिशुभप्रद हैं ॥८॥

सायनांश संक्रान्ति विचार ।

तथायनांशाः खरसाहताश्च स्पष्टार्कगत्या विहृतादिनाद्यैः ।
मेषादितः प्राक्चलसंक्रमास्युर्दाने जपादौ बहुपुण्यदास्ते ॥ ९ ॥

अन्वयः—तथा अयनांशाः स्पष्टार्कगत्या विहृताः दिनाद्यैः मेषादितः प्राक् चलसंक्रमाः ते दाने जपादौ बहुपुण्यदाः । भवन्ति इति शेषः ॥९॥

भाषार्थः—इसी प्रकार साठ से गुणा किये हुये सूर्य की गति (स्पष्टगति) से भाग देने पर जो दिन-फल, घटी इत्यादि बचे मेष इत्यादि संक्रान्ति से प्रथम उतने

दिन पल घटी पर संक्रान्ति होती है वे दान जप इत्यादि शुभ कार्यों के वास्ते बहुत ही पवित्र है ॥६॥

संक्रान्त्युपयोगी समाधि ।

सममृदुक्षिप्रवसुश्रवोग्निमघात्रिपूर्वाक्षपमंवृहत्स्यात् ।

ध्रुवद्विदैवादितिभंजघन्यं सार्पांशुषार्द्रानिलशाक्रयाम्यम् ॥१०॥

अन्वयः—मृदुक्षिप्र वसु श्रवोग्नि मघा त्रिपूर्वाक्षपमं समम्, ध्रुवद्विदैवादितिभं वृहत्, सार्पांशुषार्द्रानिल शाक्रयाम्यम् जघन्यम् स्यात् ॥१०॥

भाषार्थः—मृदु, क्षिप्र, संज्ञावाले नक्षत्र धनिष्ठा, श्रवण, कृत्तिका, मघा, तीनों पूर्वा, मूल की सम संज्ञा है और ध्रुव संज्ञा के नक्षत्र विशाखा, पुनर्वसु की वृहत्, अश्लेषा, शतभिषा, आर्द्रा, स्वाती, ज्येष्ठा की जघन्य संज्ञा है ॥१०॥

उक्त संज्ञाओं का हेतुवर्णन ।

जघन्यभेसंक्रमणेमुहूर्ताः शरेन्दवोवाणकृतावृहत्सु ।

खरामसंख्याः समभेमहर्घं समर्घसाम्यंविधुदर्शनेऽपि ॥११॥

अन्वयः—जघन्यभे संक्रमणे शरेन्दवः वृहत्सु वाणकृताः, समभे खरामसंख्याः, मुहूर्ताः (संक्रान्ति समयः) महर्घं, समर्घं, साम्यं (फलं) विधुदर्शने अपि (एवमेव फलमिति शेषः) ॥११॥

भाषार्थः—नीच नक्षत्रों में संक्रान्ति होने पर १५ मुहूर्त, वृहत् नक्षत्रों में संक्रान्ति होने पर ४५ मुहूर्त, सम नक्षत्रों में ३० मुहूर्त तक संक्रान्ति समय समझना चाहिये नीच में मङ्गी, वृहत् में सस्तई, सम में न तेजी न सस्ती (समान) रहता है इसी प्रकार चन्द्रदर्शन में भी फल है ॥११॥

विश्वाज्ञानम् ।

अर्कादिवारे संक्रान्तौकर्कस्याब्दिविशोपकाः ।

दिशोनखा गजाः सूर्या धृतोऽष्टादश सायकाः ॥१२॥

अन्वयः—अर्कादिवारे कर्कस्य संक्रान्तौ दिशः, नखाः, गजाः, सूर्याः, धृतः अष्टादश सायकाः विशोपकाः (जायन्ते इति शेषः) ॥१२॥

भाषार्थः—रवि इत्यादि वारों में संक्रान्ति होने पर उस वर्ष को इस विश्व से पुकारते हैं। जैसे रवि का संक्रान्ति हो तो १० सोम को २० मंगल को = बुध को १२ बृहस्पति को १८ शनि को ५ विश्वा ॥ १२ ॥

रविको जिस अवस्था में संक्रान्ति हुई हो उसका फल ।

स्यात्तैतिले नागचतुष्पदे रविः ।

सुप्तो निविष्टस्तु गरादिपञ्चके ॥

किंस्तुघ्न ऊर्ध्वः शकुनौ सकौल—

वेऽनिष्टः समः श्रेष्ठ इहार्धवर्षणे ॥ १३ ॥

अन्वयः—तैतिले नागचतुष्पदे रविः सुप्तः, गरादिपञ्चके निविष्टः, किंस्तुघ्ने सकौलवे शकुनौ ऊर्ध्वः (संक्रमिता भवति) इह अर्ध वर्षणे अनिष्टः, समः, श्रेष्ठः स्यात् ॥ १३ ॥

भाषार्थः—रवि संक्रान्ति यदि तैतिल, नाग, चतुष्पद करणों में से किसी में होता है तो वह संक्रान्ति सूर्य की शयनावस्था में होती है गर इत्यादि ५ करणों में बैठे हुए में संक्रान्ति होती है, किंस्तुघ्न, कौलव शकुनी में संक्रान्ति खड़े में होती है अतएव क्रमशः “शयन” “स्थित” “ऊर्ध्व” संक्रान्ति कहते हैं अन्नादि के भावों में और वर्षा के करने में यह संक्रान्ति क्रमशः अनिष्ट तथा और श्रेष्ठ है ॥ १३ ॥

संक्रान्ति के कारणपरत्व से वाहन वस्त्र हथियार भक्ष्य लेपन जाति और पुष्प आदि का विचार ।

सिंहव्याघ्र वराहरासभगजा वाहद्विष्टघोटकाः ।

श्वाजौ गौश्चरणायुधश्च ववतो वाहा स्वेः संक्रमे ॥

वस्त्रंश्वेतसुपीतहारितकपाण्ड्वारक्तकालासितं चित्रं

कंबलदिग्धनाभमथशस्त्रंस्याद्गुण्डो गदा ॥ १४ ॥

खड्गो दंडशरासतोमरमथो कुंतश्च पाशोऽकुशोऽस्त्रां बाणस्त्वथ
भक्ष्यमन्नपरमान्नं भैक्ष्यपक्वान्नकम् ॥ दुग्धं दध्यपि चित्रितान्न-
गुडमध्वाज्यं तथा शर्कराऽथो लेपो मृगनाभिकुंकुममथौ पाटीरमृद्रो-
चनम् ॥ १५ ॥ यावश्चौतुमदो निशांजनमथो कालागुरुश्चन्द्रको-

जातिर्देवतभूतसर्पविहगाः पश्वेणविप्रास्ततः ॥ क्षत्रीवैश्यकशूद्र-
शंकरभवाः पुष्पंचपुन्नागकं । जातीवाकुलकेतकानिचतथाविल्वा-
र्कदूर्वाम्बुजम् ॥१६॥ स्यान्मल्लिका पाटलिका जपा च संक्रान्ति
वस्त्राशनवाहनादेः ॥ नाशश्च तद्वृत्युपजीविनां च स्थितोप-
विष्टस्वपतां च नाशः ॥१७॥

अन्वयः—ववतः रवेः संक्रमे (यथासंख्यम्) सिंह व्याघ्रवराहरासभ गजा वराह
द्विषद्घोटकाःश्वाजौ गौः चरणायुधः वाहाः, श्वेत सुपीत हारितकपाण्ड्रवारक्तकाळासितं चित्र
कम्बलदिग्धनाभं वस्त्रं, भुशुण्डी गदा खड्ग दण्ड शर तोमरं अथो कुन्तः पाशः अंकुशः वाणः
अस्त्रम्, परमान्नं भैक्ष्य पक्वान्नम् दुग्धं दधि चित्रितान्न गुड मध्वाज्यं शर्करा भक्ष्यम्,
मृगनाभिकुंकुमं अथो फटीरमृदोचनम् च यावः श्रोतुः मदः निशाञ्जनम् अथो कालागुरुः
चन्द्रकः इति लेपः, देवत भूत सर्प विहगाः पश्वेण विप्राः क्षत्री वैश्यक शूद्र संकर भवाः
जातयः, पुंनागकं जाती वाकुल केतकानि विल्वार्क दुर्वांम्बुजम् मल्लिका पाटलिका जपा
पुष्पाणि, संक्रान्ति वस्त्राशनवाहनादेः तद् वृत्युपजीविनां स्थितोपविष्टस्वपतां नाशः (स्यात्)
॥१४॥१५॥१६॥१७॥

भाषार्थ—वव, वालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टी, चतुष्पद, नाग,
किस्तुघ्न, शकुनी इन करणों में क्रमशः ये वाहन, वस्त्र, आयुध, भोजन, लेपन,
जाति, पुष्प, हैं ।

ववका—वाहन सिंह, वस्त्र श्वेत, आयुध भुशुण्डी, भोजन अन्न, लेपन कस्तूरी,
जाति देवता, पुष्प पुंनाग है ।

वालव का—वाहन व्याघ्र, वस्त्र पीत, आयुध गदा, भोजन परमान्न, लेपन
कुंकुम, जाति भूत, पुष्प पारिजात है ।

कौलव का—वाहन वराह, वस्त्र हरा, आयुध तलवार, भोजन भैक्ष्य, लेपन
चन्दन, जाति सर्वजाति, पुष्प बकुल है ।

तैतिल का—वाहन गद्दा, वस्त्रपीला, आयुध दण्ड, भोजन पक्वान्न, लेपन
मृत्तिका, जाति पक्षी, पुष्प केतकी है ।

गरका—वाहन हाथी, वस्त्र लाल, आयुध धनुष, भोजन दूध, लेपन गोरोचन,
जाति पशु, पुष्प विश्व है ।

वणिजका—वाहन महिष, वस्त्र काला, आयुध तोमर, भोजन दही, लेपन महावार, जाति हरिण, पुष्प मन्दार है।

विष्टीका—वाहन घोड़ा, वस्त्र श्याम, आयुध भाला, भोजन रंगविरंगा किया हुआ, लेपन जवादि, जाति ब्राह्मण, पुष्प दूर्वा है।

चतुष्पदका—जाति कुत्ता, वस्त्र चित्रित, आयुध पाश, भोजन गुड़, लेपन हल्दी, जाति क्षत्री, पुष्प कमल है।

नागका—वाहन बकरा, वस्त्र कस्बल, आयुध अंकुश, भोजन मधु, लेपन अंजन, जाति वैश्य, पुष्प मल्लिका है।

किंस्तुम्भका—वाहन बैल, वस्त्र आकाश, आयुध अस्त्र (फेंक कर मारने वालों में कोई १) भोजन घृत, लेपन अंगर, जाति शूद्र, पुष्प, पाटलि है।

शकुनि—वाहन मुर्गा, वस्त्र आकाश, आयुध बाण, भोजन शर्करा, लेपन कपूर, जाति शंकर, पुष्प जपा (लालरंगका अदुल) है। ॥१४१५॥१६॥१७॥

संक्रान्ति के कारण परत्व से वाहन वस्त्र इत्यादि दर्शक चक्र।

नाम करण	वाहन	वस्त्र	आयुध	भोजन	लेपन	जाति	पुष्प	अवस्था	अव- स्थिति
बव	सिंह	श्वेत	मुशुंडी	अन्न	कस्तूरी	देवता	पुन्नाग	शिशु	मार्गचल
बालव	व्याघ्र	पीत	गदा	परमान्न	कुंकुम	भूत	पारिजात	गतालका	भागती
कौलव	वराह	हरित	खड्ग	भैक्ष्य	चंदन	सर्वजा,	वकुल	युवा	रतिकर
तैतिल	गर्दभ	पांडु	दंड	पक्वान्न	मृत्तिका	पक्षी	केतकी	प्रौढा	हंसती
गर	गज	लाल	धनुष	दूध	गोरोचन	पशु	विश्व	प्रगल्भा	दुमुखी
वणिज	महिष	काला	तोमर	दधि	महावर	हिरण	अकवन	वृद्धा	उवरयु-
विष्टी	घोड़ा	श्याम	भाला	चित्रित	जवादि	विप्र	दूर्वा	वन्ध्या	भोजन
चतुष्पद	कुत्ता	चित्रि०	पाश	गुड़	हलदी	क्षत्री	कमल	अतिव०	कांपती
नाग	बकरा	कंबल	अंकुश	मधु	अंजन	वैश्य	मल्लिका	सुतार्थि	ध्यान
किंस्तुम्भ	वृष	दिग	अस्त्र	घृत	अंगर	शूद्र	पाटलि	प्रवाजि	कर्करा
शकुनी	मुर्गा	आक्र०	बाण	शर्करा	कपूर	शंकर	जपा	वृद्धरूप	वृद्धरूप

संक्रान्ति बश मनुष्यों का फलाफल।

संक्रान्तिधिष्ण्याधरधिष्ण्यतस्त्रिभेस्वभे निरुक्तं गमनं ततोऽङ्गमे।
सुखं त्रिभे पोडनमंगभेशुकं त्रिभेऽर्थहानी रसभे धनागमः ॥१८॥

अन्वयः—संक्रान्ति धिष्ण्याधरधिष्यतः त्रिमे गमनं, निरुक्तं ततः अंगमे सुखम्, (निरुक्तम्) त्रिमे पीडनम्, अंगमे अंशुकम्, त्रिमे अर्थहानिः, रसमे धनागमः ॥१८॥

भाषार्थ—संक्रान्ति जिस नक्षत्र में हुई हो उससे पूर्व जो नक्षत्र हो उससे अपने जन्म नक्षत्र तक गिने ३ नक्षत्र में गमन कराने वाला, ६ में सुख दिलाने वाला पुनः ३ नक्षत्रों में पीड़ा, पुनः ६ नक्षत्रों में वस्त्र लाभ, पुनः ३ नक्षत्रों में धन हानि पुनः ६ नक्षत्रों में धनागम कराने वाली संक्रान्ति होगी ॥१८॥

ग्राहकों का फलाफल ।

नृपेक्षणं सर्वकृतिश्चसंगरः शास्त्रं विवाहागम दीक्षणेखेः ।
वीर्येऽथ तारा बलतः शुभोविधुर्विधोऽर्बलेऽर्कोर्कबलेकुजादयः ॥१९॥

अन्वयः—रवेः वीर्यं नृपेक्षणं, चन्द्रे सर्वकृतिः, भौमे संगरः, बुधे शास्त्रम्, गुरौ विवाहः, शुक्रे शनौ गमदीक्षणे, अथ ताराबलतः विधुः शुभः विधोः बलात् रविः, अर्कबलात् कुजादयः (शुभाः) ॥१९॥

भाषार्थ—रवि के बली होने पर राजदर्शन, चन्द्रमा के सबल होने से सम्पत्ति काम, मंगल बली होने से युद्ध, बुध बली होने से शास्त्र पठन पाठन, बृहस्पति के बली से विवाह, शुक के बली होने से यात्रा, शनि बलवान् होने से दीक्षा उत्तम कहा है। तारा बली होने से चन्द्रमा बलवान् होता है और चन्द्र संक्रान्ति में तारा बल होते हुए अनिष्ट चन्द्र भी उत्तम फल देता है। चन्द्र बली होने से रविसंक्रान्ति शुभ है। रविवलसे भौमादिसंक्रमण भी शुभ है ॥१९॥

न्यूनाधिकमास लक्षण ।

स्पष्टार्कसंक्रांतिविहीन उक्तो मासोऽधिमासः क्षयमासकस्तु ।
द्विसंक्रमस्तत्र विभागयोस्तौस्तिथेर्हि मासौ प्रथमान्त्यसंज्ञौ ॥२०॥

अन्वयः—स्पष्टार्क संक्रान्ति विहीनः मासः अधिमासः (भवेत्) तत्र द्विसंक्रमः क्षय-मासकः (तत्र) तिथेः विभागयोः प्रथमान्त्य संज्ञौ मासौ (स्याताम्) ॥२०॥

भाषार्थ—सूर्य संक्रान्ति से रहित चन्द्र हो तो अधिमास, चन्द्रमास में २ संक्रान्ति हो तो क्षय मास होता है। क्षयमास में तिथि के पूर्वार्ध तथा उत्तरार्ध भागों के सम्बन्ध के कारण प्रथम द्वितीय मास माना जाता है ॥२०॥

❀ इति श्रीमुहूर्तचिन्तामणौ संक्रातिप्रकरणम् ❀

ग्रहोंके गतिसे रवि और चन्द्रमा का फलाफल ।

अथ चतुर्थगोचर प्रकरण प्रारम्भः ॥ ४ ॥

सूर्यो रसांत्येखयुगेऽग्निनंदे शिवाक्षयोर्भौमशनी तमश्च ।
 रसांकयोर्लाभशरेगुणान्त्ये चन्द्राम्बराब्धौ गुणनंदयोश्च ॥१॥
 लाभघटमेचाद्यसरे रसांत्ये नगद्वयेज्ञो द्विशराऽब्धिरामे ।
 रसांकयोर्नागविधौ खनागे लाभव्यये देवगुरुः शराब्धौ ॥२॥
 द्वयान्त्ये नवांशऽद्विगणे शिवाहौ शुक्रः कुनागे द्विनगेऽग्निरूपे ।
 वेदांवरपंचनिधौ गजेषौ नंदेशयोर्भानुरसे शिवाग्नौ ॥ ३ ॥
 क्रमाच्छुभोविद्ध इतिग्रहः स्यात् पितुः सुतस्याऽत्रनवेधमाहुः ।
 दुष्टोऽपि खेटो विपरीतवेधाच्छुभोद्विकोणे शुभदः सितेऽब्जः ॥४॥

पञ्चमश्लोकात् स्वजन्मराशिरित्याह्वयान्वयः संगतिः—

अन्वयः—स्वजन्मराशेः सूर्यः रसान्त्ये, खयुगे, अग्निनंदे, शिवाक्षयोः, भौम शनी तमश्चः रसाङ्कयोः लाभशरे गुणान्त्ये (क्रमात् शुभो विद्धः) सर्वत्रैवान्वयः । चन्द्रः अम्बराब्धौ, गुणनन्दयोः लाभघटे, आधशरेरसान्त्ये, नगद्वये (शुभोविद्धश्च) ज्ञः द्विशरे, अधिरामे, रसांकयोः नागविधौ, खनागे, लाभव्यये (शुभोविद्धश्च) देवगुरुः शराब्धौ, द्वयान्त्ये, नवांशे, द्विगणे, शिवाहौ (शुभोविद्धश्च) शुक्रः कुनागे, द्विनगे, अग्निरूपे, वेदांवरपंचनिधौ, गजेषौ, नन्देशयोः, भानुरसे, शिवाग्नौ (शुभोविद्धश्च) अत्र पितुः सुतस्य वेधं नाहुः, दुष्टः अपि खेटः विपरीतवेधात् शुभः, सिते चन्द्रः द्विकोणे शुभदः ॥१॥२॥३॥४॥

भाषार्थः—सूर्य अपनी राशि से षष्ठ राशि में हो तो शुद्ध और जन्म राशि से बारहवें में कोई अन्य ग्रह हो तो वृद्धि होता है एवं जन्म से १० में सूर्य शुद्ध और जन्म राशि से चतुर्थ गृह में अन्य ग्रह हो तो विद्ध होता है जन्म राशि से तृतीय स्थान में सूर्य शुद्ध और नवम में अन्य ग्रह हो तो विद्ध होता है जन्म से ११ वें में सूर्य शुद्ध और पञ्चम और ग्रह हो तो विद्ध होता है । चन्द्रमा अपनी जन्म राशि से दशम, तृतीय, एकादश, प्रथम, पष्ठ, सप्तम, गृह में हो तो शुभ और चतुर्थ, नवम अष्टम, पञ्चम, द्वादश, द्वितीय में अन्य ग्रह के होते हुए विद्ध होता है । बुध भी जन्म राशि से द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, दशम, एकादश में शुद्ध और पञ्चम,

तृतीय, नवम, प्रथम, अष्टम, द्वादश में अन्य ग्रह होने से विद्ध होता है । गुरु जन्म-
राशि से पञ्चम, द्वितीय, नवम, सप्तम, एकादश गृह में शुद्ध होता है और चतुर्थ-
द्वादश, दशम, तृतीय, अष्टम में किसी ग्रह के होने पर विद्ध होता है । शुक्र जन्म
राशि से प्रथम, द्वितीय, तृतीय चतुर्थ, पञ्चम, अष्टम, नवम, एकादश, द्वादश में
शुद्ध और अष्टम, सप्तम प्रथम, दशम, नवम, पञ्चम, एकादश, पष्ठ, तृतीय में
ग्रह युक्त हो तो विद्ध होता है । पिता पुत्र का वेध नहीं होता । दुष्ट ग्रह विपरीत-
वेध से शुभ होता है । शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा द्वितीय, पञ्चम, नवम, गृह में हो तो
शुभ है ॥१२॥३॥४॥

पुनः दो प्रकार का और वेध ।

स्वजन्मराशेरिहवेधमाहुरन्ये ग्रहाधिष्ठितराशितः सः ।

हिमाद्रिविन्ध्यान्तरएव वेधो न सर्वदेशेष्वितिकश्यपोक्तिः ॥५॥

अन्वयः—इह स्वजन्मराशेः वेधम् आहुः अन्ये ग्रहाधिष्ठित राशितः, सः (वेधः) ।
हिमाद्रिविन्ध्यान्तरे एव सर्वदेशेषु न इति कश्यपोक्तिः ॥५॥

भाषार्थ—कोई मुनि (नारदादि) अपनी राशि से वेध बताते हैं और किसी
२ आचार्य का यह मत है कि ग्रह से युक्त जो राशि उससे वेध होता है । यह वेध
हिमाचल और विन्ध्याचल के बीच के देशों में माननीय है अन्य देशों में नहीं ॥५॥

ग्रहण नक्षत्र का फल ।

जन्मर्क्षे निधनं ग्रहे जनिमतो घातः क्षतिः श्रीर्व्यथा ।

चिन्ता सौख्यकलत्रदौस्थ्यमृतयः स्युर्माननाशः सुखम् ॥

लाभोपाय इतिक्रमात्तदशुभध्वस्त्यैजपः स्वर्णगो ।

दानं शांतिरथो ग्रहं त्वशुभदं नो वीक्ष्यमाहुः परे ॥६॥

अन्वयः—जन्मर्क्षे ग्रहे निधनं जनिमतः घातः, क्षतिः, श्रीः, व्यथा, चिन्ता, सौख्यम्,
कलत्रदौस्थ्यम् मृतिः, माननाशः, सुखम्, लाभः, अपायः (क्रमात्) स्युः, तदशुभध्वस्त्यै जपः,
स्वर्णगोदानम्, शान्तिः, अथो अशुभदं ग्रहं नो वीक्ष्यं (इति) परे आहुः ॥६॥

भाषार्थ—जन्म राशि से ग्रहण होने पर ये शुभाशुभ फल होते हैं । वे फल
इस प्रकार क्रमशः होते हैं । घात (शरीर दुःख) धनहानिः, धनप्राप्ति, दुःख, चिन्ता,

सुख, स्त्री पीड़ा मरण, आदर, नाश, आय, हानि, उन अशुभों की हानि के लिये जप, सोना, गौदान शान्ति, आदि करना चाहिये किसी २ आचार्यों का मत है कि अशुभ ग्रहण को देखना ही नहीं चाहिये ॥६॥

चन्द्रबलमें विशेष विचार ।

पापान्तः पापयुग्म्वृत्ते पापाच्चन्द्रः शुभोप्यसन् ।
शुभांशेवाधिमित्रांशे गुरुदृष्टोऽशुभोऽपि सत् ॥ ७ ॥

अन्वयः—शुभोऽपि चन्द्रः पापान्तः पापयुक् पापात् वृत्ते (स्थितः) असत् । शुभांशे अधिमित्रांशे गुरुदृष्टः अशुभोऽपि सत् ॥७॥

भाषार्थ—शुभ फल देने वाला चन्द्रमा यदि पाप मध्यवर्ती पापी दो ग्रहों से युक्त अथवा सप्तम स्थान में हो तो अशुभ है एवं अशुभ चन्द्र भी शुभ ग्रह के नवमांश अथवा बृहस्पति युक्त हो तो शुभ है ॥७॥

शुक्लादिपक्ष विशेष से चन्द्रफल ।

सितासितादौ सदृष्टे चन्द्रे पक्षौ शुभाशुभौ ।
व्यत्यासे चाशुभौ प्रोक्तौ संकटेऽब्जवलं त्विदम् ॥

अन्वयः—सितासितादौ चन्द्रे सदृष्टे उभौ (शुद्धकृष्णपक्षौ) शुभौ व्यत्यासे, (उभौ-पक्षौ) अशुभौ प्रोक्तौ संकटे इदं अब्जवलं (ग्राह्यमिति शेषः) ॥८॥

भाषार्थ—शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की प्रतिपद तिथि में चन्द्रमा यदि शुभाशुभ हो तो क्रमशः सारा पक्ष शुभाशुभ होता है जैसे शुक्ल प्रतिपद को चन्द्रमा उत्तम हों तो सारा पक्ष शुभ कृष्ण पक्ष में प्रतिपद को चन्द्रमा अशुभ होने हुए सारा पक्ष अशुभ होता है । एवं विपरीत में विपरीत फल समझना चाहिये यह चन्द्रबल विवाह यात्रा में मानने योग्य होता है ॥८॥

दृष्ट ग्रहों के शान्त्यर्थ नवरत्न धारण ।

बज्रं शुक्रं ऽब्जे सुविमुक्ता प्रवालं भौमेऽगौ गौमेदमाकौ सुनीलम् ।
कैतौ वैदूर्यगुरौ पुष्पकं ज्ञेपाचि प्राङ् माणिक्यमर्केतु मध्ये ॥९॥

अन्वयः—शुके (अनिष्ट फल दानाय समुद्यतोऽस्तीतिज्ञाने) प्राक् वज्रम्, अञ्जे सुमुक्ता, भौमे प्रवालम्, अगौ गोमेदम् आर्कौ सुनीलम्, केतौ वैदूर्यम्, गुरौ पुष्पकं, जे पाचिमणिम्, अर्के माणिक्यम् किन्तु मध्ये ॥६॥

भाषार्थः—ग्रह अनिष्ट फलदाईन हों उसके लिये इनको धारण करना चाहिए । यदि धारण न हो सके तो दान भी करा सकता है । शुक में हीरा, चन्द्र में मोती, मंगल में मूँगा, राहु में गोमेद (एक प्रकार का माणिक्य) शनिश्चर में नील मणि, केतु में वैदूर्यमणि, बृहस्पति में पोखराज, बुध में पाचि (पन्ना) सूर्य के लिए माणिक्य ॥ ६ ॥

पुनः ।

माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणि गारुत्मकं पुष्पकवज्रनीलम् ।
गोमेदवैदूर्यकमर्कतः स्थूरत्नान्यथो ज्ञस्यमुदेसुवर्णम् ॥१०॥

अन्वयः—माणिक्य मुक्ताफलविद्रुमाणि गारुत्मकं पुष्पक वज्रनीलम् गोमेद वैदूर्यकम् रत्नानि अर्कतः स्यात् (अर्कादीनां ग्रहाणां सन्तुष्टये चेतानिरत्नानि धार्याणि) अथो ज्ञस्य मुदे सुवर्णम् (धार्यम्) ॥१०॥

भाषार्थः—सूर्यादि ग्रहों को संतुष्ट करने के लिये रत्नादि धारण करना चाहिए । सूर्य के लिये माणिक्य, चन्द्र के लिये मोती मंगल के लिये मूँगा बुध के लिये गरुड़ मणि, बृहस्पति के लिये पोखराज, शुक के लिये हीरा, शनि के लिये नीलमणि, राहु के लिये गोमेद, केतु के लिये, वैदूर्य पहनना चाहिये बुध के लिए सुवर्ण धारण भी किसी २ का मत है ॥ १०॥

धार्यं लाजावर्तकं राहुकेत्वो रौप्यं शुकेन्द्रीश्चमुक्तागुरोस्तु ।
लोहमन्दस्यारभान्वोःप्रवालंताराजन्मर्त्तात्रिरावृत्तितः स्यात् ॥११॥

अन्वयः—राहुकेत्वोः (प्रसादनाय) लाजावर्तकम् धार्यं, शुकेन्द्वोः रौप्यं, च गुरौमुक्ता, मन्दस्य लौहम्, आरभान्वोः प्रवालम् (धार्यम्) जन्मर्त्तात् त्रिरावृत्तितः तारा स्यात् ॥११॥

भाषार्थः—राहुकेतु को प्रसन्न करना हो तो लाजावर्त, शुक चन्द्र में चाँदी, बृहस्पति में मोती, शनिश्चर में लोहा मंगल, सूर्य में मूँगा धारण करना चाहिए जन्म नक्षत्र से तीन बार गिनने पर तारा होती है ॥११॥

ताराओं की संज्ञा ।

जन्माख्यसंपद्विपदः क्षेमप्रत्यरिसाधकाः !

वधमैत्रातिमैत्राः स्युस्तारा नामसदृक्फला ॥१२॥

अन्वयः—जन्माख्यसंपद्विपदः क्षेमप्रत्यरिसाधकाः वधमैत्रातिमैत्राः नामसदृक्फलाः ताराः स्युः । [नाम सदृशफलं यासांताः] ॥१२॥

भाषार्थः—जन्म, संपद, विपद, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, वध, मैत्र, अतिमैत्र इस प्रकार नाम वाली ताराएँ होती हैं ये ताराएँ अपने नाम के समान ही फल देती हैं ॥१२॥

दुष्ट ताराओं का परिहार ।

**मृत्यौस्वर्णतिलान्विपद्यपिगुहंशाकंत्रिजन्मस्वथो दद्यात्प्रत्यरितार
कासुलवणं सर्वोविपत्प्रत्यरिः । मृत्युश्चादिमपर्ययेन शुभदोऽथैषां
द्वितीये शकानादिप्रान्त्यतृतीयकाग्रथशुभाः सर्वेतृतीयेस्मृता ॥१३॥**

अन्वयः—मृत्यौ स्वर्णतिलान्, विपदि अपि गुहं, त्रिजन्मसु शाकं, अथो प्रत्यरितार-कासु लवणं, आदिमपर्यये विपत् प्रत्यरिमृत्युश्च सर्वः न शुभदः । द्वितीये पर्यये अनादि-प्रान्त तृतीयकाः अंशकाः न शुभाः तृतीये सर्वे शुभाः स्मृताः ॥१३॥

भाषार्थः—वध तारा में सोना, तिल । विपद में गुह, तीन जन्म ताराओं में शाक, प्रत्यरितारा में नमक दान करना चाहिए । प्रथम आवृत्ति में विपद प्रत्यरि तथा मृत्यु तारा शुभद नहीं है । द्विती आवृत्ति में विपत् प्रत्यरि मृत्यु तारा शुभद नहीं है । तृतीया वृत्ति में सभी विपद प्रत्यरि मृत्यु शुभ फलद है ॥१३॥

चन्द्रमाकी अवस्था ।

षष्ठिन्नं गतमं भुक्तं घटीयुक्तं युगाहतम् ।

शङ्खविहङ्गलब्धतर्कशेषेऽवस्थाः क्रियाद्विधोः ॥ १४ ॥

अन्वयः—गतमं षष्ठिन्नं, भुक्तघटीयुतम् युगाहतम्, लब्धतः अर्कशेषे विधोः अवस्थाः क्रियात् ॥१४॥

❀ चन्द्रावस्था फलम् ❀

अश्विनी	११॥ प्रवास	२२॥ नाश	३३॥ मरण	४४॥ जय	५५॥ हास्य	६०॥ रति
भरणी	७॥ रति	१८॥ क्रीडित	३०॥ सुप्त	४१॥ भुक्ति	५२॥ ज्वर	६०॥ कम्प
कृत्तिका	३॥ कम्प	१५॥ स्थिर	२६॥ प्रवास	३७॥ नाश	४८॥ मरण	६०॥ जय
रोहिणी	११॥ हास्य	२२॥ रति	३३॥ क्रीडा	४४॥ सुप्ति	५५॥ भुक्ति	६०॥ ज्वर
मृगशिरा	७॥ ज्वर	१८॥ कम्प	३०॥ स्थिर	४१॥ प्रवास	५२॥ नाश	६०॥ मरण
आर्द्रा	३॥ मृति	१५॥ जय	२६॥ हास्य	३७॥ रति	४८॥ क्रीडा	६०॥ सुप्ति
पुनर्वसु	११॥ भुक्ति	२२॥ ज्वर	३३॥ कम्प	४४॥ स्थिरता	५५॥ प्रवास	६०॥ नाश
पुष्य	७॥ नाश	१८॥ मरण	३०॥ जय	४१॥ हास्य	५२॥ रति	६०॥ क्रीडा
अश्लेषा	३॥ क्रीडा	१५॥ सुप्ति	२६॥ भुक्ति	३७॥ ज्वर	४८॥ कम्प	६०॥ स्थिर
मघा	११॥ प्रवास	२२॥ नाश	३३॥ मरण	४४॥ जय	५५॥ हास्य	६०॥ रति
पूर्व फा०	७॥ रति	१८॥ क्रीडा	३०॥ सुप्ति	४१॥ भुक्ति	५२॥ ज्वर	६०॥ कम्प
उ० फा०	३॥ कम्प	१५॥ स्थिर	२६॥ प्रवास	३७॥ नाश	४८॥ मरण	६०॥ जय
हस्त	११॥ हास्य	२२॥ रति	३३॥ क्रीडा	४४॥ सुप्ति	५५॥ भुक्ति	६०॥ ज्वर
चित्रा	७॥ ज्वर	१८॥ कम्प	३०॥ स्थिरता	४१॥ प्रवास	५२॥ नाश	६०॥ मरण
स्वाती	३॥ मृति	१५॥ जय	२६॥ हास्य	३७॥ स्थिर	४८॥ नाश	६०॥ सप्ति
विशाखा	११॥ भुक्ति	२२॥ ज्वर	३३॥ कम्प	४४॥ स्थिर	५५॥ प्रवास	६०॥ नाश
अनुराधा	७॥ ज्वर	१८॥ मृति	३०॥ जय	४१॥ हास्य	५२॥ रति	६०॥ क्रीडा
ज्येष्ठा	३॥ क्रीडा	१५॥ सुप्त	२६॥ भुक्ति	३७॥ ज्वर	४८॥ कम्प	६०॥ स्थिर
मूल	११॥ प्रवास	२२॥ नाश	३३॥ मृति	४४॥ जय	५५॥ हास्य	६०॥ रति
पूर्व षा०	७॥ रति	१८॥ क्रीडा	३०॥ सुप्ति	४१॥ भुक्ति	५२॥ ज्वर	६०॥ कम्प
उ० षा०	३॥ कम्प	१५॥ स्थिरता	२६॥ प्रवास	३७॥ नाश	४८॥ मरण	६०॥ जय
श्रवण	११॥ हास्य	२२॥ रति	३३॥ क्रीडा	४४॥ सुप्ति	५५॥ भुक्ति	६०॥ ज्वर
धनिष्ठा	७॥ ज्वर	१८॥ कम्प	३०॥ स्थिर	४१॥ प्रवास	५२॥ नाश	६०॥ मरण
शतभिषा	३॥ भुक्ति	१५॥ जय	२६॥ हास्य	३७॥ रति	४८॥ क्रीडा	६०॥ सुप्ति
पूर्व भा०	११॥ भुक्ति	२२॥ ज्वर	३३॥ कम्प	४४॥ स्थिरता	५५॥ प्रवास	६०॥ नाश
उ० भा०	७॥ नाश	१८॥ मृति	३०॥ जय	४१॥ हास्य	५२॥ रति	६०॥ क्रीडा
रेवती	३॥ क्रीडा	१५॥ सुप्ति	२६॥ भुक्ति	३७॥ स्थिर	४८॥ कम्प	६०॥ स्थिर

भाषार्थः—वीते नक्षत्र को ६० से गुणा करे और जितनी घड़ी बीती हो उसको उसमें जोड़ दे फिर ४ से गुणा करे और ४५ से भाग दे अवशिष्ट को मेष से चन्द्रमा की अवस्था समझनी चाहिए ॥१४॥

अवस्थाओं के नाम ।

प्रवासनाशौ मरणं जयश्च हास्यारतिः क्रीडित सुप्त भुक्ताः ।
ज्वराख्यकंपस्थिरता अवस्था मेषात् क्रमान्नामसदृक् फलास्त्युः ॥१५॥

अन्वयः—प्रवासनाशौ मरणं च जयः च हास्यारतिः क्रीडित सुप्त भुक्ताः ज्वराख्यकंपस्थिरता मेषात् क्रमात् नामसदृक् फलाः त्युः ॥१५॥

भाषार्थः—मेष से प्रारम्भ करके क्रमशः ये अवस्थाएं होती हैं । प्रवास, नाश, मरण, जय हास्य, आरति, क्रीड़ा, सुप्त, भुक्त, ज्वर, कम्प, स्थिरता, इनका फल इनके नाम के अनुकूल है ॥१५॥

लाजाकुष्ठवलप्रियंगुघनसिद्धार्थैर्निशादारुभिः
पुंखालोध्रयुतैर्जलैर्निगदितस्नानं ग्रहोत्थाघहृत् ।
धेनुः कंव्वरुणो वृषश्च कनकं पीताम्बरं घोटकः
श्वेतो गौरसिता महासिरज इत्येता र्वेर्दक्षिणाः ॥१६॥

अन्वयः—लाजाकुष्ठ बळप्रियङ्गु घनसिद्धार्थैः निशादारुभिः पुंखालोध्रयुतैः जलैः स्नानं ग्रहोत्थाघहृत् निगदितम् [रवेः सूर्यमारभ्यलप्लोपे पञ्चमी] धेनुः कं वरुणो वृषश्च कनकं पीताम्बरं घोटकः (किन्तु श्वेतः) असिता गौ महासिरजः (इति ग्रहाणां) दक्षिणाः ॥१६॥

भाषार्थः—खील अथवा लाजवन्ती, कूट, वलबीज, टांडुन, मोथा, हल्दी, देवदारु, शंखपुष्पी, लोध इनको मिला कर स्नान करने से ग्रहों से जो अनिष्ट सम्भावता होती है उसका नाश होता है । सूर्य की प्रसन्नता के लिए गौ चन्द्र को शंख, लाल बैल मंगल के लिए देना चाहिए एवं बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि इनको क्रमशः सोना, पीला वस्त्र सफेद घोड़ा काली गौ, तलवार बकरा ये दान देना चाहिए ॥१६॥

सूर्यारसौम्यास्फुजितोक्षनागसप्ताद्रिघसप्तसान् विधुरग्निनाडीः ।
यतोयमेज्यास्त्रिरसाश्विमासान् गंतव्यराशे फलदाः पुरस्तात् ॥१७॥

अन्वयः—सूर्यसौम्यास्फुजितः पुरस्तात् अक्षनागसप्ताद्रिघसान् विधुरग्निनाडीः गन्तव्यराशेः पुरस्तात् फलदाः । तमोयमेज्याः त्रिराशिविमासान् (गन्तव्यराशे पुरस्तात् फलदाः) भवन्तीति शेषः ॥१७॥

भाषार्थः—सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र ये क्रमशः ५, ८, ७, ७, प्रथमसे ही शुभाशुभ फल दिखलाने लगते हैं एवं चन्द्रमा तीन घड़ी और राहु, शनि, वृहस्पति ये ३, ६, २ मास प्रथम से ही शुभाशुभ फल दिखलाते हैं ॥ १७ ॥

ग्रहों का पूर्वापर फल ।

राश्यादिगौरविकुजौ फलजौ सितेज्यौ
मध्येसदा शशिसुतश्च रवेञ्जमन्दौ ।
अध्वान्नवह्निभयसन्मति वस्त्रसौख्य
दुःखादिमासि जनिभेरविवासरादौ ॥ १८ ॥

अन्वयः—रविकुजौ राश्यादिगौ फलजौ, सितेज्यौ मध्ये, शशिसुतः सदा, अञ्जमन्दौ चरमे रविवासरादौ जनिभे मासि अध्वान्न वह्नि भय सन्मति वस्त्र सौख्य दुःखानि जायन्ते इति शेषः ॥१८॥

भाषार्थः—रवि तथा मंगल राशि के पूर्व ही अपना २ फल देते हैं वृहस्पति मध्य में बुध सदा ही चन्द्रमा शनि अन्त में फल देते हैं । जन्म मास में जन्म नक्षत्र प्रारम्भ में रविवारादि दिन पड़ते हैं उसका इस प्रकार फल है रविको नक्षत्र प्रारम्भ होने से रास्ता चलना सोम को अन्न मिलना, मंगलको आग लगना, बुध को संपत्ति मिलना, गुरुवार को वस्त्र प्राप्ति, शुक्रवार को सुख प्राप्ति, शनि को दुःख प्राप्ति ॥१८॥

दृष्ट तिथियों में दान ।

दृष्टयोगे हेम चन्द्रे च शंखं धान्यं तिथ्यर्धेतिथौ तंडुलाश्च ।
बारेरत्ने भेजगां हेमनाड्यां दद्यात्सिन्धुत्थं च तारासु राजा ॥ १९ ॥

अन्वयः—राजा दृष्टयोगे हेम, चन्द्रे (दृष्टे) शंखं, तिथ्यर्धे धान्यम्, तिथौ तण्डुलान्, बारे रत्नं, भे गां, नाड्यां हेम, तारासु सिन्धुत्थं (सैन्धवं लवणं) दद्यात् ॥१९॥

भाषार्थः—उपतोपात आदि दुष्टयोगों में राजा ब्राह्मणों को सुवर्ण, चन्द्र दुष्ट होते ह्रस्व शंख, अर्ध तिथि दुष्ट में धान्य, तिथि दुष्टता में चावल, नाड़ी दुष्टता में सुवर्ण, तारा को दुष्टता में सिन्धूत (नमक) दान करे ॥१६॥

❀ इति चतुर्थगोचर प्रकरण समाप्तम् ॥४॥ ❀



अथ संस्कार प्रकरणप्रारम्भः ॥ ५ ॥

आद्यं रजः शुभं माघमार्गराधेषफाल्गुने ।

ज्येष्ठश्रावणयोः शुक्ले सद्दारे सत्तनौ दिवा ॥ १ ॥

अन्वयः—माघमार्ग राधेषफाल्गुने ज्येष्ठ श्रावणयोः शुक्ले सद्दारे सत्तनौ दिवा आद्यं रजः शुभं निगदित मिति शेषः ॥१॥

भाषार्थ—माघ, अग्रहन, वैशाख, फाल्गुण, ज्येष्ठ, श्रावण, इन महिनो, शुक्लपक्ष, बुध, वृहस्पति, सोम दिन, शुभग्रह दृष्ट मुहूर्त में प्रथम रज (स्त्रीके) शुभ हैं ॥१॥

प्रथम रजोदर्शन में शुभशुभ नक्षत्र ।

श्रुतित्रयं मृदु क्षिप्रध्रुवस्वातौ सिताम्बरे ।

मध्यं च मूलादितिभे पितृमिश्रे परेष्वसत् ॥ २ ॥

अन्वय—श्रुतित्रयं मृदु क्षिप्रध्रुव स्वातौ सिताम्बरे (शुभं) मूलादितिभे पितृमिश्रे मध्यं परेषु असत् ॥२॥

भाषार्थ—श्रवण, धनिष्ठा तथा शतभिष मृदु, क्षिप्र ध्रुव संज्ञा वाले नक्षत्र में श्वेत वस्त्र पहने समय में प्रथम रजोदर्शन शुभ है । मूल, पुनर्वसु, मघा, मिथुन संज्ञा वाले नक्षत्रों में प्रथम रजोदर्शन मध्यम है । इससे अन्य में प्रथम रजोदर्शन शुभ नहीं है ॥२॥

रजोकाल में निषेध समय ।

भद्रानिद्रासंक्रमेदर्शरिक्ता संध्याषष्ठीद्वादशीवैधृतेषु ।
रोगेऽष्टम्यां चन्द्रसूर्योपरागे पाते चाद्यं नौ रजौ दर्शनं सत् ॥३॥

अन्वयः—भद्रानिद्रासंक्रमेदर्शरिक्ता सन्ध्याषष्ठीद्वादशीवैधृतेषु रोगे अष्टम्यां चन्द्रसूर्यो-
परागे पाते आद्यं रजोदर्शनं न सत् ॥३॥

भाषार्थ—भद्रा, नौद, संक्रान्ति समय, पूर्णिमा, रिक्ता, सन्ध्या, षष्ठी, द्वादशी
वैधृतियोग, रोगसमय, अष्टमी दोनों ग्रहण, व्यतीपातयोग, प्रथम रजोदर्शन
अच्छा नहीं ॥३॥

प्रथम रजस्वला होने पर स्नान का मुहूर्त ।

हस्तानिलाश्विमृगमैत्रवसुध्रुवाख्यैः
शक्रान्वितः शुभतिथौ शुभवासरे च ।
स्नायादथार्तववती मृगपौष्णवायुहस्ता-
शिवधातृभिरलभते च गर्भम् ॥ ४ ॥

अन्वयः—हस्तानिलाश्विमृगमैत्र वसु ध्रुवाख्यैः शक्रान्वितैः शुभतिथौ च वासरे आर्तवती
स्नायात् । अथ अरं मृगपौष्णवायुहस्ताश्वि धातृभिः गर्भं लभते ॥४॥

भाषार्थ—हस्त, स्वाती, अश्विनी, मृगशिरा, अनुराधा, धनिष्ठा, ध्रुवसंज्ञा
वाले नक्षत्र, शुक्रवार दिन, अमावस्या रहित तिथि में रजस्वला को स्नान करना
चाहिये ऐसा होने पर शीघ्र ही वह (स्त्री) मृगशिरा, रेवती हस्त, अश्विनी,
रोहिणी नक्षत्रों में स्नान करने से गर्भवती होती है ॥ ४ ॥

गर्भाधान में त्याज्य मुहूर्त ।

गंडांतत्रिविधं त्यजेन्निधनजन्मर्क्षे च मूलांतकं
दास्यं पौष्णमथोपरागदिवसंपातंतथावैधृतिम् ।
पित्रोः श्राद्धदिनं दिवा च परिधाद्यर्धं स्वपत्नी गमे
भान्युत्पातहतानि मृत्युभवनं जन्मर्क्षतः पापभम् ॥ ५ ॥

अन्वयः—त्रिविधं गण्डान्तं निधनं जन्मक्षं मूलान्तकं पौष्णं अथो उपरागं दिवस्पातं तथा वैधृतिम् पित्रोः श्राद्धदिनं दिवा परिधायर्धम् उत्पातहतानि भानि जन्मक्षतः मृत्युभवनं त्यजेत् ॥५॥

भाषार्थ—गर्भाधान के लिये—तीन गण्डान्त (तिथि नक्षत्र लग्नान्त) निधन-तारा, जन्म तारा, मूल, भरणी, अश्विनी, मघा, ग्रहण दिन, व्यतीपान योग, वैधृतियोग, माता पिता का श्राद्ध दिन परिधयोग का आदि अर्धभाग, उत्पात (भौम दिव्य, अन्तरिक्ष) से युक्त दिन, जन्म नक्षत्र, और जन्म नक्षत्र से अष्टम पापग्रह ये सब विशेष वर्जित हैं ॥५॥

**भद्राषष्ठीपर्वरिक्ताश्च सन्ध्या भौमार्काकीं नाद्यरात्रीश्चतस्रः ।
गर्भाधानं त्र्युत्तरेन्द्रर्कमैत्राब्रह्मस्वातीविष्णुवस्वंबुपेसत् ॥६॥**

अन्वयः—भद्राषष्ठीपर्वरिक्ता च सन्ध्या भौमार्काकीं चतस्रः आद्यरात्रीः त्यजेत् । त्र्युत्तरेन्द्रर्कमैत्राब्रह्मस्वातीवस्वंबुपे गर्भाधानं सत् ॥६॥

भाषार्थ—भद्रा, षष्ठी, पर्वदिन, रिक्ता तिथि, प्रातः सायं सन्ध्या, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शन से प्रारम्भ की ४ रात्रियां इनको छोड़, तीनों उत्तरा, मृगशिरा, हस्त, अजुराधा, रोहिणी, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा ये नक्षत्र गर्भाधान के लिये शुभ हैं ॥६॥

गर्भाधानं में लग्न शुद्धिः ।

**केन्द्रत्रिकोणेषु शुभैश्च पापैस्त्यायारिगैः पुं ग्रहदृष्टलभे । ओजांश-
केब्जैऽपि च शुभरात्रौ चित्रादितीज्याशिवेषु मध्यमं स्यात् ॥ ७ ॥**

अन्वयः—शुभैः केन्द्रत्रिकोणेषु [वर्तमानैः] पापैः त्र्यायारिगैः पुं ग्रह दृष्टिलगने अब्जे ओजांशगे शुभरात्रौ [सत्] चित्रादितीज्याशिवेषु गर्भाधानं मध्यमं स्यात् ॥७॥

भाषार्थ—शुभ ग्रहों के (चतुर्थ, सप्तम, दशम, नवम, पञ्चम) स्थान में रहने पर तथा पापग्रहों के (तृतीय, षष्ठ, एकादश) स्थान में होने पर पुरुषग्रह (रवि मंगल, बृहस्पति,) से लग्न दृष्ट होने पर और चन्द्रमा के नवमांशा में रहने पर समरात्रि २, ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, इन रात्रि में गर्भाधान उत्तम है । चित्रा पुनर्वसु, पुष्य, अश्विनी, इन नक्षत्रों में गर्भाधान मध्यम कहा है ॥७॥

सीमंत (अठमासा) का मुहूर्त ।

जीवाकारदिने मृगेज्यनिर्ऋतिश्रोत्रादितिर्ब्रध्नभै रिक्तामार्क-
रसाष्टवर्ज्यतिथिभिर्मासाधिपे पीवरे ! सीमन्तोष्टमषष्ठमासि शुभदैः
केन्द्रत्रिकोणेखलैर्लाभारित्रिषु वा ध्रुवांत्यसदहे लग्नेच पुंभांशके ॥८॥

अन्वय—जीवाकारदिने मृगेज्यनिर्ऋति श्रोत्रादितिर्ब्रध्नभैः रिक्तामार्क रसाष्टवर्ज्य
तिथिभिः मासाधिपे पीवरे अष्टम षष्ठ मासि शुभदैः केन्द्र त्रिकोणे [स्थितैः] खलैः
लाभारि त्रिषु ध्रुवान्त्य सदहे पुंभासके लग्ने सीमन्तः शुभः । गदितः ॥८॥

भाषार्थ—बृहस्पति, रवि, मंगलवार दिन में, मृगशिरा, पुष्य, मूल, श्रवण,
पुनर्वसु, पूर्वाभाद्रपद, नक्षत्रों में रिक्ता, अमावस्या, षष्ठी, सप्तमी, तिथि भिन्न
तिथियों में, मासाधिप के बलवान होने पर आठवें छठें मास में शुभ ग्रहों के केन्द्र
त्रिकोण में स्थित होने पर तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती शुभ ग्रहों के दिन, पुरुष
नक्षत्रों के नवमांश में “सीमन्त” कर्म श्रेष्ठ होता है ॥८॥

महोनों के स्वामी और स्त्रियों का चन्द्रबल ।

मासेश्वराः सितकुजेज्यरविंदुसौरिश्चन्द्रात्मजास्तनुपचन्द्रदिवा-
कराः स्युः । स्त्रीणां विधोर्बलमुशन्ति विवाहगर्भं संस्कारयोरितरक-
र्मसुभर्तु रेव ॥ ९ ॥

अन्वय—सितकुजेज्यरविन्दु सौरिश्चन्द्रात्मजास्तनुप चन्द्रदिवाकराः मासेश्वराः स्युः
विवाहगर्भ संस्कारयोः [सूरयः] स्त्रीणां विंशोः बलं उशन्ति इतर कर्मसुविवाहाद्यति-
रिक्तेषु भर्तुरेव बलं उशन्ति ॥९॥

भाषार्थ—गर्भाधान समय से लेकर दश मांस पर्यन्त (जातान्त) १० मासों के
१० स्वामी हैं वे ये हैं शुक्र, मंगल, बृहस्पति, रवि, चन्द्र, शनि, बुध, चन्द्र सूर्य,
(सूर्य दशों मास के) विवाह और गर्भाधान संस्कार में स्त्री का ही चन्द्रबल लिया
जाता है इससे अतिरिक्त कार्यों में पति का ही चन्द्रबल लिया जाता है ॥९॥

पुंसवन (विष्णुपूजा) कर्म का मुहूर्त ।

पूर्वोदितैः पुंसवनं विधेयमासे तृतीये त्वथविष्णुपूजा ।
मासेष्टमे विष्णुविधातृजीवैर्लग्नेशुभे मृत्यु गृहे च शुद्धे ॥ १० ॥

अन्वयः—पूर्वोदितैः [नक्षत्रादिभिः] तृतीये मासि पुंसवनं विधेयम् अथ अष्टमेमासि विष्णुविधातृ जीवैः शुभे लग्ने मृत्युगृहे शुद्धे विष्णुपूजा विधेया ॥१०॥

भाषार्थ—सीमन्त कर्म में कहे हुए नक्षत्रादि में तीसरे महीना में पुंसवन (विष्णु पूजा) करना चाहिये। श्रवण, रोहिणी, पुष्य नक्षत्र और उत्तम नक्षत्र में शुभ ग्रह के लग्न में मृत्युगृह के शुद्ध होने पर विष्णु पूजा उत्तम कहा है ॥१०॥

जातकर्म नामकर्म मुहूर्त ।

तज्जातकर्मादिशिशोर्विधेयं पर्वाख्यरितोनतिथौ शुभेऽहि ।
एकादशे द्वादशकैपि वसन्ते मृदुध्रुवक्षिप्रचरोऽप्यु स्यात् ॥११॥

अन्वयः—पर्वाख्यरितोनतिथौ शुभेऽहि एकादशे द्वादशे वा वसन्ते मृदुध्रुवक्षिप्रचरो-
ऽप्यु शिशोः तत् जातकर्मादि विधेयम् ॥११॥

भाषार्थ—पर्व तथा रिक्ता तिथि को छोड़ अन्य तिथियों, शुभ दिनों, मृदु, ध्रुव, क्षिप्र, चर नक्षत्रों ग्यारहवें अथवा बारहवें दिन बालक का जातकर्म करना चाहिये ॥११॥

प्रसूतास्त्री के स्नान का मुहूर्त ।

पौष्णध्रुवेन्दुकरवातहयेषुसूतीस्नानंसमित्रभरवीज्यकुजेषु
शस्तम् ॥ नार्द्रात्रयश्रुतिमघान्तकमिश्रमूलत्वाष्ट्रे ज्ञसौरिवसुषड्
विरिक्ततिथ्याम् ॥ १२ ॥

अन्वयः—पौष्ण ध्रुवेन्दुकरवातहयेषु समित्रभ रवीज्यहयेषु आर्द्रात्रय श्रुति मघान्तक, मिश्रमूल त्वाष्ट्रे ज्ञ सौरिवसुषड् रवि रिक्त तिथ्याम् सूतीस्नानं न शस्तम् ॥१२॥

भाषार्थ—रेवती, ध्रुवसंज्ञावाले नक्षत्र मृगशिरा, हस्त, स्वाती, अश्विनी, अनुराधा नक्षत्रों में रवि, गुरु, मंगल वारों में प्रसूतिस्नान युक्त है किन्तु आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, मघा, भरणी, कृतिका, मूल नक्षत्रों में बुध, शनि, रविवारों में अष्टमी षष्ठी, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी को प्रसूता स्त्री का स्नान शुभ नहीं ॥१२॥

बालक के दांत निकलनेका फल ।

मासेचेत्प्रथमे भवेत्सदशनो बालो विनश्येत्स्वयं
हन्यात्सक्रमतोनुजातभगिनीमात्रग्रजान्द्वयादिके ।
षष्ठादौ लभतेहि भोगमतुलंतातात्सुखं पुष्टतां
लक्ष्मीसौख्यमथोजनौसदनशनश्चोर्ध्वस्वपित्रादिहा ॥१३॥

अन्वयः—बालः चेत् प्रथमे मासे सदशनः [तस्मिन् समये] स्वयं विनश्येत् द्वादिके सक्रमतः अनुजातभगिनीमात्रग्रजात् षष्ठादौ अतुलंभोगं सप्तमे तातात् सुखं अष्टमे पुष्टताम् नवमे लक्ष्मीम् दशमे सौख्यम् अथो जनौ सदशनः चेत् स्वपित्रादिहा [स्वं, पितरं, आदिना स्वभावादि परिग्रहः] हन्ति ॥१३॥

भाषार्थ—बालक यदि प्रथममास में दन्त युक्त हो जावे तो वह स्वयं ही मर जाता है, दूसरे में छोटा भाई, तीसरे में बहिन, चौथे में माता, पांचवें में बड़ा भाई, छठे में स्वयं सुखी हो, सातवें में पिता से सुखी हो, आठवें में बलवान हो नवे में धन प्राप्ति, दशवें में प्रचुर सुखी, जन्मकाल में ही दाँत निकला लड़का पैदा हो तो स्वयं मरे अपने पिता को भी मारे ॥१३॥

बालक का दोला (झूला) में सदानेका मुहूर्त ।

दोलारोहेर्कभात्पञ्चशरपञ्चेषुसप्तभैः ।
नैरुज्यंमरणं कार्श्यं व्याधिःसौख्यं क्रमाच्छिशोः ॥ १४ ॥

अन्वयः—अर्कभात् पञ्चशर पञ्चेषु सप्तभैः शिशोः दोलारोहे क्रमात् नैरुज्यं, मरणं, कार्श्यं, व्याधिः, सौख्यम्, भवतीति शेषः ॥१४॥

भाषार्थ—सूर्य नक्षत्र से ५ नक्षत्रों में पालने में कुलाने से नीरोगिता, उससे ५ नक्षत्रों में मरण, उससे ५ में व्याधि, पुनः सात नक्षत्रों में सुख प्राप्त होता है ॥१४॥

दोलारोहण और बालक को गृह से बाहर निकालने का मुहूर्त ।

दंतार्कभूपधृतिदिङ् मितवासरेस्याद्वारेशुभैर्मृदुलधुध्रुवभैः शिशू-
नाम् ॥ दोलाधिरुद्धिमथनिष्क्रमणंचतुर्थमासेगमोक्तसमयेऽर्कमि-
तोहि वा स्यात् ॥१५॥

अन्वयः—दन्तार्क भूपधृति दिन्मितवासरे शुभे वारे मृदुलधु ध्रुवभैः शिशूनाम् दोलाधि-
रुढिः स्यात् अथ चतुर्थमासे गमोक्तसमये अर्कमितेऽहि निष्क्रमणं स्यात् ॥१५॥

भाषार्थ—३२, १२, १६, १८ दिनपर, शुभ दिन में मृदु, लघु, ध्रुव नक्षत्रों में
बालक को पालनेमें झुलाना उत्तम है जन्मसे चौथे महीने में यात्रा प्रकरण में कहे
शुभ समय में बारहवें दिन निष्क्रमण (बच्चेका बाहर निकालना) उत्तम है ॥१५॥

महता स्त्रीका जलपूजा मुहूर्त ।

कवीज्यास्तचैत्राधिमासे न पौषे जलंपूजयेत्सूतिकामास-
पूर्तो ॥ बुधेद्वीज्यवारे विरिक्ते तिथौ हि श्रुतीज्यादितोर्द्वर्कनैः ऋ-
त्यमैत्रेः ॥ १६ ॥

अन्वयः—कवीज्यास्तमासे चैत्रमासे पौषे सूतिका मासपूर्तो जलं न पूजयेत् बुधेन्द्रिय-
वारे विरिक्ते हि श्रुतीज्यादि तीन्द्रर्कनैर्ऋत्यमैत्रेः सूतिका जलं पूजयेत् ॥१६॥

भाषार्थ—शुक्र, बृहस्पति के अस्त समय में, चैत्र, अधिमास, पौष मास के
अन्त समय में प्रसूता को जलपूजा नहीं करनी चाहिये । बुध, सोम, गुरुवार दिन में
रिक्तातिथि को छोड़ श्रवण, पुष्य, पुनर्वसु, मृगशिरा, मूल, अनुराधा नक्षत्र में जल-
पूजा श्रेष्ठ है ॥१६॥

अन्नप्राशन का मुहूर्त ।

रिक्तानन्दाष्टदर्शं हरिदिवसमथो सौरिभौमार्कवारान्
लग्नेजन्मर्क्षलग्नाष्टमगृहलवगं मीनमेषालिकं च ॥
हित्वा षष्ठात्समे मास्यस्य हि मृगदृशां पंचमादोजमासे
नक्षत्रः स्यात् स्थिराख्यैः समृदुलधुचरैर्वालकान्नाशनं सत् ॥१७॥

अन्वयः—रिक्तानन्दाष्टदर्शं हरिदिवसं अथो सौरि भौमार्कवारान् लग्ने जन्मर्क्ष
लग्नाष्टम गृहलवगं मीनमेषालिकं च हित्वा षष्ठात् समे मासि वालकान्नाशनं सत् स्यात् अथ
पञ्चमात् ओजमासे समृदुलधुचरैः स्थिराख्यैः नक्षत्रैः मृगदृशां अन्नप्राशनं (सत् स्यात्) ॥१७॥

भाषार्थ—रिक्ता, नन्दा (तिथि) अष्टमो, अमावस्या, द्वादशी तिथियां, शनि,
मंगल, रविवार, को छोड़ मीन, मेष, वृश्चिक से भिन्न राशियों में षष्ठसे सम मासों
में बालक को अन्नप्राशन कराना श्रेष्ठ है ॥१७॥

केन्द्र त्रिकोणसहजेषुशुभः स्वशुद्धे
लग्नेत्रिलाभरिपुगैश्च वदन्तिपापैः ॥
लग्नाष्टषष्ठरहितंशशिनंप्रशस्तं
मैत्रांबुपानिलजनुर्भमराच्वकेचित् ॥ १८ ॥

अन्वयः—लग्ने स्वशुद्धे केन्द्रत्रिकोण सहजेषु शुभैः (स्थितैः) त्रिलाभरिपुगैः पापैः
(सहितैः) लग्नाष्ट षष्ठरहितं शशिनं प्रशस्तं वदन्ति केचित् मैत्रांबुपानिलजनुर्भम
अशुभं वदन्ति ॥ १८ ॥

भाषार्थ—लग्न (दशम) शुद्ध हो केन्द्र, त्रिकोण तृतीय स्थानों में शुभ ग्रह हों
तृतीय, एकादश, षष्ठ पाप ग्रह युक्त हो लग्न अष्टम, षष्ठ ग्रह से रहित हो चन्द्रमा
शुभ हो तो अन्नप्राशन शुभद होता है कोई आचार्य अनुराधा, शतभिषा, स्वाती,
जन्म नक्षत्र में अन्नप्राशन में अशुभ बताते हैं ॥ १८ ॥

स्थान विशेष से ग्रहों के फल ।

क्षीणेन्दुपूर्णचन्द्रेज्यज्ञभौमार्कार्किभार्गवैः ।
त्रिकोणव्ययकेन्द्राष्टस्थितैरुक्तंफलंग्रहैः ॥ १९ ॥
मिक्षाशीयज्ञकृद्दीर्घजीवी ज्ञानीचपित्तरुक् ।
कुष्टी चान्नक्लेशवातव्याधिमान्भोगवानिति ॥ २० ॥

अन्वयः—क्षीणेन्दु पूर्णचन्द्रे ज्यज्ञभौमार्कि भार्गवैः त्रिकोण व्यय केन्द्राष्ट स्थितैः ग्रहैः
मिक्षाशी, यज्ञकृत, दीर्घजीवी, पित्तरुक्, कुष्टी, जलक्लेशवातव्याधिमान् भोगवान् इति फलं
उक्तम् ॥ १९ ॥ २० ॥

भाषार्थ—नवम स्थान में क्षीणचन्द्र हो तो मिक्षान्न से उत्पन्न बालक का
जीवन निर्वाह और पञ्चम में पूर्णचन्द्र हो तो यज्ञ कर्ता बालक होता है । द्वादश
स्थान में बृहस्पति बालक को दीर्घायु करता है । बुध लग्नस्थ हो तो बालक
ज्ञानशील हो । चतुर्थ में मंगल बालक को पितरोगी करता है । सप्तम में सूर्य बालक
को कुष्टी बनाता है । दशम में शनि होने से बालक अन्न क्लेश पाता है । वातरोग
शीघ्रित होता है । अष्टम में शुक्र हों तो अनेक भोग भोगता है ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

बालक को भूमि में उतारने का मुहूर्त ।

पृथ्वीं वाराहमभिपूज्य कुजे विशुद्धेऽरिक्ते
तिथौ ब्रजति पञ्चममासिवालम् ॥

वध्वा शुभेऽह्निकटि सूत्रमथ ध्रुवेन्दु
ज्येष्ठर्क्षमैत्रलघुभैरुपवेशयेत्कौ ॥ २१ ॥

अन्वयः—कुजे विशुद्धे अरिक्ते तिथौ पञ्चममासि ब्रजति शुभेऽह्नि ध्रुवेन्दु ज्येष्ठर्क्षमैत्र-
लघुभैः पृथ्वीं वराह अभिपूज्य कटिसूत्रं वध्वा बालं कौ उपवेशयेत् ॥ २१ ॥

भाषार्थ—मंगल शुद्धि समय में जन्म समय से पांचवे मास में रिक्ता भिन्न
तिथियों में शुभवार में ध्रुवनक्षत्र, मृगशिरा, ज्येष्ठा, अनुराधा लघु नक्षत्र में बालक को
कटिसूत्र (कमर में सूत्र) बांधकर पृथ्वी पर बैठावे ॥ २१ ॥

बालक के जिविका की परीक्षा ।

तस्मिन् काले स्थापयेत् तत्पुस्ताद्वस्त्रं शस्त्रं पुस्तकं लेखनीं च ॥
स्वर्णं रोप्यं यच्च गृह्णाति बालस्तैराजीव्यैस्तस्य वृत्तिः प्रदिष्टा ॥ २२ ॥

अन्वयः—तस्मिन् काले तत्पुस्तात् वस्त्रं, शस्त्रं, पुस्तकं, लेखनीं च स्वर्णं, रोप्यं च
स्थापयेत् बालः (तेषु) यच्च गृह्णाति तस्य तैः आजीव्यैः वृत्तिः प्रदिष्टा ॥ २२ ॥

भाषार्थ—जब बालक पृथ्वी पर बैठाया जावे उस समय बालक के सामने
वस्त्र, शस्त्र, पुस्तक, कलम, सुवर्ण, चांदी रखना चाहिए उन में से जिस वस्तुको
बालक पकड़े उससे ही बालक की आजीविका होगी यह समझना चाहिए ॥ २२ ॥

बालक को ताम्बूलका मुहूर्त ।

वारे भौमार्किहीने ध्रुवमृदुलघुभैर्विष्णुमूलादितींद्र
स्वातीवस्वभ्युपेतैर्मिथुनमृगसुताकुंभगोमीनलग्ने
सोम्यैः केद्रत्रिकोणैश्शुभगगनगैः शत्रलाभत्रिसंस्थैः
ताम्बूलं सार्धमासद्वयमितसमये प्रोक्तमन्नाशनेवा ॥ २३ ॥

अन्वयः—भौमाकिंहीने वारे विष्णुमूलादितीन्द्रस्वाती वस्त्रभ्युपेतैः ध्रुव मृदुलधुमैः मिथुन-
मृगसुताकुम्भ गोमीनलग्ने सौम्यैः केन्द्रत्रिकोणैः अशुभग गनगैः शत्रुलाभत्रिसंस्थैः सार्धमासद्वय-
मित समये ताम्रूलं प्रोक्तम् अनाशने वा प्रोक्तम् ॥२३॥

भाषार्थ—मंगल, शनि भिन्नवार, श्रवण, मूल, पुनर्वसु, ज्येष्ठा सहित ध्रुव,
मृदु-लघु संज्ञा वाले नक्षत्र, मकर, कन्या, वृष मीन लग्न, सौम्यग्रह त्रिकोण,
केन्द्रस्थ, पापग्रह, पष्ठ, एकादश, तृतीय, में हों तो बालक को २॥ ढाई मास का हो
जानेपर दाना खिलाता श्रेष्ठ है ॥२३॥

कर्णवेधमुहूर्त ।

हित्वैतान् चैत्रपौषावमहरिशयनं जन्ममासंचरित्तां युग्माब्दं
जन्मतारासृतिमुनिवसुभिः संमिते मास्यथो वा ॥ जन्माहात्सूर्य
भूपैः परमितदिवसे ज्ञेयशुक्रेन्दुवारेऽथोजाब्देविष्णुयुग्मादितिमृदुल
धुमैः कर्णवेधः प्रशास्तः ॥२४॥

अन्वयः—चैत्रपौषावमहरिशयनं च जन्ममासं रिक्तां युग्माब्दं जन्मतारां हित्वा, ऋतु वसु
मुनिभिः संमिते मासि अथो वा जन्माहात् सूर्यभूपैः परमित दिवसे ज्ञेयशुक्रेन्दुवारे ओजाब्दे
विष्णुयुग्मादितिमृदुलधुमैः कर्णवेधः प्रशास्तः ॥२४॥

भाषार्थ—चैत्र, पौष महीना, तिथिक्षय, हरिश्चयन, जन्ममास, रिक्तातिथि,
समवर्ष जन्मतारा से भिन्न छठे, सातवें, आठवें मास, जन्म से १२ वें १६ वें दिन-
वृहस्पति, बुध, सोम दिन, विषमवर्ष, में श्रवण, धनिष्ठा, पुनर्वसु, मृदु, लघु नक्षत्रों
में कौन छेदना शुभ है ॥२४॥

कर्णवेध में लग्नशुद्धि विचार ।

संशुद्धे मृतिभवने त्रिकोणकेन्द्रत्रयायस्थैः शुभखचरैः कवीज्यल-
ग्नैः ॥ पापाख्यैररिसहजायगेहसंस्थैर्लग्नस्थे त्रिदशगुरौ शुभावहः
स्यात् ॥२५॥

अन्वयः—मृतिभवने संशुद्धे शुभखचरैः त्रिकोण केन्द्रत्रयायस्थैः कवीज्यलग्नैः
अरि सहजाय गेह स्थैः त्रिदशगुरौ लग्नस्थे (कर्णवेधः) शुभावहः स्यात् ॥२५॥

भाषार्थः—आठवां स्थान शुद्ध हो, पञ्चम, नवम, प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, दशम, तृतीय, एकादश में शुभ ग्रह हों कवि, इज्य लग्न हो पापग्रह तृतीय, पष्ठ, एकादश स्थान में हों तो कर्णवेध शुभ है ॥२५॥

दक्षिणायनमें चूड़ादिकर्म निषेधः ।

गीर्वाणाम्बुप्रतिष्ठा परिणयदहनाधानचौलोपवीत क्षोणीपाला-
भिषेकोदवसितविशननैव याम्यायने स्यात् ॥ नोवा वाल्यास्तवाध्वे
सुरगुरुसितयोर्नैवकेतूदये स्यात् पक्षं वाद्धं च केचिज्जहतितमपरे
यावदीक्षां तदुग्रे ॥२६॥

अन्वयः—गीर्वाणाम्बुप्रतिष्ठा परिणया दहनाधान गेहप्रवेशः चौलं राजाभिषेकः व्रतम्
अपि याम्यायने नैव शुभदम् सुरगुरु सितयोः वाल्यास्तवाध्वे केतूदये (न सत्) केचित्
पक्षं वा अर्ध अपरे तं यावदीक्षां यज्जहति तदुग्रे एवस्यात् ॥२६॥

भाषार्थः—देवता की और जलाशय की प्रतिष्ठा, विवाह, अग्निहोत्र, गृहप्रवेश
चौलकर्म (मुण्डन) राज्याभिषेक, यज्ञोपवीत, ये कार्य दक्षिणायन सूर्य में और वृह-
स्पति, शुक्र के बाल, अस्त, वृद्धत्व में नहीं करना चाहिये इसी प्रकार केतु तारा के
उदयकाल में भी प्रतिष्ठादि नहीं करना चाहिए किसी २ आचार्य की यह
सम्प्रति है कि केवल १ पक्ष अथवा सप्ताह ही वर्जनीय है । किसी का यह मत
है कि जितना देखा जावे उतना ही वर्जनीय है ॥२६॥

गुरु शुक्र का बाल्य और वृद्धावस्था वर्णन ।

परः पश्चात्भृगोर्बाल्यं त्रिदशाहं च वार्धकम् ।
पक्षं पञ्चदिनं ते द्वे गुरौः पक्षमुदाहृते ॥२७॥

अन्वयः—भृगोः पुरः (पूर्वदिशायां प्राप्तोदयस्य) त्रिदशाहं बाल्यं च (भृगोः)
वार्धकम्, (पुरः अस्ते) पक्षं, पश्चिमदिशायामस्ते पञ्चदिनानि गुरौ (प्रकरणादस्ते इति-
योज्यम्) द्वे पक्षं पञ्चदिनानि उदाहृते ॥२७॥

भाषार्थः—पूर्व दिशा में शुक्रोदय होने पर ३ दिन और यदि पश्चिम में
शुक्रोदय होता है तो १० दिन बाल्यकाल माना जाता है । एवं पूर्व में अस्त हो तो

१५ दिन वार्धक और पश्चिम में ५ दिन वार्धक माना जाता है। बृहस्पति का बालत्व, वार्धत्व १५ दिन उदय अस्त में होता है ॥२५॥

मतभेद से शुक्र बृहस्पति का बाल्य और वार्धक नियम ।

ते दशाहंद्योः प्रोक्तं कैश्चित्सप्तदिनं परैः ।

त्र्यहं त्वाह्नयिकेऽप्यन्यैर्अर्धाहं च त्र्यहं विधोः ॥२८॥

अन्वयः—द्वयोः (बृहस्पति शुक्रयोः) ते (बाल्यवार्धककाले) कैश्चित् दशाहं प्रोक्तं, परैः सप्तदिनं, अन्यैः त्र्यहं, आत्ययिके (कामचारं) विधोः बाल्यवार्धके अर्धार्धं त्र्यहं च ॥२८॥

भाषार्थः—किसी आचार्य ने बृहस्पति, शुक्र का बालत्व, बृद्धत्व दश दिन माना गया है किसी ने केवल ७ दिन माना है, कोई आचार्य आवश्यक कार्यों के लिए तीन दिन ही (बाल बृद्धत्व) माना है। चन्द्रमा का बाल्यकाल आधा दिन और बृद्धत्व तीन दिन माना है ॥२८॥

चूड़ाकरणे (मुंडन) का सुहूर्त ।

चूडावर्षात्तृतीयात्प्रभवति विषमेष्टार्क रिक्ताद्य

षष्ठीपर्वोनाहे विचैत्रोदगयनसमये ज्ञेदुशुक्रज्यकानाम् ॥

वारे लग्नांशयोश्चस्वभनिधनतनौ नैधने

शुद्धियुक्ते शाक्रोपेतैर्विमैत्रेऽमृदुचरलघुभैरायष्टत्रिस्थपापैः ॥२९॥

अन्वयः—तृतीयात् विषमे वर्षे अष्टार्क रिक्ताद्यषष्ठी पर्वोनाहे विचैत्रोदगयन समये ज्ञेदुशुक्रज्यकानां वारे लग्नांशयोः अस्वभनिधनतनौ नैधने शुद्धियुक्ते शाक्रोपेतैः विमैत्रेः मृदुचरलघुभैः आयष्ट त्रिस्थपापैः चूडा प्रभवति ॥२९॥

भाषार्थः—जिसका चूड़ाकर्म करना हो उसका वर्ष जन्म समय से तीसरा अथवा पाचवाँ हो चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी, प्रतिपदा पर्वदिनों से भिन्न दिनों में चैत्र रहित उत्तरायण सूर्य में बुध, शुक्र, सोम, बृहस्पति वार हो इनका लग्नांश हो जन्म लग्न और जन्म राशि से अष्टम स्थान लग्न रहित हों ज्येष्ठा से युक्त और अनुराधा छोड़ मृदु, चर, लघु नक्षत्रों में ग्यारहवें छठे तृतीय में पापग्रह हों तो चूड़ाकर्म शुभ बताया है ॥२९॥

क्षीणचन्द्रकुजेसौरि भास्करैर्मृत्यु शस्त्रमृतिपंगुताज्वराःस्युः ।
क्रमेण बुधजीवभार्गवैःकेन्द्रगैश्च शुभमिष्टतारया ॥३०॥

अन्वयः—क्षीणचन्द्रकुजसौरि भास्करैः केन्द्रगैः क्रमेण मृत्युशस्त्र मृतिपंगुताज्वराः
(भवन्ति) बुधजीवभार्गवैः केन्द्रगैः इष्टतारया शुभं निगदितम् ॥३०॥

भाषार्थः—क्षीण चन्द्र में केन्द्रग हो एवं मंगल, शनि, सूर्य भी केन्द्रस्थ हों तो
कमशः मृत्यु, शस्त्रमृत्यु, लँगडापन, तथा ज्वर होता है किन्तु बुध, वृहस्पति, शुक्र,
केन्द्रग हैं तो शुभ फल होता है । शुभ तारा में चूड़ाकर्म शुभद होता है ॥३०॥

चूड़ाकर्म का समय निर्णय ।

पञ्चमासाधिकेमातुर्गर्भे चौलं शिशोर्नसत् ॥

पञ्च वर्षाधिकस्येष्टं गर्भिण्यामपिमातरि ॥३१॥

अन्वयः—शिशोः मातुः गर्भे पञ्चमासाधिके चौलं न सत् । पञ्च वर्षाधिकस्य शिशोः
मातरि गर्भिण्यां चूडाकर्म इष्टं भवति ॥३१॥

भाषार्थः—जिस बालक का चूड़ाकर्म करना है उसकी माता को ५ मास का
गर्भ हो तो चौलकर्म नहीं करना चाहिए किन्तु पञ्चवर्ष से अधिक वर्ष वाले बालक
की माता के ५ मास के गर्भ होने पर भी बालक का चूड़ाकर्म करना उत्तम है ॥३१॥

तारा वल वणन ।

तारादौष्टयो ब्जैत्रिकोणोच्चगे वा क्षौरं सत्स्यात्सौम्यमित्रस्ववर्गे ।
सौम्ये भेब्जै शोभने दुष्टतारा शस्ता ज्ञेयाक्षौरयात्रादिकृत्ये ॥३२॥

अन्वयः—तारादौष्ट्ये अब्जे त्रिकोणगे उच्चगे वा सौम्यमित्रस्ववर्गे क्षौरं सत् सौम्यभे
अब्जे शोभने दुष्टतारा क्षौरयात्रादि कृत्ये शस्ता ज्ञेया ॥३२॥

भाषार्थः—दुष्ट ताराओं के होनेपर चन्द्रमा त्रिकोण अथवा उच्च के हों वृह-
स्पति, बुध के षड्वर्ग में अथवा अपने ही षड्वर्ग से हो शुभग्रह की राशि में हो
गोचर ग्रहों से शुभ हों तो दुष्टतारा भी शुभद है ॥३२॥

ऋतुमत्याः सूतिकायाः सूनोश्चौलादि नाचरेत् ।

उपेष्ठापत्यस्य नोज्येष्टे कैश्चिन्मार्गेऽपिनेष्यते ॥ ३३ ॥

अन्वयः—ऋतुमत्याः सूतिकायाः सूतोः चौलादि न आचरेत् ज्येष्ठायस्य ज्येष्ठे मार्गे कैश्चित् (मुनिभिः) न इष्यते ॥३२॥

भाषार्थः—ऋतुमती और सूतिका (जिसको बच्चा अभी २ पैदा हुई है) स्त्री के पुत्र का चौल कर्म नहीं करना चाहिये ज्येष्ठ पुत्र का ज्येष्ठ महाना में और अग्रहण में भी चौलकर्म का आचार्यों ने निषेध किया है ॥३३॥

क्षौर मुहूर्त और निषिद्ध काष्ठ ।

दन्तक्षौरनखक्रियाऽत्रविविहता चौलोदिते वारभे
पातंग्यारखीन् विहाय नवमं घृतं च संध्यांतथा ॥
रिक्तापर्वनिशां निरासनरणग्रामप्रयाणोद्यतस्नाताभ्यक्त
कृताशनैर्नहि पुनः कार्या हितप्रेप्सुभिः ॥ ३४ ॥

अन्वयः—चौलोदिते वारभे दन्तक्षौरनखक्रिया विहिता पातंग्यारखीन् नवमं घृतं सन्ध्याम् विहाय च रिक्ताम् पर्वनिशाम् हितप्रेप्सुभिः निरासनरणग्रामप्रयाणोद्यतस्नाताभ्यक्तकृताशनैः (क्षौरक्रिया न कार्या) ॥३४॥

भाषार्थः—चौल कर्म के वास्ते कहे नक्षत्र वारों में दन्तमंजन और नखच्छेदन करना चाहिये किन्तु पूवक्षौर कर्म कराए से नवें दिन तथ प्रातःकाल, रिक्ता तिथि पर्व रात्रि को क्षौर कर्म नहीं कराना चाहिए निरासन (धिना आसन रखे) रण, ग्रामयात्रा, स्नानोपरान्त, तेल लगाने बाद, भोजनापरान्त, गहना पहनने के बाद क्षौर कर्म नहीं करना चाहिये ॥३४॥

॥ मंलुभाषिणी ॥

ऋतुपाणिपीडमृतिवन्धमोक्षणेक्षुरकर्म च द्विजनृपा ज्ञयाचरेत् ।
शववाहतीर्थगमसिन्धुमज्जनक्षुर माऽचरेन्नखलु गर्भिणीपतिः ॥३५॥

अन्वयः—ऋतुपाणिप्रपीडमृतिवन्धमोक्षणे द्विजनृपाज्ञया (अयोग्ये वाराहावपि) क्षुरकर्म चरेत् च गर्भिणीपतिः शववाह तीर्थगम सिन्धुमज्जन क्षुरं न खलु कुर्यात् ॥३५॥

भाषार्थः—यज्ञ, विवाह, जेल से छूटने पर मरण में वारनक्षत्रादि शुद्ध न होते हुए भी क्षौर कर्म करना चाहिए । गर्भिणी स्त्री के पति को मुर्दा ढोना, तीर्थस्नान, समुद्र में स्नान तथा क्षौर कर्म न करावें ॥३५॥

राजाओं के क्षौर में वर्ज्य नक्षत्र ।

नृपाणां हितं क्षौर भेषमश्रुकर्म दिने पञ्चमे पञ्चमस्योदये वा ।
षडग्निस्त्रिमैत्रोष्टकः पञ्चपित्र्योब्दतीर्ध्यमा क्षौरकृतमृत्युमेति ॥ ३६ ॥

अन्वयः—नृपाणां पञ्चम दिने क्षौरभे श्मश्रुकर्म हितं (हितावहम्) अस्य पञ्चमस्योदये वा (हितम्) षडग्निः, त्रिमैत्रः, अष्टकः, पञ्चपित्र्यः अर्ध्यमा क्षौरकृतः (एषु) अद्भुतः मृत्युं एति ॥ ३६ ॥

भाषार्थः—क्षौर नक्षत्रों में (जो पूर्व में कहा है) राजाओं को उसमें दाढ़ी काटने वाला बनवाना चाहिये । निरन्तर १ वर्ष ६ बार कृत्तिका में, ३ बार अनुराधा में आठ बार रोहिणी में ५ बार मघा में ४ बार उत्तरा फाल्गुनी में वाल बनवाने से अवश्य वर्ष भीतर ही मृत्यु होती है ॥ ३६ ॥

अक्षरारम्भ मुहूर्त ।

गणेशविष्णुवाग्रमाः प्रपूज्य पञ्चमाब्दकेतिथौ
शिवार्क दिग्द्विषट्शरत्रिके रवाबुदक् ॥
लघुश्रवो निलान्त्यभादितीशतक्षमित्रमे,
चरो न सत्तनौ शिशोर्लिपिग्रहः सतां दिने ॥ ३७ ॥

अन्वयः—पञ्चमाब्दके गणेशविष्णुवाग्रमाः प्रपूज्य शिवार्कदि दिग्द्विषट् शरत्रिके रवाबुदक् लघुश्रवोः निलान्त्यभादितीशतक्षमित्रमे सतां दिने चरो न सत्तनौ शिशोः लिपिग्रहः विधेयः ॥ ३७ ॥

भाषार्थः—जन्म से पञ्चम वर्ष में गणेश, विष्णु, लक्ष्मी पूजा के अनन्तर एकादशी, द्वादशी, दशमी, द्वितीया, षष्ठी, पंचमी, तृतीया तिथि में सूर्य के उत्तरायण अवस्था में हस्त, अश्विनी, पुष्य, श्रवण, स्वाती, रेवती, पुनर्वसु, आर्द्रा, चित्रा, अनुराधा, नक्षत्रों में सोम, बुध, शुक्र दिन में शुभ स्वाती के लग्न में लड़के का अक्षरारम्भ करना श्रेष्ठ है ॥ ३७ ॥

विद्यारम्भ कराने का मुहूर्त

मृगात्करोच्छ्र तेस्त्रयेशिवमूलपूर्विकात्रये

गुरुद्वयेर्कजीववित्सतेहि षट्शरात्रिके ॥
शिवार्कदिक्द्विकेतिथौध्रुवान्त्यमित्रभे परै
शुभैरधीतिरुत्तमा त्रिकोणकेन्द्रगैः स्मृता ॥३८॥

अन्वयः—मृगात् करात् श्रुतेस्त्रये शिवमूलपूर्विकात्रये गुरुद्वये अर्कजीववित्सतेऽहिषट्शरात्रिके शिवार्क दिग्द्विके तिथौ शुभैः त्रिकोणकेन्द्रगैः अधीतिः उत्तमास्मृता परैः ध्रुवान्त्यमित्रभैः अधीतिः (उत्तमास्मृता) ॥३८॥

भाषार्थः—मृगशिरो, हस्त, श्रवण से तीन २ नक्षत्र अश्वनी, मूल, तीनो उत्तरा पुष्य श्लेषा नक्षत्रों में सूर्य, गुरु, बुध, शुक दिन में, षष्ठी, पंचमी, तृतीया, एकादशी, द्वादशी दशमी, द्वितीया तिथियों में शुभग्रह त्रिकोण अथवा केन्द्रग हों तो विद्याध्ययन प्रारम्भ शुभ है किसी२ आचार्यों ने ध्रुव संज्ञा वाले नक्षत्र और रेवती अनुराधा में विद्याध्ययन शुभ माना है ॥३८॥

व्रतबंध (यज्ञोपवीत) में समय निर्णय सुहूर्त

विप्राणां व्रतबंधनं निगदितं गर्भाज्जनेर्वाष्टमे
वर्षेवाप्यथ पंचमे क्षितिभुजांषष्ठे तथैकादशे ।
वैश्यानां पुनरष्टमेप्यथ पुनः स्याद्वादशे वत्सरे
कालेऽथद्विगुणेगते निगदितेगौणंतदाहुर्बुधाः ॥३९॥

अन्वयः—गर्भात् जनेः वा अष्टमे वर्षे अथवा पञ्चमे वर्षे विप्राणां व्रतबन्धनं निगदितम् । क्षितिभुजां (क्षत्रियाणां) षष्ठे एकादशे वा वर्षे (व्रतबन्धनं युक्तम्) अष्टमे द्वादशे वर्षे वैश्यानां (व्रतबन्धनं युक्तम्) अथ द्विगुणे काले गते (व्यतीति) तदा व्रतबन्धनं गौणं आहुः ॥३९॥

भाषार्थः—गर्भ अथवा जन्म से आठवें वर्ष में ब्राह्मणों का यज्ञोपवीत; और क्षत्रियों का छठे अथवा ग्यारहवें वर्षमें, आठवें अथवा चारहवें वर्षमें वैश्यों का यज्ञोपवीत शास्त्र संमति से युक्त है इससे (द्विगुण) दूना समय व्यतीत हो जाने पर यज्ञोपवीत धारण करना गौण (नकली) होता है ॥३९॥

यज्ञोपवीत में नक्षत्र शुद्धिः ।

क्षिप्रध्रुवाहिचरमूलमृदुत्रिपूर्वा
रौद्रेऽर्कविद्गुरुसिन्तेन्दुदिने व्रतंसत् ।
द्वित्रीषुरुद्रविदिकप्रमितेतिथौ
च कृष्णादिमत्रिलवकेऽपि न चाऽपराह्णे ॥४०॥

अन्वयः—क्षिप्रध्रुवाहिचरमूलमृदुत्रिपूर्वरौद्रे अर्कविद्गुरुसिन्तेन्दुदिने द्वित्रीषु रुद्रविदिक प्रमिते तिथौ कृष्णादिम त्रिलवगे व्रतं (व्रतबन्धनं) सत् अपराह्णे न सत् ॥४०॥

भाषार्थः—क्षिप्र, ध्रुव संज्ञा वाले नक्षत्र अश्लेषा श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पुनर्वसु, स्वाती मूल मृदु संज्ञावाले नक्षत्र तीनों पूर्वा आर्द्रा नक्षत्रों में सूर्य, बुध, शुक, शुक, सोम इन दिनों में द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, एकादशी, द्वादशी, दशमी, तिथियों में कृष्णपक्ष के प्रथम नवमांशा में व्रतबन्ध (यज्ञोपवीत) करना उत्तम है ॥४०॥

यज्ञोपवीत में लग्न भंग योग ।

कवीज्यचन्द्रलग्ना रिपौमृतौव्रतेऽधमाः ।
व्ययेब्ज भार्गवौ तथा तनौ मृतौ सुते खलाः ॥४१॥

अन्वयः—रिपौ, मृतौ, कवीज्यचन्द्रलग्नाः व्रते अधमाः । अब्ज भार्गवौ व्यये अधमौ । खलाः तनौ, मृतौ, सुते तथा (अधमाः) भवन्तीति शेषः ॥४१॥

भाषार्थः—षष्ठ, अष्टम, में शुक चन्द्र तथा लग्न स्वामी हों तो व्रतबन्ध में अधम माने गये हैं चन्द्र शुक द्वादश स्थान में अधम हैं पापग्रह लग्न, अष्टम, पंचम हों तो अधम कहे गए हैं ॥४१॥

व्रतबंधेऽष्टषड्दरीःफवर्जिताःशोभनाःशुभाः ॥ त्रिषडा
येखलाः पूर्णो गोकर्कस्थो विधुस्तनौ ॥४२॥

अन्वयः—शोभनाः अष्टषड्दरीः फवर्जिताः शुभाः । खलाः त्रिषडा ये (शुभाः) पूर्ण विधुः गोकर्कस्थः शुभः ॥४२॥

भाषार्थः—शोभन ग्रह आठवें, छठे रिः फ स्थान से वर्जित हों तो उत्तम हैं एवं खलग्रह त्रितीय, पष्ठ, एकादश में पापग्रह, पूर्णचन्द्र वृष, कर्क के हों तो व्रत-चन्ध में शुभ है ॥४२॥

वर्णेश और शाखेश का विचार ।

विप्राधीशौ भार्गवेज्यौ कुजाकौ
राजन्यानामोषधीशोविशां च !
शूद्राणां ज्ञश्चांत्यजानाशनिः स्यात्
शाखेशाः स्युर्जीवशुक्रारसौम्याः ॥४३॥

अन्वयः—भार्गवेज्यौ विप्राधीशौ कुजाकौ राजन्यानां ओषधीशः वैश्यानां ज्ञः शूद्राणां शनिः अन्त्यजानां जीवशुक्रारसौम्याः शाखेशाः निगदिताः ॥४३॥

भाषार्थः—शुक्र, बृहस्पति ब्राह्मणों के और मंगल सूर्य क्षत्रियों के, चन्द्र वैश्य के बुध शूद्र के शनि चाण्डालों के स्वामी हैं ऋक्वेद, यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद के क्रमशः बृहस्पति, शुक्र, मंगल, बुध स्वामी हैं ॥४३॥

वर्णेश और शाखेश के अधिपति को हेतु ।

शाखेशवारतनुवीर्यमतिवशस्तं
शाखेशसूर्यशशि जीव बलव्रतं सत् ।
जीवे भृगौरिपुगृहे विजिते च नीचे
स्याद्देशास्त्रविधिना रहितोव्रतेन ॥४४॥

अन्वयः—शाखेश वारतनुवीर्य अतीव शस्तं शाखेश सूर्य शशि जीवबले सत् (व्रतम्) जीवे भृगौ रिपुगृहे विजिते च नीचे व्रतेन वेदशास्त्रविधिना रहितः स्यात् ॥४४॥

भाषार्थः—शाखेश, वार तथा लग्न सबल हो तो यज्ञोपवीत परम शुभ है इसी प्रकार शाखेश सूर्य, चन्द्र बृहस्पति के सबल होने पर भी उत्तम है गुरु शुक्र शाखेश शनिदि रिपुगृह में हो तो विजय किन्तु नीचे राशि में हो तो बालक मूर्ख हो ॥४४॥

जन्ममासादिक अपवाद ।

जन्मार्क्षमासलग्नादौ व्रते विद्याधिकोव्रती ।
आद्यगर्भेऽपि विप्राणां क्षत्रादीनामनादिमे ॥४५॥

अन्वयः—जन्मर्क्षमासलग्नादौ विप्राणां आद्यगर्भेऽपि व्रते व्रती विद्याधिकः क्षत्रादीनां अनादिमे (गर्भे) (व्रते सति) विद्याधिकोः जायत इति पूर्वेण सम्बन्धः ॥४५॥

भाषार्थः—जन्म के नक्षत्र, मास, लग्न में ब्राह्मण के प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुत्र का यज्ञोपवीत हो तो बालक विद्योन्नत होता है एवं क्षत्रो, वैश्य के द्वितीय पुत्र का यज्ञोपवीत पूर्व कथित समय में हो तो बालक व्रती और विद्यायुक्त होता है ॥४५॥

गुरुवल वर्णन ।

वटुकन्याजन्मराशेः त्रिकोणाद्विसप्तगः ।
श्रेष्ठोगुरुः षट्त्रयाद्ये पूजयान्यत्रनिन्दितः ॥४६॥

अन्वयः—गुरुः वटुकन्याजन्मराशेः त्रिकोणायद्विसप्तगः श्रेष्ठः षट्त्रयाद्ये पूजया अन्यत्र (गुरुः) निन्दितः ॥४६॥

भाषार्थः—वृहस्पति, यज्ञोपवीत किये जाने वाले और विवाह किये जाने वाली पुत्री पुत्र के जन्म राशि से पंचम, नवम, एकादश द्वितीय सप्तम स्थान में श्रेष्ठ हैं ॥४६॥

वृहस्पतिका परिहार

स्वोच्चे स्वमे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरुः ।
रिःफाष्टतुर्यगोपीष्ठो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसन् ॥४७॥

अन्वयः—गुरुः स्वोच्चे, स्वमे, स्वमैत्रे, स्वांशे वर्गोत्तमे रिः फाष्टतुर्यगोऽपि इष्टः नीचारिस्थः शुभोऽपि असत् ॥४७॥

भाषार्थः—वृहस्पति अपने से उच्च (कर्क) स्वनक्षत्र (धनु मीन) स्वमैत्र (मेष सिंह वृश्चिक) स्वांश धनु मीन नवमांस वर्गोत्तम में अथवा चतुर्थादि निन्दनीय स्थान में हों तो उत्तम फल देता है नीच (मकर मिथुन कन्या) अदि तुला, वृष राशि का हो तो शुभ होता हुआ भी क्रशुभ है ॥४७॥

यज्ञोपवीत में वर्जित समय ।

कृष्णे प्रदोषेऽनध्यायेऽशनौ निश्यऽपराह्णके ।

प्राक्संध्यागर्जिते नेष्टो व्रतबंधो गलग्रहे ॥४८॥

अन्वयः—कृष्णे प्रदोषे अनध्याये शनौ निशि अपराह्णके प्राक्संध्यागर्जिते व्रतबन्धः
नेष्ट एवं गलग्रहे ॥४८॥

भाषार्थः—कृष्णपक्ष, प्रदोष समय, अनध्याय, शनिवार, रात्रिसमय, मध्या-
ह्नोत्तर, प्रातः संध्या, गर्जन समय एवं गलग्रह में व्रतबन्ध (यज्ञोपवीत नहीं करना
चाहिए) ॥४८॥

सूर्यादि नवमांशका फल ।

क्रूरोजडोभवेत्पापः पटुः षट्कर्मकृद्बटुः ।

यज्ञार्थभाक् तथा मूर्खो रव्याद्यंशे तनौ क्रमात् ॥ ४९॥

अन्वयः—रव्याद्यंशे तनौ क्रमात् बटुः क्रूरः, जडः, पापः, पटुः, षट्कर्मकृत्, यज्ञार्थ-
भाक् मूर्खः भवेत् ॥४९॥

भाषार्थः—क्रमशः सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनि, के नवमांश
बालक का यज्ञोपवीत हो तो बालक क्रूर, पापी, चतुर, (यजन, याजन, दान, प्रति-
ग्रह, अध्ययन, अध्यापन) इन छः कर्मों का करने वाला, यज्ञार्थ धारण करने वाला
मूर्ख होता है ॥४९॥

निज नवमांशा में चन्द्रनवमांशा का फल ।

विद्यानिरतःशुभराशिलवेपापांशगते हि दरिद्रतरः ।

चंद्रेऽवलवेबहुदुःखयुतःकर्णादितिभेधनवान्स्वलवे ॥५०॥

अन्वयः—शुभराशिलवे चन्द्रे विद्यानिरतः, पापांशगते दरिद्रतरः, स्वलवे बहुदुःख-
युतः, कर्णादितिभेधनवान् भवतीति शेषः ॥५०॥

भाषार्थः—चन्द्रमा शुभग्रह की नवमांश में हो तो बालक विद्यानुरागी, क्रूर
ग्रह की नवमांशा में हो तो धनहीन, स्वनवमांशा में हो तो अत्यन्त दुःखी श्रवण,
शुनर्वसु में हो तो बालक (जिसका यज्ञोपवीत हुआ है) धनी होता है ॥५०॥

केन्द्रस्थित ग्रहों का फल ।

राजसेवी वैश्यवृत्तिः शास्त्रवृत्तिश्च पाठकः ।

प्राज्ञोर्थवान् म्लेच्छसेवी केन्द्रे सूर्यादिखेचरैः ॥५१॥

अन्वयः—केन्द्रे सूर्यादिखेचरैः राजसेवी वैश्यवृत्तिः शास्त्रवृत्तिः पाठकः प्राज्ञः
अर्थवान् म्लेच्छसेवी जायत इति शेषः ॥५१॥

भाषार्थः—सूर्य इत्यादि ग्रह केन्द्र में हो तो क्रमशः राजसेवक, व्यापारी,
शास्त्रज्ञ, पाठक (पढ़ाने वाला) बुद्धिमान, धनी, म्लेच्छों की सेवा करने वाला
होता है ॥५१॥

शुक्रे जीवे तथा चन्द्रे सूर्यभौमार्क्संयुते ।

निर्गुणः क्रूरचेष्टः स्यान्निर्घृणः सद्युते पटुः ॥५२॥

अन्वयः—शुक्रे जीवे चन्द्रे (क्रमशः) सूर्य भौमार्क्संयुते निर्गुणः क्रूरचेष्टः निर्घृणः
स्यात् सद्युते पटुः ॥५२॥

भाषार्थः—शुक्र, वृहस्पति, चन्द्रमा ये क्रमशः सूर्य, मंगल शनि से युक्त हों तो
क्रमशः निर्गुण (गुणरहित) क्रूरचेष्ट (हिसादि क्रूर वृत्ति वाला) निर्घृण दृष्टि
रहित बालक होता है ॥५२॥

योग विशेष वर्णन ।

विधो सितांशगे सिते त्रिकोणगे तनौ गुरौ ।

समस्तवेदविद्ब्रती यमांशगेऽतिनिर्घृणः ॥ ५३ ॥

अन्वयः—विधौ सितांशगे, सिते त्रिकोणगे, गुरौ तनौ ब्रती समस्त वेदवित् यमांशगे
अति निर्घृणः स्यात् ॥५३॥

भाषार्थः—चन्द्रमा शुक्र के नवमांशा का तथा शुक्र त्रिकोणग वृहस्पति
लग्नेश हों तो बालक समस्त वेदों का जानकार किन्तु शनि की नवमांशा हो तो
अत्यन्त निर्घृण (दृष्टि रहित-बीभत्स कर्मा) बालक होता है ॥५३॥

अनध्याय विवरण ।

शुचिशुक्रपौषतपसां दिगशिवरुद्रार्कसंख्यासिततिथयः ।
भूतादित्रितयाष्टमीसंक्रमणं च व्रतऽस्वनध्यायः ॥५४॥

अन्वयः—शुचिशुक्रपौषतपसां दिगशिवरुद्रार्कसंख्यसित तिथयः भूतादि त्रितयाष्टमी संक्रमणं च व्रतेषु अनध्यायाः । उक्ता इति शेषः ॥५४॥

भाषार्थः—आषाढ, ज्येष्ठ, पौष, माघ मास के शुक्ल पक्ष की क्रमशः दशमी, द्वितीया, एकादशी, द्वादशी, ये तिथियां, तथा चतुर्दशी पूर्णिमा प्रतिपद तथा संक्रान्ति ये व्रतबन्ध में अनध्याय तिथि है ॥५४॥

प्रदोष लक्षण ।

अर्कतर्कत्रितिथिषु प्रदोषः स्यात्तदग्रिमैः ।
रात्र्यर्धसार्धप्रहरयाममध्यस्थितः क्रमात् ॥५५॥

अन्वयः—रात्र्यर्धसार्धप्रहरयाममध्यस्थितैः तदग्रिमैः अर्कतर्क त्रितिथिषु प्रदोषः स्यात् ॥५५॥

भाषार्थ—द्वादशी तिथिमें अर्धरात्रि के प्रथम ही त्रयोदशी के प्रवेश होने, पर प्रदोष होता है इसी भाँति षष्ठी में १॥ प्रहर के पूर्व, सप्तमी, तृतीया के प्रथम प्रहर में अन्तिम तिथि के प्रवेश होने पर प्रदोष होता है ॥५५॥

ब्रह्मौदन संस्कार ।

प्रागब्रह्मौदनं पाकाद् व्रतबन्धानन्तरं यदि चेत् ।
उत्पातानध्ययनोत्पत्तावपि शान्तिपूर्वकं सत्स्यात् ॥५६॥

अन्वयः—ब्रह्मौदनं पाकात् प्राक् व्रतबन्धानन्तरं यदि चेत् उत्पातानध्ययनोत्पत्तावपि शान्तिपूर्वकं सत् स्यात् ॥५६॥

भाषार्थ—ब्रह्मौदन (दही भात खिलाना) संस्कार के पूर्व व्रतबन्ध के अनन्तर उत्पात और अनध्याय आपड़े तो शान्ति पूर्वक यज्ञोपवीत करना चाहिये ॥५६॥

यज्ञोपवीत में वेदानुसार नक्षत्र कथन ।

वेदक्रियाच्छशिशिवाहिकरत्रिमूलपूर्वासुपौष्णकरमैत्रमृगादि-
तीज्ये ॥ ध्रौवेषुचाश्विवसुपुष्यकरोत्तरेशकर्णे मृगांत्यलघुमैत्र-
धनादितौ सत् ॥ ५७ ॥

अन्वयः—शशि शिवाहिकर त्रिमूलपूर्वासु (ऋग्वेदपाठिनाम्) पौष्णकर मैत्रमृगादि-
तीज्ये (यजुः पाठिनाम्) ध्रौवेषु चाश्विवसुपुष्यकरोत्तरेशकर्णे (सामवेदाध्याइणाम्) मृगान्त्य-
लघुमैत्रधनादितौ अथर्ववेद पाठिनाम् (व्रतबन्धः) सत् ॥५७॥

भाषार्थः—ऋग्वेद पाठियों का यज्ञोपवीत मृगशिरा, अश्लेषा, आर्द्रा, हस्त
चित्रा, स्वाती, मूल, तीनों पूर्वा में एवं यजुर्वेदियों का रेवती, हस्त, अनुराधा,
मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, रोहिणी में, सामवेदियों का अश्विनी,
धनिष्ठा, पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा आर्द्रा, श्रवण में, अथर्वणवेदी का मृगशिरा, रेवती,
हस्त, अश्विनी, पुष्य, अनुराधा, धनिष्ठा, पुनर्वसु में होना शुभफल दायक है ॥५७॥

ऋग्वेद	यजुर्वेद	सामवेद	अथर्वणवेद
मृगशिरा	रेवती	अश्विनी	मृगशिरा
आर्द्रा	हस्त	धनिष्ठा	रेवती
अश्लेषा	अनुराधा	पुष्य	हस्त
हस्त	मृगशिरा	हस्त	अश्विनी
चित्रा	पुनर्वसु	तीनों उत्तरा	पुष्य
रेवती	पुष्य	आर्द्रा	अनुराधा
मूल	तीनों उत्तरा	श्रवण	धनिष्ठा
तीनों पूर्वा	रोहिणी	×	पुनर्वसु

नान्दी मुख श्राद्ध के उपरान्त माता रजस्वलाका निर्णय ।

नांदीश्राद्धोत्तरं मातुः पुष्पे लग्नान्तरेनहि ।

शान्त्या चौलं व्रतं पाणिग्रहः कार्योऽन्यथा न सत् ॥५८॥

अन्वयः—नान्दी श्राद्धोत्तरं (यज्ञोपवीत क्रियायै यज्ञस्थलमीनतस्य) मातुः पुष्पे-
लग्नान्तरे नहि शान्त्या चौलं व्रतं पाणिग्रहः कार्यः अन्यथा न सत् ॥५८॥

भाषार्थ—संस्कार करने के लिये उद्यत बालक की माता यदि नान्दी श्राद्ध के
बाद ही पुष्पवती (रजस्वला) हो जावे तो शान्ति कराकर (बालक द्वारा) चौलकर्म,
व्रतबन्ध, विवाह कर्म करना चाहिये अन्यथा (शान्ति कर्म के बिना) शुभ फल
दायक नहीं होता ॥५८॥

छुरिका बंधन मुहूर्त ।

विचैत्रव्रतमासादौ विभौमास्ते विभूमिजे ।

छुरिका बंधनं शस्तं नृपाणां प्राग्विवाहतः ॥५९॥

अन्वयः—विचैत्रव्रतमासादौ विभौमास्ते विभूमिजे नृपाणां विवाहतः प्राक् छुरिका-
बन्धनं शस्तं (निगदितं इति शेषः) ॥५९॥

भाषार्थः—चैत्र भिन्न मासों, तिथियों, चारों नक्षत्रों में मंगल के अस्त और
चार को छोड़ राजा को कमर में छुरिका बन्धन (छुरी बांधना) श्रेष्ठ होता है किन्तु
यह कर्म विवाह से प्रथम ही उत्तम है ॥५९॥

केशान्त और समावर्तन मुहूर्त ।

केशांतं षोडशे वर्षे चौलोक्तदिवसे शुभम् ।

व्रतोक्तदिवसादौ हि समावर्तनमिष्यते ॥ ६० ॥

अन्वयः—षोडशे वर्षे चौलोक्तदिवसे केशान्तं शुभं (भवति) व्रतोक्त दिवसादौ हि
समावर्तनम् इष्यते ॥६०॥

भाषार्थ—सोलहवें वर्ष (जन्म से) चौलकर्म के वास्ते कहे नक्षत्रादिकों में

केशान्त नामका षर्म करना चाहिये । व्रतबन्ध के वास्ते दिन नक्षत्रों में समावर्तन नाम का संस्कार करना चाहिये ॥६०॥

इति श्रीमुहूर्तचिन्तामणौ पंचमसंस्कार प्रकरणं समाप्तम् ।



विवाह प्रकरणम् ।

अथ षष्ठ प्रकरण प्रारम्भः



विवाह में लग्न शुद्धि विचार ।

भार्या त्रिवर्गकरणं शुभशीलयुक्ता

शीलंशुभंभवतिलग्नवशेन तस्याः ।

तस्माद्विवाहसमयः परिचिंत्यतेहि

तन्निघ्नतामुपगताः सुतशीलधर्माः ॥ १ ॥

अन्वयः—शुभशीलयुक्ता भार्या त्रिवर्गकरणम् तस्याः लग्नवशेन शीलं शुभं भवति । तस्मात् विवाह समयः परिचिन्त्यते हि सुतशीलधर्माः तन्निघ्नताम् उपगताः ॥१॥

भाषार्थः—शुभशीलयुक्त स्त्री धर्म, अर्थ, काम की साधन है ऐसी स्त्री का मिलना विवाह लग्न पर ही व्यवस्थित है अतः विवाह लग्न अवश्य विचारणीय है स्त्री ही पुत्र, स्वभाव, धर्म, अर्थ, काम को उत्पन्न करती है ॥१॥

प्रश्न लग्न में विवाह का विचार

आदौ संपूज्यरत्नादिभिरथ गणकं वेदयेत्स्वस्थचित्तं

कन्योद्वाहंदिगीशानलहयविशिखे प्रश्नलमाद्यदीदुः ।

दुष्टो जीवेन सद्यः परिणयनकरोगोतुलाकर्कटाख्यं

वास्यात्प्रश्नस्यलग्नं शुभखचरयुता लोकितां तद्विध्यात् ॥ २ ॥

अन्वयः—अथ आदौ स्वस्थचितं गणकं रत्नादिभिः सम्पूज्य कन्योद्वाहं वेदयेत् यदि इन्दुः दिगीशानलहयविशिखे (विद्यमानः) जीवेन दृष्टः सद्यः परिणयनकरः स्यात् गोतुला-कर्कटार्यं प्रश्नस्य लग्नं शुभस्वचरयुता लोकितां तत् (परिणयनम्) विदध्यात् ॥२॥

भाषार्थः—सब से प्रथम शान्तमन वाले ज्योतिर्विद को रत्न इत्यादि से पूजा कर कन्या के विवाह का प्रश्न पूछे प्रश्न के लग्न से दशम, तृतीय, सप्तम, पञ्चम, स्थान में चन्द्रमा हों तो और बृहस्पति से दृष्ट हो शीघ्र ही विवाह हो ऐसा बताना चाहिये वृष, तुला, कर्क में से कोई प्रश्न लग्न हो शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो बहुत ही शीघ्र विवाह करना चाहिये ॥२॥

द्वितीय प्रकार ।

विषमभांशगतौ शशिभार्गवौ तनुगृहंबलिनौ यदि पश्यतः ।
रचयतो वरलाभमिमौ यदा युगलभांशगतौ युवतिप्रदौ ॥ ३ ॥

अन्वयः—बलिनौ शशिभार्गवौ यदि विषमभांशगतौ तनुगृहं पश्यतः (तर्हि) शशि-भार्गवौ वरलाभं रचयतः युगलभांशगतौ युवतिप्रदौ (स्तः) ॥३॥

भाषार्थः—चन्द्र मेष आदि विषम राशिस्थ हो शुक्र भी बली हो लग्न में दृष्टि रखता हो कन्या को वरलाभ होता है और यदि सम राशिपर स्थित हो तो वर को शीघ्र कन्या लाभ होता है ॥३॥

वैधव्ययोग ।

षष्ठाष्टस्थः प्रश्नालग्नाद्यर्दीर्गलग्नेक्रूरः सप्तमेवाकुजस्यात् ।
मूर्त्ताविन्दुः सप्तमे तस्य भौमो रण्डासास्यादष्टसंवत्सरेण ॥ ४ ॥

अन्वयः—प्रश्नलग्नात् यदि इन्दुः षष्ठाष्टस्थः लग्ने सप्तमे वा क्रूरः कुजः वा स्यात् (तर्हि) अष्टसंवत्सरेण रण्डा स्यात् मूर्त्तौ इन्दुः तस्य सप्तमे भौमः (स्यात्) सा अष्ट-संवत्सरेण रण्डा (स्यात्) ॥४॥

भाषार्थः—प्रश्नकाल के लग्न से चन्द्र छठे आठवें में हों लग्न अथवा सप्तम में क्रूर ग्रह अथवा मंगल हो तो वह स्त्री आठ वर्ष में विधवा होती है अथवा लग्न में चन्द्र सप्तम में मंगल हो तो आठ वर्ष में वह विवाहिता स्त्री वैधव्य को प्राप्त करती है ॥४॥

कुलटा मृतवत्सायोग ।

प्रश्नतनोर्यदि पापनभोगः पञ्चमगो रिपुदृष्टशरीरः ।

नीचगतश्च तदा खलु कन्या सा कुलटात्वथवा मृतवत्सा ॥५॥

अन्वयः—प्रश्नतनोः यदि पापनभोगः पञ्चमगः रिपुदृष्टशरीरः (भवन्) नीचगतः (भवेत्) सा कन्या खलु (अवश्यमेव) कुलटा अथवा मृतवत्सा स्यात् ॥५॥

भाषार्थ—प्रश्न समय के लग्न से पापग्रह शनि आदि दशम पञ्चम में हों शत्रु से दीखते हुए नीच राशि के हों तो वह (विवाह नीच कन्या) अवश्य ही व्यभिचारिणी होती है अथवा मृतवत्सा (जिसके बच्चे होकर मर जाते हैं) होती है ॥५॥

विवाहभङ्ग योग ।

यदि भवतिसितातिरिक्तपक्षे

तनुगृहतः समराशिगः शशांकः ।

अशुभखचरवीक्षितोरिंध्रे भवति

विवाहविनाशकारकोऽयम् ॥ ६ ॥

अन्वयः—सितातिरिक्तपक्षे यदि शशांकः तनु गृहतः समराशिगः अशुभखचरवीक्षितः अरिरन्ध्रे अयम् (योगः) विवाह विनाशकारकः भवति ॥६॥

भाषार्थः—कृष्णपक्ष में चन्द्रमा यदि समराशि (वृष कर्कादि) में हो और प्रश्न लग्न से षष्ठ अष्टम में हो और पाप ग्रह की दृष्टि हो तो ऐसे में वर कन्या का विवाह भंग होता है ॥६॥

बालवैधव्ययोग का परिहार ।

जन्मोत्थं च विलोक्य बालविधवायोगं विधाय व्रतं
सावित्र्या उत पैप्यलं हि सुतया दद्यादिमां वारहः ॥

सल्लग्नेच्युतमूर्तिपिप्पलघटैः कृत्वाविवाहं स्फुटं
दद्यात्तां चिरजीवनेऽत्र न भवेद्दोषोपुनर्भूभवः ॥ ७ ॥

अन्वयः—जन्मोत्थं बालविधवा योगं विलोक्य सुतया रहः सावित्र्या व्रतम् उत पीपलं व्रतम् विधाय पश्चादिमां दद्यात् (वराय) (अपरमुपायान्तरमिदं यत्) अच्युतमूर्तिपीपल-घटैः रहः सल्लग्ने विवाहं कृत्वा स्फुटं तां चिरजीविने (नराय दद्यात्) अत्र पुनर्भूतवः दोषः न स्यात् ॥७॥

भाषार्थः—जन्म काल में जब कन्या का बालविधवा योग देखे तो उससे पीपल का व्रत पीपल सिञ्चनादि व्रत करावे अनंतर कन्यादान करावे अथवा सावित्री व्रत करावे तब कन्यादान करे । अथवा श्री१०८ विष्णु भगवान् की मूर्ति वनवावे पीपल के तले उस प्रतिमा के साथ कन्या का विवाह करावे अनन्तर चिरजीवी वर के साथ विवाह करना चाहिये ऐसा करने पर बालवैधव्य योग का दोष नहीं लगता है ॥७॥

प्रश्न के शुभाशुभ लक्षण ।

प्रश्नलग्नक्षणेयादृशापत्ययुक्स्वेच्छया कामिनी
तत्र चेदाव्रजेत् ॥ कन्यका वा सुतो वा तदा
पण्डितैः स्तादृशापत्यमस्यां विनिर्दिश्यते ॥ ८ ॥

अन्वयः—प्रश्नलग्नक्षणे स्वेच्छया यादृशापत्ययुक् कामिनी आव्रजेत् कन्यका वा सुतो वा तदा पण्डितैः अस्याः तादृशापत्यं विनिर्दिश्यते ॥८॥

भाषार्थः—प्रश्न लग्न के समय में अपने ही मन से स्त्री आपड़े तो बुद्धिमान को वैसा ही फल कहना चाहिये ॥ ८ ॥

पुनः शुभाशुभ लक्षण ।

शंखभेरीविपंचीरवैर्मंगलं जायते वैपरीत्यं तदा
लक्षयेत् ॥ वायसो वा खरः श्वाशृगालोऽपि वा
प्रश्न लग्नक्षणे रौति नादं यदि ॥ ९ ॥

अन्वयः—प्रश्नलग्नक्षणे शंखभेरी विपंचीरवैः मंगलं जायते वायसः खरः श्वाः शृगालः वा नादं रौति (तदा) वैपरीत्यं लक्षयेत् ॥९॥

भाषार्थः—प्रश्न लग्न के समय शंख, भेरी, बीणा आदि का शब्द सुन पड़े तो

शुभफल कहना चाहिये और कौआ, गद्गहा, कुत्ता, गीदड़ का शब्द सुन पड़े तो बुरा फल ही कहना चाहिये ॥६॥

वाकदान मुहूर्त ।

विश्वस्वातौ वैष्णवपूर्वात्रयमैत्रैर्वस्वाग्नेयैर्वाकरपीडोचितऋ-
क्षैः ॥ वस्त्रालंकारादिसमेतैः फलपुष्पैः संतोष्याऽदौऽस्मादनु-
कन्यावरणं हि ॥ १० ॥

अन्वयः—विश्वस्वातौ वैष्णवपूर्वात्रयमैत्रैर्वस्वाग्नेयैर्वा करपीडोचितऋक्षैः वस्त्रालंकारसमेतैः फलपुष्पैः आदौ कन्याम् सन्तोष्य अनु हि कन्यावरणं स्यात् ॥१०॥

भाषार्थः—उत्तराषाढ, स्वाती, श्रवण, तीनोंपूर्वा, अनुराधा, धनिष्ठा, कृत्तिका विवाह नक्षत्रों में कन्या को वस्त्र, आभूषणादि सामग्री युक्त वर को स्वीकार करना चाहिये ॥१०॥

किसको वरण करना चाहिये ।

धरणिदेवोऽथवा कन्यकासोदरः शुभदिने गीतवा-
द्यादिभिः संयुतः ॥ वरवृत्तिवस्त्रयज्ञोपवीतादिना
ध्रुवयुतैर्वह्निपूर्वात्रयैराचरेत् ॥ ११ ॥

अन्वय—धरणिदेवः अथवा कन्यकासोदरः शुभदिने गीतवाद्यादिभिः संयुतः (भूत्वा) वस्त्रयज्ञोपवीतादिना ध्रुवयुतैः वह्निपूर्वात्रयैः वरवृत्तिं आचरेत् ॥११॥

भाषार्थः—ब्राह्मण अथवा कन्या का सहोदर भाई शुभ दिन में गीत वाजे आदि से युक्त होकर कपड़ा यज्ञोपवीत इत्यादि से ध्रुव संज्ञावाले नक्षत्र तथा कृत्तिका तीनों पूर्वा में वरवृत्ति (वर के वास्ते बागदान अथवा वर रत्ना) करे ॥११॥

कन्या से विवाह का समय और ग्रह शुद्धि विचार

गुरुशुद्धिवशेन कन्याकानां समवर्षेषु षडब्दकोपरिष्ठात् ।
रविशुद्धिवशाच्छुभो नराणामुभयोश्चंद्रविशुद्धितोविवाहः ॥१२॥

अन्वयः—षडब्दकोपरिष्ठात् समवर्षेषु गुरुशुद्धिवशेन कन्यकानां विवाहः शुभः रवि-
शुद्धिवशात् नराणां (विवाहः शुभः) चन्द्रविशुद्धितः उभयोः विवाहः शुभः भवतीति-
अव्याहार्यम् ॥१२॥

भाषार्थः—छः वर्ष के बाद वृहस्पति सबल होने से कन्या का और वर का
सूर्य सबल होने से विवाह शुभ दायक है कन्या वर दोनों का चन्द्रबल होना अत्या-
वश्यक है ॥१२॥

विवाह में मास विचार ।

मिथुनकुम्भमृगालिवृषाजगे मिथुनगोपि रवौत्रिलवेशुचेः ।
अलिमृगाजगते करपीडनं न भवतिकार्तिकपौषमधुष्वपि ॥१३॥

अन्वयः—रवौ मिथुन कुम्भमृगालिवृषाजगे मिथुनगोपि रवौ शुचेः त्रिलवे करपीडनम्
भवति अलिमृगाजगते कार्तिक पौषमधुष्वपि (करपीडनम्) शुभदं भवतीति पूर्वान्वयः ॥१३॥

भाषार्थः—सूर्य के मिथुन, कुम्भ, मकर, वृश्चिक, वृष, मेष राशिस्थ होने पर
आषाढ़ के मास तृतीयांश दशमी तक विवाह शुभद है एवं सूर्य वृश्चिक, मकर मेष
के हों तो क्रमशः कार्तिक, पौष, चैत्र, में विवाह शुभ फल प्रद है ॥१३॥

जन्ममासादि युक्त निषेध विधान ।

आद्यगर्भसुतकन्ययोर्द्वयोर्जन्ममासभतिथौ करग्रहः ।
नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते चेद्द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः ॥१४॥

अन्वयः—आद्यगर्भसुतकन्ययो द्वयोः जन्ममासभतिथौ करग्रहः न उचितः द्वितीय-
जनुषोः (सुतकन्ययोः) करग्रहः सुतप्रदः विबुधैः प्रशस्यते ॥१४॥

भाषार्थः—प्रथम गर्भ के पुत्र पुत्री का विवाह जन्ममास, नक्षत्र, तिथि में
करना शुभ नहीं है द्वितीय गर्भ के पुत्र पुत्री के विवाह में हानि नहीं यह पुत्र दायक
होता है ॥१४॥

त्रिजेष्ठनिर्णय ।

ज्येष्ठद्वंद्वं मध्यमं संप्रदिष्टं त्रिज्येष्ठं चेन्नैव युक्तं कदापि ।

केचित्सूर्य वह्निगंप्रोज्मयचाहुर्नैवान्योन्यं ज्येष्ठयोः स्याद्वि-
वाहः ॥ १५ ॥

अन्वयः—ज्येष्ठद्वन्द्वं मध्यमं सम्प्रदिष्टं त्रिज्येष्ठं कदापि नैवयुक्तं केचित् वह्निगंसूर्यं प्रो ज्मय
(करपीडनम्) आहुः अन्योन्यं ज्येष्ठयोः विवाह नैव स्यात् ॥१५॥

भाषार्थः—ज्येष्ठमास और ज्येष्ठ कन्या वा पुत्र का विवाह मध्यम कहा है
तीन ज्येष्ठ (मास, पुत्र, पुत्री) कथमपि युक्त नहीं है कृत्तिका में सूर्य को छोड़ ३
ज्येष्ठ का विवाह शुभ फल दायक नहीं है ॥१५॥

विवाहादि शुभकार्य से द्वितीय विवाह का नियम ।

सुतपरिणयात्पणमासान्तःसुताकरपीडनंनचनिजकुले दंडा
मण्डनादपि मुण्डनम् । नच सहजयोर्देये भ्रात्रोःसहोदरकन्यके
न सहजसुतोद्वाहोब्दार्धे शुभेन पितृक्रिया ॥ १६ ॥

अन्वयः—निजकुले सुतपरिणयात् पणमासान्तः सुताकरपीडनम् न (शस्तम्) मुण्डना-
दपि मुण्डनम् न (शस्तम्) सहजयोः भ्रात्रोः सहोदरकन्यकेन देये सहज सुतोद्वाहो अर्द्धार्धे
न (शस्तम्) शुभे (कर्मणि कृते) पितृक्रिया श्राद्धादि न शस्ता ॥१६॥

भाषार्थः—अपने कुल में पुत्र विवाहानन्तर ६ मास तक पुत्री का विवाह
नहीं करना चाहिये मुण्डन के बाद मुण्डन भी नहीं युक्त है सहोदर भाई को सहोदर
कन्या नहीं देनी चाहिये सहोदर २ पुत्रों का विवाह छ मास के भीतर नहीं होना
चाहिये । विवाह से छ मास के भीतर श्राद्ध भी नहीं करना चाहिये ॥१६॥

विवाह निश्चय के बाद त्रिपुरुष में मृत्यु का निर्धार ।

बध्वावरस्यापि कुले त्रिपुरुषं नाशं व्रजेत्कश्चननिश्चयोत्तरम् ।
मासोत्तरंतत्रविवाह इष्यतेशांत्याथवा सूतक निर्गमे परैः ॥१७॥

अन्वयः—निश्चयोत्तरम् यदि बध्वाः वरस्यापि त्रिपुरुषम् कश्चन नाशं व्रजेत् रात्र मासो-
त्तरं विवाहः इष्यते अथवा सूतक निर्गमे शान्त्या परैः विवाहः इष्यते ॥१७॥

भाषार्थः—विवाह निश्चय होजाने के उपरान्त कन्या अथवा वर के ३ पीढ़ियों
में से किसी की मृत्यु हो जावे तो १ मास बाद विवाह होना चाहिये अथवा शान्ति
करने के बाद सूतकोपरान्त ही विवाह उचित है ॥१७॥

मुंडनादि कर्मनिर्णय ।

चूडाव्रतं चापि विवाहतो व्रताच्चूडा च नेष्टा पुरुषत्रयांतरे ।
वधूप्रवेशाच्चसुताविनिर्गमःषण्मासतोवाब्दविभेदतः शुभः ॥१८॥

अन्वयः—पुरुषत्रयान्तरे विवाहतः [पूर्वसम्बन्धात् षण्मासाभ्यन्तरे इति योज्यम्]
चूडाव्रतं चापि नेष्टं व्रतात् [व्रतबन्धात्] चूडा चापि नेष्टा वधूप्रवेशात् सुताविनिर्गमः [नेष्टः]
किन्तु षण्मासाभ्यन्तरे अब्दविभेदतः शुभः कल्याणकारी भवतीति योज्यम् ॥१८॥

भाषार्थः—तीन पीढ़ी के अन्दर विवाह से ६ मास के अन्दर चूडा कर्म नहीं
करना चाहिये व्रतबन्ध करने के बाद चूडाकर्म भी छ मास तक नहीं करना चाहिये ।
वधूप्रवेश कराने के उपरान्त छ मास तक कन्या का विवाह नहीं करना चाहिये
किन्तु विभिन्न वर्ष होने से पूर्वोक्त किसी भी कार्य में दोष नहीं ॥१८॥

नक्षत्र वशसे शुभाशुभ फल ।

श्वश्रूविनाशमहिजौसुतरांविधत्तःकन्यासुतौ निऋतिजौ श्व-
सुरं हतश्च । ज्येष्ठाभजाततनया स्वधवाग्रजं च शक्राग्निजाभ-
वति देवनाशकर्त्री ॥ १९ ॥

अन्वयः—अहिजौ कन्यासुतौ सुतरां श्वश्रूविनाशं विधत्तः, निऋतिजौ श्वसुरं हतः,
ज्येष्ठाभजाततनया स्वधवाग्रजं शक्राग्निजा देवनाशकर्त्री भवति ॥१९॥

भाषार्थः—अश्लेषा नक्षत्र में पैदा ली हुई कन्या अथवा पुत्र अपने २ सास
को, और मूल नक्षत्र के कन्या पुत्र श्वसुर को, ज्येष्ठा नक्षत्र की कन्या पति के ज्येष्ठ
भाई को और विशाखा नक्षत्र की पैदा कन्या देवर का नाश करती है ॥१९॥

उक्त दोषका अपवाद ।

द्वीशाद्यपादत्रयजा कन्या देवर सौख्यदा ।

मूलांत्यपादसार्पाद्यपादजाते तयोः शुभम् ॥२०॥

अन्वयः—द्वीशाग्रपादत्रयजा कन्या देवर सौख्यदा मूलान्त्यपाद सार्पाद्यपादजाते
(कन्यासुतौ) श्वसुर सौख्यदौ तयोः शुभे ॥२०॥

भाषार्थः—कन्या का जन्म यदि विराखा नक्षत्रके तीन चरणोंमें हुआ तो वह देवर को सुखी करती है और मूत्र के चौथे चरण में उत्पन्न कन्या पति श्वसुर को और अश्लेषा के प्रथम चरण की उत्पन्न कन्या श्वसुर सास को सुख देती है ॥२०॥

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम् ।
गणमैत्रं भकूटं च नाडी चैते गुणाधिकाः ॥२१॥

अन्वयः—वर्णः वश्यं तथा तारा च योनिः ग्रहमैत्रकम् गणमैत्रं भकूटं नाडी एते गुणाधिकाः जायन्ते इति शेषः ॥२१॥

भाषार्थः—कन्या वर की जन्मपत्री के मिलान में ये अवश्य विचार करने योग्य है वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्रक, गणमैत्र, भकूट, नाडी ये सभी १-१ गुण उत्तरोत्तर अधिक होना चाहिये ॥२१॥

प्रथमवर्णकूट विचार ।

द्विजा भषालिकर्कटास्ततो नृपो विशोऽग्निजाः ।
वरस्य वर्णतोधिका वधूर्नशस्यते बुधैः ॥ २२ ॥

अन्वयः—भषालिकर्कटाः द्विजाः ततः मेषसिंहधनराशयः नृपाः वृषकन्यामकराः विशः मिथुन तुला कुम्भाः अग्निजाः वरस्य वर्गतः अधिका वधूः न बुधैः शस्यते ॥२२॥

भाषार्थः—मीन, वृश्चिक, कर्क राशि की ब्राह्मण जाति है एवं मेष सिंह धन को क्षत्रिय, वृष कन्या मकर की वैश्य, मिथुन तुला कुम्भ की शूद्रजाति कही गई है वर जाति से कन्या की जाति यदि उच्च हो तो अशुभ है ॥२२॥

वरस्य गुण विचार ।

हित्वा मृगेन्द्रं नरराशिवश्याः सव तथैषां जलजाश्च
भदयाः ॥ सर्वेऽपि सिंहस्य वशे पिनालिं ज्ञेयं नराणां व्यवहार
तोऽन्यत् ॥ २३ ॥

अन्वयः—मृगेन्द्रं हित्वा सर्वे नरराशिवश्याः [जायन्ते] एषां जलजाः राशयो मकर कुम्भ कर्काः भदयाः तु अलिं विना सिंहस्य सर्वे वश्याः अन्यन् नराणां व्यवहारतः ज्ञेयम् । । ।

भाषार्थः—नर राशि के वस में १ सिंह को छोड़ सभी होते हैं और सभी जल राशियां भक्ष्य हैं सिंह राशि के वस में केवल वृश्चिक नहीं आता शेष सभी वस में होते हैं जो यहांपर नहीं बताए हैं उनको मनुष्य व्यवहार से ही समझना चाहिये ॥२३॥

चतुष्पद	२	॥	१	०	२
मनुष्य	२।	२	०	०	०
जलचर	१	०	२	२	२
वनचर	०	०	२	२	०
कीट	१	०	१	०	२

ताराकूट विचार ।

कन्यर्त्ताद्विभं यावत्कन्याभं वरभादपि ॥
गणयेन्नवभिः शेषत्रीष्वद्विभमसत्स्मृतम् ॥ २४ ॥

अन्वयः—कन्यर्त्तात् वरभं यावत् वरभात् अपि कन्याभं गणयेत् नवदृष्टेषु त्रिष्वद्विभम् असत् स्मृतम् ॥२४॥

भाषार्थ—कन्या के नक्षत्र से वर नक्षत्र तक और वर नक्षत्र से कन्या नक्षत्र तक गिने शेष अंक में ३ का भाग देने पर ३, ५, ७ अंक अवशेष रहे तो अशुभ फल समझना चाहिये । परिशेष सभी शुभ होते हैं ॥२४॥

योनिकूट विचार ।

आशिन्यंबुः सार्योर्हयोर्निगदितः स्वात्यर्कयो कासरः
सिंहो वस्वजपाद्भयोः समुदितोर्याभ्यां त्ययो कुंजरः ।
मेषो देवपुरोहितानलभयोः क्रणाम्बुनोर्वानरः
स्याद्द्वैश्वाभिजितोस्तथैवनकुलश्चन्द्राब्जयोन्योहरिः ॥२५॥

अन्वयः—अश्विन्यम्बुपयोः हयः निगदितः स्वात्यर्कयोः कासरः विश्वजपाद्भयोः सिंहः समुदितः याम्यान्त्ययोः कुञ्जरः देवपुरोहितानलभयोः मेघः कर्णाम्बुनोः वानरः वैश्वमिजितोः नकुलः चन्द्राब्जयोन्योः अहिः [योनिः] समुदितः ॥२५॥

भाषार्थः—अश्विनी तथा शतभिषा की अश्वयोनि एवं स्वाती, हस्त की महिष, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद की सिंह, भरणी, रेवती की द्वाधी, पुष्य, कृत्तिका की मेघ, श्रवण, पूर्वाषाढ़ की वानर, उत्तराषाढ़अभिजित की नकुल, मृगशिरा, रोहिणी की सर्प योनि है ॥२५॥

ज्येष्ठामैत्रभयोकुरंग उदितो मूलार्द्रयोः श्वा तथा
मार्जारोऽदितिसार्पयोऽथ मघा योन्योस्तथैवोदुरः ॥
व्याघ्रोद्दीशभचित्रयोरपि च गौर्यर्ग्यबुध्न्यर्क्षयोर्योनिः
पादगयोः परस्परमहा वैरं भयोन्योस्त्यजेत् ॥ २६ ॥

अन्वयः—ज्येष्ठा मैत्रभयोः कुरंगः उदितः मूलार्द्रयोः श्वा अदितिसार्पयोः मार्जारः निगदितः मघायोन्योः उदुरः द्दीशभचित्रयोः व्याघ्रः अपि च अर्ग्यर्ग्य बुध्न्यर्क्षयोः गौः पादगयोः भयोन्योः परस्पर महावैरं त्यजेत् ॥२६॥

भाषार्थः—ज्येष्ठा, अनुराधा की मृगयोनि होती है इसी प्रकार मूल, आर्द्रा की कुत्ता, पुनर्वसु, अश्लेषा की मार्जार, मघा, पूर्वाफाल्गुनी का भूषक, विशाखा, चित्रा का व्याघ्र, उत्तरा फाल्गुनी और उत्तराभाद्रपद की गौ योनि होती है १ पाद में सब योनियों का महावैर होता है इससे योनि मेल देखते समय इसको विशेष त्याग देना चाहिये ॥२६॥

ग्रहमैत्री विचार ।

मित्राणिद्युमणेःकुजेज्यशशिनःशुक्रार्कजौवैरिणौ ।
सौम्यश्चास्य समो विधोर्वुधरवी मित्रेन चास्याद्विषट् ॥
शेषाश्चास्यसमाः कुजस्यसुहृदश्चंद्रेज्य सूर्याबुधः
शत्रुशुक्रशनीसमौच शशभृत्सूनोः सिताहस्करः ॥२७॥
मित्रे चास्य रिपुः शशीगुरुशनिदमाजाः समा गीष्पतेः ।

मित्राण्यर्ककुजेंदवी बुधसितौशत्रौसमः सूर्यजः ॥

मित्रे सौम्यशनीकवेः शशिरवीशत्रूकुजैज्यौ समौ ।

मित्रेः शुक्रबुधौ शनेः शशिरविक्षमाजाद्विषो न्यसमः ॥२८॥

अन्वयः—शुभणेः कुजेऽथशशिनः मित्राणि शुक्रार्कजौ वैरिणौ अस्य (दिवाकरस्य) सौम्यः समः । विधोः बुधरवी मित्रे च अस्य (विधोः द्विषत् न (अस्ति) शेषाः अवशिष्टाः ग्रहाः अस्य समाः । कुजस्य चन्द्रेज्य सूर्याः [मित्राणि] बुधः शत्रुः शुक्रशनी समौ । शश-भृत्सूनोः सिताहस्करौ मित्रे अस्य शशी रिपुः गुरुशनिक्षमा समाः गीष्पतेः अर्ककुजेन्दवः मित्राणि बुधसितौ शत्रू सूर्यजः [शनिः] समः कवेः सौम्यशनी मित्रे शशिरवी शत्रू कुजैज्यौ-समौ । शनेः शुक्रबुधौ मित्रे शशिरविक्षमाजाः द्विषः अन्यः अस्मादपरः (गुरुः) समः । ॥२७॥२८॥

भाषार्थः—सूर्य के चन्द्र, मंगल, वृहस्पति मित्र, शुक्र शनि शत्रु और बुध सम अर्थात् नै तो मित्र और न शत्रु अर्थात् उदासीन हैं । इसी प्रकार चन्द्रमा के सूर्य बुध मित्र, मंगल, वृहस्पति, शुक्र, शनि, सम हैं शत्रु कोई नहीं । मंगल का वृहस्पति सूर्य, चन्द्रमा मित्र, शुक्र, शनि सम, बुध शत्रु हैं । बुध के सूर्य, शुक्र, मित्र, मंगल, वृहस्पति, शनि सम और चन्द्रमा शत्रु हैं । वृहस्पति के सूर्य, चन्द्र, मंगल, मित्र, शनि सम, बुध शत्रु हैं । शुक्र के बुध, शनि मित्र, मंगल, गुरु सम, सूर्य, चन्द्र शत्रु हैं । शनिके बुध, शुक्र मित्र, गुरु सम, सूर्य, मङ्गल, चन्द्र शत्रु हैं ॥२७॥२८॥

ग्रहाः	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	चं.मं.गु.	र. बु.	गु. र. चं.	र. शु.	र.चं.मं.	बु.श.	बु.शु.
सम	बुध	मं.गु.शु.श	शु.श.	मं. गु.श	श.	मं.गु	गु.
शत्रु	शु. श	ॐ	बु.	चं.	बु.	र. चं.	र.मं.चं.

गणकूट विचार ।

रत्नोन्नतरामरगणाः क्रमतो मघाहिवर्षिद्वं.

मूलवरुणानलतक्षराधाः ॥

पूर्वोत्तरात्रयविधातृयमेशभानि

मैत्रादितीन्दुहरिपौष्णमरुलघूनी ॥ २६ ॥

अन्वयः—क्रमतः रक्षोनरामरगणाः [भवन्ति] मघाहि वस्विन्द्र मूलवरुणानलतक्षराधाः पूर्वोत्तरात्रय विधातृ यमेशभानि मैत्रादितीन्दु हरिपौष्ण मरुलघूनी ॥ २६ ॥

भाषार्थः—मघा, अश्लेषा, धनिष्ठा, मूल, शतभिषा, कृतिका, चित्रा, विशाखा नक्षत्रों का राक्षस गण होता है एवं तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भरणी, आर्द्रा, नक्षत्रों का मनुष्य गण, अनुराधा, पुनर्वसु, मृगशिरा, श्रवण, रेवती, स्वाती अश्विनी, पुष्य, हस्त नक्षत्रों का देवगण है ॥ २६ ॥

निजनिजगणमध्ये प्रीतिरत्युत्तमास्या-

दमरमनुजयोः सा मध्यमा संप्रदिष्टा ॥

असुरमनुजयोश्चेन्मृत्युरेव प्रदिष्टो

दनुजविवुधयःस्याद्वैरमेकांततोऽत्र ॥ ३० ॥

अन्वयः—निजनिजगणमध्ये अत्युत्तमा प्रीतिः अमरमनुजयोः सा मध्यमा संप्रदिष्टा असुरमनुजयो मृत्युः एव प्रदिष्टः दनुज विबुधयोः अत्र एकान्ततः वैरं स्यात् ॥ ३० ॥

भाषार्थः—वर कन्या एक गण के हों तो अत्यन्त प्रीति होती है किन्तु १ तो

वधू	वर		
	दे०	म०	रा०
	दे०	६	५
	म.	६	०
	रा०	१	०
			६

देवगण की दूसरा मनुष्य गण का हो तो मध्यम प्रीति होती है असुर गण की स्त्री मनुष्य गण का पुरुष अथवा एतद्विपरीत हो तो निश्चय ही मरण हो दैत्य देव गण हो तो परस्पर महावैर होता है। जहाँ पर परस्पर वैर होता है वहाँ गुण (पूर्वोक्त) नहीं होता है किसी २ आचार्य की

ग्रन्थान्तरोक्ति है कि जहाँ स्त्री पुरुष १ ही गण के हों वह ६ गुण होता है ॥ ३० ॥

राशीकूट विचार ।

मृत्युःषट्काष्टकेज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवात्मजै ।

द्विर्द्वादशेनिर्धनत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत् ॥ ३१ ॥

अन्वयः—षष्ठाष्टके मृत्युः नवात्मजे अपत्यहानिः द्विद्वादशे निर्धनत्वं अन्यत्र द्वयोः सौख्यकृत् ॥३१॥

भाषार्थ—षष्ठ, अष्टम वर, कन्या राशि हो तो मृत्यु नवम पञ्चम होतो सन्तान हानि द्वितीय द्वादश में निर्धनता शेष राशियां सुखकारी हैं ॥३१॥

दुष्टभकूट का परिहार ।

प्रोक्तेदुष्टभकूटके परिणयस्त्वेकाधिपत्ये शुभो
थोराशीश्वरसौहृदेपिगदितो नाड्यर्क्षशुद्धिर्यदा ।
अन्यर्क्षेशपयोर्वलित्वसखिते नाड्यर्क्षशुद्धौतथा
ताराशुद्धिवशेनराशिवशता भावैनिरुक्तो बुधैः ॥३२॥

अन्वयः—एकाधिपत्ये प्रोक्ते दुष्टभकूटके परिणयः शुभः अथो राशीश्वरसौहृदेऽपि यदि नाड्यर्क्षशुद्धिः [तस्मिँश्च समये परिणयः शुभएव] अन्यर्क्षेशपयोः बलित्वसखिते [स्तरचेत्] नाड्यर्क्षशुद्धौ ताराशुद्धिवशेन राशिवशताभावे दुष्टभकूटकेऽपि परिणयः शुभएव गदितः ॥३२॥

भाषार्थ—वर कन्या के १ ही राशीश्वर हों तो दुष्ट भकूट (षष्ठादि) राशियों में भी विवाह शुभ है ! नाड़ी नक्षत्रों की शुद्ध हो तो दुष्टभकूट में भी विवाह अशुभ नहीं परस्पर की राशियों में मैत्री हो अथवा मैत्री बलवान हो तो दुष्टभकूट भी विवाह में उत्तम है । नक्षत्र नाड़ी शुद्ध हो राशिवशता का अभाव हो (षष्ठक) हो वैसे अवस्था में राशिस्वामी की शुद्धता से विवाह शुभ है ॥३२॥

गणकुटादि दोषों का परिहार ।

मैत्र्यांराशिस्वामिनोरंशनाथद्वन्द्वस्यापिस्याद्गणानां न दोषः ।
खेटारित्वं नाशयेत्सद्भकूटं खेटप्रीतिश्चापि दुष्टंभकूटम् ॥३३॥

अन्वयः—राशिस्वामिनोः अंशनाथद्वन्द्वस्यापि मैत्र्यां गणानां दोषः न (जायत इति शेषः) सद्भकूटम् खेटारित्वम् नाशयेत् खेटप्रीतिः चापि दुष्टं भकूटम् [नाशयेत्] ॥३३॥

भाषार्थ—वर कन्या के राशि स्वामियों में परस्पर मित्रता हो राशिस्वामी और नवमांश स्वामी से भी मैत्री हो तो गणदोष नहीं होना । सद्भकूट ग्रह शत्रुता

मृतीयस्थान स्थित ग्रह दोषों को नष्ट करता है ग्रहों की परस्पर मित्रता दुष्ट भकूट का नाश करती है ॥३३॥

नाडीकूट विचार ।

ज्येष्ठारौद्रार्थमांभः पतिभयुगयुगं दास्यमं चैकनाडी पुष्येन्दुत्वा
धूमित्रान्तकवसुजभंयोनिबुध्यैचमध्या ॥ वाय्वग्निव्याल
विश्वोड्युगयुगमथोपौष्णभंचापरास्याद्वपंत्योरकैनाड्यांपरिण
यनमसन्मध्यनाड्योहि मृत्युः ॥३४॥

अन्वयः—ज्येष्ठारौद्रार्थमांभः पतिभयुगयुगं दास्यमं च एक नाडी पुष्येन्दुत्वाधूमित्रान्तक वसु जलभं योनिबुध्यै च मध्या नाडी वाय्वग्निव्यालविश्वो ड्युग युगं अथो पौष्णभं च अपरा नाडी दम्पत्योः एकनाड्यां परिणयनं असत् मध्यनाड्यां हि मृत्युः ॥३४॥

भाषार्थः—ज्येष्ठा मूल उत्तराफाल्गुनी, हस्त, आर्द्रा, पुनर्वसु, शतभिष, पूर्वा-
भाद्रपद, अश्विनी, इन नक्षत्रों की अदिनाडी है । पुष्य, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा
भरणी, धनिष्ठा, पूर्वाषाढ़, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद इन नक्षत्रों की मध्य
नाडी है । स्वाती विशाखा, कृतिका, रोहिणी, अश्लेषा, मघा, उत्तराषाढ़, श्रवण,
रेवती इन नक्षत्रों की अन्त्य नाडी है । वर कन्या की एक नाडी हो तो विवाह अशुभ
है मध्य नाडी हो तो मृत्यु होता है ॥३४॥

पूर्व मध्य और अन्तभाग भोगी नक्षत्र ।

पौष्णेशशाक्राद्रससूर्यनन्दाः पूर्वार्धमध्यापरभागयुग्मम् ।
भर्ता प्रिया प्राग्युजि मे स्त्रिया स्यान्मध्येद्वयोः प्रेमपरेप्रियास्त्री ॥३५॥

अन्वयः—पौष्णेशशाक्राद्रससूर्यनन्दा पूर्वार्धमध्यापरभागयुग्मम् प्राग्युजिमे स्त्रियाः
भर्ता प्रियः मध्ये (युजिमे) द्वयोः प्रेम परे (युजिमे) स्त्री (पुरुषस्य) प्रिया स्यात् ॥३५॥

ह		आ	म	अ
ह	ॐ	०	५	५
ह	ॐ	०	०	५
ह		५	अ	५

भाषार्थः—रेवती, आर्द्रा, ज्येष्ठा इन नक्षत्रों
से क्रमशः छः, बारह, नव नक्षत्र पूर्वभाग, मध्य
भाग, अन्तभाग होते हैं पूर्वभाग में स्त्री को
पति प्यारा और मध्यभाग में विवाह हो
तो परस्पर प्रेम, अन्तभाग में विवाह हो तो
पति को स्त्री अधिक प्यारी होती है ॥३५॥

अकचटतपयशवर्गाः खगेशमार्जारसिंहशुनाम् ।
सर्पाखुमृगावीनां निजपंचमवैरिणाइष्टौ ॥३६॥

अन्वयः—खगेश मार्जार सिंह शुनाम् सर्पाखुमृगावीनां अष्टौ निजपञ्चम वैरिणाम्
अकचटतपयशवर्गाः भवन्तीति शेषः ॥३६॥

भाषार्थः—अवर्ग, कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग, यवर्ग, शवर्ग का क्रमशः
गरुड, विलाव, सिंह, कुत्ता, सर्प, मूषक, मृग, मेष, वर्ग होता है ये अपने से पांचवे
के बैरी हैं ॥३६॥

नक्षत्र और राशि की एकता का विचार ।

राश्यैक्येचिद्भिन्नमृदाद्भयोः स्यान्नक्षत्रैक्येराशि युग्मतथैव ।
नाडीदोषो नोगणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात् ॥३७॥

अन्वयः—द्वयोः राश्यैक्ये ऋक्षं भिन्नं स्यात्तदा नाडीदोषो गणानां दोषो न स्यात्
नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात् ॥३७॥

भाषार्थः—पति पत्नी की राशि एक हो किन्तु नक्षत्र भिन्न भिन्न हो तो नाडी
दोष नहीं होता, एक राशि नक्षत्र होवे और चरण भेद हो तो विवाह शुभ है ॥३७॥

रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३॥	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३॥	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३॥	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९			१॥	३	१॥	३	१॥	३	

नक्षत्र वससे सेव्य सेवक फल ।

सेव्याधमण्युतीनगरादिभं चेत्पूर्वहि भृत्यधनि भर्तृपुरादिसद्भात् ।
सेवाविनाशधननाशनभर्तृनाशग्रामादिसौख्यहृदिदंक्रमशप्रदिष्टम् ॥३८॥

अन्वयः—भृत्य धनि भर्तृपुरादिसद्भात् सेव्याधमर्ण नगरादिभं चेत् पूर्व स्यात् हि
सेवाविनाश धननाशन भर्तृनाश ग्रामादिसौख्यहृत् इदं क्रमशः प्रदिष्टम् ॥३८॥

भाषार्थः—स्वामी, धनी, स्त्री, ग्राम, राजा इनसे भृत्य, ऋणलेने वाला, पत्नि,
राजा का द्वितीय नक्षत्र हो तो क्रमशः सेवानाश, धननाश, पतिनाश ग्रामसुख
फल समझना चाहिये ॥३८॥

राशि स्वामियों के नवमांशा की विधि ।

कुजशुक्रसौम्यशशिसूर्यचंद्रजाः कविभौमजीव शनिसौरयोः गुरुः ।
इहराशिपाःक्रियमृगास्यतौलिकेन्दुभतोनवांशविधिरुच्यतेबुधैः॥३९॥

अन्वय—कुजशुक्र सौम्यशशिसूर्यचन्द्रजाः कविभौमजीवशनिसौरयः गुरुः च इह
राशियाः क्रियमृगास्यतौलिकेन्दुभतः बुधैः नवांशविधिः उच्यते ॥३९॥

भाषार्थः—मंगल, शुक्र, बुध, चन्द्र, सूर्य, बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति, शनि,
शनि, बृहस्पति ये ग्रह क्रमशः मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक,
धन, मकर कुम्भ, मीन, इन राशियों के स्वामी होते हैं । मेष, वृष मिथुन, कर्क,
सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ मीन राशियों की नवमांशा क्रमशः
मेघ, मकर, तुला, कर्क, मेष, मकर, तुला, कर्क से जानना चाहिये ॥३९॥

समगृहमध्ये रविशशिहोरा ।

विषमभमध्येरवि शशिनो सा ॥४०॥

अन्वयः—समगृहमध्ये शशिरवि होरा विषमभमध्ये सा रवि शशिनोः भवतीति
सम्बन्धः ॥४०॥

भाषार्थः—सम राशि में प्रथम होरा प्रथम चन्द्रमाका और द्वितीय सूर्यका और
विषम, राशि में प्रथम सूर्य का द्वितीय चन्द्रमाका होरा होता है ॥४०॥

शुक्रज्ञजीवशनिभूतनयस्य वाणशैलाष्टपंचविशिखः समराशिमध्ये ॥
त्रिंशांशको विषमभे विपरीतमस्माद्रेष्काणकाः प्रथमपंचनवा
धिपानाम् ॥४१॥

अन्वयः—समराशिमध्ये शुक्रज्ञजीव शनि भूतनयस्य वाणशैलाष्ट पञ्च विशिखाः विषमभे
अस्मात् विपरीतम् त्रिंशांशकः स्यात् प्रथम पञ्च नवाधिपानां द्रेष्काणाः स्युः ॥४१॥

भाषार्थः—समराशियों में शुक्र, बुध, बृहस्पति, शनि, मंगल ग्रहोंका क्रमशः
पाँच, सात, आठ, पाँच पाँच (त्रिंशांश होता है) विषम राशियों में विपरीत (मंगल
से) जानना प्रथम पाँच का मंगल एवमादि । दशांश को द्रेष्काण कहते हैं प्रथम
द्रेष्काण प्रथमाधिपका द्वितीय द्रेष्काण पञ्चम स्वामी का और तृतीय द्रेष्काण
नवम स्वामी का होता है ॥४१॥

स्याद्द्वादशांश इह राशित एवगेहं होराथ दृक्नवनवमांशकसूर्य
भागा ॥ त्रिंशांशकश्च षडिमे कवितास्तुवर्गाः सौम्यैः शुभं भवति
चाशुभ मेवपापैः ॥ ४२ ॥

अन्वयः—इह षड्वर्गे द्वादशांश राशितएवगेहं होरा स्यात् दृक्नवनमांशक सूर्यभागाः
त्रिंशांशकाश्च इमे षड्वर्गाः तु सौम्यैः शुभं भवति पापैः अशुभं एव भवति ॥४२॥

भाषार्थः—निज (अपनी) राशि से अढ़ाई भाग को द्वादशांश कहते हैं मेषका
द्वादशांश (निज) अर्थात् मेष से और भी स्थानों में इसी प्रकार गेह होरा दृक् नवनमांश
द्वादशांश सबको षड्वर्ग कहते हैं वे सौम्य ग्रहों के शुभ और पाप ग्रहों के अशुभ
होते हैं ॥४२॥

ज्येष्ठापौष्णभसार्पभान्त्यघटिकेयुग्मं च मूलाश्विनी पित्र्यादौ घटि-
काद्वयं निगदितं तद्भस्य गंडातकम् ॥
कर्काल्यंडजभांततोऽर्धघटिका सिंहाश्चमेषादिगा पूर्णाताद्वटिकात्म
कंत्वशुभदं नन्दातिथेश्चादिमम् ॥४३॥

अन्वयः—ज्येष्ठापौष्णभसार्पभान्त्यघटिका युग्मम् च मूलाश्विनी पित्र्यादौ घटिकाद्वयं तद्
भस्य गण्डान्तं निगदितम् ततः कर्काल्यण्डजभात् अर्धघटिकासिंहाश्च मेषादिगा पूर्णान्तात्
घटिकात्मकं नन्दातिथेश्चादिमं गण्डान्तं अशुभदं स्यात् ॥४३॥

भाषार्थः—ज्येष्ठा, रेवती, अश्लेषा इन नक्षत्रों के अन्त्य के दो घड़ी इसी भाँति मूल, अश्विनी, मघा के आदि की दो घड़ी गण्डान्त है इनको काल गण्डान्त अथवा नक्षत्र गण्डान्त कहते हैं। कर्क, वृश्चिक, मीन के अन्त्य के आधा दण्ड सिंह, धन, मेष के प्रथम आधा दण्ड ये गण्डान्त हैं इनको लग्नगण्डान्त अथवा दण्डकाल-गण्डान्त कहते हैं। पञ्चमी दशमी पूर्णिमा अथवा अमावस्या के अन्त का एक दण्ड प्रतिपदा, पौषी, एकादशी के प्रथम एक दण्ड गण्डान्त है बल तिथिगण्डान्त अथवा कालगण्डान्त कहा जाता है ॥४३॥

लमात्पापावृज्वनृज्व्ययार्थस्थौ यदा तदा ।
कर्तरीनाम साज्ञेया मृत्युदारिद्र्य शोकदा ॥ ४४ ॥

अन्वयः—यदा लमात् पापौ ऋज्वनृजू व्ययार्थस्थौ तदा सा कर्तरी ज्ञेया (सा) मृत्यु-
दारिद्र्यशोकदा स्यात् ॥४४॥

भाषार्थः—लग्न से १२ स्थान में पापग्रह मार्गी होकर चकी पापग्रह लग्नसे द्वितीय घर में हों तो कर्तरीनाम (दोष) होता है यह दोष मृत्यु, दरिद्रता, शोक को देता है ॥४४॥

चंद्रसूर्यादिसंयुक्ते दारिद्र्यं मरणं शुभम् ।
सौख्यं सापत्न्यवैराग्यं पापद्वययुते मृतिः ॥ ४५ ॥

अन्वयः—चन्द्रे सूर्यादिसंयुक्ते दारिद्र्यं, मरणं, शुभं (भवति) सौख्यं, सापत्न्य वैराग्यं
पापद्वययुते (चन्द्रे) मृतिः ॥४५॥

भाषार्थः—चन्द्रमा क्रमशः सूर्य, मंगल, बुध बृहस्पति, शुक, शनि युक्त हों तो क्रमशः दरिद्रता, मरण, शुभ, सुख, शत्रुता वैराग्य फल देता है यदि चन्द्रमा दो पापग्रहों से युक्त होता है तो मृत्युफल देता है ॥४५॥

जन्मलग्नोभयोमृत्यु राशौ नेष्टः करग्रहः ।
एकाधिपत्ये राशीशे मैत्रे वा नैव दोषकृत् ॥ ४६ ॥

अन्वयः—जन्मलग्नोभयोर्मृत्युराशौ करग्रहः न इष्टः राशीशे एकाधिपत्ये मैत्रे वा नैव
दोषकृत् ॥४६॥

भाषार्थः—जन्म का लग्न जन्मराशि से अष्टम राशिमें हो तो विवाह शुभ नहीं है राशिस्वामी के एक स्वामित्व में अथवा मित्रता में अष्टम दोषकारी नहीं होता है ॥४६॥

**मीनोक्षकर्कालिमृगस्त्रियोऽष्टमं लग्ने यदा नाष्टम गेहदोषकृत् ।
अन्योन्यमित्रत्ववशेन सावधूर्भवेत्सुतायुर्गृहसौख्यभागिनी ॥४७॥**

अन्वयः—मीनोक्षकर्कालिमृगस्त्रियः यदा अष्टमं लग्नं तदा अष्टमगेह दोषकृत् न-
अन्योन्यमित्रत्ववशेन सा सुतायुर्गृहसौख्य भागिनी भवति ॥४७॥

भाषार्थः—मीन, मेष, कर्क, वृश्चिक, मकर, कन्या ये राशियां अष्टम में हो तो उसका (अष्टम) दोष नहीं परस्पर मैत्री हो तो (वह कन्या) पुत्र, आयु, सौख्य को भोगती है ॥४७॥

लग्न स्थित अष्टम स्थान स्वामी का विचार ।

**मृतिभवनांशो यदि च विलग्ने तदधिपतिर्वान शुभकरः स्यात् ।
व्ययभवनं वा भवति तदंशस्तदधि पतिर्वा कलहकरः स्यात् ॥४८॥**

अन्वयः—मृतिभवनांशो यदि विलग्ने स्यात् तदधिपतिः वा (विलग्ने) स्यात् तदा न-
शुभकरः व्यय भवनम् तदंशः तदधिपतिर्वा भवेत् (तदा) कलहकरः स्यात् ॥४८॥

भाषार्थः—अष्टम स्थान का नवमांश यदि लग्नस्थ हो अथवा लग्नस्वामी हो तो शुभप्रद नहीं होता जन्मलग्न द्वादश भवन में हो किन्तु (जन्म राशि से) अथवा व्यय स्थान का अंश उसका स्वामी हो तो कलह होता है ॥४८॥

विष घटी का दोष विचार ।

**खरामतोत्यादितिवह्निपित्र्यभे खवेदतः के रदतश्च सार्पभे ॥
खवाणतोश्वधृतितोऽर्ज्यमांबुपे कृते भगत्वाष्टभविश्वविभे ॥४९॥
मनोर्द्धिदैवानिलसौम्यशाक्रभे कुपक्षतः शैवकरोष्टतोः जभे ॥
युगाश्वितो बुधन्यभतोययाम्यभेखचंद्रतो मित्रभवासवश्चुतौ ॥५०॥
मूलेंगबाणा द्विष नाडिकाः कृताः वज्र्याः शुभेऽथोविषनाडिकाध्रुवाः
निध्नाभभोगेन खतर्क भाजितोः स्फुटभवेयुर्विषनाडिकास्तथा ॥५१॥**

अन्वयः—अन्त्यादितिवहिपित्र्यमे खरामतः के खवेदतः सार्पमे रदतः अश्वे खवा-
 णतः अर्यमाश्रुपे धृतितः भगत्वाष्ट्रभविश्रजीवमे कृते द्विदैवानिलसौम्यशाक्रमे मनोः शैवकरे
 : कुपक्षतः अजमे अष्टितः बुध्नभतोय याम्यमे युगाश्रितः मित्रभवासवश्रुतौ खचन्द्रतः मूले
 : अंगवाणात् (विषनाडिकाः कीर्तिताः) एताविषनाडिकाः शुभे वर्ग्याः विषनाडिकाध्रुवाः
 : भमोगेन निघ्नाः तथा खतर्क भाजिताः स्फुटा विष नाडिका भवेयुः ॥४२॥५०॥५१

भाषार्थः—रेवती, पुनर्वसु, कृतिका, मघा नक्षत्रों की अन्त चार घड़ी विषघड़ी
 होती है एवं—रोहिणी में ४० घड़ी पीछे, अश्लेषा में ३२ घड़ी पीछे, आश्विनी में ५०
 घड़ी पीछे, भरणी, शतभिषा में १८ घड़ी पीछे पूर्वा फाल्गुनी, चित्रा, उत्तराषाढ,
 पुष्य में २० घड़ी पीछे, विशाखा, स्वाती, मृगशिरा, ज्येष्ठा में १४ घड़ी पीछे, आर्द्रा
 हस्त में २१ घड़ी पीछे श्रवण में १६ घड़ी पीछे, उत्तराभाद्रपद, पूर्वाषाढ, भरणी में
 १० घड़ी पीछे, ४घड़ी तथा मूल में ५६ घड़ी बाद विषनाड़ी होती है। शुभ कार्य में
 विषनाड़ी अत्यन्त ही निन्दित है। विषनाड़ी के ध्रुवांक को भमोग से गुणा
 करे और ६० से भाग दे तो विषनाड़ी का स्पष्ट बनता है ॥४३॥५०॥५१॥

नक्षत्र विषवटिका चक्रम् ।

अ०	भ०	क०	रो०	मृ०	आ०	पु०	पु०	अश्ले
५०	२४	३०	४०	१४	२१	३०	२०	३२
म०	पू०	उ०	ह०	चि०	स्वा	वि०	अनु०	ज्ये०
३०	२०	१८	२१	२०	१४	१४	१०	१४
मू०	पू०षा०	उ०षा०	श्र०	ध०	श०	पू०भा	उ०भा०	रे०
५६	२४	२०	१०	१०	१८	१६	२४	३०

तिथि विषयटिका चक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	ति
१५	५	८	७	७	११	४	८	७	१०	३	१३	१४	८	७	०	च०

वार विषयटिकाः चक्रम्

सू०	चं०	मं०	वु०	वृ०	शु०	श०	वार	०
२०	२	१२	१०	७	५	२५	घ०	०

(दिन मुहूर्त स्वामी संज्ञा ।

गरिशभुजगमित्राः पित्र्यवस्वंबुविश्वेभिजिदथचविधातापींद्रानलौ
च ॥ निऋतिरुदकनाथोऽर्यमाथोभगःस्युः क्रमश इहमुहूर्तावासरे
वाणचंद्राः ॥ ५२ ॥

अन्वय—गरिशभुजगमित्राः पित्र्यवस्वम्बुविश्वे अभिजित् अथ च विधाता इन्द्रानलौ
च निऋतिः उदकनाथः अर्यमा अथोभगः इह क्रमशः वाणचन्द्रा मुहूर्ताः स्युः ॥५२॥

भाषार्थः—दिन में १५ मुहूर्त होते हैं उन मुहूर्तों के क्रमशः ये स्वामी हैं । शिव,
सर्प, मित्र, पितृ, वसु, जल, विश्वेदेव, अभिजित्, विधाता, इन्द्र, अग्नि, निऋति,
जलनाथ (वरुण) अर्यमा, भग ॥५२॥

रात्रि के मुहूर्त स्वामी संज्ञा ।

शिवोजपाद्दष्टौस्युर्भेशा अदितिजीविकौ ॥ विष्णुवार्कत्वाष्ट्रमरुतो
मुहूर्ता निशि कीर्तिताः ॥ ५३ ॥

अन्वयः—शिवः अजपाद् अष्टौ भेशाः (भवन्ति) अदितिजीविकौ विष्णुवार्कत्वाष्ट्र मरुतः
निशि मुहूर्ताः ॥५३॥

भाषार्थः—शिव, अजपाद् आठअजपाद्) अहिबुध पूषा, अश्विनी कुमार यम, अग्नि, ब्रह्मा, सोम, अदिति जीवक, विष्णु, सूर्य, त्यागद्, मरुत् येरात्रि के १५ मुहूर्तों के १५ स्वामी हैं ॥५३॥

दिन रात्रि मुहूर्त चक्रम् ।

दि	आ	आ	अ	अ	०	भ	ध	पूषा	उषा	अ	रो०	ज्ये०	वि०	मू०	श०	उ०	पू०
मु०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
र०	आ	पू०	उ०	रे०	अ०	भ०	कृ०	रो	म०	पु	पु	श्र०	ह०	चि०	स्वा०		
मु०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	०	

सूर्यादि वारों में मुहूर्त ।

स्वावर्यमाब्रह्मरक्षश्च सोमे कुजे वह्निपित्र्ये बुधेचाभिजित्स्यात् ।
गुरौतोयरक्षौ भृगौ ब्राह्मपित्र्ये शनावीशसार्पैर्मुहूर्ताः निषिद्धाः ॥५४॥

अन्वयः—रवौ अर्यमा सोमे ब्रह्मरक्षः कुजे वह्निपित्र्ये बुधे अभिजित् गुरौ तोयरक्षौ भृगौ ब्राह्मपित्र्ये शनौ ईशसार्पौ निषिद्धाः ॥५४॥

भाषार्थः—रवि को अर्यम, सोम को ब्रह्मरक्षस, मंगल को अग्निपित्र बुध-वार को अभिजित्, बृहस्पतिवार को छठा वारहवां मुहूर्त तथा शनि को पहला दूसरा मुहूर्त निन्दित है इसमें शुभ कर्म (विवाह) नहीं करना चाहिए ॥५४॥

विवाह में विहित नक्षत्र आदिक और अभिजित् विचार ।

निर्वेधैःशशिकरमूलमैत्र्यपित्र्यब्रह्मांत्योत्तरपवनैःशुभोविवाहः॥
रिक्तामारहिततिथौशुभेऽह्निवैश्वप्रांत्याग्निः श्रुतितिथिभागतोऽभि-
जित् स्यात् ॥ ५५ ॥

अन्वयः—शशिकर मूलमैत्र पित्र्य ब्राह्मान्त्योत्तरपवनैः निर्वेधैः विवाहः शुभः (भवतीति योज्यम्) रिक्तामा रहिततिथौ शुभेऽह्नि वैश्वप्रान्त्याग्नि श्रुति तिथिभागतः अभिजित् स्यात् ॥५५॥

भाषार्थ—विवाह कर्म वेधरहित मृगशिरा, हस्त, मूल, अनुराधा, रोहिणी, रेवती, तीनों उत्तरा, स्वाती नक्षत्रों में रिक़ा भिन्न तिथियों में शुभवारों में करना शुभदायक है । उत्तराषाढ के चतुर्थ तथा श्रवण के प्रथम चरण में अभिजित् रहता है ॥५५॥

नक्षत्र वेध विचार ।

वेधोऽन्योन्यमसौ विरिञ्च्यभिजितोर्याम्यानुराधर्क्षयोर्विश्वेन्द्रो ह-
रिपित्र्ययोर्ग्रहकृतो हस्तोत्तराभाद्रयोः ॥ स्वातीवारुणयोर्भवो नि-
र्ऋतिमादित्योस्तथोपान्त्ययोर्खेटे तत्र गते तुरीयचरणद्योर्वातृता-
यदयोः ॥ ५६ ॥

अन्वयः—विरिञ्च्यभिजितोः याम्यानुराधर्क्षयोः विश्वेन्द्रोः हरिपित्र्ययोः हस्तोत्तरा-
भाद्रयोः स्वाती वारुणयोः निर्ऋतिमादित्योः उपान्त्ययोः असौ अन्योन्यं ग्रहकृतो वेधो भवेत्
तत्र तुरीयचरणद्वयोः तृतीयद्वयोर्वा गते खेटे (अन्योन्यं) वेधो भवेत् ॥५६॥

भाषार्थ—रोहिणी तथा अभिजित नक्षत्र का परस्पर वेध होता है एवं भरणी, अनुराधा, श्रवण, उत्तराभाद्रपद । स्वाती, शतभिष । मूल, पुनर्वसु । उत्तरा

मं	कु०	रो०	मृ०	आ०	पु०	पु०	अ०	मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०								अ०
अ०								मं
मं								पु०
पु०		</						

भाषार्थ—बुध, राहु, पूर्णचन्द्र, शुक्र ये ग्रह जिस नक्षत्र के हों उस नक्षत्र से ये ग्रह क्रमशः ७, ६, २२, ५ वे नक्षत्र को लात मारते हैं किन्तु पीछे वाले नक्षत्र को । एवं सूर्य, शनि, वृहस्पति, मंगल ये ग्रह अपने से आगे वाले १२, ८, ६, तीसरे नक्षत्र पर लात मारते हैं ॥५६॥

पातदोष विचार ।

हर्षणवैधृतिसाध्यव्यतीपातकगण्डशूलयोगानाम् ।

अन्तेयन्नक्षत्रं पातेन निपातितं तत् स्यात् ॥ ६० ॥

अन्वयः—हर्षणवैधृतिसाध्यव्यतीपातक गण्डशूलयोगानाम् अन्ते यन्नक्षत्रं तत् पातेन निपातितं स्यात् ॥६०॥

भाषार्थ—हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतीपात, गण्ड, शूल इनके अन्त का जो नक्षत्र होता है वह पातयोग कहलाता है अथवा उसमें पातदोष रहता है ॥६०॥

“यस्याः शशी सप्तशलाक भिन्नः पापैरपापैरथवा विवाहे ।

तद्वाह वस्त्रेण तु संवृतांगी श्मशान भूमिं रुदती प्रयाति” ॥

भाषार्थ—जिस कन्या के विवाह लग्न में चन्द्रमा सप्तशलाका चक्र में पापग्रहों से बिद्ध (भिन्न) हों वह बधू विवाहके कपड़ेको पहिनेही रोदन करती श्मशान भूमि को जाती है इसमें कुछ भी संशय नहीं है ॥

महापात दोष विचार ।

पंचास्याजौ गोमृगा तौलिकुंभौ

कन्यामीनौकर्कली चापयुग्मे ॥

तत्रान्योन्यं चन्द्रभान्वोनिरुक्तं

क्रान्ते साम्यं नो शुभं मंगलेषु ॥ ६१ ॥

अन्वयः—पञ्चास्याजौ, गोमृगौ, तौलिकुंभौ, कन्यामीनौ, कर्कली, चापयुग्मे चन्द्र-भान्वोः क्रान्तेः साम्यं निरुक्तम् तत् मङ्गलेषु नो शुभम् ॥६१॥

भाषार्थ—सिंह मेष, वृष मकर, तुला कुंभ, कन्या मीन, कर्क वृश्चिक, धन

क्रान्ति	३	१	२	साम्य
११				७
१२				६
८				४
	६	५	१०	

मिथुन इन राशियों पर सूर्यचन्द्र एक रेखा पर आजाय
तो क्रान्ति साम्य नाम का दोष कहलाता है वह (दोष)
शुभकार्यों में वर्जित है ॥ ६१ ॥

खजूर दोष विचार ।

व्याघातगण्डव्यतिपातपूर्वेशूलांत्यवज्रेपरिघातिगण्डे ॥

एकार्गलाख्यौ ह्यभिजित्समेतो दोषःशशी चेद्विषमर्क्षगोर्कात्६२

अन्वयः—व्याघातगण्डव्यतिपातपूर्वेशूलांत्यवज्रे परिघातिगण्डे योगे (भवति सति)
अर्कात् शशी अभिजित् समेतः विषमर्क्षगः एकार्गलाख्यः दोषः स्यात् ॥६२॥

भाषार्थ—व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कुम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ,
अतिगण्ड योगों में कोई योग आपड़े और उस दिन के सूर्य नक्षत्र से अभिजित् तक
गिने जिस दिन चन्द्र विषम नक्षत्रादि पर हो उस दिन एकार्गलदोष जानना चाहिए
इसको (एकार्गल को) कोई २ खजूर भी कहते हैं ॥६२॥

उपग्रहदोष विचार ।

शराष्टदिकृशक्रनगातिधृत्यस्थितिधृतिश्च प्रकृतेश्चपंच ।

उपाग्रहोः सूर्यमतोज्जताराः शुभाः न देशे कुरुवाल्हिकानम्॥६३॥

अन्वयः—सूर्यमतः उज्जताराः शराष्टदिकृशक्रनगातिधृत्यः प्रकृतेः पञ्च स्युः तदा उपग्रहोः
दोषाः स्युः कुरुवाल्हिकानां देशे न शुभाः ॥६३॥

भाषार्थ—सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र पञ्चम, अष्टम, दशम, चतुर्दश, सप्तम,
एकोनविंश, पञ्चदश, अष्टादश, एकविंशति, द्वाविंशति, त्रयोविंशति, चतुर्विंशति
स्थान में हो तो उपग्रह दोष होता है जो दोष कुरु और वाल्हिक देश में
व्याज्य है ॥६३॥

१

पात, उपग्रह और लत्ता का अपवाद
और अर्धयाम ।

२७	२
२६	३
२५	४
२४	५
२३	६
२२	७
२१	८
२०	९
१९	१०
१८	११
१७	१२
१६	१३
१५	१४

पातोपग्रहलत्तासु नेष्टोंघ्रिखेटपत्समः ॥
वारस्त्रिघ्नोष्टभिस्तष्टः सैकः स्यादर्धया-
मकः ॥ ६४ ॥

अन्वयः—पातोपग्रहलत्तासु खेटपत्समः अत्रि चरणः
नेष्टः वारः त्रिघ्न अष्टभिस्तष्ट सैकः (भवति तदा) अर्धयामकः
भवति ॥ ६४ ॥

भाषार्थ—पात, उपग्रह, लत्ता दोषों में
ग्रहचरणों की तरह नक्षत्र चरण अशुभ होता है
स्पष्ट यह है कि पात-उपग्रह में सूर्य जिस चरण
का होता है नक्षत्र का वही चरण अशुभ होता है ।
लत्ता में लत्ता करने वाला जिस चरण पर हो वह
चरण अशुभ है ॥६४॥

कुलिक दोष विचार ।

शक्रार्कदिग्वसुरसाब्ध्याश्विनः कुलिकारवेः ।

रात्रौ निरेकास्तिथ्यंशाशनौचांत्योपिनिदिताः ॥६५॥

अन्वयः—रवेः शक्रार्कदिग्वसुरसाब्ध्याश्विनः कुलिकाः ते रात्रौ निरेकाः शनौ-
अन्त्योऽपि निन्दितः ॥६५॥

भाषार्थ—रविवार के दिन रात्रि का १४ वाँ मुहूर्त सोमवार को दिन का १२
रात्रि का ग्यारहवाँ मुहूर्त कुलिक होता है एवं मंगल को दिनमें १०वाँ रात्रि में नवाँ,
बुध को दिन में द्वाँ रात्रि में ७वाँ, वृहस्पति को दिन में छठवाँ रात्रि में ५वाँ, शुक-
वार को दिनमें चौथा रात्रिमें तीसरा शनि को दिनमें दूसरा रात्रि में पहिला कुलिक
होता है शनि को रात्रि में १५वाँ मुहूर्त कुलिक होता है ॥६५॥

दग्धतिथ्याख्य विचार ।

चापांत्यगे गोघटगे पतंगे कर्काजगे स्त्रीमिथुने स्थिते च ।
सिंहालिगे नक्रघटे समास्युस्तिथ्यो द्वितीया प्रमुखाश्च दग्धाः ॥६६॥

अन्वयः—पतंगे चापांत्यगे, गोघटगे, कर्काजगे स्त्रीमिथुने, सिंहालिगे नक्रघटे (स्थिते)
द्वितीया प्रमुखाः समाः दग्धाः जायन्ते ॥६६॥

भाषार्थः—धन मीन, वृष कुम्भ, कर्क मेष, कन्या मिथुन, सिंह वृश्चिक, मकर-
तुला के सूर्य में क्रमशः द्वितीया, चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, दशमी, द्वादशी, ये तिथियाँ
जो कि सम कहलाती हैं दग्ध संज्ञक हैं ॥६६॥

जामित्रदोष ।

लग्नाच्चंद्रान्मदनभवनगे खेटेन स्यादिह परिणयनम् ।
किंवा वाणाशुगमितलवगेर्जामित्रं स्यादशुभकरमिदम् ॥६७॥

अन्वयः—लग्नात् चन्द्रात् (वा) मदनभवनगे खेटे इह परिणयनम् न स्यात्
वाणाशुग मितलवगे यामित्रं दोषः स्यात् इदं अशुभ करं निगदितम् ॥६७॥

भाषार्थः—लग्न अथवा चन्द्रमा से सप्तम स्थान में कोई ग्रह हों तो विवाह
शुभ नहीं होता है ५५ नवमांश विवाह में अशुभ है इसको जामित्र दोष कहते हैं शुभ
कार्य में दूषित हैं ॥६७॥

एकार्गल दोष ।

एकार्गलोपग्रहपातलत्ताजामित्रकर्तृद्युदयास्तदोषाः ॥ नश्यन्ति
चन्द्रार्कबलोपपन्ने लग्नेयथार्कभ्युदयेतु दोषाः ॥६८॥

अन्वयः—चन्द्रार्कबलोपपन्ने एकार्गलोपग्रह पातलत्ताजामित्र कर्तृद्युदयास्तदोषाः
अर्कभ्युदये दोषा इव नश्यन्ति ॥६८॥

भाषार्थः—चन्द्र सूर्य दोनों के बली होने पर अथवा लग्न यदि सूर्य और
चन्द्रबल से भरपूर हो तब पूर्वोक्त एकार्गल, उपग्रह, पात, लत्ता, जामित्र, कर्तरी,
उदय, अस्तदोष ये सभी दोष सूर्योदय होने बाद रात्रि की तरह नष्ट हो जाते हैं ॥६८॥

देश विशेष से दोषोंका अपवाद ।

उपग्रहर्त्त कुरुवाहिकेषु कलिंगवंगेषु च पातितंभम् ।
सौराष्ट्रशाल्वेषु च लत्तितं भंत्यजैत्तु विद्धं किलसर्वदेशे ॥६९॥

अन्वयः—कुरुवाहिकेषु उपग्रहर्क्ष कलिंगवंगेषु पातितंभम् सौराष्ट्रशाल्वेषु च लत्तितं भं विद्धं किल सर्व देशे त्यजेत् ॥६९॥

भाषार्थ—कुरु तथा वाहिकदेश में उपग्रह दोष त्याज्य है एवं कलिंग बंग देश में पातित दोष सौराष्ट्र और शाल्वदेश में लत्ता दोष त्याज्य है किन्तु विद्ध नक्षत्र तो प्रत्येक देशों में त्याज्य है ॥६९॥

दशदोषों के बनानेका क्रम ।

शशांकसूर्यर्क्षयुतेभशेषेखंभूयुगाङ्गानिदशेशतिथ्यः ।
नागेन्दवोर्केन्दुमितानखाश्चेद्भवन्तिचैतेदशयोगसंज्ञाः ॥७०॥

अन्वयः—शशांक सूर्यर्क्षयुतेः भशेषे खं भू युगाङ्गानि दशेशतिथ्यः नागेन्दवः अर्केन्दु-
मिताः नखाश्च एते दशयोग संज्ञाः भवन्ति ॥७०॥

भाषार्थ—सूर्य तथा चन्द्र नक्षत्रों को गिनकर २७ का भाग दे शून्य १, ४, ६, १०, ११, १५, १८, १९, २० शेष रहे तो दशयोग होता है ॥७०॥

दशयोगफल और परिहार ।

वाताभामिमहीपचौरमरणं रुग्वज्रवादः क्षतिर्योगोंके दलितेसमे
मनुयुतेऽथोजेतुसैकेर्धिते । भंदास्त्रादथसंमितास्तुमनुभिः रेखाः
क्रमात् संलिखेद्देधोस्मिन्ग्रहचन्द्रयोर्नशुभदःस्यादेकरेखास्थयोः ॥७१॥

अन्वयः—वाताभ्रामिमहीपचौरमरणं रुग्वज्रवादाः क्षतिः समे योगोंके दलिते मनु
युते ओजे सैके अर्धिते दास्त्रात् भं अथ मनुभिः सम्मिताः रेखाः संलिखेत् अस्मिन् ग्रहचन्द्रयोः
एकरेखाः तयोः वेधः शुभदः न स्यात् ॥७१॥

भाषार्थ—शून्य, एक, चार, पन्द्रह, अट्ठारह, दस, बीस, बचे तो क्रमशः
बात दोष, मेघदोष, मृत्युदोष, रोगदोष, वज्रदोष, भगडा, द्रव्यनाश, सम्भना, चाहिये

सूर्य चन्द्र के बराबर नक्षत्र होने पर उसको आधा करे और उसमें १४ मिलावे नक्षत्रों का एकत्रित करे और अश्विनी से गिने चन्द्र सूर्य का नक्षत्र विषम हो तो १ मिलावे आधा करे और जो शेष बचे अश्विनी से गिने इसको विषमार्क कहते हैं।
 क्रमशः १४ रेखा लिखे १ ही रेखा पर ग्रह, चन्द्र हों तो वेध होता है जो शुभ कार्य नाशक है ॥७१॥

वाणदोष कथन ।

**लग्नेनाढ्यायाततिथ्योक्तष्टाः शेषेनागद्यब्धितकेन्दुसंख्ये !
 रोगोवह्नीराजचौरौचमृत्युबाणश्चायंदाक्षिणात्यप्रसिद्धः ॥७२॥**

अन्वयः—लग्नेन आढ्या या तिथयः अंक्तष्टाः नागद्व्यब्धितकेन्दुसंख्ये रोगः वह्निः राजचौरौ च मृत्युः बाणः अयं दाक्षिणात्यप्रसिद्धः ॥७२॥

भाषार्थः—बाण विचार जब करे उस दिन शुक्ल पक्ष की आधतिथि (प्रतिपदा) से गिने और वर्तमान दिन तक गिनने के बाद जोड़े नक्षत्र का भाग दे २ बचने पर रोग बाण, चार बचने पर राजबाण एवं छः पर चौर बाण, एक बचे तो मृत्यु बाण समझना चाहिये यह महाराष्ट्र देश में प्रसिद्ध है ॥७२॥

वाणदोषका अपवाद ।

**रसगुणशशिनागाध्याढ्यसंक्रान्तियातांशकमित्तिस्थष्टांकैर्यदा पञ्चशेषः।
 रुगनलनृपचौरान्मृत्युसंज्ञञ्चवाणोनवहृतशरशेषशेषकैक्येसशल्यः।७३**

अन्वयः—रसगुणशशिनागाध्याढ्य संक्रान्तियातांशकमितिः अथ अंकेः तष्टा पञ्चशेषाः (तदा) रुगनलनृपचौरा मृत्युसंज्ञञ्च वाणः (जायते) शेष कैक्ये नवहृतशरशेषे सशल्यः वाणः स्यात् ॥७३॥

भाषार्थः—सूर्य संक्रान्ति के अंशों को प्रथम ५ स्थानों में विभक्त करे और सबमें क्रमशः ६, ३, १, ८, ४ जोड़े अंकों को पृथक् २ नक्षत्र का भाग दे प्रथम में ५ बचने से रोगबाण, द्वितीय में अग्निबाण, तृतीय में राजबाण, चतुर्थ में चौरबाण पाँचवें में मृत्युबाण, होता है फल नामानुरूप है। बाण के दो भेद होते हैं काल्य शल्यबाण, लोहशल्यबाण इसका अपवाद रूप यह है कि सूर्य संक्रान्ति के पूर्व अंशों में ६ आदि प्रथम कथित अंश जोड़े और पृथक् २ नक्षत्र का भाग दे पाँचों स्थानों में

२ वचै तो स्वको जोड़ कर १ पिएड तयार करके ६ का भाग दे शेष ५ वचै तो लोहशल्य होता है इससे कोई भिन्न अंक बंचता है तो सामान्य ही दोष है किन्तु लोहशल्य विवाहादिक में वर्जित है ॥७३॥

०	मे०	वृ०	मि०	क०	सि०	क०	तु०	वृ०	घ०	म०	कु०	मी०	
रो०	६	७	६	५	४	३	३	६	८	६	७	६	रोग वाण में
वा०	१४	१६	१४	१४	१२	१२	११	१८	१७	१५	१६	१५	निषिद्ध
	२६	२६	२४	२४	१	१	२१	२७	२६	२४	२५	२०	तिथि
अ०	२	११	६	८	७	६	५	३	३	२	१०	६	अ० वा० में
वा०	२०	१०	१८	१७	१६	१५	१४	१२	१२	११	१६	१६	निषिद्ध
	२६	२८	२७	२६	२५	२४	२२	२१	२१	२६	२८	२७	तिथि
रो०	४	३	२	१०	६	१७	७	६	५	०	३	२	रा० वा० में
वा०	२२	२१	२०	१९	१७	२६	१६	१५	१४	१३	१२	१०	निषिद्ध
	१	३०	३०	२८	२७	२५	२५	२४	२२	२०	३०	२०	तिथि
चौ०	६	५	४	३	२	१०	६	८	७	६	५	५	चौ० वा० में
वा०	१४	१४	१३	२६	२०	१६	१८	१७	१६	१५	१४	१३	निषिद्ध
	२४	२३	२३	३०	२२	२६	२७	२६	२५	२४	२३	२३	तिथि
मृ०	१	६	६	७	६	५	३	२	२	१०	६	८	मृ० वा० में
वा०	१६	१८	१७	२६	१५	१४	१३	१२	११	२६	१८	१७	निषिद्ध
	२८	२६	२७	२५	२४	२३	२२	२१	२०	२८	२७	२६	तिथि

समय भेद, वारभेद और कर्मभेद से तीन प्रकार का वाण परिहार ।

रात्रौ चौरुजो दिवानरपतिर्वह्निः सदा सन्ध्यो मृत्युश्चाथ शनौ नृपौ
विदिमृतिर्भौमोहिचौरौ रवी ॥ रोगोऽथ व्रतगेहगोनृपसेवायां नपाणिग्रहे
चर्ज्याश्च क्रमतो बुधैरुगनलक्ष्मापाल चौरा मृतिः ॥७४॥

अन्वयः—रात्रौ चौरुजौ, दिवा नरपतिः, (राजवाणः) सदा वह्निः, सन्ध्योः
मृत्युः, शनौ नृपः, विदि मृतिः, भौमे अग्निचौरौ, रवी रोगः, अथ व्रतं गेहं गो नृपसेवायां
पाणिग्रहे क्रमतः बुधैः रुगनलक्ष्मापाल चौरा मृतिः त्याज्याः ॥७४॥

भावार्थः—रात्रि में रोग चौरवाण, दिन में राजवाण, सन्ध्या समय अग्निवाण
प्रातःकाल मृत्युवाण, शनि को राजवाण, बुध को रोगवाण, यज्ञोपवीत में रोगवाण,

गृह छत्रोने में अग्निवाण, राजसेवा में राजवाण, यात्रा में चौर वाण, विवाह में मृत्युवाण निषिद्ध है ॥७४॥

ग्रहों की दृष्टि ।

त्र्यासं त्रिकोणं चतुरस्रमस्तं पश्यन्ति खेटाश्चरणाभिवृद्धया ।
मन्दो गुरुर्भूमिसुतः परे च क्रमेण सम्पूर्णदृशो भवन्ति ॥७५॥

अन्वयः—खेटाः त्र्यासं त्रिकोणं चतुरस्रं अस्तं चरणाभिवृद्धया पश्यन्ति मन्दः गुरुः भूमिसुतः परे ग्रहाः क्रमेण सम्पूर्णदृशो भवन्ति ॥७५॥

भाषार्थ—ग्रहगण अपने स्थान से तृतीय दशम स्थान को १ चरण दृष्टि से देखते हैं नवम पञ्चम को २ दृष्टि से चतुर्थ अष्टम को ३ चरण दृष्टि से और सप्तम स्थान को समस्त दृष्टि से देखते हैं शनि, बृहस्पति, मंगल, ये ग्रह, क्रमशः अपने से तीसरे, दशवें, पाँचवें, नवें, चौथे, आठवें, स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं इनसे अतिरिक्त (सूर्य, चन्द्रमा, बुध, शुक्र) ये सप्तम को समस्त नेत्र से देखते हैं ॥७५॥

उदयास्तादि शुद्धिः ।

यदा लग्नांशेशो लवमथ तनुं पश्यति युतो
भवेद्रायं बोद्धुःशुभफलमनल्पं रचयति ॥
लवद्यून स्वामी लवमदनमं लग्नसदनं प्रपश्येद्वा
वध्वाः शुभमितरथाज्ञेयमशुभम् ॥ ७६ ॥

अन्वयः—यदा लग्नांशेशः लवं अथ तनुं पश्यति अयं नवमांशेन युतो लग्नेन वा युतः तदा बोद्धुः अनल्पं शुभफलं रचयति लवद्यूनस्वामी लवमदनमं वा लग्नसदनं प्रपश्येत् तदा वध्वाः शुभं ज्ञेयम् इतरथा अशुभं स्यात् ॥७६॥

भाषार्थ—जब लग्न स्वामी अथवा नवमांश स्वामी लग्न अथवा नवमांश को देखता हो । अथवा लग्नयुक्त हो ऐसी अवस्था में घर के लिये शुभप्रद है । नवांश से सातवें नवांश का स्वामी नवांश से सप्तम, राशि को देखता हो या सप्तमभाव युक्त हो, सप्तमभाव को देखता हो, या सप्तमभाव युक्त हो, ऐसी अवस्था में कन्या को विशेष फल देता है । इसके विपरीत अशुभ है अर्थात् नवमांश लग्नांश स्वामी नवमांश

लग्नांश को न देखता हो न युक्त हो एवं सप्तम स्वामी भी न देखता हो तो वधू वर को अशुभ है ॥७६॥

लवेशो लवं लग्नपो लग्नगेहं प्रपश्येन्थि वा शुभं स्याद्वरस्य ।
लवघ्नूनपोशं द्युनं लग्नपोस्तं मिथो वेक्षत स्याच्छुभं कन्यकायाः ॥७७॥

अन्वयः—लवेशः लवं लग्नपः लग्नगेहं प्रपश्येत् मिथः वा प्रपश्येत् तदा वरस्य शुभं स्यात् लवघ्नूनपः घ्नूनं अंशं लग्नपः अस्तं वीक्षते अथवा मिथः प्रपश्येत् तदा कन्यकायाः शुभं भवति ॥७७॥

भाषार्थः—नवमांश स्वामी नवमांश को और लग्नेश लग्न को देखता हो तो वर का शुभ होता है परस्पर नवमांश, लग्नांश दोनो ही दोनों को देखते हों तो भी वर का शुभ होता है । इसी प्रकार नवमांश से सप्तम नवमांश स्वामी स्वांश से सप्तम नवमांश को देखता लग्नेश लग्न से सप्तम स्थान को देखता हो तो कन्या का शुभ होता है परस्पर नवमांश स्वामी लग्नेश स्वामी सप्तमस्थको देखता हो तो लग्न सप्तमस्थ नवमांश सप्तम को देखता हो तो शुभ (कन्या) होता है ॥७७॥

लवपतिशुभमित्रं विक्षतेशं तनुं वा परि-
णयनकरस्यास्याच्छुभं शास्त्रदृष्टम् ॥
मदनलवपमित्रं सौम्यर्मशद्युनं वा तनु-
मदनगृहे च द्धीक्षितेशर्मबध्वा ॥ ७८ ॥

अन्वयः—लवपतिः शुभं मित्रं अंशं तनुं वा वीक्षते (चेत्) परिणयनकरस्य शास्त्रदृष्टं शुभं स्यात् मदनलवपमित्रं सौम्यं अंशं वा घ्नूनं तनुं मदन गृहं चेत् वीक्षते (चेत्) बध्वाः शर्म स्यात् ॥७८॥

भाषार्थः—लग्न के नवमांश पति का शुभग्रह चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति, शुक्र, मित्र हों लग्न नवमांश अथवा लग्न को देखते हों तो वर का शुभ होता है । और पूर्वोक्त ग्रहों में से सप्तम स्थान के नवमांश का स्वामी अपने नवमांश को देखते हों तो (राशि अथवा स्थान को) कन्या का विवाह संस्कार शुभ है ॥७८॥

अर्क संक्रान्तिदोषः ।

विषुवायनेषु परपूर्वमध्यमान् दिवसांस्त्यजेदितर संक्रमेषु हि ।
घटिकास्तु षोडशशुभक्रियाविधौ परतोपि पूर्वमपि संत्यजेद्बुधः

अन्वयः—विषुवायनेषु परपूर्वमध्यमान् दिवसान् शुभ क्रियाविधौ त्यजेत् इतर संक्रमेषु तु हि परतः पूर्वमपि षोडश घटिकाः बुध, त्यजेत् ॥७६॥

भाषार्थः—मेष, तुला, कर्क, मकर संक्रान्ति में आगे आने वाले पहले के तथा मध्य के दिनों को शुभ कार्यों में निश्चय समझना चाहिये । और संक्रान्तियों में प्रथम और अन्त की सोलह घड़ी ही शुभ कार्य में वर्जित है ॥७६॥

संक्रान्ति के घड़ियोंका विवरण

देवद्वयं कर्तव्योष्ठाष्टौ नाड्योर्काः खनृपाः क्रमात् ।

वर्ज्याः संक्रमणेर्कादेः प्रायोर्कस्यातिनिदिताः ॥८०॥

अन्वयः—अर्कदेः संक्रमणे क्रमात् देव द्वयं कर्तव्योष्ठाष्टौ नाड्यः ख नृपाः अंकाः वर्ज्याः प्रायः अर्कस्य अति निदिताः भवन्ति ॥८०॥

भाषार्थः—सूर्यादि (सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि) ग्रहों की संक्रान्ति में क्रमशः ३३।२।६।८।६।१६० घड़ी वर्जित है । अर्थात् सूर्य संक्रान्ति में ३३। चन्द्र संक्रान्ति में २। मंगल संक्रान्ति में ६। बुध की संक्रान्ति ६। बृहस्पति की संक्रान्ति में ८। शुक्र की संक्रान्ति में ६। शनि की संक्रान्ति में १६०। घड़ी शुभ कार्यों के लिये निन्दनीय है ॥८०॥

पगु अंध बधिराख्यलग्न ।

घसे तुलाली वधिरौ मृगाश्वौ रात्रौ च सिंहाब्जवृषादिवांधाः ।
कन्यानृयुक्कर्कटका निशांधा दिनंघटोऽन्त्योनिशि पंगुसंज्ञः ॥८१॥

अन्वयः—घसे तुलाली वधिरौ, मृगाश्वौ रात्रौ, सिंहाब्जवृषादिवांधाः, कन्या नृयुक्कर्कटकाः निशांधाः, घटः दिने पंगुसंज्ञः, अन्त्यः निशि पंगु संज्ञः अस्ति ॥८१॥

भाषार्थः—तुला, वृश्चिक दिन में और तुला मकर रात्रि में बधिर (बहरे) कहे गये हैं इसी प्रकार सिंह मेष वृष दिन में कन्या मिथुन कर्क रात्रि में अन्धे हैं कुम्भ दिन में मीन रात्रि में पंगु (लगड़ा) है ॥८१॥

तथा अन्य आचार्यों का मत ।

बधिरा धन्वितुलालयोऽपराह्णे मिथुनं कर्कटकोगनानिशांधाः ॥
दिवासांधा हरिगोक्रियास्तु कुब्जा मृगकुंभांतिमभानि
सन्ध्ययोर्हि ॥८२॥

अन्वयः—धन्वितुलालयः अपराह्णे बधिराः मिथुनकर्कटकाङ्गना निशान्धाः हरिगोक्रियाः दिवसान्धाः मृगकुम्भान्तिमभानि सन्ध्ययोः कुब्जाः सन्ति ॥८२॥

भाषार्थः—धन, तुला, वृश्चिक दोपहर बाद बहरे और मिथुन, कर्क, कन्या रात्रि में अन्धे, मकर, कुम्भ, मीन ये प्रातः सायं दोनों सन्ध्याओं में कुबड़े कहे गये हैं ॥८२॥

दारिद्र्यं बधिरतनौ दिवांधलग्ने वैधव्यं शिशुमरणनिशांध-
लग्ने ॥ पंग्वधे निखिलधनानि नाशमीयुः सर्वत्राधिपगुरुदृष्टि-
भिर्न दोषः ॥८३॥

अन्वयः—बधिरतनौ (उपयमन सँस्कारे) दारिद्र्यं दिवांधलग्ने वैधव्यं निशान्ध-
लग्ने शिशुमरणं पंग्वधे निखिलधनानि नाशं ईयुः सर्वत्र अधिप गुरुदृष्टिभिः दोषो न भवेत् ॥८३॥

भाषार्थः—बधिर लग्नमें विवाह होने से दरिद्रता, दिवांध लग्नमें वैधव्य, रोड्यन्ध लग्न में पुत्र मरण, और पंगु में विवाह से धन नाश होता है ये लग्न लग्नस्वामी से दृष्ट अथवा बृहस्पति से दृष्ट हो तो विवाह में पूर्वोक्त दोष नहीं लगता ॥८३॥

विहित नवमांशा में क्वचिन्नषेध वर्णन ।

कामुकतौलिककन्यायुगमलवे भूषणे वा ।

यर्हि भवेदुपयामस्तर्हि सती खलु कन्या ॥८४॥

अन्वयः—कार्मुक तौलिक कन्यायुग्मलवे ऋषगे वा यर्हि उपयामः (भवेत्) तर्हि खलु कन्या सती भवेत् ॥८४॥

भाषार्थः—धन, कन्य, तुला, मिथुन के नवमांशा अथवा मीन के नवमांशा में विवाह होने से कन्या पतिव्रता होती है ॥८४॥

विहित नवमांशा मे कश्चिनिषेध वर्णन ।

अन्त्यनवांशे न च परिणया काचनवर्गोत्तममिह हित्वा ।
नो चरलग्ने चरलवयोगं तौलिमृगस्थे शशभृति कुर्यात् ॥८५॥

अन्वयः—इह वर्गोत्तमं हित्वा अन्त्यनवांशे काचन न परिणया चरलग्ने नो चरलव-
योगं, शशभृति चन्द्रे तौलिमृगस्थे नवा परिणयो विधेयः ॥८५॥

भाषार्थः—अन्त के (मीन) वर्गोत्तम हों तो विवाह श्रेष्ठ है किन्तु अन्त के नवमांश में विवाह श्रेष्ठ नहीं चरलग्न के नवांश में तुला मकर के चन्द्रमा में विवाह नहीं करना चाहिये ॥८५॥

लग्नभंग योग ।

व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्र खला न
शस्ताः ॥ लग्नेट्कविग्लोश्च रिपौमृतौ ग्लौर्लग्नेट्शुभाश्च मन्दे
च सर्वे ॥८६॥

अन्वयः—शनिः व्यये अवनिजः खे भृगुः तृतीये तनौ चन्द्र खलाः न शस्ताः रिपौ
लग्नेट्कविग्लोश्च (न शस्ताः) मृतौ ग्लौर्लग्नेट् शुभाश्च (नशोभनाः) मन्दे सर्वे ग्रहा
न शस्ताः ॥८६॥

भाषार्थ—वैवाहिक लग्नसे बारहवें शनि, दशम मंगल, तृतीय शुक्र, लग्न चन्द्र,
कूर ग्रह अशुभ हैं इसी प्रकार लग्नेश शुक्र, चन्द्र पृष्ठ, और अष्टम शुभफल दायक
नहीं होते लग्नेश और शुभग्रह अष्टम में अच्छे नहीं हैं सप्तम स्थान में कोई ग्रह
अच्छा फल नहीं देता ॥८६॥

रेखाप्रदरुधादिग्रह

त्रयायाष्टषट्सु रविकेतुतमोर्कपुत्रा स्यायारिगः क्षितिमुतो
द्विगुणायगोब्जः ॥ सप्तव्ययाष्टरहिता ज्ञगुरुसितोष्टत्रिवूनकष्टव्य-
यगृहान्परिहृत्यशस्ताः ॥८७॥

अन्वयः—त्रयायाष्टषट्सु रविकेतु तमोर्कपुत्राः, स्यायारिगः क्षितिमुतः, द्विगुणायगः
अब्जः, सप्तव्ययाष्टरहितौ ज्ञगुरु, अष्टत्रिवून षड्व्यय गृहान् परिहृत्य सितः शस्तः भवतीत्यादि
योग्यम् ॥८७॥

भाषार्थः—विवाह लग्न से तृतीय, एकादश, अष्टम, षष्ठ स्थानों में सूर्य, केतु,
राहु, शनि हों तृतीय, षष्ठ, एकादश स्थान में मंगल हों द्वितीय, तृतीय, एकादश
स्थान में चन्द्रमा हा शुभफल होता है बुध, बृहस्पति सप्तम, द्वादश, अष्टम स्थानों
को छोड़ और स्थानों में हों तथा शुक्र अष्टम, तृतीय, सप्तम, षष्ठ, द्वादश स्थान को
छोड़ और स्थानों में हो तो शुभफल देता है ॥८७॥

कर्तरी आदि महादोषों का अपवाद ।

पापौ कर्तारिकारकौ रिपुगृहेनीचास्तगेकर्तरीदोषो
नैवसितेऽरिनीचगृहगे तत्पष्ठदोषोपि न ॥ भौमास्ते
रिपुनीचगेनहि भवेदभौमाष्टमोदोषकृन्नीचेनीच
नवांशके शशिनिरिःफाष्टारिदोषोपि न ॥८८॥

अन्वयः—कर्तारिकारकौ पापौ रिपुगृहे (अथवा) नीचास्तगौ कर्तरी दोषो नैव सिते शुक्रं
अरिनीचगृहगे तत्पष्ठदोषः अपि न भौमे अस्ते रिपुनीचगेऽपि अष्टमः भौमः दोषकृत् न
शशिनि नीचे नीचनवांशकेऽपि रिःफाष्टदोषः न भवति ॥८८॥

भाषार्थः—कर्तरी-दोष करने वाले पापग्रह शत्रुगृह में या नीच राशि में हों
अथवा अस्त हो तब कर्तरी दोष नहीं होता है । षष्ठ स्थान में स्थित शुक्र, शत्रु
स्थान में अथवा नीच गृह में स्थित हों तो षष्ठ स्थान का दोष नहीं होता । मंगल
अष्टम स्थान में दोष का करने वाला होता है किन्तु वह (मंगल) अस्त हो अथवा
शत्रु राशि पर हो तो दोषकारी नहीं होता । षष्ठ, अष्टम, द्वादशस्थ चन्द्रमा भी
नीचराशि पर हो अथवा नीचनवांश में हो तो शुभ फल ही देता है ॥८८॥

नवदोषों का परिहार ।

अब्दायनतुर्तिथिमासभपक्षदग्धति
थियंधकाणवधिरागमुखाश्चदोषाः ॥
नश्यंतिविद्गुरुसितेष्विहकेन्द्रकोणे ।
तद्वच्चपापविधुयुक्तनवांशदोषः ॥८६॥

अन्वयः—अब्दायनतुर्तिथिमासभपक्षदग्धतिथ्यन्धकाणवधिरागमुखाश्चदोषाः विद् गुरु-
सितेषु इह केन्द्र कोणे (स्थितेषु) नश्यन्ति तद्वत् पापविधुयुक्त नवांशदोषः अपि न जायते
इति शेषः ॥८६॥

भाषार्थः—अब्ददोष, अयनदोष, ऋतुदोष, रिक्तादि तिथिदोष, मासदोष,
नक्षत्रदोष, पक्षदोष, दग्धतिथ्यादिदोष, अंधलग्नादि दोष, सभी शुभग्रह होते
हैं किन्तु जब बुध, बृहस्पति, शुक सप्तम रहित हो केन्द्र स्थान में हों तथा पूर्वोक्त
बुधादिग्रह केन्द्र अथवा कोण में हों तो पाप युक्तनवांश का दोष नहीं लगता है ॥८६॥

तथा अन्य परिहार ।

केंद्रे कोणे जीव आयेखौ वा लग्ने चन्द्रे वापिवर्गोत्तमे वा ।
सर्वे दोषा नाशमायांति चन्द्रेलाभे तद्वद्दुर्मुहूर्तांशदोषाः ॥८७॥

अन्वयः—जीवे केन्द्रे कोणे वा खौ आये चन्द्रे लग्ने वर्गोत्तमे वा तद्वत् चन्द्रेलाभे
मुहूर्तांशदोषाः नाशं आयांति ॥८७॥

भाषार्थः—प्रथम, चतुर्थ, पंचम, नवम, दशम स्थान में बृहस्पति के रहने से
सम्पूर्ण दोष नष्ट होते हैं सूर्य एकादश स्थान में चन्द्रमा वर्गोत्तम लग्न अथवा अपने
स्थान में हो तो नवांश दोष नहीं लगता है । चन्द्र एकादश स्थान में हो तो दुष्ट
मुहूर्त के सभी दोष नष्ट होते हैं ॥८७॥

तथा अन्य दोष परिहार ।

त्रिकोणेकेन्द्रेवामदनरहितेदोषशतकं
हरेत्सौम्यः शुक्रो द्विगुणमपि लक्षं सुरगुरुः ॥

**भवेदाये केन्द्रेऽगत उत्तलवेशो यदि तदा
समूहं दोषाणां दहन इवतूलं शमयति ॥६१॥**

अन्वयः—केन्द्रे त्रिकोणे मदनरहिते वा (विद्यमानः) सौम्यः दोषशतकं हरेत् शुक्र
(पूर्वोक्तस्थानस्थः) द्विगुणं अपिहरेत् सुरगुरुः (केन्द्रादि स्थानस्थः) लक्षं दोषं हरेत् अंगपः
उत्त लवेशः केन्द्रे आये वा भवेत् तदा दहनः तूलं इव दोषाणां समूहं शमयति ॥६१॥

भाषार्थः—बुध प्रथम, चतुर्थ, पंचम, नवम, दशम में हो तो सौ दोषों को
हरता है एवं शुक्र दो सौ, बृहस्पति लाख दोषों को हरते हैं। लग्न अथवा नवांश
स्वामी एकादश, प्रथम, चतुर्थ, दशम स्थान में हो तो जिस प्रकार अग्नि रुई के
ढेर को पल भर में ही भस्म करती है उसी प्रकार समस्त दोषों को दूर
करता है ॥६१॥

लग्न विंशोपका कथन ।

**द्वौ द्वौ ज्ञ भृगवोः पंचेन्दौ रवौ सार्द्धत्रयोगुरौ ।
रामा मंदागुकेत्वारे सार्द्धैककं विंशोपकाः ॥६२॥**

अन्वयः—ज्ञ भृगवोः द्वौ द्वौ, इन्दौ पञ्च, रवौ सार्द्धत्रयः, गुरौ रामाः, मंदागुकेत्वारे
सार्धैकैकं विंशोपकाः ॥६२॥

भाषार्थः—बुध, शुक्र दो दो विश्वा, चन्द्रमा पाँच विश्वा, सूर्य साढ़े तीन
विश्वा, बृहस्पति तीन विश्वा शनि, ग्राह, केतु, मंगल डेढ़ विश्वा फल देते हैं ॥६२॥

श्वशुर आदि ग्रहों का विचार ।

**श्वश्रुसितोर्कः श्वशुरस्तनुस्तनुर्जामित्रपः स्याद्
यितो समः शशी ॥ एतद्वलं संप्रतिभाव्यतांत्रिकै-
स्तेषां सुखं संप्रवदेद्विवाहतः ॥६३॥**

अन्वयः—सितः श्वश्रूः अर्कः श्वशुरः, तनुः तनुः, जामित्रपः पतिः, शशी समः
तान्त्रिकः एतद्वलं सम्प्रतिभाव्य विवाहतः तेषां सुखं संप्रवदेत् ॥६३॥

भाषार्थः—शुक्र सास, सूर्य श्वसुर, लग्न शरीर, सप्तमेश स्त्री, चन्द्रमा मन है ज्योतिष के ज्ञाता विद्वान् इनका (पूर्वोक्त ग्रहों का) बल देख कर सास इत्यादि का सुख कहे ॥६३॥

संकीर्ण जाति के विवाह समय का वर्णन ।

कृष्णेपक्षे सौरिकुजार्केपिचवारेवज्ये नक्षत्रे यदि वा स्यात् करपीडा ।
संकीर्णानां तर्हि सुतायुर्धनलाभप्रीतिप्राप्त्यै साभवतीहस्थितिरेषा ॥६४॥

अन्वयः—कृष्णे पक्षे सौरिकुजार्केवारे च ज्ये नक्षत्रे यदि संकीर्णानाम् (संकरजानाम्) करपीडा स्यात् तर्हि सा (कन्या) सुतायुर्धनलाभ प्रीति प्राप्त्यै भवति एषा स्थितिः ॥ ६४ ॥

भाषार्थः—कृष्णपक्ष, शनि, मंगल, रविवार तथा वर्जित नक्षत्रों में नीच जाति के भी विवाह होते हैं तो वह कन्या सुत, आयु, धन लाभ प्रीति को पाती है ॥६४॥

गंधर्व विवाह वर्णन ।

गान्धर्वादिविवाहेऽऽर्काद्वेद नेत्र गुणेंदवः ।

कुयुगाग्नि भू रामा स्त्रिपद्यामशुभाः शुभाः ॥६५॥

अन्वयः—गान्धर्वादि विवाहे अर्कात् वेदनेत्रगुणेन्दवः कुयुगाङ्गाग्निभूरामाः त्रिपद्यां अशुभाशुभाः भवन्तीति शेषः ॥६५॥

भाषार्थः—गान्धर्व पिशाचादि विवाहों में जिस नक्षत्र का सूर्य है उससे ३ अशुभ १२ शुभ ६ अशुभ १ शुभ १ अशुभ ४ शुभ ६ अशुभ ३ शुभ १ शुभ ३ अशुभ इन प्रकार ३ पदों में अशुभ और शुभ व्यवहार जानना चाहिये ॥६५॥

विवाह में प्रथम कर्तव्यों का विचार ।

विधोर्वलमवेक्ष्य वा दलनकंडनं वारकं गृहां-
गणविभूषणान्यथ च वेदिकामंडपान् ॥ विवाह-
विहितो दुभिर्विरचयेत्तथाद्बोहतो न पूर्वमिदमा
चरेत्त्रिनवषण्मते वासरे ॥६६॥

अन्वयः—विधोः बलं अवेद्य दलन कण्डनं वारकं गृहाङ्गण विभूषणानि अथ वेदि-
का मण्डपान् उद्वाहतः विवाह विहितोऽङ्गुलिः पूर्वं विरचयेत् इदं त्रिनवषण्मिने वासरे न
आचरेत् ॥६६॥

भाषार्थः—चन्द्रचल विचार कर मंगल कलश, गृह सजाना (कोहवर लिखना)
लीपना, इत्यादि वेदी मंडप बनाना यह सब विवाह से पूर्व ही विवाह में बताए
लक्ष्यों में प्रथम, तृतीय, पष्ठ, नवम दिन से भिन्न दिन में होना शुभ है ॥६६॥

विवाहमें वेदी लक्षण और दिन नियम ।

हस्तोच्छ्रायावेदहस्तैः समन्तात्तुल्या वेदी सद्मनो वाम भागे ॥
युग्मे घस्रोपश्वहीनेच पञ्चसप्तास्यान्मंडपोद्वासनं सत् ॥६७॥

अन्वयः—सद्मतः वामभागे हस्तोच्छ्राया समन्तात् वेदहस्तैः तुल्या स्यान् युग्मे
पश्वहीने पञ्चसप्ताहे मण्डपोद्वासनं सत् ॥६७॥

भाषार्थः—घर से बाम (बायें) हिस्से में चार हाथ (चौखूट) १ हाथ ऊंची
वेदी बनानी चाहिये छठे दिन को छोड़ शेष सप्त दिनों में तथा पांचवें सातवें दिन
मण्डप का विसर्जन करना युक्त है ॥६७॥

तेल चढ़ानेकी संख्या ।

मेषादिराशिजवधूवरयोर्वटोश्चतैलादिलेपनविधौ कथितात्र संख्या ॥
शैलादिशिः शरदिगन्तनगाद्रिवाणावाणान्तरगिरयोविबुधैस्तु-
कैश्चित् ॥६८॥

अन्वयः—मेषादिराशिज वधूवरयोः वटोश्च अत्र तैलादिलेपन विधौ शैलाः दिशः
शरदिगन्तनगाद्रिवाण वाणान्तर गिरयः कैश्चित् विबुधैः इति संख्या कथिता ॥६८॥

भाषार्थः—मेष आदि राशि में जन्म लिये हुए वर कन्या को तेल लगाने के
लिये यह संख्या है । मेषराशि के ७, वृषके १०, मिथुन के ५, कर्क के १०, सिंह के
५, कन्या के ७, तुला के ७ वृश्चिक के ५, धन के ५, मकर के ५, कुम्भ के ५, मीन
के ७ यह तेल लगाने के दिन हैं ॥६८॥

विवाह मंडप स्तम्भ विवरणम् ।

सूर्ये गनासिंहघटेषु शैवे स्तंतभोलिकोदंडमृगेषु वायौ ।
मीनाजकुम्भे निऋतौ विवाहे स्थाप्योऽग्निकोणे वृषयुग्मकर्के ॥६६॥

अन्वयः—सूर्ये अंगना सिंहघटेषु शैवे अलिकोदण्डमृगेषु वायौ मीनाजकुम्भे निऋतौ वृषयुग्मकर्के अग्निकोणे स्तम्भः स्थाप्यः ॥६६॥

भाषार्थः—सूर्य, कन्या, सिंह, तुला के हों तो ईशान में, वृश्चिक, धन, मकर के सूर्य हों तो वायुकोण में मीन, कुम्भ के सूर्य में नैऋत्य कोण में वृष, मिथुन, कर्क के सूर्य हों तो अग्नि कोण में स्तम्भ स्थापन करना उत्तम फल प्रद है ॥६६॥

गोधूली प्रशंसा ।

नास्यामृक्षं न तिथिकरणं नैव लग्नस्य चिन्ता
नोवा वारो न च लवविधिर्नो मुहूर्तस्य चर्चा ॥
नोवा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्रदोषो
गोधूलिः सामुनिभिरुदिता सर्व कार्येषु शस्ता ॥१००॥

अन्वयः—अस्यां न ऋक्षं न तिथिकरणं नैव लग्नस्य चिन्ता नो वा वारः न च लव-विधिः न मुहूर्तस्य चर्चा नो वा योगः न मृतिभवनं नैव जामित्रदोषः सा गोधूलिः मुनिभिः सर्वकार्येषु शस्ता उदिता ॥१००॥

भाषार्थः—गोधूलि सब कामों में उत्तम है इसमें नक्षत्र, तिथि, वार, नवांश, जामित्र, इत्यादि का दोष नहीं लगता ॥१००॥

गोधूलि जानने का क्रम ।

पिंडीभूते दिनकृति हेमंतर्तौ स्यादधार्वास्ते तपसमये गोधूलिः ।
संपूर्णास्ते जलधरमालाकाले त्रेधा योज्या शकलशुभे कार्यादौ ॥१०१॥

अन्वयः—हेमन्तर्तौ दिनकृति पिण्डीभूते आतपसमये (सूर्ये) अधार्वास्ते जलधर माला-काले (सूर्ये) सम्पूर्णास्ते गोधूलिः स्यात् सकल शुभे कार्यादौ त्रेधा योज्या ॥१०१॥

भाषार्थः—हेमन्त ऋतु में सूर्य के (सायं समय) गोल हो जाने पर ग्रीष्म ऋतु में आधा अस्त होने पर (सूर्यके) वर्षा समय में पूर्ण अस्त हो जाने पर गोधूलि समय होता है यह समय समस्त शुभ कार्यों में ग्राह्य है ॥१०१॥

गोधूलि समय वज्य दोष ।

अस्तंयाते गुरुदिवसे सोरेमाके लग्नान्मृत्यौरिपु भवने लग्नेचेन्द्रौ ।
कन्यानाशस्तनुमदमृत्युस्थे भौमेवोदुर्भागे धनसहजे चन्द्रेसौ-
ख्यम् ॥१०२॥

अन्वयः—गुरुदिवसे अर्के अस्तंयाते, सौरे सार्के (गोधूलिः) लग्नात् मृत्यौ रिपुभवने लग्ने इन्दौ (यदि भवेत्) कन्यानाशः स्यात् तनुमदने मृत्युस्थे भौमे बौद्धः (वरस्य) नाशः स्यात् धनसहजे चन्द्रे सौख्यम् जायते इति शेषः ॥ १०२ ॥

भाषार्थः—वृहस्पति को सूर्यास्त होने के बाद और शनि को सूर्य दीखते में गो-धूलि होती है वह शुभ है गोधूलि लग्न से अष्टम पष्ठ चन्द्रमा हो तो कन्या का, लग्न में अथवा सप्तम, अष्टम मंगल हो तो वर का नाश होता है तृतीय एकादश चन्द्र उत्तम है ॥१०२॥

मेषादिगोर्क्षेष्टशरा नगाक्षा सप्तपेषवः सप्तशराः गजाक्षाः ।
गोक्षाः खतर्का कुरसाः कुतर्काः स्वंगानिषष्टिर्नवपंच भुक्तिः ॥१०३॥

अन्वयः—मेषादिगेश्चर्के अष्टशराः, नगाक्षाः, सप्तशेषः, सप्तशराः, गजाक्षाः, गोक्षाः, खतर्काः, कुरसाः, कुतर्काः, कङ्कानि, षष्टिः, नवपञ्च भुक्तिः भवतीति शेषः ॥१०३॥

भाषार्थः—मेघ, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मीन के सूर्य की कला की गति क्रमशः १५८।५७।५७।५७।५८।५९।६०। ६१।६२।६३।६४।६५।६६।६७।६८।६९।७० की होती है ॥१०३॥

तत्काल सूर्य स्पष्ट कथन ।

संक्रांतियातघस्राद्यैर्गतिर्निध्नीखषट्कृता ।

लब्धे नांशादिना योज्यं यातच्च स्पष्टभास्करः ॥१०४॥

अन्वयः—गतिः संक्रान्ति यात घस्त्राद्यैः निघ्नाः खषट्ढताः लब्धेन अंशादिना योज्यं
यातक्षं स्पष्टभास्करः भवतीति शेषः ॥१०४॥

भाषार्थः—सूर्य संक्रान्ति के बीते घड़ी पल को सूर्य की गति से गुणा करे ६० का भाग दे जो लब्ध अंशादि हो उसमें सूर्य की गत राशि जोड़ देने से सूर्य का स्पष्ट ज्ञात होता है ॥१०४॥

इष्टसमय बनाने का क्रम ।

तनोरिष्टांशकात्पूर्वनवांशा दशसंगुणाः ।

रामाप्तालब्धमंशाद्यं तनोर्वर्गादिसाधने ॥१०५॥

अन्वयः—तनोः इष्टांशकात् पूर्व नवांशा दशसंगुणाः रामाप्तालब्धं मंशाद्यं तनोः वर्गादि-साधनं अस्तीति शेषः ॥१०५॥

भाषार्थः—जिस लग्न में विवाह होना निश्चय हो उसके जिस नवांश में विवाह निश्चय हो उसके पहले बीते नवांशक को १० से गुणा करे और ३ से भाग दे जो अंशादि लब्ध हो वही लग्न का भुक्त है (लग्न स्पष्ट) है इससे षड्वर्ग साधन होता है ॥१०५॥

इष्टघड़ी बनाने कि विधि ।

अर्काक्षिगनात्सायनाद्भोग्यभुक्तै

भर्गैर्निघ्नात्स्वोदयात् खाग्निभक्तात् ॥

भोग्यंभुक्तं चांतरालोदयाद्यं

षष्ठ्याभुक्तंस्वेष्टनाड्यो भवेयुः ॥१०६॥

अन्वयः—सायनात् अर्कात् लग्नात् भोग्यभुक्तैः भर्गैः निघ्नात् स्वोदयात् खाग्निभक्तात् लब्धं भोग्यं भुक्तं च (भवेत्) अन्तरालोदयाद्यं षष्ठ्या भुक्तं स्वेष्ट नाड्यः भवेयुः ॥१०६॥

भाषार्थः—सायन सूर्य के भोग्य अंश को स्वोदय से गुणा करे ३० का भाग दे इससे भोग्यांश भुक्तांश निकलता है उन दोनों भुक्त भोग्य पलों को जोड़ने पर जो अंक आवे ६० से उसमें भाग दे जो वंचता है वह इष्ट घटी पल होता है ॥१०६॥

घटी लाने का दूसरा प्रकार ।

चेल्लग्नार्कोसायनावेकराशौ तद्विश्लेषाग्नोदयात् खाग्निभक्तात् ।
स्वेष्टः कालो लग्नमूनं यदार्कात् रात्रे शेषोर्कात्सषड्भान्निशायाम् १०७

अन्वयः—चेत् सायनी लग्नाकीं एकराशी (भवेताम्) विस्लेषधनोदयात् खाग्रिमक्तात् स्वेष्टः कालः (स्वेष्टकालः) भवेद्यदा अर्कात् लग्नं ऊनं तदा रात्रेः शेषः कालः स्यात् निशायाम् अर्कात् षडभं तदा इष्टकालो भवति ॥१०७॥

भाषार्थः—यदि लग्न और सायन सूर्य एकराशि में हो तो लग्न तथा सूर्य का अन्तर करे और स्वोदय से गुणा कर ३० का भाग दे शेष इष्ट काल होता है । रात्रि का लग्न हो तो ६ राशि और जोड़ना चाहिये ॥१०६॥

विवाह आदि शुभकार्यों में विशेष वर्ण्य ।

उत्पातान्सह पातदग्धतिथिभिर्दुष्टांश्च योगांस्तथा
चन्द्रेज्योशनसामथास्तमयनंतिथ्याक्षयर्द्धीतथा ॥
गंडांतं च सविष्टसक्रमदिनंतन्वंशपास्तं तथा
तन्वंशेशविधून्थाष्टरिपुगान् पापश्चवर्गा
स्तथा ॥१०८॥ सेन्दुकूरखगोदयांशमुपयस्ताशुद्धि
चंडायुधान् खार्जूरं दशयोगयोगसहितंजामित्र
लत्ताव्यधम् ॥ बाणोपग्रह पापकर्त्तरितथा तिथ्यृक्ष
वारोत्थिपंदुष्टयोगमथार्धयामकुलिकाद्यान्वार
दोषानपि ॥१०९॥ क्रूराक्रांत विमुक्तभं ग्रहणभं
यत्क्रूरगतंव्यभं त्रेधोत्पातहतं च केतुहतभं
संध्योदितं भं तथा । तद्वच्च ग्रहभिन्नयुद्धगतभं
सर्वानिमान्संत्यजेदुद्वाहेशुभकर्मसुग्रह कृतल्ल-
भस्यदोषानपि ॥११०॥

अन्वयः—उद्वाहे शुभकर्मसु पातदग्ध तिथिभिः सह उत्पातान् तथा दुष्टान् योगांश्च अथ चन्द्रेज्योशनसां अयनं तिथ्याः क्षयर्धी गण्डान्तम् सविष्टि संक्रमदिनं तन्वंशेश विधून् अथ अरिष्टरिपुगान् पापस्यवर्गान् सेन्दुकूरखगोदयांशम् उदयास्तशुद्धि चण्डायुधं खार्जूरम् दश-योगसहितं जामित्रलत्ताव्यधम् बाणोपग्रहपापकर्त्तरितथा तिथ्यृक्षवारोत्थितं दुष्टं योगं अथ अर्धयाम कुलिकाद्यान् वारदोषानपि क्रूराक्रान्त विमुक्तभं ग्रहणभं क्रूरगन्तव्यभं त्रेधोत्पातहतं-

केतुहतभं सन्व्योदितभं तद्वत् ग्रहमित्रयुद्धगतभं तथा ग्रहकृतान् लग्नस्य दोषानपि सन्त्यजेत् ॥१०८॥१०९॥११०॥

भाषार्थ—विवाहादि शुभ कर्मोंमें पात दोष, महापात दोष, दग्धतिथि, दुष्टयोग, चन्द्र, बृहस्पति, शुक्र की अस्तोदय घड़ी, तिथिवृद्धि, तिथिक्षय, गण्डान्त, भद्रा, संक्रान्ति दिन, लग्नस्वामी और नवांश का अस्त लग्नेश नवांशेश का चन्द्रमा के साथ में बैठना पाप ग्रह के षड्वर्ग में (रहना) चन्द्रमा पापग्रह सहित लग्न अथवा नवांश का स्वामी, उदय तथा अस्त शुद्धि, चन्द्रायुध दोष, खाजुरदोष, व्याघ्रात गण्डादि १० दोष, जामित्र, लक्षावेध, वाण, उपग्रह पाप कर्तरी, तिथि, वार, नक्षत्रोत्थ दुष्ट-योग अर्धयाम, कुलिक, वारदोष, पापग्रहयुक्त नक्षत्र, पत्ययुक्त नक्षत्र ग्रहण का नक्षत्र, क्रूर ग्रह जिस नक्षत्र पर जानेवाला हो वह नक्षत्र, तीन प्रकार के उत्पात हत नक्षत्र, केतु नक्षत्र, सूर्य नक्षत्र से १४ वां नक्षत्र ग्रह भिन्न नक्षत्र, युद्ध नक्षत्र ग्रह के कारण दोष हों वे विवाहादि निन्दिन हैं क्योंकि इससे अशुभ होता है ॥१०८॥१०९॥११०॥

इति विवाह प्रकरणम् समाप्तम् ॥६॥



अथ वधूप्रवेशप्रकरण प्रारम्भः ।

वधूप्रवेश मुहूर्त

समाद्रिपंचांक दिनेविवाहाद्वधूप्रवेशोष्टिदिनांतराले ।

शुभः परस्ताद्विषमाब्दमासदिनेक्षवर्षात्परतो यथेष्टम् ॥१॥

अन्वयः—विवाहात् अष्टिदिनान्तराले समाद्रिपञ्चाङ्क दिने वधूप्रवेशः शुभः परस्तात् विषमाब्दमास दिने (वधूप्रवेशो विधेयः) अक्षवर्षात् यथेष्टम् ॥१॥

भाषार्थः—विवाह के बाद १६ दिन के अन्दर नव सात पांच दिन में वधू प्रवेश उत्तम है १६ दिन भीतर वधू प्रवेश न हो सके तो विषम वर्ष, मास, दिन में वधू प्रवेश होना चाहिये पांच वर्ष भीतर वधू प्रवेश न हो सका हो तो बौद में विषम वर्ष इत्यादि का नियम नहीं ॥१॥

वधूप्रवेश में नक्षत्र शुद्धि ।

ध्रुवक्षिप्रमृदुश्रोत्र वसुमूलमघानिले ।

वधूप्रवेशः सन्नेष्टो रिक्तारार्धे बुधे परैः ॥ २ ॥

अन्वयः—ध्रुव क्षिप्र मृदु श्रोत्र वसु मूल मघानिले वधू प्रवेशः सत् परैः रिक्तारार्धे बुधे च (वधूप्रवेशः) नेष्टः उक्तः ॥ २ ॥

भाष्यार्थः—ध्रुव क्षिप्र मृदु संज्ञा वाले नक्षत्र तथा श्रवण, धनिष्ठा, मूल, मघा, स्वाती नक्षत्रों में वधूप्रवेश उत्तम है किन्तु रिक्ता तिथि और बुध, मंगल, रविवार को वधू प्रवेश नहीं करना चाहिये ॥ २ ॥

सब मासों में वधूप्रवेश से फलाफल ।

ज्येष्ठेपति ज्येष्ठमथाधिकेपतिं

हन्त्यादिमे भर्तृगृहे वधूः शुचौ ॥

श्वश्रूँ सहस्ये श्वशुरं क्षये तनुं

तातं मधौतात गृहे विवाहतः ॥ ३ ॥

अन्वयः—विवाहतः आदिमे ज्येष्ठे भर्तृगृहे स्थिता वधूः पतिज्येष्ठं, हन्त्यात् अथ अधिके (आनीतावधूः) पतिं शुचौ श्वश्रूँ, सहस्ये श्वशुरं, क्षये तनुं मधौ तातगृहे स्थिता वधूः तातं हन्त्यात् ॥ ३ ॥

भाष्यार्थः—विवाह से आनेवाले ज्येष्ठ में पतिगृह (श्वशुराल) में आई हुई वधू ज्येष्ठ (पति के बड़े भाई) को विनाश करती है मलमास में श्वशुराल में आई है तो पति को, आषाढ में सास को, पौष में अपने श्वशुर को क्षयमास में स्वयं अपने को विनाश करती है किन्तु पिता के घर में ही हो और उसको रहते हुये चैत्र मास आन पड़े तो वह (कन्या) पिता का नाश करती है ॥ ३ ॥

इति सप्तम वधूप्रवेश प्रकरणम् समाप्तम् ॥ ७ ॥



अथ द्विरागमनप्रकरण प्रारम्भः

द्विरागमन (गवने) का मुहूर्त ।

चरेदथौजहायने घटालिमेपगेरवौ
रवीज्य शुद्धियोगतः शुभग्रहस्य वासरे ॥
नृयुग्म मीनकन्यका तुलावृषे विलम्बके
द्विरागमं लघु ध्रुवे चरेत्पेसृदूडुभिः ॥ १ ॥

अन्वयः—अथ ओजहायने रवौ घटालिमेपगे रवीज्य शुद्धियोगतः शुभ ग्रहस्य वासरे नृयुग्म मीन कन्यका तुलावृषे विलम्बके लघुध्रुवे चरे असृपे सृदूडुभिः द्विरागमं चरेत् ॥ १ ॥

भाषार्थः—वधू प्रवेश के उपरान्त विषम वर्षों में कुम्भ, वृश्चिक, मेष राशि के सूर्य जब हों वृहस्पति, शुद्ध होने पर बुध, वृहस्पति, शुक्र, सोम इन वारों में मिथुन, मीन, कन्या, तुला, वृष, लग्नों में लघु ध्रुव चर संज्ञा वाले नक्षत्र और मूल तथा सृदु संज्ञा वाले नक्षत्रों में द्विरागमन शुभ है ॥ १ ॥

संमुख शुक्र दोष विचार ।

दैत्येजेह्यभिमुखदक्षिणे यदिस्याद्
गच्छेयुर्नहिशिशुगर्भिणीनवोढाः ॥
बालश्चेद्ब्रजति विपद्यतेनवोढाचेद्बन्धा
भवति च गर्भिणीत्वगर्भा ॥ २ ॥

अन्वयः—यदि दैत्येज्यः अभिमुखे दक्षिणे स्यात् (तस्मिन् समये) शिशुगर्भिणी नवोढाः नहि गच्छेयुः बाळः चेत् ब्रजति विपद्यते न वोढा चेत् ब्रजति (तर्हि) बन्ध्या जायते गर्भिणी ब्रजति चेत् अगर्भा (न विद्यमानः गर्भो यस्याः सा) भवति ॥ २ ॥

भाषार्थः—शुक्र संमुख (सामने) अथवा दक्षिण हों तो बालक, गर्भवती, और युष्मती को पतिगृह नहीं जाना चाहिये बालक जावे तो मृत्यु, नूतन स्त्री जाती है तो विगतपुत्रा (बांझ) और गर्भिणी का गर्भ पात होता है ॥ २ ॥

शुक्र दोष का परिहार ।

नगरप्रवेश विषयाद्युपद्रवे करपीडने विबुधतीर्थयात्रयोः ।
नृपपीडने नववधूप्रवेशने प्रतिभार्गवो भवतिदोषकृन्नहि ॥ ३॥

अन्वयः—नगर प्रवेश विषयाद्युपद्रवे करपीडने विबुधतीर्थ यात्रयोः नृपपीडने नव वधू प्रवेशने प्रतिभार्गवः नहि दोषकृत् भवति ॥ ३॥

भाषार्थः—गांव में प्रवेश और ग्रामोपद्रव, विवाह देवता तीर्थयात्रा, राजपीडा, इत्यादि समयमें बधू प्रवेश समय में सन्मुख शुक्र दूषित नहीं है ॥ ३॥

तथा द्वितीय परिहार ।

पित्र्ये गृहेचेत् कुचपुष्पसंभवः
स्त्रीणां न दोषः प्रतिशुक्रसंभवः ॥
भृग्वंगिरोवत्सवशिष्टकश्यपात्रीणां
भरद्वाजमुनेः कुले तथा ॥ ४ ॥

अन्वयः—चेत पित्र्ये गृहे कुचपुष्पसंभवः प्रतिशुक्रसंभवः दोषः न (भवतीति-
शेषः) भृग्वङ्गिरोवत्स वशिष्ट कश्यपात्रीणां भरद्वाजमुनेश्च मुनेः कुलेदोषो नास्ति ॥ ४॥

भाषार्थः—पिता के घर में ही कन्या के स्तन और रजोदर्शन हो जावें तो वधू प्रवेश समय में सन्मुख शुक्र विचार नहीं होता । भृगु, अंगिरा, वत्स, वशिष्ट, कश्यप, अत्रि, भरद्वाज इन कुलों की स्त्रियों के वधू प्रवेश में दोष नहीं है ॥ ४॥

इति द्विरागमन प्रकरणं समाप्तम् ॥ ८ ॥

अथ अग्न्याधान प्रकरण प्रारम्भः ।

अग्निहोत्र मुहूर्त्त ।

स्यादग्निहोत्र विधिरुत्तरेदिनेशे
मिश्रध्रुवांत्यशशि शुक्रसुरेज्यधिष्ये ॥

रिक्तासुनोशशिकुजैज्य भृगौ न नीचे
नास्तंगतेन विजिते न च शत्रुगेहे ॥ १ ॥

अन्वयः—दिनेशे उत्तरगे मिश्रध्रुवान्त्यशशिकुसुरेज्यधिष्ये नो रिक्तासु न शशि-
कुजेज्य भृगौ न नीचे न अस्तंगते न विजिते न च शत्रुगेहे अग्निहोत्र विधिः स्यात् ॥१॥

भाषार्थ—सूर्य के उत्तरायण समय में मिश्र, ध्रुव, संज्ञावाले नक्षत्र तथा
रेवती, मृगशिरा, ज्येष्ठा नक्षत्रों में रिक्तामिन्न तिथियों में चन्द्र मंगल वृद्धस्पति, शुक्र
ये नीच के न हों अस्त, शत्रु के घर में रहनेवाला, तथा हारा (युद्धसे) हुआ ग्रह
न हो तो अग्निहोत्र के वास्ते अग्निस्थापन करना चाहिए ॥ १ ॥

अग्न्याधान में लग्न शुद्धि ।

नो कर्कनक्रभषकुंभनवांशलग्ने
नोच्चेतनौ रवि शशीज्यकुजेत्रिकोणे ॥
केंद्रर्क्षषट्भवनगेचपरस्त्रिलाभे
षट्स्थितैर्निधनशुद्धियुते विलग्ने ॥ २ ॥

अन्वयः—नो कर्क नक्र भष कुम्भ नवांशलग्ने नो अच्चे तनौ नो शशिरवीज्यकुजे त्रिकोणे
केन्द्रर्क्ष षट्भवनगे परैः त्रिलाभषट् संस्थितैः निधन शुद्धियुते अग्निहोत्रविधिः
शुभः स्यात् ॥२॥

भाषार्थ—कर्क मकर मीन कुम्भ में से किसी का लग्न अथवा नवांशा न हो
चन्द्रमा लग्नस्थ हों तो अग्निहोत्र प्रारम्भ शुभ है सूर्य चन्द्र केन्द्र (नवम पञ्चम)
अथवा त्रिकोण १।४।७।१०।६। में हो शेष ग्रह तृतीय, एकोदश, षष्ठ में हो तो
अष्टम स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) होनेपर अग्निहोत्र करना उत्तम है ॥ २ ॥

यज्ञमें लग्नशुद्धि ।

चापेजीवे तनुस्थेवा मेषे भौमेम्बरेद्युने ।
षट्त्रयायेञ्जैरवौ वास्याज्जाताग्निर्यजतिध्रुवम् ॥ ३ ॥

अन्वयः—जीवे चापे, भौमे तनुस्थे मेषे अम्बरे द्युने, अच्चे षट्त्रयाये रवौ षट्त्रयाये
जाताग्निः ध्रुवम् जयति ॥३॥

भाषार्थ—बृहस्पति धनराशि का हो और मंगल मेपका हो, छठे, आठवें ग्यारहवें में चन्द्रमा हो रवि (सूर्य) छठे, तीसरे, ग्यारहवें में हो तो अग्निहोत्र प्रारम्भ करना उत्तम है ॥ ३ ॥

इतिअग्न्याधानप्रकरणं समाप्तम् ॥६॥



अथ राज्याभिषेक प्रकरण प्रारम्भः

राज्याभिषेक में कालशुद्धिः ।

राज्याभिषेकःशुभउत्तरायणे गुर्विन्दुशुकैरुदितैर्वलान्वितैः ।

भौमार्कलग्नेशदशेशजन्मपैर्नोचैत्ररिक्तारनिशामलिम्लुचे ॥१॥

अन्वय—उत्तरायणे गुर्विन्दु शुकैः भौमार्कलग्नेश दशेशजन्मपैः वलान्वितैः नो चैत्र-
रिक्तारमलिम्लुचे राज्याभिषेकः शुभः ॥१॥

भाषार्थ—बृहस्पति चन्द्रमा शुक के उदय समय में मंगल सूर्य लग्नेश दशमेश तथा लग्न स्वामी सबल हो स्वक्षेत्रो हो उत्तरायण सूर्य हों तो राज्याभिषेक शुभ है किन्तु चैत्र मास रिक्तातिथि मंगलवार अधिकमासमें राज्याभिषेक उत्तम नहीं ॥१॥

नक्षत्र और लग्न शुद्धिः ।

शाक्रश्रवः क्षिप्र मृदुध्रुवोडुभिः शीर्षोदये वोपचये शुभेतनौ ।

पापौस्त्रिषष्टायगतैः शुभग्रहैर्केन्द्रत्रिकोणाय धनत्रिसंस्थितैः ॥२॥

अन्वयः—शाक्रश्रवः क्षिप्रमृदुध्रुवोडुभिः शीर्षोदये वा उपचये शुभे तनौ पापैः शुभग्रहैः
केन्द्रत्रिकोणाय धनत्रिसंस्थैः (राज्याभिषेकः शुभदः) ॥२॥

भाषार्थ—ज्येष्ठा श्रवण क्षिप्र मृदु संज्ञावाले नक्षत्रों में राज्याभिषेक करना चाहिए शीर्षोदय लग्न मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ लग्न हो एवं उपचय तृतीय, षष्ठ, दशम, एकादश स्थानों में अथवा लग्न में उत्तम ग्रह हों शुभ ग्रह न हो तो शुभग्रह की दृष्टि हो पापग्रह लग्न स्थान से तृतीय, षष्ठ, एकादश स्थान में हो तो राज्याभिषेक करना शुभ है ॥२॥

स्थान विशेष से ग्रहोंका फल ।

पापैस्तनौ रुद्धनिधने मृतिः सुतेपुत्रानिर्र्थव्ययगैर्दरिद्रता ।
स्यात्खेऽलसौ भ्रष्टपदो द्युनांबुगैः सर्वशुभं केन्द्रगतैः शुभग्रहैः ॥३॥

अन्वयः—पापैः (अशुभग्रहैः) तनौ लग्नस्थे रुक् (रुजाक्रान्तता भवति) निधने (पापग्रहैरेव) मृतिः, सुते पुत्रार्तिः, अर्थ व्ययगैः दरिद्रता, खे अलसः, द्युनाम्बुगैः भ्रष्टपदः शुभग्रहैः केन्द्रगतैः सर्व शुभं जायते ॥३॥

भाषार्थ—लग्न स्थान में पापग्रह हों तो राजाकी मृत्यु, आठवें में मृत्यु, पाचवें में पुत्र दुःख, द्वितीय द्वादश स्थान में निर्धनता, दशम में आलसी, सप्तम चतुर्थ स्थान में धन रहित होता है किन्तु शुभग्रह केन्द्रस्थान में हो तो सब शुभ होता है ॥ ३ ॥

स्थिरसंपत्तियोग ।

गुरुर्लम्कोणे कुजोऽरौसितः खे स नृपंसदा मोदते राजलक्ष्म्या ।
तृतीयायगौ सौरिसूर्यो खवन्ध्वोर्गुरुर्द्धरित्रीस्थिरास्यान्नृपस्य ॥४॥

अन्वयः—गुरुः लग्नकोणे, कुजः अरौ, सितः खे, (भवति तदा) राजा राजलक्ष्म्या मोदते सौरिसूर्यो तृतीयायगौ गुरुः खवन्ध्वोः (भवति तदा) नृपस्य धरित्री स्थिरा स्यात् ॥४॥

भाषार्थ—लग्न नवम, पञ्चम में बृहस्पति, षष्ठ में मंगल हों तो राजा राजलक्ष्मी से भरपूर आनन्द पाता है तृतीय में शनि, एकादश में सूर्य, दशम चतुर्थ में बृहस्पति, हों ऐसे में राज्याभिषेक होवे तो राजा की पृथिवी अचल रहती है ॥४॥

दशम राज्याभिषेक प्रकरणं समाप्तम् ॥ १० ॥



अथ एकादश यात्रा प्रकरण प्रारम्भः ।

यात्रा मुहूर्त वनानेका क्रम ।

यात्रायांप्रविदितजन्मनां नृपाणांदातव्यं दिवसमबुद्धजन्मनां च ।
प्रश्नाद्यैरुदयनिमित्तमूलभूतैर्विज्ञाते ह्यशुभशुभे बुधः प्रदद्यात् ॥१॥

अन्वयः—प्रविदित जन्मनां नृपाणां अबुद्धजन्मनां च (नृपाणां) उदय निमित्तमूल-
भूतैः प्रश्नाद्यैः अशुभ शुभे विज्ञाते बुधः दिवसं यात्राकालं प्रदद्यात् ॥१॥

भाषार्थः—जन्म समय के ग्रह जिनके ज्ञात हैं ऐसे राजाओं के जन्मकाल से
(राजा शब्द यहाँ पर उपलक्षण मात्र है चाहे कोई हो उसके जन्म समय के ग्रह ज्ञात
हैं तो उससे) जिनके जन्म समय के ग्रह ज्ञात नहीं हैं ऐसे मनुष्यों के प्रश्नसमय
के ग्रहों के फलाफल विचार कर यात्रा के लिये शुभ मुहूर्त बताना चाहिये ॥ १॥

प्रश्नलग्न विचार ।

जननराशितनू यदि लग्नगे तदधिपौ यदिवा तत एववा ।
त्रिरिपुखायगृहं यदि वोदयो विजय एव भवेद्वसुधापतेः ॥ २ ॥

अन्वयः—यदि जननराशितनू लग्नगे यदिवा तदधिपौ (लग्नगौ) तत एव त्रिरिपु-
खायगृहं वसुधाधिपतेः उदयः अथवा विजयः एव भवेत् ॥२॥

भाषार्थः—जन्मलग्न अथवा जन्मराशि प्रश्न लग्न में हो जन्म लग्न अथवा
जन्म राशि का स्वामी लग्न में हो एवं तृतीय षष्ठ दशम एकादश लग्न में हो ऐसे
समय में यात्रा करने से राजा का अवश्य जय होता है ॥२॥

तथा अन्य प्रश्नलग्न फलम् ।

रिपुजन्मलग्नमथधिपौतयोस्ततएव वोपचय सद्मचेद्वेत् ।
हिबुकैद्युनेऽथ शुभवर्गकस्तनौ यदिमस्यकोदयगृहं तदा जयं ॥३॥

अन्वयः—प्रश्नलग्नात् रिपुजन्मलग्नमं तदधिपौ वा हिबुके, द्यूने (भवेताम्) तदा
राज्ञः विजयः एव भवेत् । ततः एव उपचयसम् चेत् भवति (विजय एव भवति) हिबुके

द्युने तनौ शुभवर्गकः (भवति तदा) राज्ञः जय एव जायते । यदिमस्तकोदयं गृहं तदा जय निगद्यम् ॥३॥

भाषार्थः—प्रश्न लग्न से शत्रु का जन्म लग्न अथवा जन्मराशि अथवा जन्म राशीश चतुर्थ सप्तम में हो तो राजा का जय होता है, तीसरे छठे दशवें ग्यारहवें अथवा प्रश्न लग्न से चतुर्थ सप्तम में हो तो राजा का जय होता है । प्रश्न के लग्न से शुभ ग्रहों का षड्वर्ग अथवा शीर्षोदय राशि प्रश्न लग्न में होता है तो राजा का विजय होता है ॥३॥

पुनः प्रश्नलग्न फलम् ।

यदि पृच्छितनौ वसुधा रुचिरा शुभवस्तु यदि भूतिदर्शनम् ।
यदि पृच्छतिचादस्तरतश्च शुभग्रहं दृष्ट्युतं चरलग्नमपि ॥ ४ ॥

अन्वयः—यदि पृच्छितनौ वसुधा रुचिरा स्यात् यदि शुभवस्तु दर्शनं भवति अथवा आदरतः पृच्छति अथवा शुभदृष्ट्युतं चरलग्नं भवेत् (एवम्भूते काले) वसुधाधिपतेः विजयः एव स्यात् ॥४॥

भाषार्थ—प्रश्न के समय सुन्दर भूमि अथवा शुभ वस्तु दीर्घ आदर से प्रश्न किया जावे शुभ ग्रह से दृष्ट चर लग्न प्रश्नकाल में हो तो राजा की यात्रा में विजयफल होता है ॥४॥

अशुभ फलप्रद लग्न विचार ।

विधुकुजयुतलग्ने सौरिदृष्टेऽथचन्द्रे
मृतिभमदन संस्थे लग्नगे भास्करेपि ॥
हिबुकनिधनहोरा द्यूनगे वापिपापे
सपदिभवतिभंगः प्रश्नकर्तुस्तदानीम् ॥ ५ ॥

अन्वयः—विधु कुज युत लग्ने सौरिदृष्टे अथचन्द्रे मृतिभ मदनसंस्थे भास्करे लग्नगे अपि वा पापे हिबुक निधनहोरा द्यूनगे प्रश्नकर्तुः सपदि भङ्गो भवति ॥५॥

भाषार्थ—लग्न चन्द्रमा और मंगल सहित हो शनि देखता हो अष्टम सप्तम स्थान में चन्द्रमाहो सूर्य लग्नमें हो चन्द्रमा सूर्य अथवा पापग्रह अष्टमस्थानमें हों तो प्रश्न (यात्राके वास्ते) करने वाले राजाको शत्रुसे पराजय (हार) माननी पड़ेगी ॥५॥

प्रश्न लग्न से दिशाज्ञान ।

त्रिकोणकुजात्सौरिशुकृज्जीवो यदैकोऽपि वा नो गमोर्काञ्छशी वा ॥
बलीयास्तु मध्येतयोर्योऽग्रहः स्यात् स्वकीयां दिशं प्रत्युतासौ
नयेच्च ॥ ६ ॥

अन्वयः—कुजात् सौरिशुकृज्जीवाः त्रिकोणे वा यदा एकोऽपि त्रिकोणे (भवति) तदा गमः (गमनं) न भवति अर्कात् शशी त्रिकोणे (भवेत्) एतस्मिन्नपि समये नैव गमनं भवति तयोः मध्ये यः ग्रहः बलीयान् भवति असौ प्रत्युत स्वकीयां दिशं नयेत् । प्रत्युत इत्यस्य विपरीतरीत्येति भावार्थः ॥६॥

भाषार्थः—जिस स्थान में मंगल हो उस स्थान से शनि, शुक, बुध, वृहस्पति पंचम स्थान में हों अथवा ये ही ग्रह त्रिकोण में हों तो उस दिशा में गमन (यात्रा) उत्तम नहीं सूर्य से चन्द्र त्रिकोण में हो जिस दिशा में जाने का विचार कर रखा है उस दिशा में यात्रा नहीं होती यदि गृह बलीयान् होतो अपनी दिशा को ही घुमा लाता है ॥६॥

तथा अन्यप्रकार ।

प्रश्ने गम्यदिगीशात्खेटः पञ्चमगोयः ।
बोभूयाद्वलयुक्तः स्वाम्यंशां नयतेसौ ॥ ७ ॥

अन्वयः—गम्यदिगीशात् खेटः प्रश्ने यः वलयुक्तः पञ्चमगश्च भवति असौ रवां आशां नयते ॥७॥

भाषार्थः—जिस दिशा में जाना हो उसका स्वामी प्रश्नलग्न में हो तथा प्रश्न लग्न से पञ्चम स्थान का स्वामी ग्रह सञ्चल हो ऐसी दशा में अपनी दिशा में पहुँचता है ॥७॥

यात्रा समय वर्णन ।

धनुर्मेषसिंहेषु यात्रा प्रशस्ता
शनिज्ञोशनोराशिगे चैव मध्या ॥

रवो कर्कमीनालिसंस्थेऽतिदीर्घाजनुः पंचसप्तत्रितराश्च नेष्टाः ॥ ८ ॥

अन्वयः—रवौ धनुर्मेघ सिंहेषु (प्राप्तेषु) यात्रा प्रशस्ता शनिज्जोशनो राशिगे सूर्ये मध्या (यात्रा) कर्कमीनालि संस्थे सूर्ये अतिदीर्घा जनुः अतिछम्बयात्रा दीर्घसमयात् प्रत्या-गमनम् यात्रासमये पञ्च सप्त त्रितराश्चनेष्टाः ॥८॥

भाषार्थः—सूर्य धन, मेघ, सिंह का हो (यात्रा समय में) तो यात्रा उत्तम है । मकर, मिथुन, कन्या, वृष, तुला राशि का हो तो मध्यम और कर्क मीन वृश्चिक का सूर्य हों तो यात्रा से बहुत दिनों बाद मनुष्य घर लौटे यात्रा में पंचम सप्तम तृतीय तारा उत्तम नहीं है ॥८॥

यात्रा में तिथि शुद्ध विचार

न षष्ठी न चद्वादशी नाष्टमी नो सिताद्या तिथिः पूर्णिमामानरिक्ता । हयादित्यमित्रेन्दुजीवांत्य हस्त श्रवोवासवै रेव यात्राप्रशस्ता ॥९॥

अन्वयः—न षष्ठी न च द्वादशी न अष्टमी न सिताद्या तिथिः पूर्णिमा अमानरिक्ता (यात्रा शुभकारिणी) हयादित्य मित्रेन्दुजीवान्त्यहस्ताश्रवोवासवैरेव यात्रा प्रशस्ता ॥९॥

भाषार्थः—षष्ठी, द्वादशी, अष्टमी, शुक्लपक्ष प्रतिपद, पूर्णिमा, अमावस्या, चतुर्थी, चतुर्दशी, नवमी इन तिथियों में यात्रा उचित नहीं । अश्विनी, पुनर्वसु अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, हस्त, श्रवण इन नक्षत्रों में यात्रा करना शुभ दायक है ॥९॥

वार शूल और नक्षत्र शूल ।

न पूर्वदिशिशक्रमेन विधू सौरिवारे तथा न चाजपादमेगुरौयमदिशीनदैत्येज्ययोः ॥ नपाशिदिशी धातृमे कुजबुधेर्यमर्त्तं तथा न सौम्यककुभिर्ब्रजेत् स्वजयंजीवितार्थोबुधः ॥ १० ॥

अन्वयः—शक्रमे विधु सौरिवारेऽपि पूर्वदिशि न ब्रजेत् । अजपादमे गुरौ यम दिशि न ब्रजेत् इने दैत्येज्ययोः धातृमे कुजबुधे तथा अर्यमर्क्षे स्वजयं जीवितार्थो बुधः सौम्ये ककुभि न ब्रजेत् ॥१०॥

भाषार्थः—ज्येष्ठा नक्षत्र चन्द्रवार शनिवार को पूर्व दिशा में नहीं जाना चाहिए
पूर्वाभाद्राद नक्षत्र तथा शुक्रवार को दक्षिण, रोहिणी नक्षत्र तथा शुक्रवार दिन में
पश्चिम । मंगल, बुध दिन उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में उत्तर दिशा में नहीं जाना
चाहिये ॥१०॥

काल विचार ।

पूर्वाह्णे ध्रुवमिश्रभैर्न नृपतेर्यात्रा न मध्याह्नके
तीक्ष्णाख्यैरपराह्णकै न लघुभैर्नो पूर्वरात्रेतथा ॥
मित्राख्यैर्न च मध्यरात्रिसमये चोग्रैस्तथा नोत्तरे
रात्र्यन्तेहरिहस्तपुष्यशशिभिः स्यात्सर्वकालेशुभा ॥ ११ ॥

अन्वय—ध्रुवमिश्रभैः पूर्वाह्णे नृपतेर्यात्रा न शुभा, तीक्ष्णाख्यैः मध्याह्नके, लघुभैः
अपराह्णके, मित्राख्यैः पूर्वरात्रे तथा उग्रैः मध्यरात्रि समये यात्रा शुभा न चरैः रात्र्यन्ते,
हरिहस्तपुष्यशशिभिः सर्वकाले यात्रा शुभा ॥११॥

भाषार्थः—ध्रुव मिश्र संज्ञा वाले नक्षत्रों में दिन के पूर्व भाग में (दोपहर से
पहले) यात्रा करना उत्तम नहीं । तीक्ष्ण संज्ञा वाले नक्षत्रों में मध्याह्न
(दोपहर) में यात्रा उत्तम नहीं, लघुसंज्ञा वाले नक्षत्रों में दोपहर बाद यात्रा उत्तम
नहीं । मिश्रसंज्ञा वाले नक्षत्रों में रात्रि के प्रथम भाग में उग्रसंज्ञा वाले नक्षत्र में उग्र
रात्रि समय में यात्रा शुभ नहीं है । श्रवण, हस्त, पुष्य, मृगशिरा नक्षत्रों में प्रत्येक
समय में यात्रा शुभ है ॥११॥

नक्षत्रों की वर्ज्य घड़ी ।

पूर्वाग्निपित्र्यन्तकतारकाणां भूत्रकृत्युग्रतुरंगमास्युः ।
स्वातीविशाखेन्द्रभुजंगमानां नाड्योनिषिद्धा मनुसंमिताश्च ॥ १२ ॥

अन्वयः—पूर्वाग्निपित्र्यन्तकतारकाणां भूत्रकृत्युग्रतुरङ्गमाः घटयः (निषिद्धाः) स्वाती
विशाखेन्द्र भुजङ्गमानां मनुसंमिताः नाड्यः निषिद्धाः ॥१२॥

भाषार्थः—तीन प्रकार पूर्वा, कृतिका, तारणी नक्षत्रों के क्रमशः १६, २१, ११,
७, घड़ा और स्वाती, विशाखा, अश्लेषा, ज्येष्ठा, में १४ घड़ी निषिद्ध है ॥२१॥

वर्ज्यधड़ी ।

पूर्वाद्धिभाग्नेयमघानिलानां त्यजेद्धिचित्राहियमोत्तराद्धिम् ।
नृपः समस्तां गमने जयार्थी स्वातीं मघां चौशनसो मतेन ॥१३॥

अन्वयः—आग्नेयमघानिलानां पूर्वार्धम् चित्राहियमोत्तरार्धं उशनसः मतेन जयार्थी
नृपः गमने स्वाती मघां समस्तां त्यजेत् ॥१३॥

भाषार्थः—यात्रा काल में स्वाती, मघा, कृतिका का पूर्वार्ध चित्रा, अश्लेषा, भरणी नक्षत्रों के उत्तरार्ध, शुक्राचार्य के मत से स्वाती, मघा को सम्पूर्ण ही जय की इच्छा करने वाला त्याग दे ॥१३॥

नक्षत्रों की जीव पक्षादि संज्ञा ।

तमोभुक्तताराःस्मृता विश्वसंख्या शुभोजीवपक्षो मृतश्चापिभोग्याः ।
तदाक्रान्तं कर्तरीसंज्ञमुक्तं ततोर्द्धेन्दुसंख्यं भवेद्ग्रस्तनाम ॥१४॥

अन्वयः—तमोभुक्तताराः विश्वसंख्याः भोग्याः जीवपक्षः शुभः ते विश्वसंख्या मृताः
तदाक्रान्तं कर्तरी संज्ञं उक्तम् ततः अक्षेन्दु संख्यं ग्रस्तनाम भवेत् ॥१४॥

भाषार्थः—राहु से भुक्त १४ नक्षत्र जीवपक्ष कहलाते हैं राहु से आक्रान्त १४
नक्षत्रों को मृतपक्ष कहते हैं राहु जिमपर रहता है उसको कर्तरी कहने हैं उससे
१५ वें नक्षत्र की ग्रस्त संज्ञा है ॥१४॥

मार्तण्डे मृतपक्षगे हिमकरश्चेज्जीवपक्षे शुभा
यात्रा स्याद्विपरीतगे जयकरी द्वौजीवपक्षेशुभा ॥
ग्रस्तर्क्षमृतपक्षतः शुभकरं ग्रस्तात्तथाकर्तरीयायीदुः
स्थितिमान् रविर्जयकरी तौ द्वौ तयोर्जीवगौ ॥१५॥

अन्वयः—मार्तण्डे मृतपक्षगे चेत् हिमकरः जीवपक्षे भवेत् तदा यात्रा शुभा विप-
रीतगे (पूर्वाक्षात् विपरीते हिमकरे मृतपक्षस्थे सूर्ये च जीवपक्षस्थे) यात्रा जयकरी द्वौ
सूर्यनिशापती जीवपक्षे भवेतात् तर्हि यात्रा शुभकरी मृतपक्षतः ग्रस्तर्क्ष शुभकरं तथा
ग्रस्तात् कर्तरी इन्दुः यायी रविः स्थितिमान् तौ द्वौ जीवगौ तयोः जयकरी ॥१५॥

भाषार्थः—मृतपक्ष के सूर्य और जीवपक्ष के चन्द्रमा हों तो यात्रा करना उत्तम है इससे विपरीत हो तो यात्रा क्षय करने वाली है दोनों ही जीवपक्ष के हों तो यात्रा उत्तम है मृतपक्ष से प्रस्तक्ष उससे कर्तरी शुभ है यायी राजा का स्वामी चन्द्र और स्थायी का सूर्य है दोनों ग्रह जीवपक्ष के हों तो शुभ है दोनों मृत पक्ष के होते हैं तो हार होती है ॥१५॥

कुलाकुलादियोग वर्णन ।

स्वात्यंतकाहिवसुपौष्णकरानुगधादित्य-
ध्रुवाणिविषमास्तिथयोऽकुलाःस्युः ॥
सूर्येन्दुमंदगुरवश्चकुलाकुलज्ञो मूलांबु
पेशविधिभं दशषट्द्वितिथ्यः ॥१६॥

अन्वयः—स्वात्यन्तकाहि वसु पौष्ण करानुराधादित्यध्रुवाणि विषमाः सूर्येन्दु मन्द गुरवः अकुलाः ज्ञो मूलाम्बुपेश विधिभं दशषट् द्वितिथ्यः कुलाकुल संज्ञकाः ॥१६॥

भाषार्थः—स्वाती, भरणी, अश्लेषा, धनिष्ठा, रेवती, हस्त, अनुराधा, पुनर्वसु तथा ध्रुव संज्ञा वाले नक्षत्र में विषम तिथियां इनकी तथा रवि चन्द्र शनि, गुरु इनकी अकुल और बुधवार मूल शतभिषा आर्द्रा अभिजित् ये नक्षत्र दशमी पण्डो द्वितीया तिथियों की कुल संज्ञा है ॥१६॥

पूर्वाश्वीज्यमघेन्दु कर्णदहनाद्रीशेन्द्रचित्रा स्तथा
शुक्रारौ कुलसंज्ञकाश्च तिथयोर्काष्ठेन्द्रवेदैर्मिताः ॥
यायीस्यादकुले जयोचं समरे स्थायी च तद्वत्कुले
सन्धिः स्यादुभयोः कुलाकुलगणे भूमी शयोर्यध्यतोः ॥१७॥

अन्वयः—पूर्वाश्वीज्यमघेन्दुकर्णदहनद्रीशेन्द्रचित्राः शुक्रारौ अर्काष्टेन्द्र वेदैर्मिताः कुल संज्ञकाः (भवन्तीति योज्यम्) अकुले समरे यायी (नृपतिः) जयी कुले स्थायी (स्वभवनविद्यमानः) विजयी कुलाकुलगणे युध्यतोः उभयोः (यायी स्थायी) भूमी-शयोः सन्धिः स्यात् ॥१७॥

भाषार्थः—तीनो पूर्वा, अश्विनी, पुष्य, मघा, मृगशिरा, श्रवण, कृतिका, विशाखा, ज्येष्ठा, चित्रा, शुक्र, मंगलवार, द्वादशी, अष्टमी, चतुर्दशी, चतुर्थी ये तिथियां

“कुल” कहलाती हैं “अकुल” में चढ़ाई करने वाले राजा का विजय “कुल” में स्थायी राजाका जय होता है कुलाकुल में यात्रा करने से परस्पर संधि होती है ॥१७॥

मार्ग में राहू विचार ।

स्युर्धमे दसपुण्योरगवसुजलपद्मीश मैत्राण्यथार्थे
याम्याजांघ्रीन्द्रकर्णादिति पितृपवनोद्हन्यथो भानि कामे ॥
वह्याद्राबुध्न्यचित्रानिर्ऋतिविधिभगाख्यानिमोक्षेथोहि-
रयाप्येद्वन्त्यर्क्षविश्वार्यमभदिन करर्क्षाणि पथ्यादिराहौ ॥१८॥

अन्वयः—अथ पथ्यादिराहौ दसपुण्योरग वसुजलपद्मीशमैत्राणि धर्मे स्युः । अथो याम्याजांघ्रीन्द्र कर्णादिति पितृपवनोद्हनि अर्थे स्युः । अथ वह्याद्राबुध्न्याचित्रानिर्ऋति विधि भगाख्यानि कामे । अथ रोहिण्याप्येद्वन्त्यर्क्ष विश्वार्यमभदिनकरर्क्षाणि मोक्षे स्युः ॥१८॥

ध०	अ०	का०	मो
अ	भ०	कृ०	रो०
पु०	पू०	आ०	मृ०
आ०	म०	पु०	उ०
वि०	स्वा०	वि०	ह०
अ०	ज्ये०	मू०	पू०
ध०	श्र०	श्र०	उ०
श०	पू०	उ०	रे०

भाषार्थः—धर्मस्थान में अश्विनी, पुष्य, अश्लेषा, धनिष्ठा, शतभिषा, विशाखा अनुराधा इन नक्षत्रों को रखे । अथ कोष्ठ में भरणी, पूर्वाभाद्रपद, ज्येष्ठा, श्रवण, पूनर्वसु, मघा, स्वाती नक्षत्रों को । काम कोष्ठ में कृतिका आर्द्रा उत्तराभाद्रपद, चित्रा, मूल, अभिजित्, पूर्वाफाल्गुनी को । मोक्ष कोष्ठ में रोहिणी, पूर्वाषाढ, मृगशिरा, रेवती उत्तराषाढ और उत्तरा फाल्गुनी हस्त इन नक्षत्रों को रखे । इसको पथ्यराहुचक्र कहते हैं ॥१८॥

राहुचक्र फलम् ।

धर्मगे भास्करे वित्तमोक्षे शशी वित्तगे धर्ममोक्षस्थितः शस्यते ।
कामगे धर्ममोक्षार्थगः शोभने मोक्षगे केवलं धर्मगः प्रोच्यते ॥१९॥

अन्वयः—धर्मगे भास्करे वित्तमोक्षे (विद्यमानः) शशी शस्यते वित्तगे भास्करे धर्ममोक्षस्थितः शशी शस्यते कामगे सूर्ये धर्ममोक्षस्थितः शशी शस्यते मोक्षगे सूर्ये धर्मगः शशी शोभनः प्रोच्यते ॥१९॥

भाषार्थ—सूर्य धर्ममार्ग में चन्द्रमा धन अथवा मोक्ष मार्ग में हो तो उत्तम फल होता है। अर्थ स्थान में सूर्य धर्म मोक्ष में चन्द्रमा हो तो यात्रा शुभ है। काम में सूर्य धर्म मोक्ष में चन्द्रमा हो तो शुभ होता है मोक्ष में सूर्य धर्ममार्ग में चन्द्रमा के होने पर भी शुभ होता है ॥१६॥

तिथिवक्त्र ।

पौषे पक्षत्यादिका द्वादशैवं तिथ्यो माघादौ द्वितीयादिकास्ताः ॥
कामात्तिष्ठः स्युस्तृतीयादिवेच्च याने प्राच्यादौ फलंतत्रवक्ष्ये
॥ २० ॥ सौख्यं क्लेशो भीतिरर्थागमश्च शून्यं नै श्वयं
निःस्वता मिश्रता च ॥ द्रव्यक्लेशो दुःखमिष्टातिरर्थो लाभः
सौख्यं मंगलं वित्तलाभः ॥ २१ ॥ लाभो द्रव्याप्तिर्धनं सौख्यमुक्तं
भीतिर्लाभो मृत्युरर्थागमश्च ॥ लाभः कष्टद्रव्यलाभः सुखं च कष्टः
सौख्यं क्लेशलाभो सुखंच ॥ २२ ॥ सौख्यं लाभः कार्यसिद्धिश्च
कष्टः क्लेशः कष्टात्सिद्धिरर्थो धनंच ॥ मृत्युर्लाभो द्रव्यलाभो च
शून्यं शून्यं सौख्यं मृत्युरत्यंतकष्टः ॥ २३ ॥

अन्वयः—पौषे पक्षत्यादिकाः माघादौ द्वितीयादिकाः तिथयः (ज्येष्ठाः) ताः उक्ताः
तिथयः क्रमात् (त्रयोदशीतः) तिष्ठः तृतीयादिवत् स्युः त्रयोदशी, चतुर्दशी पूर्णिमा चेति
तिष्ठः तृतीया चतुर्थी पञ्चमीवत् स्युः तत्र प्राच्यादौ याने फलं वक्ष्ये । सौख्यं, क्लेशः
भीतिः, अर्थागमः, शून्यं, नैः श्वयम्, निः स्वता, मिश्रता च, द्रव्यक्लेशः, दुःखं, इष्टार्थलाभः,
सौख्यं, मंगलं वित्तलाभः, लाभः, द्रव्याप्तिः, धनं सौख्यं, भीतिः, लाभः, मृत्युः, अर्था-
गमः, लाभः, कष्टं द्रव्यलाभः, सुखं, कष्टं, सौख्यं, लाभः, कार्यसिद्धिः, कष्टं, क्लेशः कष्टात्
सिद्धिः, अर्थः, धनञ्च, मृत्युः लाभः, द्रव्यलाभः, शून्यं, शून्यं, सौख्यं, अत्यन्त कष्टम् ॥ २० ॥
१२१२२२३॥

भाषार्थ—पौषमास में प्रतिपद से १२ तिथि और माघ फाल्गुण इत्यादि
द्वितीया तृतीया से १२ तिथि लिखे शेष ३ तिथि (त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा)
तिथियों को ३ तिथियों को (तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी) की भांति समझें (त्रयोदशी
को तृतीया की तरह इत्यादि) पूर्वादि यात्रा में इन तिथियों का फल इस प्रकार
होगा पौष प्रतिपद को पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर यात्रा में क्रमशः सौख्य, क्लेश-
भीति, धनागम होगा । द्वितीया को पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर यात्रा में शून्य,

निर्धनता, निर्धनता, मिश्रता फल है। तृतीया को पूर्वोक्त दिशाओं में यात्रासे द्रव्य-
क्लेश, दुःखप्राप्ति, द्रव्यप्राप्ति, धन मिलता है।

चतुर्थी को—यात्रा करने से लाभ, सौख्य, मंगल, धनलाभ।

पञ्चमी को—लाभ, द्रव्यप्राप्ति, धनप्राप्ति, सौख्य।

षष्ठी को—भय, लाभ, मृत्यु, अर्थान्तर।

सप्तमी को—लाभ, कष्ट, द्रव्यलाभ सुख।

अष्टमी को—कष्ट, सौख्य, क्लेश, सुख।

नवमी को—सौख्य, लाभ, कार्यसिद्धि, कष्ट।

दशमी को—क्लेश, कष्टसिद्धि, अर्थ, धन।

एकादशी को—मृत्यु, लाभ, द्रव्यलाभ, शून्य।

द्वादशी को—शून्य सौख्य, मृत्यु, अत्यन्त कष्ट होता है शेष भागों में इसी प्रकार
समझना चाहिये ॥२०१२१२२३॥

॥ अथ तिथिचक्रम ॥

पो. मा. का. चै. वै. ज्ये. आ. आ. भा. आ. का. मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२	सौख्यम्	क्लेशः	भारति	अर्थान्तरः
२ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १	शून्यम्	नैऋत्यं	नैऋत्यं	मिश्रता
३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १ २	द्रव्यक्लेशः	दुःख	द्र. प्रा.	अर्थः
४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १ २ ३	लाभः	सौख्यं	मंगल	वित्तलाभः
५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १ २ ३ ४	लाभः	द्र. प्रा.	धनशा.	सौख्यं
६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १ २ ३ ४ ५	भयभीतिः	लाभ	मृत्यु	अर्थान्तरः
७ ८ ९ १० ११ १२ १ २ ३ ४ ५ ६	लाभः	कष्टं	द्र. लाभः	सुखं
८ ९ १० ११ १२ १ २ ३ ४ ५ ६ ७	कष्टं	सौख्यं	क्लेश. ला.	सुख
९ १० ११ १२ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८	सौख्यम्	लाभः	का. सि.	कष्ट
१० ११ १२ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९	क्लेशः	क. सि.	अर्थः	धन
११ १२ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०	मृत्युः	लाभः	द्र. ला.	शून्यं
१२ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११	शून्यम्	सौख्यं	मृत्युः	अत्यन्तकष्टं

तिथ्यर्क्षवारयुतिरद्रिगजाग्नितष्टा स्थानत्रयेऽत्रवियति प्रथमेऽति-
दुःखी ॥ मध्ये धनक्षतिरथो चरमे मृतिः स्यात्स्थानत्रयेकयुजि-
सौख्यत्रयौ निरुक्तौ ॥२४॥

अन्वयः—तिथ्यर्क्षवारयुतिः स्थानत्रये (धृता) अद्रिगजाग्नितष्टा प्रथमे वियति
(यात्रा कारकः) अति दुःखी स्यात् मध्ये वियति धनक्षतिः अथो चरमे वियति मृतिः
स्थानत्रयेऽपि त्र्यङ्के (अत्रस्थिते) सौख्य जयः निरुक्तः ॥२४॥

भाषार्थ—यात्रा मुहूर्त जब हो उस दिन के तिथिवार नक्षत्र का योग कर ३
स्थानों में रखे क्रमशः तीनों में ७, ८, ९ का भाग दे ऐसा करने पर प्रथम में शून्य
का यात्रा कर्ता को दुःख होना यह फल है । द्वितीया का धननाश, तृतीय का मृत्यु
फल है तीनों में शून्य बचे तो सौख्य तथा जय होता है ॥२४॥

महाडल और भ्रमण दोष ।

रवेर्भतोब्जभोन्मितिर्नगावशेषिताव्यगा ।

महाडलोनस्यते त्रिषण्मिता भ्रमोभवेत् ॥२५॥

अन्वयः—रवेः भतः (सूर्य नक्षत्रात्) अब्जभोन्मितिः विधेया नगावशेषिता द्व्यगा
महाडलः (दोषः जायते) न शस्यते त्रिषण् मिताभ्रमः (योगः) भवेत् पूर्वोक्त महाडल इव
सोऽपि न शस्यते ॥२५॥

भाषार्थ—जिस नक्षत्र का सूर्य हो उससे चन्द्रनक्षत्र तक गिने और उसमें ७
का भाग दे शून्य बचने पर महाडल दोष होता है जो यात्रा के लिए अनिष्ट कारी
है ३ अथवा ६ बचने से “भ्रम” नामका दोष होता है वह भी यात्रा में
अनिष्ट कारक है ॥२५॥

हैम्बर योग ।

शशांकं सूर्यभतोत्रगण्यं पद्यादितिथ्या दिनवासरेण ।

युतंनवाप्तं नगशेषकंचेत् स्माद्धैवरं तद्गमनेतिशस्तम् ॥२६॥

अन्वयः—अत्र सूर्यभतः शशांकं भं गण्यं पद्यादि, तिथ्यादि, नवासरेण युतंनवाप्तं
नगशेषकं (भवतिचेत्) हैवरम् (योगं) गमने अतिशस्तम् भवतीति योज्यम् ॥२६॥

भाषार्थ—जिस नक्षत्र का सूर्य हो उससे चन्द्र नक्षत्र तक गिने उसमें तिथि-वार मिलाकर ६ का भाग दे ७ बचे तो “हैबर” योग होता है यह योग यात्रा के लिए अत्यन्त उत्तम है ॥२६॥

राशिक्रम से घातचन्द्र वर्णन ।

भूपचांकद्वयं गदिग्वहिसप्तवेदाष्टेशांकारचघाताख्यचन्द्रः ।

मेषादीनां राजसेवाविवादे यात्रायुद्धाद्ये च नान्यत्र वर्ज्यः ॥२७॥

अन्वयः—मेषादीनां भूपञ्चाङ्क द्वयङ्ग दिग्बहिः सप्त वेदाष्टेशांकारच घाताख्य चन्द्रः स्मृतः राज-सेवा विवाहे युद्धाद्ये च सः घाताख्यचन्द्रः वर्ज्य अन्यत्र कार्ये (एतद्गणनादन्यत्र सामान्य यात्रादौ) घाताख्यचन्द्रः न च वर्ज्यः ॥२७॥

भाषार्थ—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मीन राशि वालों को क्रमशः पञ्चम, नवम, द्वितीय, षष्ठ, दशम, तृतीय, सप्तम, चतुर्थ, अष्टम, एकादश, द्वादश चन्द्रघात है राजा की नोकरी, विवाह, युद्ध-कार्यों में वर्जित है अन्य कार्यों में नहीं ॥२७॥

घात नक्षत्र ।

आग्नेयत्वाष्ट्र जलपित्र्यवासवरौद्रभे ॥

मूलब्रह्माजपादक्षेपित्र्यमूलाजभेक्रमात् ॥२८॥

रामाद्वग्न्यग्निभूराम द्व्यवध्यग्न्यब्धियुगाग्नयः ॥

घातचन्द्रेधिष्यपादा मेषाद्वर्ज्या मनीषिभिः ॥२९॥

अन्वयः—आग्नेयत्वाष्ट्र जलपित्र्यवासवरौद्रभे मूलब्रह्माजपादक्षेपित्र्य मूलाजभे क्रमात् (घातचन्द्रा इति पूर्वेण सह सम्बन्धः) रामात् द्व्यग्न्यग्नि भूराम द्व्यग्न्यवध्य युगा-ग्नयः धिष्यपादाः मेषात् मनीषिभिः घातचन्द्रे वर्ज्याः ॥२८॥२९॥

भाषार्थ—मेषादि १२ राशियों के कृतिका, चित्रा, शतभिषा, मघा, धनिष्ठा, आर्द्रा, मूल, रोहिणी, पूर्वाभाद्रपद, मघा, मूल, उत्तराभाद्रपद ये १२ नक्षत्र घात-नक्षत्र हैं । किसी आचार्य का यह मत है कि मेषादि राशियों को कृतिकादि नक्षत्रों के क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय, तृतीय, प्रथम, तृतीय, द्वितीय, चतुर्थ, तृतीय चरण-घात है ॥२८॥२९॥

तिथि घात विचार ।

गोस्त्रीभूषे घाततिथिस्तु पूर्णा भद्रानृत्युक्कटकेथ नन्दा ।
कौर्ष्याजयोर्नक्रघटे च रिक्ता जया धनुः कुम्भहरौ न शस्ता ॥३०॥

अन्वयः—गोस्त्रीभूषे पूर्णा घाततिथिः, अथ नृत्युक्कटके भद्रा, कौर्ष्याजयोः नन्दा, नक्र घटे रिक्ता, धनुः कुम्भहरौ जया न शस्ता । प्रकरणात् यात्रायाम् ॥३०॥

भाषार्थः—वृष, कन्या, मीन राशिको पूर्णातिथि (पञ्चमी, दशमी, पूर्णिमा) मिथुन कर्क को भद्रा (द्वितीया द्वादशी सप्तमी) वृश्चिक, मेष को नन्दा (प्रतिपद-षष्ठी, एकादशी) मकर तुला को रिक्ता चतुर्थी, चतुर्दशी, नवमी, धन, कुम्भ, सिंह राशि को जया (तृतीया त्रयोदशी, अष्टमी) ये घात तिथि हैं ॥३०॥

घातवार विचार ।

नक्रे भौमो गोहरिस्त्रीषु मंद्श्चन्द्रो द्वन्द्वेऽर्कोजभेज्जश्चकर्के ।
शुक्रः कोदण्डालिमीनेषु कुम्भेर्जु कै जीवोघात वारा न शस्ताः ॥३१॥

अन्वयः—नक्रे भौमः, गोहरिस्त्रीषु मन्दः, द्वन्द्वे चन्द्रः, अजभे अर्कः, कर्केजः, कोदण्डालिमीनेषु जीवः घातवारा एते न शस्ताः ॥३१॥

भाषार्थः—मकर राशिवालों को मंगलवार, वृष, सिंह, कन्या राशिवालों को शनिवार, मिथुन को सोमवार, मेष को रविवार, कर्क को बुधवार, धन, मीन, वृश्चिक को शुक्रवार । कुम्भ को बृहस्पतिवार घात है यात्रा के वास्ते अति निषिद्ध है ॥३१॥

पुनः घात नक्षत्रों का विचार ।

मघाकरस्वातिमैत्रमूलश्रुत्यंबुपान्त्यभम् ।
याम्य ब्राह्मैशार्पच मेषादेर्घातभं न सत् ॥३२॥

अन्वयः—मघाकरस्वाति मैत्रमूल श्रुत्यम्बुपान्त्यभम् याम्य ब्राह्मेशार्प च मेषादेर्घातभं तत् न सत् ॥३२॥

भाषार्थः—मेवादि १२ राशियों को क्रमशः मघा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, शतभिषा रेवती, भरणी, रोहिणी, कुम्भ, आर्द्रा, अश्लेषा ये घात लग्न हैं ये यात्रा में अशुभ हैं ॥३२॥

घात लग्नों का विचार ।

भूमिद्वयद्रिदिक् सूर्या गाष्टां केशाग्निसायकाः ।

मेषादिघातलग्नानि यात्रायां वर्जयेत्सुधीः ॥ ३३ ॥

अन्वयः—भूमिद्वयद्विदिक् सूर्या गाष्टां केशाग्नि सायकाः मेषादि घात लग्नानि-
सुधीः यात्रायां वर्जयेत् ॥३३॥

भाषार्थः—मेवादि १२ राशियों को क्रम से मेष, वृष, कर्क, तुला, मकर, मीन कन्या, वृश्चिक, कुम्भ, मिथुन सिंह ये घात लग्न है यात्रा में अति निन्दित हैं ॥३३॥

पूर्वादि दिशाओं में घात तिथि योगिनी दोषः ।

नवभूम्यः शिववह्नयोऽर्क्ष विश्वेऽर्क्षकृताऽशक्ररसास्तुरंगतिथ्यः ।

द्विदिशोऽमावसवश्च पर्वतः स्युस्तिथयः संमुखवामगानशस्ता ॥ ३४ ॥

अन्वयः—पूर्वतः (प्राचीं दिशमारभ्य दशदिक्षु योगिनी ज्ञेया) यथा प्राच्यां नव-
भूम्यः, अग्निकोणे शिववह्नयः, दक्षिणस्यां अर्क्षविश्वे, नैऋत्यां अर्क्षकृताः, पश्चिमायां
शक्ररसाः, वायव्ये तुरंग तिथ्यः, उत्तरस्यां द्विदिशः, ईशाने अमावसवः संमुखवामगा-
न शस्ताः ॥३४॥

भाषार्थः—अतिपद नवमी को पूर्व में एकादशी द्वितीया को अग्निकोण में,
पंचमी त्रयोदशी को दक्षिण में, चतुर्थी, द्वादशी को नैऋत्यकोण में, षष्ठी चतुर्दशी
को पश्चिम में, सप्तमी अमावस्या को वायव्य कोण में, द्वितीया दशमी को उत्तर में
अमावस्या अष्टमी को ईशानकोण में योगिनी बसती है वह सन्मुख, वाम अशुभ
और इससे विपरीत (दक्षिण-पृष्ठ) में शुभ है ॥३४॥

काल पाश वर्णन ।

कौवेरीतोवैपरीत्येन कालोवारेकाद्ये सन्मुखेतस्य पाशः ।

रात्रावेतोवैपरीत्येन गण्यौ यात्रायुद्धे संमुखे वर्जनीयौ ॥ ३५ ॥

अन्वयः—कौवेरीतः अर्काद्ये वारे वैपरीत्येन कालाः तस्य सम्मुखे पाशः एतौ रात्रौ वैपरीत्येन गण्यौ यात्रायुद्धे सम्मुखे सदा वर्जनीयौ ॥३५॥

भाषार्थः—रवि इत्यादि वारों में उत्तर दिशा से उलटी चाल से कालपाश जानना रवि को उत्तर, सोम को वायव्य मंगल को पश्चिम, बुध को नैऋत्य, वृहस्पति को दक्षिण, शुक्र को अग्निकोण, शनि को पूर्व में काल और सम्मुख में पाश रहता है । जैसे उत्तर में काल तो दक्षिण में पाश पूर्व में काल तो पश्चिम में पाश होगा ॥३५॥

परिघदंड योग ।

पूर्वादिषु चतुर्दिषु सप्तसप्तानलक्षतः ।
वायव्याग्नेयदिक्संस्थं परिघं नैवलंघयेत् ॥३६॥

अन्वयः—पूर्वादिषु दिक्षु अनलक्षतः सप्त सप्त वायव्याग्नेय दिक् संस्थं परिघं न उल्लंघयेत् ॥३६॥

भाषार्थः—कृतिका से ७ नक्षत्र पूर्व, मघा से ७ नक्षत्र दक्षिण, अनुराधा से ७ नक्षत्र पश्चिम, धनिष्ठा से ७ नक्षत्र उत्तर में रखे और वायव्य आग्नेय दिशा परिघ है उसका यात्रा समय में उल्लंघन न करे ॥३६॥

परिघदंड का परिहार ।

अग्नेर्दिशं नृप भयात्पुरुहूतदिग्भैरेवं प्रदक्षिणगताविदि-
शोऽथकृत्ये ॥ आवश्यकैपिपरिघं प्रविलंघ्य गच्छेच्छूलंविहाय यदि
दिग्गनुशुद्धिरस्ति ॥३७॥

अन्वयः—नृपः पुरुहूतदिग्भैः अग्नेः दिशं इयात् एवं विदिशः प्रदक्षिण गतौ आवश्यकै कृत्ये परिघं प्रविलंघ्य यदि दिक्गनु शुद्धिः अस्ति शूलं विहाय गच्छेत् ॥३७॥

भाषार्थः—राजा पूर्व दिशा के जाने योग्य नक्षत्रों में (कृतिकादि) अग्निकोण की यात्रा करे एवं दक्षिण दिशा के नक्षत्रों में नैऋत्यकोण, पश्चिम दिशा के नक्षत्रों में वायव्यकोण, उत्तर के नक्षत्रों में इशान कोण की यात्रा करना चाहिए । आवश्यक कार्य के उपस्थित होने पर दिशा लग्न शुद्ध हो तो पश्चिम को छोड़ कर दिक्शूल को त्याग कर यात्रा करे ॥३७॥

सर्वदिग्द्वार नक्षत्र तथा केन्द्र में वक्री ग्रह का विचार ।

मैत्रार्कपुष्याश्विनिभैर्निरुक्ता यात्राशुभासर्वदिशासुतज्जैः ।
वक्रीग्रहः क्रैद्गतोस्यवर्गे लग्ने दिनं चास्यगमे निषिद्धम् ॥३८॥

अन्वयः—मैत्रार्क पुष्याश्विनिभैः सर्वदिशासु तज्जैः यात्रा शुभा निरुक्ता वक्री ग्रहः केन्द्रगतः अथवा अस्य लग्ने षड्वर्गः (तदा) अस्य दिने गमने निषिद्धम् उक्तं पूर्वाचार्यैः ॥३८॥

भाषार्थः—चाहे जिस दिशा में जाना हो अनुराधा, हस्त, पुष्य, अश्विनी इन नक्षत्रों में जा सकते हैं अतएव इन नक्षत्रों को (चतुर्द्वारी) नक्षत्र कहते हैं । किन्तु वक्री ग्रह केन्द्र में हो तो उत्तम नहीं वक्री ग्रह के लग्न में षड्वर्ग दिन भी यात्रा के लिए शुभ प्रद नहीं है ॥३८॥

यात्रा में अयनशूल शुद्धि वर्णन ।

सौम्यायने सूर्यविधुत्तदोत्तरं प्राचित्रजेत्तौयदि दक्षिणायने ।
प्रत्यग्यमाशां च तयोर्दिवानिशं भिन्नायचत्वेथ वधोन्यथाभवेत् ॥३९॥

अन्वयः—यदि सूर्य विधू सौम्यायने (उत्तरायणे-भवेताम्) उत्तरं प्राचीं व्रजेत् तावेव दक्षिणायने (विद्यमानो भवेताम्) प्रत्यग् यमाशां (यायात्) अथ तयोः भिन्नायनत्वे दिवानिशं व्रजेत् (अपरथा) मरणं भवेत् ॥३९॥

भाषार्थ—सूर्य तथा चन्द्रमा उत्तरायण हों तो पूर्व और उत्तर दिशा में, दक्षिणायन सूर्य हो तो दक्षिण पश्चिम दिशा में सूर्य चन्द्र के अयन भिन्न भिन्न हों तो सूर्य दक्षिणायन हो तो दक्षिण यात्रा दिन में और चन्द्रमा में चन्द्रमा के अनुसार रात्रि में गमन करे इसके अनुकूल जो नहीं चलता है उसकी अवश्य मृत्यु होती है ॥३९॥

संमुख शुक्र दोष ।

उदेति यस्यादिशियत्र याति गौडभ्रमाद्वाथ ककुब्भसंधे ।
त्रिधोच्यते संमुख एव शुक्रा यत्रोदितस्तां तु दिशं न यायात् ॥४०॥

अन्वयः—शुक्रः यस्यां दिशिः उदेति । गोलभ्रमात् (उत्तर दक्षिण गोल भ्रमण वशात् । यस्यां दिशि उत्तरस्यां दक्षिणस्यां वा) यत्र याति । यत्र ककुम्भ संख्ये प्राच्यादि दिशायाम् कृतिकादि न्यास वशेन यदिने नक्षत्रे चरति । एवं शुक्रस्त्रिधोक्तः सः यत्र दिशि उदितस्तत्र न यायत् ॥४०॥

भाषार्थः—शुक्र तीन प्रकार से सम्मुख कहलाता है १ शुक्र जिस दिशा में उदय होता है (समय वश पूर्वादि दिशाओं में उदित होता है) उस दिशा को जाने वाले पुरुष को शुक्र सम्मुख पड़ता है । २ उत्तर या दक्षिण गोल भ्रमण के कारण जिस दिशा (दक्षिण अथवा उत्तर) में जाता है, और उसी दिशा को जाने वाले मनुष्य को शुक्र सम्मुख होता है । ३ जो नक्षत्र दिशाओं के कहे हैं उसपर शुक्र हो इस प्रकार तीन भेद सम्मुख शुक्र का है जिस दिशा में शुक्र हो उस दिशा में यात्रा नहीं करनी चाहिये ॥४०॥

वक्रास्तादि दोष ।

वक्रास्तनीचोपगतेभृगोःसुते राजात्रजन् यातिवशंहिविद्विषाम् ।
बुधोनुकूलो यदि तत्र संचलन् रिपून् जयेन्नैव जयः प्रतीन्दुजे ॥४१॥

अन्वयः—भृगोः सुते वक्रास्तनी चोपगते व्रजन् राजा विद्विषां वशं याति यद्विबुधः अनुकूलः स्यात् तदा व्रजन् राजा रिपून् जयेत् प्रतीन्दुजे नैव नैव जयः ॥४१॥

भाषार्थः—राजा शत्रु पर चढ़ाई किये हैं उस समय शुक्र, वक्रि, अस्त, नीच का है तो राजा शत्रुओं के वश में आजाता है बुध अनुकूल हो तब यात्रा करने वाला राजा शत्रुओं को नीचा दिखाता है बुध के प्रतिकूल स्थान में होते हुए में यात्रा करने वाले राजा का जय नहीं होता ॥४१॥

सम्मुख शुक्र का परिहार ।

यावच्चन्द्रःपूषाभात्कृतिकाद्ये पादेशुक्रोन्धोनदुष्टो ग्रहर्त्ते ।
मध्येमार्गे भार्गवास्ते च राजा यावत्तिष्ठेत्संमुखत्वेत्पितस्य ॥४२॥

अन्वयः—पूषभात् कृतिकाद्ये पादे यावच्चन्द्रः तिष्ठति (तावत्) शुक्रः अन्धः न दुष्टः राजा मध्ये मार्गोऽपि भार्गवास्ते तस्य सम्मुखत्वेऽपि (शुद्धि तावत्) तिष्ठेत् ॥४२॥

भाषार्थः—रेवती के प्रारम्भ से कृतिका के आदि चरण तक शुक्र ग्रन्थ रहता है उसमें सन्मुख और दक्षिण (पूर्व कथित) दाप नहीं लगता, पापी राजा शत्रुपक्ष चढ़ाई कर चुका है रास्ते में शुक्रास्त अथवा सन्मुख शुक्र आ पड़ा है तो जब तक शुद्धि (शुक्र शुद्धि) न हो तब तक राजा आगे को यात्रा न करे। हां शुक्र के शुद्ध होने पर वह (राजा) यात्रा कर सकता है ॥४२॥

यात्रा में निषिद्ध लग्न ।

कुम्भकुम्भांशकौ त्याज्यौ सर्वथा यत्नतोबुधैः ।
तत्र प्रयातुर्नृपेतरर्थनाशः पदे पदे ॥४३॥

अन्वयः—तत्र बुधैः यत्नतः कुम्भ कुम्भांशकौ त्याज्यौ तत्र प्रयातुः पदे पदे अर्थनाशः भवतीति विद्वद्विरुक्तम् ॥४३॥

भाषार्थः—यात्रा समय में कुम्भलग्न अथवा कुम्भ का नवांशा सर्वथा त्याज्य है इसमें जाने वाले राजा का सम्पत्ति नाश होता है ॥४३॥

इष्टानिष्टलग्न ।

अथ मीनलग्ने उतवातदंशके चलितस्य वक्रमिहवर्त्मजायते ।
जनिलग्नजन्मभपती शुभग्रहौ भवतस्तदा तदुदये शुभोगमः ॥४४॥

अन्वयः—अथ मीन लग्ने उत तदंशके चलितस्य नृपतेः वर्त्म तिर्यक् जायते जनिलग्न जन्मभपती शुभग्रहौ (भवतः) तस्मिन् समये गमः शुभः ॥४४॥

भाषार्थः—राजा, यात्रा मीन लग्न में अथवा मीन की नवांशा में करता है तो राजा पीछे लौट आता है जन्म लग्न और जन्म नक्षत्र का स्वामी शुभ ग्रह हो तो यात्रा उत्तम फल देने वाली होती है ॥४४॥

दूसरा योग ।

जन्मराशितनुतोऽष्टमेऽथवा स्वारिभाच्च रिपुभेतनुस्थिते ।
लग्नगां तदधिपा यदाथवा स्युर्गतं हि नृपतेः मृतिप्रदम् ॥४५॥

अन्वयः—जन्मराशितनुतः अथवा अष्टमे (राशौ) स्वारिभात् रिपुमे तनुस्थिते तदधिपा यदा-अथवा लग्नगाः स्युः तदा नृपतेः गतं मृतिप्रदम् भवतीति शेषः ॥४५॥

भाषार्थः—लग्न यदि जन्म राशि वा जन्म लग्न से अष्टम स्थान में हो और जिस शत्रु पर चढ़ाई की गई है उस शत्रु की राशि और लग्न पटस्थान में हो अथवा राशि (अपनी) अष्टम और शत्रु की पट में हो और उसका स्वामी लग्नस्थ हो तो राजा यात्रा न करे करेगा तो उसकी अवश्य मृत्यु होगी ॥४५॥

शुभलग्न वर्णन ।

लग्ने चन्द्रेवापि वर्गोत्तमस्थे यात्रा प्रोक्ता वाञ्छितार्थैकदात्री ।
अम्भोराशौ वा तदंशे प्रशस्तं नौकायानं सर्वसिद्धिप्रदायि ॥४६॥

अन्वयः—चन्द्रे लग्ने वा वर्गोत्तमस्थे (यात्रा) वाञ्छितार्थैकदात्री भवतीति शेषः
अम्भोराशौ तदंशे वा नौकायानं सर्व सिद्धिप्रदायि प्रशस्तं भवतीति शेषः ॥४६॥

भाषार्थ—मीन कुम्भ को छोड़ अन्य किसी लग्न में चन्द्रमा हो अथवा वर्गोत्तम में हो तो यात्रा मन चाहे फल को देती है जलचर राशि अथवा उसके नवांश में नौका पर चढ़कर यात्रा करना समस्त सिद्धि को देने वाला है ॥४६॥

अन्य प्रकार से लग्न दिग्द्वारलग्न वर्णन ।

दिग्द्वारभं लग्नगते प्रशस्ता यात्रार्थदात्री जयकारिणी च ।
हानिं विनाशं स्थिरतो भयं च कुर्यात्तथा दिक्प्रतिलोमलग्ने ॥४७॥

अन्वयः—दिग्द्वारमे लग्नगते यात्रा अर्थदात्री जयकारिणी च प्रशस्ता स्यात् तथा दिक्प्रतिलोमलग्ने (यात्रायां क्रियमाणायाम्) हानिं विनाशं रिपुतः भयं च कुर्यात् ॥४७॥

भाषार्थः—दिग्द्वारी राशि के लग्न में यात्रा करने से धनप्राप्ति और जय होता है इससे भिन्न में यात्रा करने से हानि, विनाश और शत्रुओं से भय प्राप्त होता है ॥४७॥

राशिः स्वजन्मसमये शुभसंयुतो यो यःस्वारिभान्निधनगोऽपि
च वेशिसंज्ञः ॥ लग्नोपगः स गमने जयदोथ भूपयोगैर्गमो-
विजयदो मुनिभिः प्रदिष्टः ॥४८॥

अन्वयः—स्वलग्नसमये यः राशिः शुभ संयुतः यः राशिः स्वारिमात् निधनगोऽपि
अथवा यः वेशिसंज्ञः लग्नोपगः स्यात् सः मुनिभिः गमने जयदः प्रोक्तः । अयमूपयोगैः गमः
(गमनं) मुनिभिः विजयदः प्रदिष्टः ॥४८॥

भाषार्थः—यात्रा समय के लग्न में यदि राशि शुभग्रह से युक्त अथवा शत्रु
जन्म लग्न से अष्टम राशि राजा के लग्न में हो या सूर्याक्रान्त राशि से राजलग्न
दूसरी राशि के लग्न में हो ऐसा यात्रा मुहूर्त यात्रा में विजय देता है ॥४८॥

दिक्स्वामी कथन ।

सूर्यः सितो भूमिसुतोऽथ राहुः शनिः शशीज्ञश्च बृहस्पतिश्च ।
प्राच्यादितो दिक्षु विदिक्षु चापि दिशामधीशाः क्रमतः प्रदिष्टाः ॥४९॥

अन्वयः—अथ प्राच्यादितः दिक्षु विदिक्षु चापि सूर्यः सितः भूमिसुतः राहुः शनिः
शशी ज्ञः बृहस्पतिश्च क्रमतः दिशामधीशाः प्रदिष्टाः ॥४९॥

भाषार्थः—पूर्व, अग्निकोण, दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर,
ईशानकोण इन दिशाओं के क्रमः सूर्य, शुक, मंगल, राहु, शनि, चन्द्रमा, बुध,
बृहस्पति स्वामी हैं ॥४९॥

दिक्स्वामिप्रयोजन ।

केन्द्रे दिग्धीशे गच्छेदवनीशः ।
लालाटिनि तस्मिन्नेयादरिसेनाम् ॥५०॥

अन्वयः—दिग्धीशे केन्द्रे अवनीशः गच्छेत् तस्मिन् लालाटिनि अरिसेनाम् न
इयात् ॥५०॥

भाषार्थः—दिशा का स्वामी केन्द्र में हो तो राजा यात्रा करे लालाटिक योग
में यात्रा न करे यह (लालाटिक योग) यात्रा के लिये शुभ दायक नहीं है ॥५०॥

लालाटिक योग ।

प्राच्यादौ तरणिस्तनौ भृगुसुतो लाभव्यये भूसुतः कर्मस्थोऽथ तमो
नवाष्टमगृहे सौरिस्तथा सप्तमे ॥ चन्द्रः शत्रुगृहात्मजैऽपि च बुधः पाताल

गोः गीष्पतिः वित्तभ्रातृगृहे विलग्नसदनाल्लालाटिकाः कीर्तिताः ॥५१॥

अन्वयः—अथ प्राच्यादौ विळग्न सदनात् तरणिः तनौ, भृगुमुतः लाभ व्यये, भूसुतः कर्मस्थः, तमः नवाष्टमगृहे, सौरिः सन्तमे, चन्द्रः शत्रुगृहात्मजे, बुधः पाताळगः, गीष्पतिः वित्तभ्रातृगृहे लालाटिकः कीर्तितः ॥५१॥

भाषार्थः—लग्न स्थान में सूर्य हो तो पूर्व में लालाटिक योग होता है, एवं ११, १२ में शुक्र के होने से अग्निकोण में दशम में मंगल के होने पर दक्षिण में ८ वें ९ वें में राहु हो तो नैऋत्य में, ७ वें में शनि हो तो पश्चिम में ६ वें ५ वें में चन्द्र हो तो वायव्यकोण में ७ वें में बुध हो तो उत्तर में द्वितीय तृतीय में बृहस्पति हो तो ईशान में लालाटिक योग होता है यह यात्रा के वास्ते उत्तम नहीं है ॥५१॥

पर्युषित योग वर्णन ।

मृगे गत्वा शिरे स्थित्वादितौ गच्छन् जयेद्विपुन् ।

मैत्रे प्रस्थाय शाक्रे हि स्थित्वा मूले व्रजन्तथा ॥५२॥

अन्वयः—मृगे गत्वा शिरे स्थित्वा अदितौ गच्छन् रिपून् जयेत् मैत्रे प्रस्थाय शाक्रे स्थित्वा मूले व्रजन् हि शत्रून् जयेत् ॥५२॥

भाषार्थ—मृगशिरा में घर से निकलकर आर्द्रा में रुक कर पुनर्वसु में यात्रा करने वाला शत्रु को जीतता है। एवं अनुराधा में प्रस्थान कर पुनर्वसु में रुककर (तिस्ती स्थान में) पुष्य में यात्रा (कूच) करने वाला विजय प्राप्त करता है ॥५२॥

प्रस्थाय हस्तेऽनिलतक्षधिष्णये स्थित्वा जयार्थी प्रवसेद्द्विदवे ।

वस्वन्त्यपुष्ये निजसीम्नि चैके रात्रीषितः दमां लभतेऽवनीशः ॥५३॥

अन्वयः—जयार्थी हस्ते प्रस्थाय अनिलतक्षधिष्णये स्थित्वा द्विदवे प्रवसेत् वस्वन्त्य-पुष्ये प्रस्थाय निजसीम्नि एकरात्रोषितः अवनीशः दमां लभते ॥५३॥

भाषार्थ—अपना विजय चाहने वाला मनुष्य हस्त में प्रस्थान कर चित्रा स्वाती में रुककर विशाखा में यात्रा करता है तो विजयी होता है रेवती, धनिष्ठा, पुष्य में प्रस्थान कर अपनी सीमा में १ रात्रि रहकर यात्रा करने वाला राजा भूमि पाता है ॥५३॥

समय बल ।

उषःकालो विना पूर्वां गोधूलिःपश्चिमां विना ।
विनोत्तरां निशीथः सन् याने याम्यां विनाऽभिजित् ॥५४॥

अन्वयः—पूर्वां विना उषःकालः, पश्चिमां विना गोधूलिः, उत्तरां विना निशीथः याम्यां विना अभिजित् याने सन् ॥५४॥

भाषार्थः—पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण दिशाओं में क्रमशः उषः काल (प्रातः काल) गोधूलि (सायंकाल) अर्धरात्रि (आधीरात) तथा अभिजित् समय निन्दित है इस में यात्रा न करे ॥५४॥

लग्नादि बारह भावों की संज्ञा ।

लग्नाद् भावाः क्रमाद्देहकोशधानुष्कवाहनम् ।
मंत्रोरिमर्गिआयुश्च हृद्व्यापारा गमव्ययाः ॥५५॥

अन्वयः—लग्नात् क्रमात् देह, कोष, धानुष्क, वाहनं, मंत्रः, अरिः, मार्ग, आयुः, हृद्व्यापाराः, आगमव्ययाः भावाः कथिता इति शेषः ॥५५॥

भाषार्थः—लग्न से १२ स्थानों की ये संज्ञाएँ होती हैं लग्नकी देह, द्वितीय की कोष, तृतीयकी धानुष्क, चतुर्थ की वाहन, पञ्चम की मंत्र, षष्ठ की अरि, सप्तम की मार्ग, अष्टम की आयु, नवमकी हृत्, दशमकी व्यापार, एकादश की लाभ, १२ की व्यय यह संज्ञा है ॥५५॥

केन्द्रादि में शुभग्रह विचार ।

केन्द्रे कोणे सौम्यखेटाः शुभा स्युर्याने पापस्त्रयायषट्खेषु चन्द्रः ।
नेष्टो लग्नान्त्यारिंघ्रे शनिः खेऽस्थे शुक्रो लग्नेट् नगा-
न्त्यारिंघ्रे ॥५६॥

अन्वयः—सौम्य खेटाः केन्द्रे कोणे स्युः (तदा) याने ते शुभाः पापः त्रयायषट्खेषु शुभाः चन्द्रः लग्नान्त्यारिंघ्रे नेष्टः शनि खे (नेष्टः) शुक्रः अस्ते (नेष्टः) लग्नेट् नगान्त्यारिंघ्रे नेष्टः ॥५६॥

भाषार्थ—केन्द्र में (लग्न, चतुर्थी, सप्तम, दशम, नवम, पञ्चम) शुभग्रह, तृतीय, एकादश, षष्ठ, दशम, में पापग्रह हो तो यात्रा में शुभ है । चन्द्रमा प्रथम, द्वादश, षष्ठ, अष्टम, में अशुभ है एवं लग्नेश सप्तम, द्वादश, षष्ठ, अष्टम स्थान में हो तो परम अशुभ है ॥५६॥

यात्रा से राजा और ब्राह्मणों का योग नक्षत्रादि का बल ।

योगात्सिद्धिर्धरणिपतीनामृक्षगुणैरपि भूदेवानाम् ॥ चौराणामपि शुभशकुनैरुक्तो भवति मुहूर्तादपि मनुजानाम् ॥५७॥

अन्वयः—धरणीपतीनां योगात्, भूदेवानाम् ऋक्षगुणैः अपि, चौराणां शुभशकुनैः अपि, मनुजानाम् मुहूर्तादपि सिद्धिः भवतीति मुनिमिरुक्तम् ॥५७॥

भाषार्थ—राजा, ब्राह्मण, चोर साधारण मनुष्यों के यात्रा की सिद्धि क्रमशः ऋषियों ने योग, नक्षत्रगुण, शुभशकुन, और मुहूर्त से कहा है ॥५७॥

योग यात्रा में लग्नशुद्धि ।

सहजे रविर्दशमगश्च शशी तथा शनिमंगलौ रिपुगृहे सितः सुते ।
हिवुके बुधो गुरुः पीह लग्नगः स जयत्यरीन् प्रचलितोऽचिरान्नृपः ॥५८॥

अन्वयः—रविः सहजे शशी दशमभे तथा शनिमंगलौ रिपुगृहे सितः सुते बुधः हिवुके, गुरुः अपि इह लग्नगः (एतस्मिन् समये) प्रचलितः नृपतिः अचिरात् अरीन् जयति ॥५८॥

भाषार्थ—तृतीय में सूर्य दशम में चन्द्र, शनि, मंगल, लग्न में बुध बृहस्पति, चतुर्थी में शुक, हो तो राजा शत्रुविजय कर शीघ्र लौटता है ॥५८॥

दूसरा योग ।

भ्रातरि सौरिभूमिसुता वैरिणि लग्ने देवगुरुः ।
आयगतेर्के शत्रुजयश्च चेदनुकूलो दैत्यगुरुः ॥५९॥

अन्वयः—भ्रातरि सौरिः वैरिणि भूमिसुतः लग्ने देवगुरुः अर्के आयगते दैत्यगुरुः अनुकूलः चेत् शत्रुजयः (योगः) स्यात् ॥५९॥

भाषार्थः—यात्रा समय में शनि तृतीय, मंगल षष्ठ, बृहस्पति लग्न, सूर्य एकादश, स्थानों में हों तथा शुक्र अनुकूल हो तो शत्रुञ्जय नामका योग होता है अर्थात् ऐसे समय में यात्रा करने वाला राजा शत्रु का पराजय कर घर लौटता है ॥५६॥

लग्न वश से दूररा योग ।

तनौ जीव इन्दुमृतौ वैरिगर्कः
जयत्येव प्रयातो महीन्द्रो शत्रून् ॥६०॥

अन्वयः—तनौ जीवः मृतौ इन्दुः अर्कः वैरिगः भवति चेत् महीन्द्रः शत्रून् जयति एव ॥६०॥

भाषार्थः—लग्न में बृहस्पति, अष्टम में चन्द्रमा, षष्ठ स्थान में सूर्य हों तो राजा (चढ़ाई करने वाला) अवश्य विजयी होता है ॥६०॥

राजविजय संज्ञक योग ।

लग्नगतः स्याद्देवपुरोधाः ॥ लाभधनस्थैः शेषनभोगैः ॥६१॥

अन्वयः—देवपुरोधाः लग्नगतः शेषनभोगैः लाभ धनस्थैः (सद्भिः) राजा शत्रून् जयत्येवेति पूर्वलोका सम्बन्धः ॥६१॥

भाषार्थः—बृहस्पति लग्न में शेषग्रह लाभ, धन स्थान में हों तो भी राजा शत्रु विजयी होता है ॥६१॥

जयशाली योग ।

यूने चन्द्रे समुदयगेऽर्के जीवेशुके विदि धनसंस्थे ।
ईदृग्योगे चलति नरेशो जेता शत्रून् गरुड इवाहीन् ॥६२॥

अन्वयः—चन्द्रे यूने अर्के समुदयगते जीवेशुके विदि धनसंस्थे ईदृग्योगे यदि नरेशः चलति (तर्हि) अहीन् गरुड इव शत्रून् जेता ॥६२॥

भाषार्थः—सप्तम में चन्द्र, लग्न में सूर्य, द्वितीय में बृहस्पति शुक्र बुध, हों तो जैसे गरुड़ साँपों का नाश कर डालता है उसी भांति राजा शत्रुओं का संहार करता है ॥६२॥

तथा दूसरा योग ।

वित्तागतः शशिपुत्रो भ्रातरि वासरनाथः ।

लग्नगते भृगुपुत्रः स्युः शलभा इव सर्वे ॥६३॥

अन्वयः—शशिपुत्रः वित्तगतः वासरनाथः भ्रातरि भृगुपुत्रे लग्नगते सर्वे शत्रवः शलभाः इव शमं यान्ति ॥६३॥

भाषार्थः—बुध द्वितीय में और सूर्य तृतीय में शुक्र लग्न में हों तो जैसे अग्नि में फर्तींगे जल मरते हैं उसी भाँति अग्नि तुल्य उस राजा के तेज से राजा गण फर्तींगे से होकर भस्म हो जाते हैं ॥६३॥

शत्रु सेनावश योग ।

उदये रविर्यदि सौरिरिगिः शशी दशमेऽपि ।

वसुधा पतिर्यदि याति रिपुबाहिनी वशमेति ॥६४॥

अन्वयः—यदि उदये रवि सौरिः अरिगिः शशी दशमे तदा वसुधापतिः यदि याति रिपुबाहिनी वशं एति ॥६४॥

भाषार्थः—सूर्य लग्न में शनि षष्ठम में चन्द्रमा दशम में हो तो ऐसे समय में यात्रा करने वाले राजा के वश में शत्रु सेना आ पड़ती है ॥६४॥

तथा अन्य योग ।

तनौ शनिकुजौ रविर्दशममे बुधो भृगुसुतोऽपि लाभदशमे ।

त्रिलाभरिपुमेषु भूसुतशनिगुरुभृगुजास्तथा बल्युताः ॥६५॥

अन्वयः—तनौ शनिकुजौ रविः दशममे बुधः भृगुसुतोऽपि लाभ दशमे त्रिलाभ रिपुमेषु तथा भूसुतशनिगुरुभृगुजाः (भवेयुस्तर्हि) राजोवशं यान्ति शत्रु निकराः ॥६५॥

भाषार्थः—लग्न में बृहस्पति, रक्तम में चन्द्र, चतुर्थ में बुधादि पाप ग्रह हो तो शत्रु समूह राजा के वश में होता है ॥६५॥

तथा अन्य योग ।

समुदयगे विबुधगुरौ मदनगते हिमकरणे ।

हिबुकगतौ बुधभृगुजौ सहजगताः खलखेत्राः ॥६६॥

अन्वयः—विबुधगुरौ समुदयगे हिमकिरणे मदनगते बुध भृगुजौ हिबुकगतौ खल-
खेत्राः सहजगताः तदापि शत्रवो यायिराज्ञां वशी भवन्ति ॥६६॥

भाषार्थः—लग्न में बृहस्पति चन्द्र सप्तम में चतुर्थ में बुध शुक्र, तृतीय में शेष
पाप ग्रह हो तो शत्रुगण राजा के वश में होते हैं ॥६६॥

अब और भी यात्रा योग कहते हैं ।

तृदशगुरुस्तनुगे मदने हिमकिरणो रविशायगतः ।

शितशशिजावपि कर्मगतौ रविसुतभूमिसुतः सहजे ॥६७॥

अन्वय—त्रिदशगुरुः तनुगः हिमकिरणः मदने रविः शायगतः शित शशिजौ कर्म-
गतौ रविसुत भूमिसुतौ सहजे तदापि नरपतिर्विजयमनुभवति ॥६७॥

भाषार्थ—यदि बृहस्पति लग्न में आयस्थान ११ में सूर्य दशम में बुध, शुक्र हों
शनि, मंगल तृतीय स्थान में हों तो राजा रिपु विजयी होता है ॥६७॥

तथा अन्य योग ।

देवगुरौ वा शशिनि तनुस्थे वासरनाथे रिपुभवनस्थे ।

पञ्चमगेहे हिमकरपुत्रः कर्मणि शौरि सुहृदि सितश्च ॥६८॥

अन्वयः—देवगुरौ शशिनि वा तनुस्थे वासरनाथे रिपुभवनस्थे हिमकर पुत्रः
पञ्चमगेहे सौरिः कर्मणि सितः सुहृदि तथा राज्ञो विजयः ॥६८॥

भाषार्थः—जब बृहस्पति, चन्द्रमा लग्न में, सूर्य षष्ठ में बुध पञ्चम में, शनि
दशम में, शुक्र चतुर्थ में हो तो राजा शत्रु पर विजय पाता है ॥६८॥

दूसरा योग ।

हिमकिरणसुतो बली चेत्तनौ तृदशपतिगुरुर्हिकेन्द्रे स्थितः ।

व्ययगृहसहजारि धर्मस्थितौ यदि च भवति निर्बलश्चन्द्रमाः ॥६९॥

अन्वयः—हिम किरणसुतः बली (भवन्) तनौ, त्रिदशपतिगुरुः हि केन्द्रस्थितः निर्वलः भवेत् चन्द्रमाः व्ययगृह सहजारि धर्मस्थितः तदापि राजा रिपून् जयति ॥६६॥

भाषार्थः—बुध बली तथा लग्नस्थ हो केन्द्रस्थान में बृहस्पति निर्वल हो चन्द्र (व्यय स्थान में) तृतीय, षष्ठ, नवम स्थान में हो तो राजा शत्रुओं को जीतता है ॥६६॥

द्रव्यलाभ का दूसरा योग ।

अशुभखगैरनवाष्टमदनस्थैर्हिबुकसहोदरलाभगृहस्थः ।
कविरिह केन्द्रगगीष्पतिदृष्टो वसुचयलाभकरः खलु योग ॥७०॥

अन्वयः—अशुभ खगैः अनवाष्टमदनस्थैः, कविः हिबुकसहोदरलाभगृहस्थः, केन्द्रगगीष्पति दृष्टः वसुचयलाभकरः खलु योगः अस्तीति शेषः ॥७०॥

भाषार्थः—पापग्रह (शनि आदि) नवम, अष्टम, सप्तम, स्थानों में न हो शुक्र चतुर्थ, तृतीय, एकादश स्थान हो केन्द्र स्थान के बृहस्पति को (शुक्र) देखता हो राजा को यात्रा में विशेष धन का लाभ होता है ॥७०॥

राजा के विजय का दूसरा योग ।

रिपुलग्नकर्महिबुके शशिजे परिवीक्षितशुभनभोगमनैः ।
व्ययलग्नमन्मथगृहेषु जयः परिवर्जितेष्वशुभनामधरैः ॥७१॥

अन्वयः—शशिजे रिपुलग्नकर्म हिबुके शुभ न भोगमनैः परिवीक्षिते व्ययलग्नमन्मथगृहेषु परिवर्जितेषु अशुभनामधरैः उपलक्षिते योगे राज्ञो विजय एव भवति ॥७१॥

भाषार्थः—बुध प्रथम, दशम, षष्ठ, चतुर्थ इनमें से किसी स्थान में हो और उसको शुभ ग्रह देखते हों १२, १, ७, में पापग्रह न हो तो राजा जयप्राप्ति पाता है ॥७१॥

राज्यप्राप्ति योग ।

लग्ने यदि जीवःपापा यदि लाभे
कर्मण्यपि वा चेद्राज्याधिगमः स्यात् ॥
द्यूने बुधशुक्रो चन्द्रो हिबुकै वा
तद्रत्फलं मुक्तं सर्वैर्मुनिवरैः ॥७२॥

अन्वयः—जीवः लग्ने, पापाः लाभे कर्मणि वा भवेत् तदा राज्याधिगमः स्यात् बुध शुक्रौ द्युने चन्द्रोद्दिष्टके चेत् सर्वैः मुनिवर्यैः तद्वत् फलम् (राज्याधिगमरूपम्) उक्तम् ॥७२॥

भाषार्थः—लग्न स्थान में बृहस्पति पापग्रह दशम एकादश स्थान में हो तो राज्य प्राप्ति होती है एवं बुध शुक्र सप्तम चतुर्थ स्थान में हों तो राजा को राज्य की प्राप्ति होती है ॥७२॥

तथा अन्य योग ।

रिपुतनुनिधने शुक्रजीवेन्दवो ह्यथ बुधभृगुजौ तुर्यगेहस्थितौ ।
मदनभवनगश्चन्द्रमावांबुगः शशिसुतभृगुजान्तर्गतश्चन्द्रमाः ॥७३॥

अन्वयः—शुक्रज्ञ जीवेन्दवः रिपुतनुनिधने अथ बुधभृगुजौ तुर्य गेहस्थितौ चन्द्रमाः मदन भवनगः चन्द्रमाः अम्बुगः शशिसुतभृगुजान्तर्गतः एवञ्चेत् राज्ञो विजयो ध्रुवः ॥७३॥

भाषार्थः—यात्रा समय में यात्रा लग्न से रिपु, लग्न, अष्टम स्थान में शुक्र, बृहस्पति, चन्द्र हों तो यात्रा में राजा का जय होता है चतुर्थ स्थान में बुध, शुक्र, चन्द्रमा सप्तम स्थान में और चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो राजा का जय होता है ॥७३॥

राजा का विजययोग ।

सितजीवभौमबुधभानुतनूजास्तनुमन्मथारिहिवुकत्रिगृहे चेत् ।
क्रमतोऽरिसोदरशत्रवहोराहिवुकायगैर्गुरुदिनेऽखिलखेटैः ॥७४॥

अन्वयः—सितजीव भौमविधु भानुतनूजाः तनुमन्मथारि हिवुकत्रिगृहे भवेयुश्चेत् गुरुदिने अखिलखेटैः क्रमशः अरि सोदर शत्रव होरा हिवुकायगैः सद्भिः राज्ञो विजयो भवति ॥७४॥

भाषार्थः—शुक्र, बृहस्पति, मंगल, शनि, बुध क्रमशः लग्न, सप्तम, षष्ठ, तृतीय, चतुर्थ स्थान में हो तो राजा विजयी होता है । १२ में बृहस्पति, ६ में सूर्य ३ में चन्द्र, १० में मंगल, षष्ठ में बुध, लग्न में बृहस्पति, चतुर्थ में शुक्र, एकादश स्थान में शनि हो तो पापी राजा का विजय होता है ॥७४॥

तथा विजय योग ।

सहजे कुजो निधनगश्च भार्गवो मदने बुधो रविरसौ तनौ गुरुः ।
अथ चेतस्युरिज्यसितभानवो जलत्रिगता हि सौरिरुधिरौ
रिपुस्थितौ ॥७५॥

अन्वयः—सहजे कुजः भार्गवः निधनगः बुधः मदने रविः अरौ गुरुः तनौ स्युः तर्हि
राज्ञोजयः अथ इज्यसितभानवः जलत्रिगताः सौरि रुधिरौ रिपुस्थितौ तदापि राज्ञो जयः ॥७५॥

भाषार्थः—तृतीय में मंगल, अष्टम में शुक्र, सप्तम में बुध, षष्ठम में सूर्य,
लग्न में बृहस्पति हो तो चढ़ाई करने वाले राजा का जय होता है । चतुर्थ स्थान में
बृहस्पति और शुक्र इसी प्रकार तृतीय में शनि मंगल, षष्ठ स्थान में होते हैं तो
राजा विजय पाता है ॥७५॥

अधियोग और योगाधियोग वर्णन ।

एको ज्ञेज्यसितेषु पञ्चमतपः केन्द्रेषु योगस्तथा द्वौ चेतोष्वधियोग एषु
सकला योगाधियोगाः स्मृताः । योगक्षेममथाधियोगगमने क्षेमं
रिपूणां वधं चाथो क्षेमयशोवनीश्च लभते योगाधियोगे व्रजन् ॥७६॥

अन्वयः—ज्ञेज्यसितेषु एकोऽपि पञ्चमतपः केन्द्रेषु तदा योगः, तेषु द्वौ चेतदा
अधियोगः एषु सकलाः भवेयुः योगाधियोगः स्मृतः । योगे व्रजन् क्षेमं, अधियोगे क्षेमं
रिपूणां वधश्च योगाधियोगे (व्रजन्) क्षेमयशः अवनीश्च भवति ॥७६॥

भाषार्थः—बुध, बृहस्पति, शुक्र ग्रहों के पञ्चम, नवम, केन्द्र स्थान में होने पर
नाम का 'योग' होता है दोग्रह हों तो 'अधियोग' सभी एकत्र हों तो
'योगाधियोग' होता है इन योगों में रण यात्रा करने वाला राजा क्रमशः कल्याण,
कल्याण और रिपुनाश, कल्याण, यश, भू सम्पत्ति पाता है ॥७६॥

विजया दशमी सिद्धि मुहूर्त ।

इषमासि सिता दशमी विजया शुभकर्मसु सिद्धिकरी कथिता ।
श्रवणर्क्षयुता सुतरां शुभदा नृपतेस्तु गमे जयसंधिकरी ॥७७॥

अन्वय—इषमासि सितादशमी विजया शुभकर्मसु सिद्धिकरी कथिता नृपतेः गमे
श्रवणक्षयुता सुतराम् शुभदा जयसन्धिकरी कथिता ॥७७॥

भाषार्थः—आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी को विजया दशमी कहते हैं
यह शुभ कर्मों में शुभ फल देने वाली है ऐसा ऋषियों ने कहा है। यह (दशमी)
श्रवण नक्षत्र से युक्त हो तो अत्यन्त शुभ फल देने वाली और जीत (विजय) तथा
सन्धि (मेल) कराती है ॥७७॥

अङ्गस्फुरणमुहूर्तः ।

चेतोनिमित्तशकुनैः खलु सुप्रशस्तैर्ज्ञात्वा विलग्नबलमुर्व्यधिपः
प्रयाति । सिद्धिर्भवेदथ पुनः शकुनादितोपि चेतोविशुद्धिरधिका
न च तां विनेयात् ॥७८॥

अन्वयः—चेतो निमित्तशकुनैः सुप्रशस्तैः विलग्नबलम् ज्ञात्वा उर्व्यधिपः प्रयाति चेत्
सिद्धिः मनोभिलाषपूर्तिः भवेत् अथ पुनः शकुनादितः अपि चेतोविशुद्धिः अधिका (हित-
कारिणी) तां विना न इयात् ॥७८॥

भाषार्थः—अन्तः करण की शुद्धि अथवा पूर्ण अंगों का फड़कना,
शकुन इत्यादि शुद्ध समझकर और लग्नबल देखकर यदि राजा यात्रा करता है
तो उसकी मनकामना (जय की इच्छा) की पूर्ति होती है। शकुन इत्यादि की
अपेक्षा चित्त की शुद्धि की यात्रा के लिए अत्यन्त आवश्यकता है उसके चित्त
शुद्धि के बिना राजा यात्रा न करे ॥७८॥

शकुनाशकुनविचारः ।

व्रतबन्धनदैवतप्रतिष्ठाकरपीडोत्सवसूतकासमाप्तौ ।
न कदापि चलेदकालविद्युद्घनवर्षातुहिनेपि सप्तरात्रम् ॥७९॥

अन्वयः—व्रतबन्धन दैवता प्रतिष्ठा करपीडोत्सवसूतका समाप्तौ कदापि न चलेत्
अकाल विद्युत् घनवर्षातुहिनेऽपि सप्तरात्रम् नो चलेत् ॥७९॥

भाषार्थ—यात्रा के समय यज्ञोपवीत, देवप्रतिष्ठा, विवाह, सूतक (अशौच)
बीच में अकस्मात् या किसी प्रकार आपड़े तो जब तक उस कार्य की समाप्ति न

हो जावे यात्रा न करे इसी प्रकार बिना समय ही विजली, मेघ गरजना, बरसना पत्थर आदि पड़ने पर सात रात्रि के भीतर यात्रा न करे ॥७६॥

एकही दिन में गमनागमन विचार ।

महीपतेरेकदिने पुरात्पुरं यदा भवेतां गमनप्रवेशकौ ।

भवारशूलप्रतिशुक्रयोगिनी विचारयेन्नैव कदापि पंडितः ॥८०॥

अन्वयः—महीपतेः यदा पुरात् (एकस्मात्) पुरे (तस्मादन्यस्मिन् पुरे) एक दिने निर्गमप्रवेशकौ भवेतां (तर्हि) पण्डित भवारशूलप्रतिशुक्रयोगिनीः कदापि नैव विचारयेत् ॥८०॥

भाषार्थ—यात्रा में, दिन में हो आना जाना हो तो नक्षत्र, वार दिक्शूल सन्मुख शुक्र इत्यादि का पण्डित जन विचार न करे ॥८०॥

यद्येकस्मिन् दिवसे महीपतेर्निर्गमप्रवेशौ स्तः

तर्हि विचार्यः सुधिया प्रवेशकालो न यात्रिकस्तत्र ॥८१॥

अन्वयः—यदि एकस्मिन् दिवसे महीपतेः निर्गमप्रवेशकौ भवेताम् तर्हि सुधिया प्रवेशकालः विचार्यः यात्रिकः (कालः) न विचार्यः ॥८१॥

भाषार्थ—एकही दिन में एक पुर से दूसरे पुर में आना जाना हो सके तो यात्रा में केवल प्रवेशकाल का विचार करना चाहिए यात्रा समय के विचार की आवश्यकता नहीं ॥८१॥

नवम तिथि निषेध ।

प्रवेशान्निर्गमं तस्मात्प्रवेशं नवमे तिथौ ।

नक्षत्रे च तथा वारे न वै कुर्यात्कदाचन ॥८२॥

अन्वयः—प्रवेशात् नवमे तिथौ निर्गमः तथा नक्षत्रे वारे कदाचन गमनं न कुर्यात् ॥८२॥

भाषार्थ—प्रवेश के तिथि और नक्षत्र वार से नवम तिथि, नक्षत्र, वार में यात्रा तथा यात्रा से नवम तिथि, नक्षत्र, वार में प्रवेश नहीं उत्तम होता है ॥८२॥

यात्रा दिन विधि ।

अग्निं हुत्वा देवतां पूजयित्वा नत्वा विप्रानर्चयित्वा दिगी-
शान् ॥ दत्वा दानं ब्राह्मणेभ्यो दिगीशं ध्यात्वा चित्ते भूमि-
पालो धिगच्छेत् ॥८३॥

अन्वयः—भूमिपालः (यात्रासमये) अग्निहुत्वा, देवतां पूजयित्वा, विप्रान् नत्वा, दिगीशान् अर्चयित्वा, ब्राह्मणेभ्यो दानं दत्वा, चित्ते दिगीशं ध्यात्वा अधिगच्छेत् ॥८३॥

भाषार्थ—राजा, यात्रा के पूर्व हवन, देवपूजन, ब्राह्मण नमस्कार, दिशा के ईशों की पूजा, ब्राह्मणों को दान चित्त में दिक्पालों का ध्यान करे अनन्तर यात्रा करे ॥८३॥

नक्षत्र दोहद कथन ।

कुल्मापांस्तिलतंडुलानि च तथा माषांश्च गव्यं दधि त्वाज्यं दुग्ध-
मथैणमांसमपरं तस्यैव रक्तं तथा ॥ तद्वत्पायसमेव चापपललं मार्गं
च शाशं तथा पाष्ठिक्यं च प्रियंग्वपूपमथवाचित्रांडजान्सत्फलम्
॥८४॥ कौर्म सारिकगौधिकं च पललं शाल्यं हविष्यं हया
दक्षेस्यात्कृसरान्मुद्गमपि वा पिष्टं यवानां तथा । मत्स्यान्नं
खलु चित्रितान्नमथवादध्यन्नमेवंक्रमाद्भक्ष्याभक्ष्यमिदं विचार्य
मतिमान् भक्षेत्तथालोकयेत् ॥८५॥

अन्वयः—अश्विन्यादीनां एतानि दोहदानि, कुल्माषान्, तिल तण्डुलान्, माषान्, गव्यं, दधि, आज्यम्, दुग्धं, एणमांसं अपरं तथा तस्यैव (एणस्यैव) रक्तं, तद्वत् पायसं चापपललं, मार्गं, तथा शाशं, पाष्ठिक्यं, प्रियङ्गु, अपूपम्, वाचित्राण्डजात् सत्फलम्, कौर्म, सारिकम्, गौधिकम् पललं, शाल्यं हविष्यम्, कृसरान्नं, मुद्गं वा यवानां पिष्टं, मत्स्यान्नम् खलु-चित्रितान्नं, अथवा दध्यन्नं, एवं क्रमात् भक्ष्याभक्ष्यम् विचार्य मतिमान् भक्षेत् तथा आलोकयेत् ॥८४॥८५॥

भाषार्थ—अश्विनी इत्यादि नक्षत्रों में नीचे लिखे चीजों का समयवश भक्ष्य अनक्षः विचार कर देखना तथा खाना उचित है इससे नक्षत्र दोह यात्रा को

अशुभ नहीं बनाता । बाकला, तिजचावल, उड़द, गौ की दही, गोघृत, गोदुग्ध, हरिण का मांस, मृगरुधिर, खीर, चाणपत्री का मांस, मृगमांस, खरगोश का मांस, खाड़ी धान, टाँगुन, पूआ, अनेकरंग के पक्षी का मांस, उत्तम फल, कछुवा का मांस, गोह का मांस, शाही का मांस, मूंगकी खिचड़ी, मूंग चावल, जवका आटा, मछली, अनेकरंग का चावल, भात (इनसे नक्षत्र दोष शान्त होते हैं) ॥८३, ८५॥

दिग्दोहद वर्णन ।

आज्यं तिलौदनं मत्स्यं वयश्चापि यथाक्रमम् ।

भक्षयेद्दोहदं दिश्यमाशां पूर्वादिकां व्रजेत् ॥८६॥

अन्वयः—आज्यं तिलौदनं मत्स्यं वयश्चापि यथाक्रमम् दिश्यं दोहदं भक्षयेत् पूर्वादिकां आशां व्रजेत् ॥८६॥

भाषार्थ—घी, तिल चावल, मछली, दूध ये दिश्य दोहद हैं अर्थात् इनके खाने से दिशा शून्य का दोष नहीं लगता क्रमशः पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर दिशा के गमन में इनको खाना चाहिए ॥८६॥

रव्यादि वारों के दोहद ।

रसालां पायसं कांजीं शृतं दुग्धं तथा दधि ।

पयोऽशृतं तिलान्नं च भक्षयेद्धारदोहदम् ॥८७॥

अन्वयः—रसालां पायसं कांजीं शृतं दधि अशृतं तिलान्नं च वारदोहदम् भक्षयेत् (एतेषां यथाक्रमं रव्यादिवारे भक्षणेन नच वारदोषः) ॥ ८७ ॥

भाषार्थ—शक्कर, मिरच, कपूर, लाइची इत्यादि मिलाए शर्बत, काजरी, औंटादूध, दही, कच्चा दूध, तिलान्न ये क्रमशः रवि आदि वारों के दोहद हैं (इनके खाने से वार दोष नहीं लगता) ॥ ८७ ॥

तिथि दोहद ।

पक्षादितोर्कदलतंडुलवारिसर्पिः श्राणाहविष्यमपि हेमजलं
त्वपूपम् ॥ भुक्त्वा व्रजेद्रजकमंबु च धेनुमूत्रं यावान्नपायसगुडा-
नसृगन्नमुद्गान् ॥८८॥

अन्वयः—पक्षादितः अर्कदल तण्डुवारि सर्पिः श्राणा हविष्यं अपि हेमजलं ल
अश्वम्, रुचकम् अम्बु धेनुमूत्रम् यवान् पायस गुडान् सृगान् मुद्गान् भुक्त्वा व्रजेत् ॥८८॥

भाषार्थ—मदार का पत्ता, चावल का जल, घी, लपसी, मूंग, सोना जल,
पूआ, विजौरा, जल गौमूत्र, जव, खीर, गुड़, रुधिर को १ से अमावस्या पूर्णिमातक
(क्रमशः) खा पीकर यात्रा करे इससे तिथि दोष नहीं लगता ॥८८॥

गमन समय में कर्तव्य विधि ।

उद्धृत्य प्रथमत एवं दक्षिणांघ्रिं द्वात्रिंशत्पदमभिगत्य दिश्य-
यानम् ॥ आरोहेत्तिलघृतहेमताम्रपात्रं दत्त्वादौ गणकवराय च
प्रगच्छेत् ॥८९॥

अन्वयः—प्रथमतः दक्षिणांघ्रि उद्धृत्य द्वात्रिंशत् पदं अभिगम्य आदौ गणकवराय
तिलघृत हेमपात्रं दत्त्वा यानं आरोहेत् ॥८९॥

भाषार्थ—पहले ३२ पैर तक दहिना पैर उठाता हुआ चले पहले ज्योतिषी को
तिल, घी, सुवर्ण का वर्तन देकर सवारी पर चढ़े ॥८९॥

दिक्विशेष यान (सवारी) कथन ।

प्राच्यां गच्छेद्गजेनैव दक्षिणस्यां रथेन हि ।
दिशि प्रतीच्यामश्वेन तथोदीच्यां नरैर्नृपः ॥९०॥

अन्वयः—नृपः प्राच्यां गजेन दक्षिणस्यां रथेन प्रतीच्यां अश्वेन उदीच्यां नरैः
गच्छेत् ॥९०॥

भाषार्थः—राजाको पुर्व में हाथी से, दक्षिण में रथ से, पश्चिम में घोड़ा से,
और उत्तर में यात्रा पालकी से, करनी चाहिए ॥ ९० ॥

यात्रा समय स्थान आदि का विस्तार ।

देवगृहाद्वा गुरुसदनाद्वा स्वगृहान्मुख्यकलत्रगृहाद्वा ।
प्राश्य हविष्यं विप्रानुमतः पश्यन् शृण्वन् मंगलमीयात् ॥९१॥

अन्वयः—देवगृहात् वा गुरुसदनात् स्वगृहात् मुख्यकलत्रगृहात् हविष्यं प्राश्य विप्रानुमतः मंगलं पश्यन् शृण्वन् ईयात् ॥६१॥

भाषार्थः—देवस्थान (मन्दिर) गुरुसदन (गुरु का घर) सोने का घर पटरानी के घरसे खीरभोजन कर ब्राह्मण की आज्ञा लेकर मंगलद्रव्य को देखता सुनता हुआ यात्रा करे ॥ ६१ ॥

प्रस्थान की विधि ।

कार्याद्यैरिह गमनस्य चेद्विलम्बो भूदेवादिभिरुपवीतमायुधं च ॥
क्षौद्रं चामलफलमाशु चालनीयं सर्वेषां भवति यदेव
हृत्प्रियं वा ॥६२॥

अन्वयः—इह कार्याद्यैः गमनस्य चेत् विलम्बः भूदेवादिभिः उपवीतं आयुधं क्षौद्रं अमलफलं वा यदेव सर्वेषां हृत्प्रियं भवति तदेव चालनीयम् ॥६२॥

भाषार्थः—किसी कार्य के कारण यात्रा में विलम्ब हो तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र क्रमशः यज्ञोपवीत, शस्त्र, शहद, आवला का प्रस्थान करदे । अथवा जिसको जो प्यारा हो वही प्रस्थान में धरे ॥६२॥

प्रस्थान का प्रमाण ।

गेहाद्गेहांतरमपि गमस्तर्हि यात्रेति गर्गःसीम्नःसीमांतरमपि
भृगुर्वाणविक्षेपमात्रं ॥ प्रस्थानं स्यादिति कथयतेऽथो भरद्वाज
एवं यात्रा कार्या बहिरिह पुरात्स्याद्वशिष्ठो ब्रवीति ॥६३॥

अन्वयः—गेहात् गेहान्तरं अपि गमः तर्हि यात्रा इति गर्गः, सीम्नः सीमान्तरं इति भृगुः, वाणविक्षेपमात्रं प्रस्थानमिति भारद्वाजः इह पुरात् वहिः यात्रा इति वशिष्ठो ब्रवीति ॥६३॥

भाषार्थः—एक घर से दूसरे घरमें जाना, “यात्रा है” ऐसा गर्ग बचन है । सीमा से दूसरी सीमा में जाना यह यात्रा कहलाती है ऐसा शुक्राचार्य का कथन है । एक वाण तक जाना भी यात्रा है यह भरद्वाज कहते हैं किन्तु पुरा से बाहर जाना यात्रा है ऐसा वशिष्ठ जी का मत है ॥६३॥

पुनः प्रस्थान प्रमाण ।

प्रस्थानमत्र धनुषां हि शतानि पञ्च केचिच्छतद्वयमुशन्ति दशैव चान्ये ॥ संप्रस्थितो य इह मंदिरतः प्रयाति गन्तव्यदिक्षु तदपि प्रयतेन कार्यम् ॥६४॥

अन्वयः—अत्र पञ्चशतानि धनुषां प्रस्थानं केचित् शतद्वयं प्रस्थानं उशन्ति अन्ये-
मन्दिरतः दशैव धनूषि संप्रस्थितः प्रस्थानं (उशन्ति) तदपि प्रयतेन गन्तव्य दिक्षु
कार्यम् ॥६४॥

भाषार्थः—प्रस्थान (यात्रा) के विषय में किसी आचार्य का मत है कि ५००
धनुष जाना ही यात्रा है कोई २०० धनुष जाने को कोई मन्दिर (अपना घर) से
१० धनुष जाना ही यात्रा मानते हैं जिस दिशा में जाना हो प्रस्थान धरना
चाहिए ॥६४॥

प्रस्थान दिन प्रमाण ।

प्रस्थानं भूमिपालो दशदिवसमभिव्याप्य नैकत्र तिष्ठेत्सामन्तः
सप्तरात्रं तदितरमनुजः पञ्चरात्रं तथैव ॥ उर्ध्वं गच्छेच्छुभाहेऽप्यथ
गमनदिनात्सप्त रात्राणि पूर्वं चाशक्तौ तद्दिनेऽसौ रिपु-
विजयमना मैथुनं नैव कुर्यात् ॥६५॥

अन्वयः—भूमिपालः प्रस्थाने दशदिवसं अभिव्याप्य एकत्र न तिष्ठेत्, सामन्तः सप्त-
रात्रं, तदितर मनुजः तथैव पञ्चरात्रं ऊर्ध्वं (दिवसान् पूर्वगणितान् परिसमाप्य) शुभाहे
गच्छेत् अथ रिपुविजयमना सप्तरात्राणिपूर्वं अशक्तौ तद्दिने मैथुनं नैव कुर्यात् ॥६५॥

भाषार्थः—यात्रा में राजा १० दिन चक्रवर्ती सातदिन सामान्य मनुष्य पांच
दिन न रहे आकर शुभ मुहूर्त में पुनः यात्रा करे शत्रु जीतने की इच्छा करने वाला
मनुष्य सात रात के पहले से हो मैथुन (स्त्री के साथ सहवास) न करे इतना भी
सहन न कर सके तो एक रात्रि के पूर्व मैथुन करे ॥६५॥

दुग्धं त्याज्यं पूर्वमेव त्रिरात्रं क्षौरं त्याज्यं पञ्चरात्रं च पूर्वम् ।
क्षौद्रं तैलं वासरेऽस्मिन् वमिश्च त्याज्यं यत्नाद्भूमिपालेन ब्रूयम् ॥६६॥

अन्वयः—भूमिपालेन यात्रायाः पूर्वमेव त्रिरात्रं दुग्धम् त्याज्यम् पञ्चरात्रं क्षौरं (त्याज्यम्) अस्मिन् वासरे क्षौद्रं तैलं वमिः नूनम् यत्नात् त्याज्यम् ॥६६॥

भाषार्थः—यात्रा से तीन रात्रि पहले दूध पाँच रात्रि पहले बाल बनवाना नहीं चाहिए । यात्रा के दिन मधु खाना, तेल लगाना वमन करना नहीं चाहिए ॥६६॥

पुनः त्याज्य वस्तु ।

भुक्त्वा गच्छति यदि चेतैलगुडक्षार पक्वमांसानि ।
विनिवर्तते स रुग्णः स्त्रीद्विजमवमान्य गच्छतो मरणम् ॥६७॥

अन्वयः—यदि चेत् तैलगुडक्षारपक्वमांसानि भुक्त्वा गच्छति तदा सः रुग्णः विनिवर्तते स्त्रीद्विजं अवमान्य गच्छतः मरणम् ॥६७॥

भाषार्थः—तेल, गुड, खारा पदार्थ, तथा पक्वमांस खाकर यात्रा करने वाला रोगी होकर लौटता है स्त्री और ब्राह्मण का अपमान कर यात्रा करने से मरण होता है ॥६७॥

यात्रा में अकालवृष्टि दोष वर्णन ।

यदि माःसु चतुर्षु पौषमासादिषु वृष्टिर्हि भवेदकालवृष्टिः ।
पशुमर्त्यपदाङ्किता न यावद्वसुधा स्यान्नहि तावदेव दोषः ॥६८॥

अन्वयः—चतुर्षु पौषमासादिषु माःसु वृष्टिर्भवेत्तर्हि अकालवृष्टिः कथ्यते यावद्वसुधा-पशुमर्त्यपदाङ्किता न भवति तावदेव दोषः ॥६८॥

भाषार्थः—पौष से ४ मास वर्षा होवे तो अकाल वृष्टि होती है । पशु, मनुष्य इनके पैर से पृथ्वी पर जब चिह्न होता है तब ही उसका (अकालवृष्टि) दोष नहीं लगता ॥६८॥

आवश्यक यात्रा में शकुनों का परिहार ।

अल्पायां वृष्टौ दोषोऽल्पो भूयस्यां दोषो भूयान् जीमूतानां
निर्घोषे वृष्टौ वा जातायां भूपः ॥ सूर्येन्दोर्विम्बे सौवर्णे कृत्वा

विप्रेभ्यो देयाद्दुःशाकुन्ये साज्यं स्वर्णं दत्त्वा गच्छेत्स्वे-
च्छाभिः ॥६६॥

अन्वयः—अल्पायां वृष्टौ अल्पो दोषः भूयस्यां भूयात् दोषः जीमूतानां निर्घोषे वृष्टौ वा जातायां भूपः सूर्येन्दोः सौवर्णे विप्रेभ्यो देयात् दुःशाकुन्ये (संजाते) साज्यं स्वर्णं दत्त्वा स्वेच्छाभिः गच्छेत् ॥६६॥

भाषार्थः—थोड़ी अकाल वृष्टि होने पर थोड़ा दोष अधिक वर्षा होने पर अधिक दोष होता है मेघ के गर्जने पर या वृष्टि होने पर उचित है कि राजा सुवर्ण की सूर्य चन्द्र प्रतिमा बनाकर ब्राह्मण को दे बुरा शकुन होने पर सोना, घी दान करे ॥६६॥

शुभ शकुन वर्णन ।

विप्राश्वेमफलान्नदुग्धदधिगोसिद्धार्थपद्मावरं वेश्यावाद्यमयूरचा-
षनकुलावद्धैकपश्वामिषं सद्वाक्यं कुसुमेक्षुपूर्णकलशच्छत्राणि
मृत्कन्यकारत्नोष्णीषसितोक्ष्मद्यससुतस्त्रीदीप्तवैश्वानराः ॥१०॥
आदर्शाञ्जनधौतवस्त्ररजका मीनाज्यसिंहासनं शावं रोदनवर्जितं
ध्वजमधुच्छागास्त्रगोरोचनम् । भारद्वाजनृत्यानवेदनिनदा मांगल्य-
गीतांकुशा दृष्टाः सत्फलदाः प्रयाणसमयेऽरिक्तोघटः स्वानुगः । १०१॥

अन्वयः—प्रयाण समये विप्राश्वेमफलान्नदुग्धदधिगोसिद्धार्थपद्मावरम् वेश्यावाद्यमयूर-
चाषनकुलावद्धैकपश्वामिषम् सद्वाक्यं कुसुमेक्षुपूर्णकलशच्छत्राणि मृत्कन्यकाः रत्नोष्णीष-
सितोक्ष्मद्यससुतस्त्रीदीप्तवैश्वानराः आदर्शाञ्जन धौतवस्त्ररजकाः मीनाज्यसिंहासनम्
रोदनवर्जितं शवं ध्वजमधुच्छागास्त्रगोरोचनम् भारद्वाजनृत्यानवेदनिनदाः मांगल्यगीतां-
कुशाः अरिक्तोघटः स्वानुगः । दृष्टाः सत्फलदाः ॥१००॥१०१॥

भाषार्थ—ब्राह्मण, घोड़ा, हाथी, फल, अन्न, दूध, दही, गौ, सरसों, कमल,
वस्त्र, वेश्या, वाजा, मोर, पपीहा, नेवला, बंधा १ पशु, मांस, श्रेष्ठ वाक्य, फूल,
ईंख, भराकलश, छत्र, मिट्टी, कन्या, रत्न, पगड़ी, खुला रुफेद बैल, शराव, पुत्र-
वाली स्त्री, जलती अग्नि को देखना यात्रा में उत्तम है । एवं आइना, अञ्जन, धुले-
वस्त्र, मङ्गली, घी, सिंहासन बिना रोदन के जाता हुआ मुर्दा, ध्वज, मधु, मेड़ा, धनुष,

गोरोचन, भारद्वाज नाम का पत्नी पालकी, वेद शब्द, गाना, अंकुश पीछे आता हुआ भरा घड़ा इनका देखना यात्रा में उत्तम है ॥१००॥१०१॥

अपशकुन वर्णन ।

बन्ध्याचर्मतुषास्थिसर्पलवणांगारेन्धनक्लीवविट् तैलोन्मत्तवसौषधारि
जटिलप्रावृत्तृणव्याधिताः ॥ नग्नाभ्यक्तविमुक्तकेशपतिता
व्यन्नक्षुधाता असृक् स्त्रीपुष्पसरटः स्वगेहदहनं मार्जारयुद्धं क्षुतम् ॥
काषायी गुडतक्रपंकविधवाकुब्जाः कुटुम्बे कलिर्वस्त्रादेः स्वलनं लु-
लायसमरं कृष्णानि धान्यानि च कार्पासं वमनं च गर्दभरवो दक्षोऽतिरु-
द्धं गर्भिणी मुण्डाद्राम्बरदुर्वचोन्धवधिरोदक्या न दृष्टाः शुभाः ॥१०३

अन्वयः—बन्ध्याचर्मतुषास्थिसर्पलवणाङ्गारेन्धनक्लीवविट् तैलोन्मत्त वसौषधारि जटिल
प्रावृत्तृण व्याधिताः नग्नाभ्यक्तविमुक्तकेशपतिताः व्यन्नक्षुधाताः असृक् स्त्रीपुष्पसरटः स्वगेह
दहनं मार्जारयुद्धं क्षुतम् काषायी गुडतक्रपंकविधवाः कुब्जाः कुटुम्बे कलिः वस्त्रादेः
स्वलनं लुलाय समरं कृष्णानि धान्यानि कार्पासं वमनं दक्षे गर्दभरवः अतिरुद्धं गर्भिणी
मुण्डाद्राम्बरदुर्वचोन्धवधिरोदक्याः दृष्टाः न शुभाः ॥१०२॥१०३॥

भाषार्थः—बन्ध्या स्त्री, चर्म, धान, हाड़ सांप, नमक, अचार, लकड़ी, नपुंसक,
त्रिष्टा लिये मनुष्य, पागल, तेल, मद्य पिए मनुष्य, चर्वी, दवा, शत्रु, जटाधारी
सन्यासी, तिनका, रोगी, बिना तैल लगाए नंगा बालक, छूटे केश वाला, जाति
पतित, काना, अंगभंग मनुष्य, भूखा, रुधिर, मासिक धर्मवाली स्त्री, गिरगिट,
अपना घर जलना, विलाव का परस्पर लड़ना, तथा छींक आना मनुष्य के यात्रा
समय में अनिष्ट कारक है। एवं कषाय रंग से रंगे कपड़े वाला, गुड़, माष,
विधवा अवला, कुवड़ा, कुलमें झगड़ा, शरीर से कपड़ा गिरना, भैंसों का परस्पर
लड़ना, काला अन्न, रुई, छर्दी, दक्षिण भाग में गदहे का रेंकना, अति क्रोध,
गर्भवती स्त्री, शिर मुड़ाया हुआ गोले वस्त्र वाला, बुरा बोलने वाला, तथा
अन्धे बहरे का यात्रा समय में सन्मुख दर्शनादि होना अशुभ है ॥१०२॥१०३॥

दूसरे शुभ शकुन ।

गोधाजाहकशूकराहिशशकानां कीर्तनं शोभनं नो शब्दो न

विलोकनं च कपि ऋक्षणामतो व्यत्ययः ॥ नद्युत्तारभयप्रवेशसमरे
नष्टार्थसंवीक्षणे व्यत्यस्ताः शकुना नृपेक्षणविधौ यात्रोदिताः
शोभनाः ॥१०४॥

अन्वयः—गोधाजाहकशूकरादिशकानां कीर्तनं शोभनं नो शब्दः न विलोकनं
न शुभ कदनदायकं कपि ऋक्षणां अतः व्यत्ययः नद्युत्तारभयप्रवेशसमरे नष्टार्थसंवीक्षणे
व्यत्यस्ताः शकुनाः शुभाः नृपेक्षणविधौ यात्रोदिताः शकुनाः शुभाः ॥१०४॥

भाषार्थः—गोह, साही, सूअर, सर्प, खरगोश की बोली, यात्रा में शुभ है अपने
मुंह से इनका नाम लेना या इनका दर्शन होना उत्तम नहीं। रीछ, वानर का पूर्व
कहे से उल्टा है। नदी तैरना, भूतभय, गृहप्रवेश, युद्ध तथा राजा के दर्शन में यात्रा
में कहे शकुन से विपरीत (उल्टा) शकुन उत्तम है ॥१०४॥

वामांग में कोकिलादि का शकुन ।

वामांगे कोकिला पल्ली पोतकी शूकरी रला ।

पिंगलाच्छुष्काः श्रेष्ठाः शिवाः पुरुषसंज्ञिताः ॥१०५॥

अन्वयः—कोकिला, पल्ली, पोतकी, शूकरी, रला, पिंगळा, छच्छुका, पुरुष संज्ञिताः
वामाङ्गे श्रेष्ठाः ॥१०५॥

भाषार्थः—कोयल, छिपकली, पोतकी, शूकरी, रला, (एक नाम है) पिंगला
(नाम है) छुच्छुन्दरि सियारिन, पुरुष पक्षी ये यात्रा समय में वापं अंग की तरफ
पड़े तो शुभ है ॥१०५॥

दक्षिणांग में शकुन ।

चिकरः पिककको भासः श्रीकण्ठो वानरो रुरुः ।

स्त्रीसंज्ञकाः काकऋक्षश्वानः स्युर्दक्षिणाः शुभाः ॥१०६॥

अन्वयः—चिकरः पिककः भासः श्रीकण्ठः वानरः रुरुः स्त्री संज्ञकाः काक ऋक्ष-
श्वानः दक्षिणाः शुभाः ॥१०६॥

भाषार्थः—छिक्कर (१ प्रकार का मृग) पपीहा, भास, नीलकण्ठ, वानर, काला
मृग, कौवा, कुत्ता, भालु, स्त्री संज्ञक पक्षी दाहिने बोले तो यात्रा में शुभ होता
है ॥१०६॥

पक्षियों के प्रदक्षिण गमन शकुन विचार ।

प्रदक्षिणगताः श्रेष्ठा यात्रायां मृगपक्षिणः ।

ओजा मृगा व्रजन्तोऽतिधन्यः वामे खरस्वनः ॥१०७॥

अन्वयः—यात्रायां प्रदक्षिणगताः मृगपक्षिणः श्रेष्ठाः ओजाः व्रजन्तः मृगाः अति-
धन्याः वामे खरस्वनः अतिधन्यः ॥१०७॥

भाषार्थः—यात्रा समय में दाहिने भाग में पशु पक्षी पड़े तो उत्तम फल है और
बायें भाग में पड़ें और संख्या में विषम हों तो अत्यन्त उत्तम है बायें भाग में
गद्गद् बोले तो उत्तम नहीं है ॥१०७॥

आवश्यक कार्यों में दुष्टशकुन परिहार ।

आद्येऽपशकुने स्थित्वा प्राणानेकादश व्रजेत् ।

द्वितीये षोडशप्राणांस्तृतीये न क्वचिद्व्रजेत् ॥१०८॥

अन्वयः—आद्ये अपशकुने एकादश प्राणान् स्थित्वा व्रजेत् द्वितीये षोडशप्राणान्
तृतीये कचित् न व्रजेत् ॥१०८॥

भाषार्थः—प्रथम चार के अपशकुन में ११ श्वास रुकें दूसरे में १६ श्वास
किन्तु तीसरे अपशकुन में यात्रा कदापि न करे ॥१०८॥

यात्रा से निवृत्त होकर गृह प्रवेश मुहूर्त ।

यात्रानिवृत्तौ शुभदं प्रवेशनं मृदुध्रुवक्षिप्रचरैः पुनर्गमः ।

द्वीशेऽनलं दारुणमेतद्योगमेस्त्रीगेहपुत्रात्मविनाशनं क्रमात् ॥१०९॥

अन्वयः—यात्रानिवृत्तौ मृदुध्रुवैः क्षिप्रचरैः प्रवेशनम् शुभदं पुनर्गमः स्यात् । द्वीशे
अनले दारुणमेतद्योगे (गृहप्रवेशे संजाते) क्रमात् स्त्रीगेहपुत्रात्मविनाशनं जायते इति
शेषः ॥१०९॥

भाषार्थः—यात्रा से लौटने पर मृदु, ध्रुव, क्षिप्र, चर संज्ञा वाले नक्षत्रों में
गृह में प्रवेश करना उत्तम है । विशाखा, कृत्तिका, दारुण तथा उग्र संज्ञक नक्षत्रों
में गृह प्रवेश होता है तो क्रमशः स्त्री, गृह, पुत्र तथा अपना नाश होता है ॥१०९॥

यात्रा में एकत्र दोष वर्णन ।

अयनर्क्षमासतिथिकालवासरोद्भवशूलसंमुखसितज्ञदिक्रपाः ।

भृगुवक्रतादिपरिघाख्यदंडकोयुवतीरजोप्यशुचितोत्सवादिकम् ११०

अन्वयः—अयनर्क्षमासतिथिकालवासरोद्भवसंमुखसितज्ञदिक्रपाः भृगुवक्रतादि परिघाख्य-
दण्डको युवतीरजोऽप्यशुचितोत्सवादिकम् ॥११०॥

भाषार्थः—अयनदोष, मासदोष, तिथि, वार कालदोष, दिक्शूल दोष, शुक्र
बुध दिशा स्वामी का सन्मुख होना, शुक्र वा वक्री या अस्त होना, चालवृद्ध दोष,
परिघ, दंड, रजस्वला समय, विवाह, यज्ञोपवीत उत्सवों में यात्रा नहीं करनी
चाहिए ॥११०॥

मृतपक्षरिक्तरवितर्कसंख्यकास्तिथयश्च सौररविभौमवासराः ।

अपिवामपृष्ठागविधुस्तथाडोलोवसुपञ्चकाभिजिदथापि दक्षिणे १११

अन्वयः—मृतपक्षरिक्तरवितर्कसंख्यकाः तिथयश्च सौररवि भौमवासराः वामपृष्ठग-
विधुः तथा अडोलः अथापि दक्षिणे वसुपञ्चकाभिजितः पञ्चाङ्गदोषाः ॥१११॥

भाषार्थः—मृतपक्ष, रिक्तातिथि, द्वादशी, अष्टमी, पूर्णिमा, अमावस्या शुक्ल-
प्रतिपद, शनि, रवि, मंगल पृष्ठचन्द्र, अडोलयोग, धनिष्ठा से रेवती तक नक्षत्र,
तथा अभिजित् दक्षिण दिशा की यात्रा के वास्ते अशुभ है ॥१११॥

लग्न दोष विचार ।

लग्ने जन्मर्क्षतन्वोमृतिगृहमहितर्क्षाच्च षष्ठं तदीशा

वा लग्ने कुम्भमीनर्क्षनवलवतनूश्चापि पृष्ठोदयं च ॥

पृष्ठाशामृत्तसंस्थं दशमशनिरथो सप्तमे चापि काव्यः केन्द्रे

वक्राश्च वक्रीगृहदिवसविवाहोक्तदोषाश्च नेष्ट्याः ॥११२॥

अन्वयः—जन्मर्क्षतन्वोः मृतिगृहं अहितर्क्षात् षष्ठं तदीशा वा लग्ने कुम्भमीनर्क्ष
नवलवतनूश्चापि पृष्ठोदयश्च पृष्ठांशा मृत्तसंस्थं दशमशनिः अथो काव्यः शुक्राचार्यः सप्तमे
वक्राः केन्द्रे वक्रीग्रह दिवसाः विवाहोक्त दोषाश्चनेष्ट्याः (अशुभावहाः) ॥११२॥

भाषार्थः—अपनी जन्म राशि से अष्टमराशि और यात्रा लग्न से अष्टमराशि अथवा अपने लग्न से अष्टम राशि यात्रा में निहित है। शत्रु की जन्म राशि से षष्ठ राशि लग्न में हो अपनी जन्म काल की राशि अथवा जन्म लग्न से अष्टम स्थान में हो तो यात्रा निषिद्ध है। जन्मलग्न, जन्मराशि का स्वामी यात्रा में कुम्भ मीन नवांशा हो अथवा पृष्ठोदय लग्न हो नक्षत्र पीछे स्थित हो शनि दशम, शुक्र सप्तम, वक्रोग्रह प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, दशम में हो वार (यात्रा दिन) क्रूरग्रह का हो ऐसे समय में यात्रा निषिद्ध है। विवाह कर्म के सब दोष यात्रा में अशुभ हैं। इन समयों में यात्रा अत्यन्त निषिद्ध है ॥११२॥

॥ इति श्रीमुहूर्तचिन्तमाणौ यात्राप्रकरणं समाप्तम् ॥

अथ वास्तुप्रकरणप्रारम्भः १२

गृहविषय में निज शुभाशुभ वर्णन ।

यद्भुं द्वायंकसुतेशदिङ्मितमसौ ग्रामः शुभो नामभात्
स्वं वर्गं द्विगुणं विधाय परवर्गाद्यं गजैः शेषिकम् ।
काकिण्यस्त्वनयोश्च तद्विवरतो यस्याधिकः सोऽर्थदोऽथ-
द्वारं द्विजवैश्यशूद्रनृपराशीनांहितं पूर्वतः ॥१॥

अन्वयः—नामभात् यद्भुं द्वायंक सुतेशदिङ्मितं असौ ग्रामः शुभः स्वं वर्गं द्विगुणं विधाय परवर्गाद्यं गजैः शेषितम् काकिण्यः (जायन्त इति शेषः) अनयोः तद्विवरतः यस्याधिकाः सः अर्थदः स्यात् अथ पूर्वतः द्विजवैश्यशूद्रनृपराशीनां द्वारं हितं स्यात् ॥१॥

भाषार्थः—मनुष्य जिस स्थान में रहना चाहे उसकी राशि अपनी (रहने-वाले) राशि से द्वितीय, नवम, एकादश, दशम में हो तो उस स्थान में वास करना उत्तम है। अपने वर्ग का दूनाकरे दूसरे का वर्ग जोड़े ८ का भागदे जिसमें कम बचे वह उत्तम और अधिक बचे तो धन देने वाला होता है। कर्क, वृश्चिक, मीन की ब्राह्मण, वृष, कन्या, मकर की वैश्य, मिथुन, तुला, कुम्भ, कीशुद्र, मेष, सिंह, धन की क्षत्रिय संज्ञा है क्रमशः इनको पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर दरवाजे बनवाने चाहिए ॥ १ ॥

राशिवशात् ग्रामनिवास में निषिद्धस्थान ।

गोसिंहनक्रमिथुनं निवसेन्न मध्ये
ग्रामस्य पूर्वककुभोलिभूषांगनाश्च ।
कर्को धनुस्तुलभमेषघटाश्च तद्वर्गाः
स्वपञ्चमपरा बलिनः स्युरैन्द्रयाम् ॥२॥

अन्वयः—गोसिंहनक्रमिथुनं मध्ये न निवसेत् पूर्वककुभः अलिभूषाङ्गनाः, कर्कः, धनुः, तुलभमेषघटाश्च (न निवासं कुर्युः) तद्वत् ऐन्द्रयाः वर्गाः बलिनः स्युः किन्तु-स्वपञ्चमपराः एव बलिनो भवन्ति ॥२॥

भाषार्थ—२।५।१०।३ राशिवाले ग्राम मध्य में, वृश्चिक राशि वाले को ग्राम के पूर्व दिशामें, मीन को अग्निकोण में, कन्या को दक्षिण में, कर्क को नैऋत्य में धन, को पश्चिम में, तुला को वायव्य में मेष को उत्तरमें, कुम्भ को ईशान में वास नहीं करना चाहिए । अ, क, च, ट, त, प, य, श, ये वर्ग वाले पूर्वादि दिशाओं में बलवान् होते हैं । अपने से पञ्चम वर्ग शत्रु वर्ग है ॥२॥

इष्ट नक्षत्र से आय विस्तार का प्रमाण ।

एकोनितेष्टर्क्षहता द्वितिथ्योरूपानितेष्टायहतेन्दुनागाः ।
युक्ता धनैश्चापियुता विभक्ता भूपाश्विभिः शेषमितो हि पिण्डः ॥३॥

अन्वयः—एकोनितेष्टर्क्षहता द्वितिथ्यः रूपानितेष्टायहताः इन्दुनागैः युक्ताः धनैः युताः विभक्त भूपाश्विभिः यच्छेषम् पिण्डः ॥३॥

भाषार्थ—मकान बनाने वाले के नक्षत्र से १ घटावे १५२ गुणाकरे गो इष्ट प्राप्त हो १ घटा दे ८१ से गुणा करे जो गुणनफल आवे उसको गुणनफल में जोड़े उसमें २१७ का भाग दे शेष बचता है वह पिण्ड है ॥३॥

ध्वजादि आय और द्वार का नियम ।

स्वेष्टायनक्षत्रभवोत्थदैर्घ्यं स्या—
द्विस्तृतिर्विस्तृतिर्हि च दीर्घता ।

आयध्वजो धूमहरिश्चगोखरे— भध्वांक्षकाःपिण्ड इहाष्टशेषिते ॥४॥

अन्वयः—अथ सः पिण्डः स्नेष्टायनक्षत्रभवः (गृहनिर्माण कर्तुः इष्टं यन्त्रक्षत्रं इष्टः आयश्च ताभ्यां भवतीति) पिण्डः दैर्घ्यहत् विस्तृतिः अथ पिण्ड एव विस्तृति हत् दीर्घता जायते । इह (पिण्डे) अष्टशेषिते (सतीति योज्यम्) आयध्वजो धूमहारिश्चगोखरेभध्वांक्षकाः भवन्तीति योज्यम् ॥४॥

भाषार्थ—घर बनाने वाले स्वामी के इष्ट नक्षत्र और इष्ट आय से बना जो पिण्ड है उसमें दैर्घ्य (लम्बाई) का भाग दे तो विस्तार (चौड़ाई) निकलता है और विस्तार का भाग देने से लम्बाई निकलती है । उस क्षेत्र में ८ का भाग देने पर जो बचता है उसके अनुसार ध्वज, धूम, हरि, श्व, गो, स्वर, इभ, ध्वांक्ष नामके ८ आय होता है । १ बचने पर ध्वज २ में धूम, ३ में हरि, ४ में श्वान, ५ में गौ, ६ में स्वर, ७ में इभ, ८ में ध्वांक्ष आय होता है ॥४॥

तथा फल ।

ध्वजादिकाः सर्वदिशि ध्वजे मुखं
कार्यं हरौ पूर्व यमोत्तरे तथा ।
प्राच्यां वृषप्राग्यमयोर्गजेऽथवा
पश्चादुदक्पूर्वयमे द्विजादितः ॥५॥

अन्वयः—ध्वजे सर्वदिशि मुखं कार्यं हरौ पूर्व यमोत्तरे वृषे प्राच्यां गजे प्राग्यमयोः अथवा द्विजादितः पश्चादुदक्पूर्वयमे द्वाराणि कार्याणि ॥५॥

भाषार्थ—ध्वज आय में सब दिशाओं में, हरि आय में पूर्व उत्तर दक्षिण दिशामें, वृष आय में पूर्व में, हस्तो आय में पूर्व दक्षिण में मकान का दरवाजा बनाना चाहिए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र जाति को क्रमशः पश्चिम, उत्तर, पूर्व, दक्षिण में दरवाजा बनाना चाहिए ॥५॥

गृहारम्भ समय निर्णय ।

गृहेशतस्त्रीसुखवित्तनाशोऽर्केन्द्रिज्यशुक्रो विबलेस्तनीचे ।
कर्तुः स्थितिर्नो विधुवास्तुनोर्भे पुरःस्थिते पृष्ठगते खनिः स्यात् ॥६॥

अन्वयः—अर्केन्द्रियशुके विबले अस्तनीचे (वा) गृहेश तस्त्रीमुखवित्तनाशः भवेत् विधुवास्तुनोः मे पुरः स्थिते कर्तुः (भवननिर्मातुः) स्थिति भवनस्थितिः न स्यात् पृष्ठगते (पूर्वाक्ते विधुवास्तुनोः मे) खनिः स्यात् ॥६॥

भाषार्थ—सूर्य, चन्द्र, वृहस्पति, शुक्र बलहीन अथवा नीच के हों तो क्रमशः घर बनवाने वाले स्वामी, उसकी स्त्री, सुख धन का नाश होता है चन्द्र और वस्तु नक्षत्र सन्मुख हो तो गृह बनाने वाला उस घर में वास न करे पीछे हो तो चोरी होती है ॥६॥

व्ययकथनपूर्वक अंश का ज्ञान ।

भं नागतष्टव्ययईरितोऽसौ ध्रुवादिनामाक्षरयुक्स पिण्डः ।
तष्टो गुणैरिन्द्रकृतान्तभूपा ह्यंशा भवेयुर्न शुभोऽतकोऽत्र ॥७॥

अन्वयः—भं (नक्षत्रं) प्रागुक्ताशा कल्पितं नागैः तष्टं असौ व्ययः ईरितः ध्रुवादि नामाक्षर युक् सः पिण्डः गुणैः तष्टः इन्द्रकृतान्तभूपाह्यंशाः भवेयुः अत्र कृतान्तः न शुभः ॥७॥

भाषार्थ—पहले कहे अनुसार जो ग्रह नक्षत्र आया है उसमें ८ का भाग दे तब व्यय आता है उसमें ध्रुव आदि नामके अक्षर से पिण्ड होता है ३ का भाग दे एक वँचे तो इन्द्र २ में यम ३ में राजा अंश होता है । यम नाम का जो अंश है वह अशुभ है ॥७॥

शाला ध्रुवादि बनाने की विधि ।

दिक्षु पूर्वार्दितः शालाध्रुवा भूद्वौ कृताः गजाः ।
शालाध्रुवांकसंयोगःसैको वेश्मध्रुवादिकम् ॥८॥

अन्वयः—पूर्वार्दितः दिक्षु भूः द्वौ कृताः गजाः शालाध्रुवाः स्युः अत्र शालाध्रुवांक संयोगः सैकः ध्रुवादिकम् वेश्म स्यात् ॥८॥

भाषार्थ—पूर्व दिशामें द्वार बनाने से १ ध्रुवांशक दक्षिणका २ पश्चिम का ४ उत्तर का ८ होता है पूर्वार्दि दिशाओं में जितने दरवाजे बनाए जाय उतनी ध्रुवाको जोड़ कर उसमें ४ और जोड़े ध्रुवादि नामका घर होगा ॥८॥

शालाध्रुवादिकों की नामाक्षरसंज्ञा ।

तिथ्यर्काष्टाष्टिगोरुद्रशक्ते नामाक्षरत्रयम् ।

भूद्वयब्धीष्वंगदिग्वह्निविश्वेषु द्वौ नगाब्धयः ॥६॥

अन्वय—तिथ्यर्काष्टाष्टिगोरुद्रशक्ते नामाक्षरत्रयं भूद्वयब्धीष्वंगदिग्वह्निविश्वेषु द्वौ नगे-
अब्धयः गृहनाम भवतीति ज्ञेयम् ॥६॥

भाषार्थ—१५।१६।१७।१८।१९।२०।२१।२२।२३।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१। इनमें से कोई संख्या हो तो गृहनाम ३ अक्षरों का होता है एवं १।२।३।४।५।६।७।८।९।१०।११। इनमें से हो तो गृहनाम २ अक्षरों का होता है ७ अंक हो तो गृहनाम ४ अक्षर का होता है ॥६॥

सोलह ग्रहों के नाम ।

ध्रुवधान्ये जयनन्दौ खरकान्तमनोरमं सुमुखदुर्मुखोग्रम् ।

रिपुदं वित्तदनाशं चाक्रन्दं विपुलविजयाख्यं स्यात् ॥१०॥

अन्वयः—ध्रुवधान्ये जयनन्दौ खरकान्त मनोरमं सुमुखदुर्मुखोग्रं रिपुदं वित्तदं नाशं
आक्रन्दं विपुल विजयाख्यं स्यात् ॥१०॥

भाषार्थ—ध्रुव, धान्य, जय, नन्द, खर, कान्त, मनोरम, सुमुख, दुर्मुख, उग्र
रिपुद, विदन्त, नाश, आक्रन्द, विपुल, विजय १६ शाला गृहों के नाम हैं ॥१०॥

आयादि वर्णन ।

पिण्डे नवांकांगगजाग्निनागनागाब्धिनागैर्गुणिते क्रमेण ।

विभाजिते नागनगांकसूर्यनागर्क्षतिथ्यर्क्ष खभानुभिश्च ॥११॥

आयो वारोऽंशको द्रव्यमृणमृक्षं तिथिर्युतिः ।

आयुश्चाथ गृहेशर्क्षं गृहमैक्यं मृतिप्रदम् ॥१२॥

अन्वयः—पिण्डे क्रमेण नवांकाङ्क गजाग्निनाग नागाब्धिनागैः नागनगाङ्क सूर्य
नागर्क्ष तिथ्यर्क्षखभानुभिश्च विभाजिते आयः वारः अंशकः द्रव्यं ऋणम् ऋक्षं तिथिः युतिः
आयः स्यात् अथ गृहेशर्क्षं गृहमैक्यं स्यात् मृतिप्रदं भवतीति योज्यम् ॥११।१२॥

**मृदुवरुणस्वातिवस्वर्कपुण्यैः सूतीगेहं त्वदित्याहरिभविधिभयो-
स्तत्र शस्तः प्रवेशः ॥१५॥**

अन्वयः—कुम्भेऽर्के फाल्गुणे प्रागपरमुखंगृहं सत् श्रावणे सिंहकर्कषोः प्रागपर मुखं-
गृहं सत् पौषे नक्षत्रे च याम्योत्तर मुखसदनं सत् गो अजगे अर्के राघे मार्गे जूकालिगे
याम्योत्तर मुखसदनं सत् ध्रुवमृदुवरुणस्वातिवस्वर्कपुण्यैः तु आदित्यां सूतीगृहं सत् हरिभ
विधिभयोः तत्र प्रवेशः शस्तः भवतीति शेषः ॥१५॥

भाषार्थ—सूर्य कुम्भराशि के हों अथवा फाल्गुण या श्रावण मास हो, कर्क
सिंह के सूर्य हों पौष मास अथवा मकर के सूर्य हो तो मकान का दरवाजा पूर्व
अथवा पश्चिम में रखे। मेघ अथवा वृष के सूर्य हों वैशाख मास हो तुला अथवा
वृश्चिक का सूर्य हो अगहन मास में नूतन घर बनवावे तो दक्षिण अथवा उत्तर में
दरवाजा रखना चाहिए। मृदु, ध्रुव संज्ञा वाले नक्षत्र, शतभिषा, स्वाती, धनिष्ठा,
हस्त, पुष्य इन नक्षत्रों में नया घर बनवाना चाहिए पुनर्वसु नक्षत्र में सूतिका गृह
बनवाना चाहिए। और गर्भवती स्त्री को श्रावण तथा अभिजित में प्रवेश करना
चाहिए ॥१५॥

सौर चान्द्रमासों की एकता ।

**कैशिवन्मेषरवौ मधौ वृषभगेज्येष्ठे शुचौ कर्कटे भाद्रे सिंहगते घटे
श्वयुजिचोर्जेऽलौ मृगे पौषके। माघे नक्रघटे शुभं निगदितं गेहंतथा-
र्केन सत् कन्यायां च तथा धनुष्यपि न सत्कृष्णादिमासाद्भवेत् ॥१६॥**

अन्वयः—कैश्चित् ज्योतिषग्रन्थ ग्रन्थकर्तृभिः मेषरवौ मधौ, गेहं शुभं निगदितं वृष
भगे ज्येष्ठे, शुचौ कर्कटे, भाद्रे सिंहगते, घटे श्वयुजि, अलौ (वृश्चिकगे) सूर्ये ऊर्जे,
मृगे पौषके, नक्रघटे माघे (गृहनिर्माणं सत्) कन्यायां अर्के ऊर्जे न सत् धनुषि अपि
कृष्णादिमासात् न सत् ॥१६॥

भाषार्थ—मेघ का सूर्य हो तो चैत्र मास में, वृषके सूर्य होने पर ज्येष्ठ में कर्क
के सूर्य होने पर आषाढ में, सिंह के सूर्य होने पर भाद्रपद में तुला के सूर्य हों तो
आश्विन में वृश्चिक का सूर्य हो तो कार्तिक में, मकर का सूर्य हो तो माघ में नूतन
मकान बनवाना उत्तम है। किन्तु कार्तिक में कन्या के और धनु के सूर्य हों तो

माघ में बनवाना अच्छा नहीं यह कृष्णादि मास कहलाता है । ये (कार्तिक, माघ) मास कृष्णपक्ष प्रतिपद से पूर्णिमा तक होता है ॥१६॥

द्वार निषेध ।

पूर्णेन्दुतः प्राग्वदनं नवम्यादिपुत्तरास्यं त्वथ पश्चिमास्यम् ।
दर्शादितः शुक्लश्ले नवम्यादौ दक्षिणास्यं न शुभं वदन्ति ॥१७॥

अन्वयः—पूर्णेन्दुतः प्राग्वदनं नवम्यादिषु उत्तरास्यम् अथ शुक्लदले दर्शादितः पश्चिमास्यं नवम्यादौ दक्षिणास्यं न शुभं भवति ॥१७॥

भाषार्थः—पूर्णिमा से अष्टमी तक पूर्व मुख का दरवाजा और नवमी से चतुर्दशी तक उत्तर मुख, अमावस्या से शुक्लाष्टमी तक पश्चिम में शुक्लाष्टमी से चतुर्दशी तक दक्षिण दिशा में दरवाजा करना चाहिए ॥१७॥

गृहारम्भ में पंचांग और लग्नशुद्धि ।

भौमार्कस्तिक्तामाद्यने चरोने च विपञ्चके ।

व्यष्टान्तस्थैः शुभैर्गेहारम्भस्यायारिगैः खलैः ॥१८॥

अन्वयः—भौमार्कस्तिक्तामाद्यने चरोने च विपञ्चके व्यष्टान्तस्थैः शुभैः खलैः त्रयायारिगैः गेहारम्भः कार्यः शुभो वा भवति ॥१८॥

भाषार्थः—मंगलवार, रविवार, रिक्तातिथि, अमावस्या, प्रतिपद, अष्टमी इनको तथा रोगादि पञ्चवाण को छोड़ कर गृहारम्भ के लिए उत्तम है । एवं चर लग्न, अष्टम द्वादश शुभग्रह, तृतीय, षष्ठ, एकादश में पापग्रह न हो तो नूतन गृहारम्भ उत्तम है ॥१८॥

राहुमुखचक्र ।

देवालये गेहविधौ जलाशये राहोर्मुखं शम्भुदिशो विलोमतः ।
मीनार्कसिंहार्कमृगार्कतस्त्रिभेखातेमुखात्पृष्ठविदिक्शुभाभवत् ॥१९॥

अन्वयः—देवालये गेहविधौ जलाशये मीनार्क मृगार्कतस्त्रिभे शम्भुदिशः विलोमतः राहोर्मुखं (अत्र) खाते मुखात् पृष्ठविदिक् शुभा भवतीति शेषः ॥१९॥

भाषार्थः—देवमन्दिर बनवाने में ११।१।२ राशियां राहुमुख ईशानकोण में, ३।४।५ राशियों में राहुमुख वायव्य में, ६।७।८ राशियों में नैऋत्य में, ९।१०।११ में आग्नेय दिशा में राहुमुख रहता है। गृहारम्भ में १।६।७ राशियों में राहुमुख ईशान में, ८।९।१० राशियों में वायव्य में, ११।१२।१ राशियों में नैऋत्य में, २।१।३ में आग्नेय कोण में राहुमुख होता है। जलाशय बनवाने में १०।११।१२ राशियों में राहुमुख ईशान कोण में १।२।३ राशियों में वायव्य कोण में ४।५।६ राशि में नैऋत्यकोण में, ७।८।९ राशियों में राहुमुख आग्नेकोण में होता है। देवमन्दिर, गृहनिर्माण इनमें राहुके पीछेवाली दिशामें नीच (खात) करना उत्तम है ॥१६॥

बावली खोदने में दिशा से फला फल ।

कूपे वास्तोर्मध्यदेशेऽर्थनाशस्त्वैशान्यादौ पुष्टिरैश्वर्यवृद्धिः ।

सूनोर्नाशःस्त्रीविनाशो मृतिश्च संपत्पीडा शत्रुतः स्याच्च सौख्यम् २०

अन्वयः—वास्तोर्मध्यदेशे कूपे (विद्यमाने) अर्थनाशः ऐशान्यादौ कूपे पुष्टिः ऐश्वर्य-
वृद्धिः सूनोः नाशः स्त्रीविनाशः मृतिः सम्पत् शत्रुतः पीडा सौख्यं च स्यात् ॥२०॥

भाषार्थः—घरके पिण्ड के बीच में कूआ रहने या बनवाने से धननाश, ईशान में शरीरपुष्टि, पूर्व में धनकालाभ, अग्निकोण में पुत्र मरण, दक्षिण दिशा में स्त्री का नाश, नैऋत्य कोणमें गृह बनवाने वाले का मरना, पश्चिम में धनकी प्राप्ति, वायव्य में शत्रु के द्वारा कष्ट, उत्तर में कूआ होने से सुख मिलता है ॥२०॥

स्नानस्य पाकशयनास्त्रभुजश्च धान्यभाण्डारदैवतगृहाणि च ।

पूर्वतः स्युः । तन्मध्यतस्तु मथनाज्यपुरीषविद्याभ्यासाख्यरोदनर-
तौषधसर्वधाम ॥२१॥

अन्वयः—पूर्वतः स्नानस्य पाकशयनास्त्रभुजश्च धान्यभाण्डारदैवतगृहाणि तु मध्यतः
मथनाज्य विद्याभ्यासाख्यरोदन रतौषध सर्वधाम भवेयुः ॥२१॥

भाषार्थः—पूर्व में स्नानगृह, अग्निकोण में भोजनालय, दक्षिण में शयन गृह, नैऋत्य में शस्त्रागार, पश्चिम में भोजनगृह, वायव्य में अन्नगृह, उत्तर में कोश-
गृह, ईशान में देवस्थान (मन्दिर आदि) पूर्व, अग्निकोण में मंथन (दही विलोना)
गृह, अग्निकोण दक्षिण में घी धरने का घर, दक्षिण, नैऋत्य में पखाने का घर,

पश्चिम नैर्ऋत्य में पढ़ने का घर, पश्चिम वायव्य में रोदनगृह वायव्य, उत्तर में स्त्री सहवास गृह, उत्तर, ईशान में औषधगृह, ईशान तथा पूर्व में प्रत्येक वस्तुओं का घर बनवाना चाहिए ॥२१॥

गृहप्रवेश लग्नविचार ।

जीवार्क विच्छुक्रशनैश्चरेषु लग्नारिजामित्रसुखत्रिणेषु ।

स्थितिः शतं स्याच्छरदां सिताकारैज्ये तनुत्र्यंगसुते शते द्वे ॥२२॥

अन्वयः—जीवार्क-विच्छुक्रशनैश्चरेषु लग्नारिजामित्रसुखत्रिणेषु (सप्त) शरदां शते सिताकारैज्य तनुत्र्यङ्गसुते द्वे शते । गृहस्थितिर्भवतीति यावत् ॥२२॥

भाषार्थ—बृहस्पति लग्न स्थान में हों और सूर्य षष्ठ में, बुध सप्तम में, शुक्र चतुर्थ में शनिश्चर तृतीय में हों तो घर की आयु १०० वर्ष की हो एवं लग्न में शुक्र, तृतीय में सूर्य, षष्ठ में मंगल, पञ्चम में बृहस्पति हों तो २०० वर्ष तक घर की आयु होती है ॥२२॥

बहुत काल तक घर रहने का योग ।

लग्नान्धरायेषु भृगुज्ञभानुभिः केन्द्रे गुरौ वर्षशतायुरालयः ।

बन्धौ गुरुव्योम्नि शशी कुजार्कजौ लाभे तदाशीतिसमायुरालयम् ॥२३॥

अन्वयः—भृगुज्ञभानुभिः लग्नान्धरायेषु केन्द्रे बृहस्पतिः (जायते चेत्) आलयः वर्षशतायुः बन्धौ गुरुः व्योम्नि शशी कुजार्कजौ लाभे तदा आलयः अशीति समायुः ॥२३॥

भाषार्थ—लग्न, दशम, एकादश, केन्द्र स्थानों में क्रमशः शुक्र, बुध, सूर्य, बृहस्पति हों तो घर की आयु १०० वर्ष की हो और चतुर्थ में बृहस्पति, दशम में चन्द्रमा, मंगल, शनि एकादश स्थान में हों तो मकान की आयु ८० वर्ष की होती है ॥२३॥

लक्ष्मीयुक्त गृहयोग वर्णन ।

स्वोच्चे शुक्रे लग्नगे वा गुरौ वेश्मगतेऽथवा ।

शनौ स्वोच्चेलाभगे वा लक्ष्म्या युक्तं चिरं गृहम् ॥२४॥

अन्वयः—स्वोच्चे वा शुके लग्नगते गृहं चिरं लक्ष्म्या युक्तं भवेत् । अथवा स्वोच्चे गुरौ वेङ्गमगते, वा स्वोच्चे शनौ लाभगे चिरं गृहं लक्ष्म्या युतं स्यात् ॥२४॥

भाषार्थः—अपने से उच्च स्थान का शुक लग्न में, इसी प्रकार कर्क का बृहस्पति चतुर्थ में, तुला का शनि एकादश स्थान में हो तो प्रारम्भ किया हुआ घर सदा ही लक्ष्मी से भरपूर रहता है ॥२४॥

तथा अन्य योग ।

घृणांबरे यदैकोऽपि परांशस्थो ग्रहो गृहम् ।

अब्दान्ते परहस्तस्थं कूर्याच्चेद्वर्णपोऽबलः ॥२५॥

अन्वयः—यदा एकोऽपि ग्रहः परांशस्थः घृणांबरे (भवेत्) वर्णपः अबलः भवेत्तर्हि-
अब्दान्ते गृहं परहस्तस्थं कूर्यात् । गृहं परकीय हस्तगतं भवेदित्यर्थः ॥२५॥

भाषार्थः—शत्रु की नवांशा में जाकर शुभ फल देने वाला एक भी ग्रह किन्तु “सबल” सप्तम में हो ब्राह्मणादि वर्णों में से जिस वर्ण का वह घर हो उस जाति का स्वामी निर्बल हो तो वह मकान १ वर्ष के भीतर ही दूसरे के हाथ में चला जाता है ॥२५॥

नक्षत्र विशेष से फल विशेष ।

पुष्यध्रुवेन्दुहरिसार्पजलैः सजीवैस्त-

द्वासरेण च कृतं सुतराज्यदं स्यात् ।

द्वीशाश्वितक्षवसुपाशिशिवैः सशुक्रैर्वारे

सितस्य च गृहं धनधान्यदं स्यात् ॥२६॥

अन्वयः—पुष्य ध्रुवेन्दुहरिसार्पजलैः सजीवैः तद्वासरेण च कृतं (आलयं) सुतराज्यदं स्यात् । द्वीशाश्वितक्षवसुपाशिशिवैः सशुक्रैः सितस्य वारे च निर्मितं गृहं धनधान्यदं स्यात् ॥२६॥

भाषार्थः—पुष्य, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, श्रवण, अश्लेषा, पूर्वाषाढ नक्षत्र का बृहस्पति हो और वही वार भी हो तो ऐसे योग में बनवाया हुआ घर पुत्र राज्य इत्यादि का देने वाला होता है । एवं विशाखा, अश्विनी, चित्रा, धनिष्ठा,

शतभिषा, आर्द्रा नक्षत्रों पर शुक्र हो और शुक्रवार भी हो ऐसे समय में घर बन-
वाना आरम्भ हो तो घर, धन धान्य से भरपूर होता है ॥२६॥

तथा अन्य योग ।

सारः करेज्यांत्यमघाम्बुमूलैः कौजेहि वेश्माग्निमुतार्तिदं स्यात् ।
सज्ञैः कदास्तार्यमर्क्षहस्तैर्ज्ञस्यैव वारे सुखपुत्रदं स्यात् ॥२७॥

अन्वयः—करेज्यांत्यमघाम्बुमूलैः सारैः कौजेऽहि (निष्पादितं) वेश्म अग्निमुतार्तिदं
स्यात् । कदास्तार्यमर्क्षहस्तैः सज्ञैः ज्ञस्यैव वारे (निष्पादितं गृहं) सुख पुत्रदं स्यात् ॥२७॥

भाषार्थ—हस्त, पुष्य, रेवती, मघा, पूर्वाषाढ, मूल नक्षत्र पर मंगल हो और दिन
भी मंगल हो तो ऐसे समय में आरम्भ किया हुआ मकान अग्निभय, पुत्र पीड़ा का
देने वाला है । इसी प्रकार रोहिणी, अश्विनी, उत्तराफाल्गुणी, चित्रा, हस्त पर बुध
हो और दिन भी बुध हो तो आरम्भ किया हुआ मकान सुख तथा पुत्र का
देने वाला है ॥२७॥

तथा दूसरा योग ।

अजैकपादहिर्बुध्न्यशक्रमित्रानिलांतकैः ।
समदैर्मन्दवारे स्याद्रक्षोभूतयुतं गृहम् ॥२८॥

अन्वयः—अजैकपादहिर्बुध्न्यशक्रमित्रानिलान्तकैः समदैः मन्दवारे च (निष्पादितं)
गृहं रक्षोभूतयुतं स्यात् ॥२८॥

भाषार्थ—पूर्वाभाद्र, उत्तराभाद्र, ज्येष्ठा, अनुराधा, स्वाती, भरणी, इन नक्षत्रों
पर शनि हो और शनिवार दिन हो तो उस दिन आरम्भ किया हुआ घर राक्षस,
भूत, प्रेत, पिशाच का उस घर में वास होता है ॥२८॥

द्वारचक्र ।

सूर्यर्क्षाद्युगमैः शिरस्यथ फलं लक्ष्मीस्ततः कोणमै-
र्नागैरुद्वसनं ततो गजमितैः शाखासु सौख्यं भवेत् ।
देहल्यां गुणमैर्मृतिर्गृहपतेर्मध्यस्थितिर्वेदमैः सौख्यं
चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधयं शुभम् ॥२९॥

अन्वयः—अथ सूर्यर्क्षात् युगमैः शिरसि (स्थितैः) लक्ष्मीः फलं, ततः नागैः कोणमैः उद्वसनं, ततः गजमितैः शाखासु (स्थितैः) सौख्यं, गुणमैः देहल्यां (स्थितैः) गृहपतेः मृतिः, वेदमैः मध्यस्थितैः सौख्यं, सुधिया इदं चक्रं विलोक्य शुभं द्वारं विधेयम् ॥२६॥

भाषार्थ—सूर्य नक्षत्र से ४ नक्षत्र शिर पर रखे इससे लक्ष्मी प्राप्त होती है । ८ नक्षत्र कान पर रखे उसका फल उद्वसन है अर्थात् उस मकान में कोई टिक नहीं सकता जो २ रहेगा उसके २ मन में उचाट होगी । आठ नक्षत्र शाखा में रखे इससे सुख मिलता है । ३ नक्षत्र दरवाजा पर रखे फल गृहस्वामी की मृत्यु है । उसके बाद के ४ नक्षत्रों को मध्यभाग में रखे फल सुख है । गृह बनवाने वाले को इस चक्र की परीक्षा का शुभ चक्र के अनुसार गृहद्वार (घर का दरवाजा) बनाना चाहिए ॥२६॥

इति वास्तु प्रकरणं समाप्तम् ॥ १२ ॥



अथ गृहप्रवेशप्रकरणम् ॥ १३ ॥

गृहप्रवेश में लग्नशुद्धि ।

सौम्यायने ज्येष्ठतपोन्त्यमाधवे यात्रानिवृत्तौ नृपतेर्नवे गृहे ।
स्याद्देशनं द्वाः स्थमृदु ध्रुवोडुभिर्जन्मर्क्षलग्नोपचयोदयेस्थिरे ॥१॥

अन्वयः—सौम्यायने ज्येष्ठतपोन्त्यमाधवे यात्रानिवृत्तौ नवे गृहे वा द्वाः स्थ मृदुध्रुवोडुभिः जन्मर्क्ष लग्नोपचयोदये तथा स्थिरे (लग्ने) नृपतेः प्रवेशनम् स्यात् ॥१॥

भाषार्थ—नूतन गृह में राजा, उत्तरायण सूर्य में ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुण, वैशाख मास में यात्रा से लौट कर अपने घर में प्रवेश करे । द्वारमें कहे नक्षत्र तथा मृदु ध्रुव संज्ञा वाले नक्षत्रों में भी प्रवेश करना उत्तम है । जन्म राशि अथवा जन्म लग्नसे ३६।१०।११ स्थान का लग्न हो अथवा स्थिर लग्न हो, प्रवेश करना उत्तम है ॥१॥

जीर्ण गृह प्रवेश में विशेष विचार ।

जीर्णे गृहेग्न्यादिभयान्नवेपि मार्गोर्जयोः श्रावणकैऽपि सत्स्यात् ।

वेशोऽम्बुपेज्या निलवासवेषु नावश्यमस्तादिविचारणाऽत्र ॥२॥

अन्वयः—जीर्णे गृहे अग्न्यादिभयान्नवेऽपि मार्गार्जयोः श्रावणिकेऽपि अम्बुपेज्यानिल-
वासवेषु वेशः सत् अत्र अस्तादिविचारणा नावश्यम् ॥२॥

भाषार्थः—अग्रहण, कार्तिक, श्रावण मास में पुराने किन्तु जिसमें आजतक
कभी गये न हों अथवा किसी दूसरे का बनवाया हो, अग्निभय इत्यादि से नवीन
भी मकान में शतभिषा, स्वाती, धनिष्ठा, पुष्य इन नक्षत्रों में प्रवेश करना उत्तम
है। ऐसे समय में शुक्रका अस्त गुरु अस्त इत्यादि दोष नहीं होता ॥२॥

वास्तु नक्षत्रलग्नशुद्धि और तिथिवार शुद्धि ।

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु मूलवास्त्वर्चनं भूतबलिं च कारयेत् ।

त्रिकोणकेन्द्रायधनत्रिगैः शुभैर्लग्ने त्रिषष्टायगतैश्च पापकैः ॥३॥

शुद्धांबुरंध्रे विजनुर्भमृत्यौ व्यकारिक्ताचरदर्शचैत्रौ ।

अग्नेम्बुपूर्ण कलशं द्विजांश्च कृत्वा विशेषेश्म भकूटशुद्धम् ॥४॥

अन्वयः—मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु वास्त्वर्चनं भूतबलिं च कारयेत् । त्रिकोणकेन्द्रायधनत्रिगैः
शुभैः त्रिषष्टायगतैः पापकैः । शुद्धांबुरंध्रे विजनुर्भमृत्यौ व्यकारिक्ताचर दर्शचैत्रे अग्ने
अम्बुपूर्णकलशं द्विजांश्च कृत्वा भकूटशुद्धं वेश्म विशेषेत् ॥३॥४॥

भाषार्थः—मृदु, ध्रुव, क्षिप्र, चर संज्ञा वाले नक्षत्रों में तथा मूल में प्रथम,
चतुर्थ, सप्तम, दशम, एकादश स्थान में शुभ ग्रह हों और तृतीय, षष्ठ, एकादश
स्थानों में पापग्रह हों तो वास्तु पूजा उचित है। चतुर्थ तथा अष्टम स्थान शुद्ध हो,
गृह में प्रवेश करने वाले का जन्मलग्न और प्रवेश की राशि अष्टम स्थान में न हो,
रवि, मंगल दिन नहीं हो, रिकी तिथि, तथा अमावस्या न हो तो जल भरा हुआ
घड़ा आगे करा कर और परिडतों को भी अग्रसर करके गृहप्रवेश करना चाहिए
किन्तु चैत्र मास न हो और भकूट शुद्धि अवश्य हो ॥३॥४॥

वामगत रविज्ञान और तिथिवास पूर्वादि मुख गृहप्रवेश ।

वामो रविमृत्युसुतार्थलाभतोर्के पंचमे प्राग्वदनादिमंदिरे ।

पूर्णे तिथौ प्राग्वदने गृहे शुभा नंदादिके याम्यजलोत्तरानने ॥५॥

अन्वयः—पृथुसुतार्थलाभतः पञ्चमे अर्के प्राग्वदनादि मन्दिरे वामोरविः (भवति) पूर्णातिथौ प्राग्वदने नन्दादिके याम्यजलोत्तरानने च गृहे (प्रथम प्रवेशः) शुभः ॥५॥

भाषार्थः—यदि सूर्य प्रवेश काल के समय से अष्टम, पञ्चम, द्वितीय, एकादश, स्थान से पञ्चम स्थान में सूर्य हो तो पूर्व आदि मुँह वाले गृहों में रवि (सूर्य) वाम रहता है । यदि पूर्व मुख का मकान हो तो उसमें पूर्णातिथि में गृह प्रवेश करना शुभ है । एवं दक्षिण मुख वाले मकान में नन्दातिथि में प्रवेश उत्तम है । पश्चिम मुख गृह में द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी और उत्तर मुखवाले मकान में तृतीया अष्टमी त्रयोदशी को प्रवेश करने से शुभ होता है ॥५॥

कलश वास्तुचक्र ।

वक्त्रेभूरविभात्प्रवेशसमये कुंभेग्निदाहः कृताः प्राच्या उदसनं
कृता यमगता लाभः कृताः पश्चिमे । श्रीर्वेदाः कलिरुत्तरे यमगता
गर्भे विनाशो गुदे रामास्यैर्यमतः स्थिरत्वमनला कंठे भवेत्सर्वदा ॥६॥

अन्वयः—प्रवेश समये कुम्भे रविभात् वक्त्रे भूः अग्निदाहः प्राच्यांकृताः उदसनम्, कृताः यमगताः लाभः, कृताः पश्चिमे श्रीः, वेदाः उत्तरे कलिः, ततोरामाः गुदे (कुम्भतलभगे) स्यैर्यमतः, ततः अनलाः कण्ठे सर्वदा स्थिरत्वं भवेत् ॥६॥

भाषार्थः—गृहप्रवेश करने की इच्छा वाला पहले १ कलशाकार चक्र बनावे जिस नक्षत्र पर सूर्य हो उस नक्षत्र को कलश के मुखपर रखे जिसका फल गृह-प्रवेश में अग्निदाह है । ४ नक्षत्र आगे वाले पूर्व में रखे जिससे उदसन फल मिलता है अर्थात् जिस घर में प्रवेश किया है उसमें ठिक नहीं सकते । चार नक्षत्र दक्षिण में रखे उससे लाभ होता है । फिर चार नक्षत्र पश्चिम में रखे जिससे लक्ष्मी प्राप्ति होती है । इसके बादके चार नक्षत्रों को उत्तर में रखे फल कलह (भगड़ा) है । फिर चार नक्षत्र को गर्भ (भीतर) रखे जिसका फल विनाश है अर्थात् इन नक्षत्रों में गृह-प्रवेश करने वाला बहुत शीघ्र नष्ट होता है । अनन्तर ३ नक्षत्र गुदा में रखे जिसका फल स्थिरता है अर्थात् इसमें गृहप्रवेश करने वाला सानन्द जीवन बिताता है । आगे के तीन नक्षत्रों को कंठ में रखे जिसका फल स्थिरता है ॥६॥

एवं सुलग्ने स्वगृहे प्रविश्य वितानपुण्यश्रुतिघोषयुक्तम् ।
शिल्पज्ञद्वैवज्ञविधिज्ञपौरान् राजार्चयेद्भूमिहिरण्यवस्त्रैः ॥७॥

अन्वयः—एवं सुळ्गे राजा वितानपुष्प-श्रुतिघोषयुक्तं स्वगृहं प्रविश्य शिल्पज्ञदैवज्ञ विधिज्ञ पौरान् भूमि हिरण्यवस्त्रैः अर्चयेत् ॥७॥

भाषार्थः—इस प्रकार अच्छे लग्न में राजा को उचित है कि छुज्जा (चंदवा) फूल, सजावे और बाजे बजवावे अनन्तर गृहप्रवेश करके कारीगर, ज्योतिषी, आचार्य तथा पुरवासियों को पृथ्वी, धन, सुवर्ण आदि का दान दे। इस प्रकार अत्यन्त शुभ होता है ॥७॥

इति गृहप्रवेश प्रकरणं समाप्तम् ॥ १३ ॥



ग्रन्थकारप्रशस्ति-

आसीद्धर्मपुरे षडङ्गनिगमाध्येतृद्विजैर्मण्डिते ज्योतिर्वित्तिलकः
फणीन्द्ररचिते भाष्ये कृतातिश्रमः । तत्तज्जातकसंहितागणितकृन्मा-
न्यो महाभूमूजां तर्कालं कृतिवेदवाक्यविलसद्बुद्धिः स चिन्तामणिः १

अन्वयः—षडङ्गनिगमाध्येतृद्विजैर्मण्डिते धर्मपुरे ज्योतिर्वित्तिलकः । फणीन्द्ररचिते भाष्ये कृतातिश्रमः तत्तज्जातक संहिता गणित कृत् महीभूमुजां मान्यः तर्कालंकृति वेदवाक्य विलसत् बुद्धिः सः चिन्तामणिः आसीत् ॥१॥

भाषार्थ—शिक्षा, कला, व्याकरण, आदि छ अंगवाले वेदों के पाठक पण्डित मण्डली से सुशोभित ज्योतिषियों में अग्रगण्य शेष (पतञ्जलि) के चलाए भाष्य में अत्यन्त ही परिश्रमी जातक, साहित्य, गणित शास्त्र के रचने वाले राजाओं के भी पूज्य न्यायादि तथा अलंकार, मीमांसा, वेदान्त के ज्ञाता चिन्तामणि नाम के विलक्षण पण्डित थे जो धर्मपुर में रहते थे ॥१॥

पिता का वर्णन ।

ज्योतिर्विद्गणबन्दितांघ्रिकमलस्तत्सुनुरासीत्कृती नाम्नानंत
इति प्रथामधिगतो भूमंडलाहस्करः । यो रम्यां जनपद्धतिं

समकरोद्दुष्टाशयध्वंशिनीं टीकां चोत्तमकामधेनुगणितेऽकार्षीत्स
तां प्रीतये ॥२॥

अन्वयः—तत्सूनुः ज्योतिर्वित् गणवन्दितांघ्रिकमलः भूमण्डलाहस्करः अनन्त इति
नाम्ना प्रथां अधिगतः आसीत् कृती यः रम्यां जनपद्धतिं उत्तमकामधेनुगणिते (तन्नाम-
ग्रन्थे) सतां प्रीतये दुष्टाशयध्वंशिनीं टीकां च समकरोत् ॥२॥

भाषार्थः—अनेकानेक शास्त्रों के ज्ञाता, पृथिवी का सूर्य, अनेक ज्योतिषी
मण्डली से सादर जिनकी पूजा की जाती थी ऐसे “अनन्त” नाम से प्रसिद्ध
ज्योतिषी “चिन्तामणि” के पुत्र थे। उनके दुष्ट आशयों को नष्ट भ्रष्ट करने वाली
“जातपद्धति” नाम की टीका “कामधेनु” नाम के ग्रन्थ पर बनाया ॥२॥

ग्रन्थकार प्रशंसा ।

तदात्मज उदारधीर्विबुधनीलकण्ठानुजो गणेशपदपङ्कजं हृदि
निधाय रामाभिधः । गिरीशनगरे वरे भुजभुजेषुचन्द्रे मिते शके
विनिरमादिमं खलु मुहूर्त्तचिन्तामणिम् ॥३॥

अन्वयः—उदारधीः विबुधनीलकण्ठानुजः रामाभिधः तदात्मजः गणेशपदपङ्कजं हृदि
निधाय वरे गिरीशनगरे भुजभुजेषुचन्द्रे मिते शके खलु इयं इमं मुहूर्त्तचिन्तामणिं निरमात् ॥३॥

भाषार्थः—श्रेष्ठ बुद्धियुक्त श्री नीलकण्ठ का छोटा भाई मैं “रामाश्रमाचार्य”
गणेश जी के चरणों के मन में रखता हुआ श्रेष्ठ काशीपुरी (बनारस) में १५२२
शालिवाहन शक में इस मुहूर्त्त चिन्तामणि का निर्माण किया ॥३॥

॥ इति समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥



पुस्तक मिलने का पता—

हनुमानदास गयाप्रसाद बुक्सेलर,
कसौंधन पुस्तकालय, नखास चौक गोरखपुर।

मुद्रकः—बाबूशिवचरणलाल गुप्त 'गोरखपुर प्रिंटिङ्ग प्रेस'।



